मिथिलाभाषाकोष

रचयिता

पं. दीनबन्धु झा



शेखर प्रकाशन, पटना

मिथिलाभाषाकोष

रचयिता

पं० दीनबन्धु झा

मिथिलाभाषाविद्योतन (मैथिलीव्याकरण) निर्माता



शेखर प्रकाशन

पटना

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना-800024
मो. : 9334102305

प्रथम संस्करण : शाके 1872
द्वितीय संस्करण : 28 मार्च 2018

प्रति : 500

आवरण : शेखर मीडिया ग्रुप

मूल्य : 500/- टाका

मुद्रक : अक्षर प्रिन्टर्स
दरियापुर, पटना

MITHILA BHASHA KOSH

By

Pt. Dinabandhu Jha



महावैयाकरण

पं० श्री दीनबन्धु झा

प्रकाशकीय

प्रकाशन कार्य आइ काल्हि बड़ सहज बूझल जाइछ मुदा हमरा जनैत ई अत्यन्त दुरूह कार्य अछि । खास कऽ मैथिली जगतक पोथीकेँ देखि कऽ तँ ई कहले जा सकैछ जे पोथी प्रकाशनक जे प्रक्रिया छैक तकरा बहुत हल्लुक रूपें लेल जाइछ । पोथी छपि जाय सैह कीर्तिमान भऽ गेल ।

हम अपन प्रकाशन कार्यमे तीन टा बात अवश्य ध्यानमे रखैत छी - पहिल-पोथीक उपयोगिता, दोसर, पोथीक महत्व आ तेसर पोथीक तकनीकी उत्कृष्टता। हँ, पोथीक बजट देखि ओकर देखनुक आकर्षणमे किछु कमी-बेसी अवश्य होइत रहैछ । खास कऽ 2000 ई.क बाद जखन शेखर प्रकाशन विभिन्न पाठ्यक्रमक पोथीक प्रकाशनक दिस डेग बढ़ौलक तँ दायित्व आर बेसी बढ़ि गेल। मुदा अपन 25 वर्षक एहि अभियानमे जतेक कार्य कऽ सकलहुँ अछि ताहिसँ संतुष्ट अवश्य छी जे मैथिलीक आंगनमे हमरो किछु मोजर अछि आ से काजक बलें ।

ओना हम मैथिलीभाषी खास कऽ बुद्धिजीवी लोकनि मान-सम्मान-पुरस्कार, प्रशंसा, गोलैसीक संसारमे उबडूब करैत मिथिलाक सहज खेती गप्पबाजीमे बेसी समय व्यतीत करब अपन अधिकार आ दायित्व दुनू बुझैत छी । हमरा ई कहियो नहि रूचल आ तेँ आइ ई छोटछिन संस्था मैथिलीक विद्यार्थीक विश्वास अर्जित कऽ संतुष्ट आ तृप्त अछि। एखनो एहि वर्ग लेल अनेक प्रकारक कार्य-योजना चलि रहल अछि जकर फलाफल दू-तीन वर्षमे सोझां आओत ।

हँ, एकटा कचोट छल जे अनेक प्रकारक काज करितो प्रकाशनसँ शब्दकोश नहि बहार कऽ सकलहुँ । मुदा ई अवसर इच्छा जाग्रत होइते प्राप्त भेल। आदरणीय गोविन्द झा जीसँ एहि प्रसंग गप्प भेल तँ ओ कहलनि-महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक जे 'मिथिलाभाषाकोष' मैथिलीक पहिल कोश अछि से अहाँ छापू। 'हमरा लागल जे हमरा अलभ्य वस्तु प्रकाशन लेल भेटि गेल। हम लागि गेलहुँ एहि काजमे मुदा सामान्य पोथीसँ ई कठिन काज छल । एकरा तैयार करबामे दू वर्षक समय लागि गेल ।

आदरणीय गोविन्द बाबू एकटा आलेखमे चर्च कयलनि अछि जे मैथिलीक एकरूपता (वर्तनी) लेल बहुत प्रयास भेल मुदा सभटा असफल होइत गेल । मिथिला मिहिर साप्ताहिक जखन 1960 मे पटनासँ प्रकाशित भेल तँ ओकर प्रधान

सम्पादक सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिलीक स्वत:उद्भूत वर्तनी तैयार कऽ ओहिमे चलौलनि । हुनका द्वारा निर्धारित वर्तनी लोकप्रिय आ सर्वप्रिय भेल आ यैह मैथिलीक सर्वकालीन 'स्वर्ण युग' अछि । मुदा पचास वर्षक बाद 2012 सँ एहिमे ह्रास भऽ गेल अछि आ एहिमे विभिन्न प्रकारक विकृति आबि रहल अछि । ई अति चिन्ताक विषय अछि ।

आदरणीय गोविन्द बाबू छौ युग (72 वर्ष)सँ मैथिलीक जागरूक प्रतिनिधि छथि । तेँ हुनक सम्मान करैत, पं. दीनबन्धु झाक मिथिलाभाषा कोषक महत्ताकेँ देखैत तथा मैथिलीक वर्तनीक क्षेत्रमे पं. सुधांशु शेखर चौधरीक अविस्मरणीय योगदानकेँ रेखांकित करैत एहि शब्दकोषकेँ प्रस्तुत कऽ अत्यन्त हर्ष ओ संतुष्टिक अनुभव कऽ रहल छी ।

आशा अछि मैथिली जगत एहि उपलब्धिक संज्ञान लऽ पूर्वहि जकाँ सहयोग करत ।

28 मार्च, 2018 —शरदिन्दु चौधरी
(शेखर पुण्य तिथि)

भावाञ्जलि

आइ पराते आयुष्मान् शरदिन्दु जी शुभ समाचार सुनओलनि जे शेखर प्रकाशन मिथिलाभाषाकोषक पुनर्मुद्रण कऽ रहल अछि । सुनितहि हम भावुक भऽ उठलहुँ । इएह कोष हमरा सिखओलक जे कोष कोना बनैछ आ यैह लूरि हमर जीवन-यात्राक संवल भेल । एहि विधामे हम जे किछु लिखल से मानू एही कोषरूपी कल्पलताक फूल-फल थिक । ई सभ मन पड़ल तँ हम सहसा भावविभोर भऽ गेलहुँ ।

कोष नाना भाषामे नाना प्रकारक अछि । प्रस्तुत कोष ताहि सभसँ किछु भिन्न प्रकारक अछि । आन कोष सभ संस्कृत शब्द समेटि-समेटि मोटगर भेल अछि। प्रस्तुत कोष शुद्ध आमूलीय शब्दक संग्रह थिक । एकरा ग्रिअर्सन साहेबक पीजेन्ट लाइफ ऑफ बिहारक तर्ज पर पीजेंट लाइफ ऑफ मिथिला कहि सकैछ छी। ई 1800 ई.क ग्रामीण मिथिलाक मानू चित्रपट थिक । अत: आइ 2018 ई. मे ई इतिहासक समृद्ध स्रोत भऽ गेल अछि । संगहि एहिमे वर्तमानो मिथिलाक बहुत रास दुर्लभ झलक भेटत । संगहि एकरा मैथिलीक प्रथम शब्दकोष होयबाक गौरव प्राप्त छैक । खेद जे एतेक महत्वक अछैत ई एतेक दिन दुर्लभ रहि गेल ।

मन पड़ैत अछि, एक मुहलगू छात्र पिता जीकेँ पूछि देलकनि, शब्दक अर्थ एतेक संस्कृतमय किएक कऽ देल गेल ? उत्तर भेटलनि, आनो जानओ तँ; मैथिल तँ मैथिली शब्दक अर्थ स्वयं जनैत अछि । यथार्थ, ई जतेक घरमे बिकाएल ताहि सँ अधिक बाहर ।

कोष आ विद्योतन दुनूक बीच एक स्पष्ट अन्तर अछि । पहिलमे सर्वत्र शब्दक मानक स्वरूप आ वर्तनी भेटत । दोसरमे एके शब्द विभिन्न ठाम विभिन्न वर्तनीमे दोहराओल भेटत । से किएक ? ई प्रश्न एकर प्रूफे पढ़ैत काल हमरा मन मे उठल । पिता बुझा देलनि-जकरा-जकरा मुहें जेना जे सुनैत गेलहुँ से सभ तहिना लिखैत गेलहुँ । इएह थिक संचयक रीति । ठीके, कहि सकैत छी जे ई कोष नहि, तदर्थ संचित सामग्री थिक ।

कोष आ व्याकरण भाषाक दू अंग थिक । मैथिलीक व्याकरण लिखब यूरोपमे करीब 1898 सँ आरम्भ भेल । देशमे ओहि परम्पराक अनुवर्त्तक भेलाह सुनीति कुमार चटर्जी, सुभद्र झा, रामावतार यादव आदि । परन्तु कोष सभसँ पहिने

यैह आएल । प्रश्न उठैत अछि जे सर्वसाधन सम्पन्न ग्रिअर्सन साहेब कोष किएक नहि लिखलनि । उत्तर अंशत: ऊपर दए चुकल छी । व्याकरण टेबुल पर बैसि लिखि सकै छी, एहि प्रकारक कोष नहि ।

एहि कोषक पुनर्मुद्रणक अवसर पर मन पड़ैत अछि, आइसँ करीब सत्तरि वर्ष पूर्व भीषण युद्धोत्तर कालमे कोना-कोना एकर प्रथम मुद्रण भेल । 1948 ई. मे धातुपाठक छपाइ सम्पन्न होइतहि पिताजी उत्साह-वश अपना बलें कोष छपायब आरम्भ कएलनि । किछु अंश ज्योतिष प्रकाश प्रेस, काशीमे छपल कि आर्थिक कारणें रूकि गेल । एही बीच 1950 ई. मे हम पटना धएलहुँ तँ शेष अंश छपएबाक सौभाग्य हमरा भेटल । जहिना ई पुस्तक गाममे कोष लिखब सिखओलक तहिना एतए छपाएब आ प्रूफ देखब सेहो सिखाए देलक जे जीवन भरि काज दैत रहल । एहि अवसर पर मन पड़ैत अछि, जे 1983 ई. मे एही महावैयाकरणक मिथिलाभाषा विद्योतन तकरो द्वितीय संस्करणक फ्रूफ देखबाक (आ सम्पादन करबाक) सौभाग्य भेटल रहए । मिथिलाभाषा-शब्दकोषक एहि पुनर्मुद्रणक अवसर पर आनो बहुत बात मन पड़ैत अछि । एतए एतबे ।

अन्तमे एक बेर फेर आयुष्मान् शरदिन्दु जीकेँ धन्यवादक संग आशीर्वाद दैत छियनि जे सरस्वतीक आराधनाक संग लक्ष्मीक कृपा अरजैत रहथु ।

2/01/2018 — गोविन्द झा

भूमिकाविषयसूची

भूमिका

मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बनएबामे प्रवृत्त भेलापर मिथिलाभाषाकोषहुक अभाव देखि ओकरो निर्माणमे उत्साह कएल । किन्तु यादृश कोष हमर अभिप्रेत छल, तादृश नहि भय सकल । तथापि "निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते" एहि न्यायक पूर्ति अवश्य भेल ।

चिरकालें कोषक पूर्ति भेलापर छापाक चिन्ता भेल । स्वयं द्रव्याभावप्रयुक्त छपएबामे असमर्थ छलहुँ । अनुत्साहिता देखि कोनो लक्ष्मीपात्रक ओतए प्रस्तुत होएबाक साहस नहि होअए । ततःपर महोदारचरित मैथिलीसमुन्नतिक परम उत्साही दरभङ्गा-राजवंशोद्भव राघवपुरक बाबू साहेब श्री कृष्णनन्दन सिंहमहोदय स्मरणपथारूढ भेलाह ।

हिनक उदारता मैथिलगणसँ अविदित नहि । कोनो भाषाक उन्नति गौरवान्वित उत्कृष्ट अनेक ग्रन्थक बिना नहि भय सकैछ ई बिचारि उक्त बाबूसाहेब मैथिलीउन्नत्यर्थ मैथिलीमे उत्कृष्ट ग्रन्थनिर्माताकें पारितोषिक देबाक हेतु अढाय सय (२५०) टाका मैथिलीसाहित्यपरिषद् संस्थामे देल । ओ टाका मधुबनीमे प्रवर्तित मैथिलीसाहित्यपरिषदक अधिवेशनमध्य ओकर अध्यक्ष बाबू श्री चन्द्रधारी सिंह महोदयक हाथसँ मैथिलीग्रन्थोत्कर्षापकर्षविवेचनानिपुण महामहोपाध्याय श्री उमेशमिश्रप्रभृतिसँ सर्वग्रन्थोत्कृष्टतया निर्णीत मिथिलाभाषाविद्योतनग्रन्थक निर्माणक पारितोषिक आदरपूर्वक हमरा देल गेल ।

पुनः ततःपरो महामहोपाध्याय कर्मकाण्डोद्धारक महावैयाकरण पं० श्रीपरमेश्वरझाक निर्मित परमोत्कृष्ट मिथिलातत्वविमर्शनामक पुस्तकक प्रकाशनक उपलक्षमे उक्त बाबूसाहेब हुनक सम्बन्धिककाँ २५०) अढाए सए रुपैया पारितोषिक देल ।

हिनक पिता संस्कृतसाहित्यक पूर्ण विद्वान् बाबू श्रीहरिनन्दनसिंहमहोदय तथा पितामह बाबू श्रीयदुनन्दन सिंहमहोदय नितान्तकोमलमधुरभाषी ओ सदाचारसँ लेशतोऽपि अच्युत छलाह ।

उक्त महानुभाव बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयक ओतय उपस्थित भय एहि कोषक छापाक प्रसङ्ग निवेदन कयलापर तत्काले ओ अपन असीम कृपा देखओलन्हि; सोत्साह कहलैन्हि जे छापा अवश्य हो किन्तु कागत ओ अक्षर सुन्दर होएबाक चाही ।

हम उक्त महोदारचरित श्री बाबूसाहेबक सदैव कृतज्ञ रहब जनिक अनुपम कृपासँ ई कोष मुद्रित भेल । एहि प्रसङ्ग विशेष विवरण भूमिकाक अन्तभागमे द्रष्टव्य ।

मैथिलीक अनुरागी मैथिलगण किंवा मिथिलावास्तव्य बन्धुवर्ग तथा प्रवासी मैथिलसंघमहोदय लोकनिक ओतए ई निवेदन करैत अत्यन्त आनन्द होइछ जे मिथिलाभाषाकोष निर्मित भए प्रकाशित भए गेल जकर अद्यावधि अभाव छल । आशा जे ई विषय बूझि हुनका लोकनिक अन्तःकरणमे प्रसन्नता होएत तथा अतिचिरकालेँ गवेषणपूर्वकनिद्धारित हमर लेखप्रणालीक अनुमोदन अवश्य होयत । मैथिलीसाहित्यपरिषदक स्थापना तथा मैथिलीसाहित्यपत्रक प्रकाशनसँ आब विज्ञ व्यक्तिक लेखमे परिपाटीक भेदो अल्पे रहि गेल अछि ।

कोषमे त्रुटि

एहि कोषमे साधारणव्यवहारोपयुक्त यथोपलब्ध शब्द संगृहीत कयल गेल अछि। किन्तु बहुत शब्द छूटल अछि । सबारीक नाम हाथी घोड़ा बग्गी एक्का इत्यादि लिखल किन्तु ओकर साज (उपकरण) अलंकरणप्रभृकतिक नाम अल्पे लिखल अछि । एवम् मिथिलादेशक शिल्पीक नाम कमार लोहार सोनार मल्लाह इत्यादि उल्लिखित अछि किन्तु ओहिसबहिक कार्यवाही सामग्रीमे कम्मे वस्तुक नाम पड़ल अछि इत्यादि त्रुटि हम मानैत छी । आशा जे उत्साही निविष्ट एक विद्वान किंवा अनेक विद्वान् मीलि अन्वेषणपूर्वक ओहि शब्द-सबहिक संग्रह कए प्रकाशित करताह जकर संग्रह हम नहि कए सकलहुँ अछि तथा प्रसिद्धो बहुत शब्द जे छूटि गेल अछि तकरो संग्रह करताह एवम् प्रमादवश अथवा विपरीत धारणावश अर्थनिर्देशमे जे अन्यथा भेल हो तकरो संशोधन कय कोषकेँ सुचारू बनओताह ।

हमरा कोष बनयबाक साहस करब उचित नहि छल हेतु जे हम आबालतः संस्कृतशास्त्रमात्रक व्यवसायमे छी, अतः अप्रसिद्ध वस्तुक नाम अल्पे जनैत छी । तखन अनकासँ बूझि-बूझि नामसंग्रह करब सेहो आइकाल्हि कठिन अछि कारण जे तादृश लोकक अभाव भेल जाइछ ।

पूर्व कालमे विद्वान्लोकनि शरयन्त्र लेनिहार छलाह१ अर्थात् यावतो वस्तुक परिचेता ओ निखिलशिल्पवेत्ता, जाहि विषयक जे प्रश्न हो सभक समीचीन उत्तरदाता होइत छलाह, जनिक कथा मिथिलामे प्रसिद्ध अछि । यदि हुनका लोकनिक प्रवृत्ति मिथिलाभाषाक रक्षा दिस होइतैन्हि तँ सर्वांशें मिथिलाक शब्दपुञ्ज सुरक्षित रहि सकैत । पूर्वक एक विद्वान् ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्णनरत्नाकर नामेँ किछु शब्दसंग्रह करबो कयलैन्हि तँ अर्थनिर्देशक अभावसँ कोष कहबाक योग्य नहि । अधिकांश ओकर अर्थ संप्रति अज्ञेय भए गेल अछि । अस्तु, एमहर आबि नाना प्रकारेँ

मैथिलीशब्दक दुरवस्था भए गेलाक स्थितिपर कोष बनाओल गेल अछि से जेहन होयबाक योग्य तेहने भेल अछि । तस्मात् एहिमे उपजात त्रुटिक हम क्षमाप्रार्थी छी ।

एहि कोषमे बहुत प्रसिद्धो शब्द छूटि गेल अछि जे पूर्वहि कहि आएल छी । तकरा प्रमाणित करबाक हेतु नीचाँ किछु शब्द अकारादिक्रमहि देखबैत छी जे द्वितीय संस्करणमे इहो शब्दसभ तथा एतद्भिन्नो छूटल शब्दसभ यथासंभव सन्निवेशित करबाक उद्बोध हो ।

अतिकाल–अतिक्रान्त समय ।

अथरा–पैघ गहीँड़ मटकूर ।

अमेढ़ी–अमेढ़ब१ कड़ामक योजनार्थ मेहमे पैसाओल गोलाकार तृण २

अम्हारु–वह्निकणयुक्त तप्त छाउर ।

अलकतरा-पाथरक कोइलाक तेल ।

आमोद करब–क्रि० आनन्द क्रिया करब १ सुगन्ध-प्रसारण करब २ ।

उपजाहु–अधिक उपजाक (खेत) ।

कनेमने–अ० अत्यल्प ।

करीन छेकब–क्रि० पटएबाक रस्सामे करीन बान्हब ।

कुङ्कुमा–अबीरसँ भरल कोढ़िला वा लाह (दूरसँ अबीर फेकबाक हेतु) ।

केसर–किञ्जल्क ।

खुर्ची–कबाड़क डारिमे पैसएबाक कपाटाङ्ग ।

खुटबन–धोबिनिकेँ एवम् कुम्हैन प्रभृतिकेँ नूआ एवम् बासनप्रभृति अनबाक हेतु देय किछु मात्र अन्न ।

खोंछि–स्त्रीक डाँड़मे बद्ध वस्तु रखबाक वस्त्रप्रान्त ।

गढ़नि–गढ़ाइ, नखासीप्रभृति ।

गन्ध करब–क्रि० दुष्ट गन्धक प्रसारण ।

गरी–मनुष्यक झुण्ड ।

गुज्ज दए उठब–क्रि० आकस्मिक अति कोमल स्पर्शक अनुभवविषय होएब ।

गेल्ह–कौआक बच्चा ।

गोँज-गोँजा–संकीर्णतावश अयथावत् स्थित ।

घाँटो–स्त्रीपूज्य मृत्प्रतिमा-विशेष ।

घोंघाउज (जि)–निर्हेतुक अश्रव्य विवाद ।

छरपटि छोड़ाएब–क्रि० अशान्त करब ।

झर पड़ब – क्रि० कानमे जोरसँ अप्रिय शब्दक आपतन ।

टुस्सा / टूसा } –ठारिक अगिला पत्राङ्कुर ।

डकब–क्रि० कौआक प्रातःकालिक बाजब १ । उत्कट-गन्धप्रसारण २ ।

डारि–कबाड़क अङ्गविशेष ।

तीखर–तीक्ष्ण (आतपादि) ।

दँतब–ना० दाँतसँ युक्त होएब ।

पैँचाड़ (ड़ी)–पैँचक व्यवहार

बरोबर–धान्यविशेष ।

मचकी–आन्दोलनमञ्च ।

महमह करब–क्रि० अत्यन्त सौरभप्रकाश करब ।

लाभ–सभसँ नीच खेत १ सं० प्राप्ति २ ।

गुरुलघूच्चारणविवेक

संस्कृतमे ह्रस्ववर्ण लघु कहबैत अछि, तथा दीर्घवर्ण गुरु । एवम् संयोगसँ पूर्व ह्रस्वो गुरु भए जाइछ, उदाहरण, 'स्वगेहस्थ' एहिमे प्रथम स्वर ह्रस्व लघु, द्वितीय दीर्घ गुरु, तृतीय ह्रस्व गुरु, चारिम ह्रस्व लघु । तस्मात् ओ सबटा छओमात्राक भेल ।

इएह रीति मैथिलीभाषहुमे अछि । विशेष ई जे मिथिला-भाषामे निर्विभक्तिक वा सविभक्तिक सकल पदमे एकोटा गुरूच्चारण अवश्य रहय ई नियम अछि । तें जाहि द्व्यक्षर नाममे दुहू ह्रस्वे अछि ताहिमे उपान्त्य अर्थात् अन्त्यसँ पूर्व ह्रस्वो गुरूच्चारण भए जाइछ, यथा 'मधु नहि अछि' । एवं ह्रस्वद्वयान्त दीर्घादिवर्णत्रिक 'भाबहु, भाभठ' इत्यादिअहुमे उपान्त्य गुरूच्चारण होइछ । 'मधुक आवश्यकता' एहिठाम 'मधुक' एहि सविभक्तिक पदमे उकार गुरूच्चारण, मकाराकार लघूच्चारण । एवम् एकाक्षर पदमे तथा सँ विभक्तिमे अकार गुरूच्चारण, यथा 'त तँ ह हँ रामसँ' इत्यादि । अत: जे लोकनि 'कय' 'भय' क स्थान 'क' 'भ' लिखैत छथि हुनका मतेँ 'क' 'भ' इत्यादि एकाक्षर पद भेल, तें 'जा क देखू, पण्डित भ जाउ', इत्यादिमे 'क' 'भ' इत्यादि गुरूच्चारण भेल । अपर विशेष ई जे लौकिक संस्कृतमे एकारादि सन्ध्यक्षर दीर्घे अछि, ह्रस्व नहि, किन्तु मिथिलाभाषामे ह्रस्वो अछि, तस्मात् ह्रस्वभूत ए ऐ ओ औ लघूच्चारण होइछ, यथा 'देखनिहार' 'ऐंठलाह' 'पओने' 'बौंसनिहार' इत्यादिमे । कतय कतय सन्ध्यक्षरकें ह्रस्वता होइछ से किछु कहि चुकल छी, अन्यान्य भाषाविद्योतनसँ बोद्धव्य । एवम् कोन कोन शब्दमे लघुकें गुरुता सेहो सविस्तार भाषाविद्योतनमे प्रतिपादित अछि । एक विषय ई जे अकारेतर स्वर कें गुरुता भेलापर दीर्घो लिखल जाय तँ क्षति नहि, यथा 'बहीनि बहीर थीक'। ह्रस्वोपान्त्यक लिखी तँ से उचिते । तस्मात् 'बहिनि बहीनि' इत्यादि दुहू लेख संगत । केवल ह्रस्व अकारकें गुरुता भेलहुपर ह्रस्वे लिखल जाय, दीर्घ नहि ।

ई विचार जे गुरूच्चारणीभूत ह्रस्व अकारादिक तर बिन्दु रूप चिह्न देल जाय, एवम् लघुभूत एकारादिलिपिक नीचों बिन्दु चिन्ह देल जाय से उत्तम यथा; 'अत्ता अद्धी मधु मधुक पुतहु भाबहु एकठा ऐंठलाह पओना चौकिआएब जँ त ह हँ' इत्यादि ।

एऐओऔ सामान्यत: दीर्घताक कारण गुरूच्चारण थीक किन्तु स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वर ह्रस्व भय जाइत अछि । अत: ओहिमे एकारादिओ ह्रस्वताप्रयुक्त लघूच्चारण थीक; यथा 'देखनाइ देखनुक देखताह ऐंठलाह पओलैन्हि बौंसनिहार' इत्यादिमे ।

एकर अपवाद – एकस्वर प्रत्यय तथा अत अब अल एहिसँ पूर्व ह्रस्बता नहि, तेँ लघुत्वाभाव – यथा देख देखि देखी देखत घैरब पौरल । तथा का बा मा गर इत्यादि कतोक व्यञ्जनादिओ प्रत्ययसँ पूर्व ह्रस्वता होएबाक कारणेँ एकारप्रभृति लघु होइछ, यथा 'मैलका सौँसका गेनबा सोनमा भोरगर' ।

एवम् समासमे पूर्वक सकल स्वर ह्रस्व भय जयबाक कारण एकारादि लघूच्चारण होइछ, यथा 'एकबट्टी मैलछन गोअरगमा रौदमुहाँ' ।

एवअपिस्थानीय 'अहि' 'अहु'क योजनामे तदन्त वा तन्मध्यक एके पद मन्तव्य, तस्मात् 'घरहि घरहुँ घरहिक' इत्यादिमे उपान्त्ये गुरूच्चारण ।

मिथिलाभाषा सिखनिहारकाँ गुरुलघुभावज्ञानमे विशेष यत्न देबाक चाही अन्यथा लेखशुद्धि भेलहुपर बजबामे अपाटव प्रकाश होयत । प्रत्येक भाषाक ध्वनि विभिन्न विलक्षण होइछ । तस्मात् परिशुद्ध बजनिहार केन्द्रस्थ व्यक्ति-सबहिसँ किछुओ दिन संलाप करब आवश्यक ।

लिङ्गनिर्णय

मैथिलीभाषामे शब्दक लौकिके पुंस्त्वादि लिङ्गक अर्थ अछि, शास्त्रीय नहि । सेहो प्राणीक बोधक जे शब्द अछि तकरे टा । अप्राणिबोधक बाट घाट इत्यादि शब्द लिङ्गबोधक नहि होइत अछि । तेँ ओकरा अलिङ्ग कहबाक चाही । अलिङ्गक सङ्केत हम एहि कारणें नहि कयल अछि जे ओ अनुगत रूपेँ स्वत: बुझबाक योग्य होएत ।

लिङ्गबोधक शब्द तीन प्रकारक अछि, पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग उभयलिङ्ग । क्रमश: उदाहरण, पुंल्लिङ्ग 'बाप भाय जमाय' इत्यादि, स्त्रीलिङ्ग 'माय बहीनि सतधी' आदि, उभयलिङ्ग 'घोड़ा भेड़ा बाभन' आदि । उभयलिङ्गक आकारान्त शब्द जँ स्त्रीक बोधक हेतु बाजल जाय तँ ओकरासँ स्त्रीबोधक ईकार आबय, तस्मात् घोड़ी इत्यादि रूप, एवम् बाभन आदिसँ ह्रस्व इकार अबैत अछि, यथा बाभनि कुमारि । इत्यादि व्याकरणसँ बुझबाक योग्य नाना प्रत्यय होइछ, तेँ हम कोषमे प्राय: दुहू लिङ्गक रूप लिखल अछि, बहुतमे छुटिओ गेल होएत ।

एहि ठाम इहो भय सकैत अछि जे स्वतन्त्रो घोड़ा घोड़ी आदि भिन्ने भिन्न मानल जाय, प्रथम पुंल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, अतएव कोनो वैयाकरणक मत अछि जे अर्थभेदसँ शब्द भिन्न होइत अछि ।

संस्कृतमे शास्त्रीयो पुंस्त्वादि लिङ्ग शब्दक अर्थ होइत अछि । तथा हिन्दीअहुमे । किन्तु मैथिलीमे लौकिकमात्रे, से कहिए आएल छी ।

आब शास्त्रीय लिङ्ग ओ लौकिक लिङ्गक परिचय लिखैत छी । शास्त्रीय पुंस्त्वादि लिङ्ग ओ थीक जे प्रवृत्तिनिवृत्तिमे कोनो उपकार नहि करैत अछि, केवल शब्दस्वरूपविशेषनिष्पादकमात्र होइछ । यथा माला शब्दक शास्त्रीय स्त्रीत्व लिङ्ग अर्थ थीक, ओकर ज्ञान हो वा नहि हो प्रवृत्ति तुल्ये, 'मालाम् आनय' 'माला लाओ' इत्यादिसँ होइत अछि, केवल 'माला शोभना' 'माला अच्छी है' इत्यादि शब्दविशेषसम्पादने फल होइछ । यदि मालाशब्द पुंल्लिङ्ग रहैत तँ 'माला शोभन:, माला अच्छा है' इत्यादि शुद्ध रूप होइत, कारण जे विशेषणक स्वरूप विशेष्यलिङ्गाधीने रहैत अछि ।

संकेतविवरण

उ० एहि संकेतक अर्थ उभयलिङ्ग (पुंस्त्वस्त्रीत्वोभयलिङ्गबोधक) जानब। 'घोड़ा' 'बाभन' इत्यादि शब्द उभयलिङ्ग थीक तेँ जखन स्त्रीमे प्रयुक्त होइत अछि तखन ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय ईकार इकार आदि आबि जाइत अछि, यथा 'घोड़ी' 'बाभनि' इत्यादि। यदि 'बाभन' 'बाभनि' इत्यादि सिद्धवत् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भिन्ने-भिन्न मानल जाय तँ कोनो विशेष क्षति नहि छल किन्तु से मानने बुझबामे असौकर्य। हमरा तँ स्त्रीमे बाभन आदिसँ इकार, आकोरान्तसँ ईकार आबए एहि सामान्य नियमसँ 'बाभनि' 'कुमारि' 'सुकुमारि' 'घोड़ी' 'भेँड़ी' 'बेटी' इत्यादि अनुगतरूपेँ बुझल गेल, ई लाघव अछि। एहि हेतु स्त्रीप्रत्ययक अनुशासन अछि। तदनुसार ओकर प्रकृतिभागहिक अर्थ लिङ्ग मानल अछि।

अलि० संकेतविवरण

अलि० एहि संकेतक अर्थ अलिङ्ग (लिङ्गाबोधक) थीक। जाहि प्राणीकवाचकसँ पुरुष ओ स्त्री दुहूक बोध हो से अलिङ्ग भेल, यथा 'लोक' 'पठरू' 'बच्चा' 'नेना' प्रभृति। तथा जाहि प्राणीक सन्तानोत्पादक इन्द्रिय मनुष्यदृष्टिगोचर योग्य नहि अछि, यथा 'मोस' 'गोहि' 'माछ' इत्यादि, सेहो सभ अलिङ्ग थीक। बहुत शब्दमे विशेष ध्यान नहि देबाक कारण अलिङ्ग लिखब छूटि गेल अछि।

क्रि० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ पर 'क्रि०' ई संकेत लिखल अछि तकरा क्रिया-बोधक नाम जानब, अर्थात् क्रियाक बोधक अबप्रत्ययान्त कृदन्त बुझब, यथा 'छकब' 'ताकब' 'बिकाएब'। जेना संस्कृतमे दशन श्रवण इत्यादि भावप्रत्ययान्त कृदन्त अछि तेना मैथिलीमे देखब सुनब इत्यादि थीक। उदाहरण, 'पुस्तक देखब आवश्यक', 'गीत सुनब आनन्ददायक'।

'देखब' आदिसँ पर विभक्ति श्रूयमाण रहलासँ 'देखबा' 'सुनबा' इत्यादि वैकल्पिक रूप भय जाइत अछि, यथा, 'देखबासँ' वा 'देखबसँ' इत्यादि भाषाविद्योतनमे स्पष्ट अछि। तस्मात् 'देखबासँ' इत्यादि प्रयोग देखि ह्रस्वान्त 'देखब' 'सुनब' शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे करब। एवम् 'बिकाएब' प्रभृतिशब्दक रूप 'बिकएबाक' 'बिकएबासँ' इत्यादि ह्रस्वमध्यक दीर्घान्त भय जाइछ। अतः 'बिकएबाक' इत्यादि देखि 'बिकाएब' शब्दक अन्वेषण कर्त्तव्य।

अबप्रत्ययान्त तीन प्रकारक अछि, प्रथम 'छक्' आदि धातु प्रकृतिक, द्वितीय 'तक्' आदि प्रकृतिक, तृतीय बिकादि प्रकृतिक। प्रथममे अबप्रत्यय अयलासँ कोनो विकार (लोप आगम अदेश) नहि होइत अछि। यथा 'छक्+अथ=छकब', 'ठक्+अब=ठकब'। द्वितीयमे अब अएलापर धातुक स्वर दीर्घ भय जाइत अछि,

यथा 'तक्+अब=ताकब', 'जग्+अब=जागब'। तृतीयमे 'अब' प्रत्ययक स्वरूप 'अयब' वा 'आएब' भय जाइत अछि, यथा 'बिक्+अब=बिकायब' वा 'बिकाएब'। एतद्बोधार्थ कोषमे प्रायः प्रकृतिप्रत्यय-विभाग 'छक्+अब' 'तक्+अब' 'बिक्+अब' एवं रूपेँ कयल अछि जे व्याकरणमे ओकर साधनप्रकार भेटि जाय।

तहिना 'कहाँ' 'कतय' 'कोमहर' इत्यादि शब्द प्रथमासप्तमीभिन्न विभक्तिक लग 'कोन देश' एतन्मात्रबोधक भय जाइत अछि, अधिकरण अर्थक त्याग कए दैत अछि, ओहि सबहिकेँ अधिकरणत्वबोधकत्वावस्थहिमे अव्ययत्व थीक। तस्मात् 'कहाँसँ' इत्यादि उपपन्न भेल।

ई विषय केवल अधिकरणार्थक अव्ययमे अछि, से अव्ययहाँप्रत्ययान्त 'कहाँ' 'जहाँ' 'तहाँ' तयप्रत्ययान्त 'कतय' 'जतय' 'ततय' 'एतए' 'ओतय' महरप्रत्ययान्त 'कोमहर' 'जेमहर' 'तेमहर' 'एमहर' 'ओमहर' प्रायः एतबे होयत।

एतद्भिन्न 'आइकाल्हिमे' इहो शब्द संप्रति बाजल जाइत अछि परन्तु हमरा विचारेँ ओ परिशुद्ध नहि थीक। यद्वत् हिन्दीमे एमहर आबि 'उनमेसे' केओ लिखलक, से प्रचलित भय गेल। वस्तुतः 'उनमे' इएह होयबाक चाही, अति प्राचीन लेख तादृशे उपलब्ध होएत, 'अमीषु ब्राह्मणःश्रेष्ठः' एकर अपभ्रंश तादृशे उचित। एक शब्दसँ दू विभक्ति असंगत। तद्वत् 'आइकाल्हि' शब्दसँपर सप्तमीक प्रयोग वैकल्पिक चलल अछि। यदि 'आइकाल्हिमे' इहो शुद्धे मानल जाय तँ ओकरासँ पर "सप्तमीक लोप वैकल्पिक" एहन एक विशेष अनुशासन मानल जाए।

अव्ययमे कोनो कोनो पदान्तरानपेक्षो प्रयुक्त होइत अछि यथा हँ हाँ इत्यादि।

पुं० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ पुं० ई संकेत देल अछि तकरा पुंलिङ्गमात्रबोधक जानब। पुंस्त्व की थीक से लिङ्गविचारमे कहि चुकल छी। जे शब्द प्राणिबोधक भय केवल पुंस्त्व लिङ्गक बोध करबैत अछि, यथा बाप भाय जमाय छागर, ताहि शब्दसँ आगाँ ई संकेत देल अछि।

यद्यपि मैथिलीमे पुंस्त्वलिङ्गप्रयुक्त कोनो विशेष कार्य नहि होइत अछि तथापि पुरुषक बोध करबैत अछि। तथा पुंस्त्वमात्रलिङ्गज्ञानसँ स्त्रीबोधकत्वाभावक निर्णय सन्ताँ तद्विशेषणमे स्त्रीत्वप्रयुक्त प्रत्यय नहि से बुझल गेल। तेँ 'छोट छागर' एहने प्रयोग भेल 'छोटि छागर' एहन नहि। गुण-बोधककेँ प्रायः विशेष्यलिङ्गप्रयुक्ते कार्य से कहि आयल छी।

स्त्री० संकेतविवरण

जाहिसँ आगाँ 'स्त्री०' ई संकेत देल अछि तकरा स्त्रीलिङ्गमात्रबोधक जानब। स्त्रीत्वलिङ्गक परिचय लिङ्गविचारमे कहि आयल छी। माय बहीनि पुतहु इत्यादि

केवल स्त्रीबोधक थीक, ओकर गुण विशेषवाचकमे स्त्रीत्वप्रयुक्त रूपविशेष होइत अछि, यथा 'हमर माय बड़ बूढ़ि छथि' इत्याकारक प्रयोग भेल, 'बूढ़ छथि' इत्याकारक नहि । 'बड़' शब्द अलिङ्ग थीक तेँ ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय नहि भेल । बड़ी राति, बड़ी खन, बड़ी काल, इत्यादिस्थलमे 'बड़ी शब्द दोसरे थीक, सेहो अलिङ्गे थीक । हिन्दीवत् बड़शब्दसिद्ध स्त्रीलिङ्ग नहि । अत: खनकालादि-विशेषणो होइछ । मैथिलीमे एहि शब्दक प्रयोग प्राय: कालविशेषणतामे होइछ, जेना 'कती काल' 'कती राति' इत्यादिमे 'कती' शब्द ।

शास्त्रीयलिङ्ग कोन वस्तु थीक एहि प्रसङ्ग अनेक मत अछि । वाक्यपदीयनामक भर्तृहरिक ग्रन्थमे छओ सात मत कहल अछि । ओकर प्रतिपादन विस्तारक भयसँ तथा विशेष उपकारक अभाव जानि नहि कयल । मोटा-मोटी ई बुझबाक चाही जे शब्दवाच्य कोनो विलक्षण पुंस्त्वादि शास्त्रैकसमधिगम्य शब्दमे वा अर्थमे रहनिहार अछि, यत्प्रयुक्त रूपमे वैलक्षण्य होइछ ।

आब लौकिक लिङ्गक परिचय दैत छी । प्राणी जाहि अवयवसं पुरुष वा स्त्री कहबैत अछि तदवयवशालित्वे पुंस्त्व ओ स्त्रीत्व थीक । अत: जाहि प्राणीमे ओ अवयव उपलब्ध नहि होइछ ताहि प्राणीक बोधक शब्द अलिङ्ग रहैत अछि । यथा चूटी मोस माछ काछु । यद्यपि पक्षीमे नर मादाक चिह्न पक्ष-विशेषादि होइछ तथापि जे अवयव सन्तानोत्पादक होइछ तदवयवयुक्तत्व विवक्षित अछि । तस्मात् मनुष्यप्रत्यक्षयोग्यमेढ़ रूप अयवशालित्त्व पुंस्त्व भेल, तथा तादृशयोनिशालित्त्व स्त्रीत्व । क्षुद्रजन्तु सपनौर मूस लीख इत्यादि शब्द वाच्य जन्तुमे तथा माछ काछु गोहि घरिआर आदिमे दोषवारणार्थ मनुष्य प्रत्यक्ष योग्यत्व विशेषण देल अछि। लक्षणमे मनुष्यपदक उपादान नहि कयने क्षुद्र जन्तुप्रभृतिक स्वकीय प्रत्यक्षयोग्यता स्वावयवमे रहबाक कारण अतिव्याप्ति दोष रहिए जाइत तद्वारणार्थ मनुष्य पद देल गेल अछि । एतादृशे पुंस्त्वादिलिङ्ग लोकविदित अछि, तेँ लौकिक भेल । एतद्युक्त शब्दक रूपमे वैलक्षण्य ओ व्यवहारहुमे यथा - बाभन अयलाह, बाभनि अयलीह, एवंप्रकारक पुरुष ओ स्त्रीमे भिन्न-भिन्न रूप, तथा प्रथमसँ पुरुषक बोध, दोसरसँ स्त्रीव्यक्तिक । अपवाद-इआप्रत्ययान्त, भनसिआ जिरतिआ तिरहुतिआ इत्यादि तथा ऐआप्रत्ययान्त, बनैआ गमैआ इत्यादि अलिङ्ग थीक। एवम् कोन कतोक इत्यादि । एवंविध प्राणीमे प्रयोगार्ह शब्दमे अलिङ्ग लिखब आवश्यक छल किन्तु ओहि दिस विशेष ध्यान नहि देबाक कारण कोषमे त्रुटि रहल, तकर आब पूर्त्ति द्वितीयावृत्तिअहिमे होएबाक संभव ।

अ० संकेत विवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ अ० ई संकेत देल अछि तकरा अव्यय बुझब । अव्यय ओ थीक जाहिसँ आगाँ कोनो विभक्तिक श्रवण नहि हो । यथा नहू नहू (शमैः शनैः)।

यद्यपि कुत्र इत्यादिक स्थानापन्न कहाँ इत्यादि अव्ययसँ पर द्वितीया पञ्चमी तथा षष्ठी श्रूयमाण रहैत अछि यथा, कहाँकेँ बिदा भेलहुँ, कहाँसँ अयलहुँ कहाँक वासी थिकहुँ । एवम् कुत्र इत्याद्यर्थक तयप्रत्ययान्त 'कतय जतय' इत्यादि, एहूसँ उक्त तीन विभक्ति आगाँ रहैछ; तथापि एहि शब्दसबहिमे अव्ययत्त्व अवश्य मानबाक चाही, अन्यथा 'कहाँमे' 'कतयमे' इत्यादिओ प्रयोग होअय लागत । परन्तु तखन 'कहाँसँ' 'कतयसँ' इत्यादिक उपपत्ति कोना ? एहि शङ्काक समाधान ई जे जेना संस्कृतमे दिवाशब्द 'दिनमे' एतदर्थक अधिकरणप्रधा थीक से 'दिवाकर' एहिठाम दिनमात्र बोधक भय कतोक अबप्रत्ययान्त 'नुकाएब' 'छिरिआएब' इत्यादि दू धातु सँ बनैत अछि, श्रूयमाणधातुसं ओ श्रूयमाणधातुप्रकृतिक अबप्रत्ययान्त धातुसँ, यथा 'नुक्+अब-नुकाएब, 'नुकब्+अब-नुकाएब' एवम् 'छिरि+अब-छिरिआएब' 'छिरि अब्+अब-छिरिआएब' । प्रथमक तिङन्तरूप 'छिरिआइत अछि' 'छिरिआएत' इत्यादि । द्वितीयक 'छिरिअबैत अछि' 'छिरिआओत' 'छिरिअओलक' इत्यादि । एहिमे प्रथम अकर्मक, दोसर सकर्मक जानब । किन्तु कोषमे प्राय: एकेटा अर्थ लिखल अछि, कचित् सकर्मक, क्वचित् अकर्मक ।

यद्यपि 'छकब' इत्यादिशब्द व्याकरणहिसँ बुझबायोग्य होयत तथापि धात्वर्थज्ञानार्थ कोषहुमे देल ।

ना० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ ना० ई संकेत देल अछि ओकरा नामाधातु-प्रकृतिक अबप्रत्ययान्त जानब, यथा 'लठिआएब'-लाठीसँ मारब, 'टलिआएब'-टाल लगाएब। एकर तिङन्त रूप 'लठिअबैत अछि' 'लठिआओत' इत्यादि । ई सभ नामसँ जेँ बनैत अछि तेँ नामधातु कहबैत अछि ।

सं० हि० वि० संकेताविवरण

सं०, हि०, वि०, ईहो बाला क्रमश: संस्कृत, हिन्दी तथा विदेशी बुझब ।

वानरादिशब्दो वर्गीयबकारादिश्रेणीमे

मिथिलाभाषामे अन्त:स्था वकार नहि अछि, किन्तु जे संस्कृत अनुरूप गृहीत अछि 'वानर' आदि, ताहिमे संस्कृतानुरूपे वकार उचित । तस्मत् अनुरूपमे अन्तस्थे वकार कोषमे उल्लिखित कयल अछि । किन्तु अन्तस्थवकारबाला थोड़ शब्द अछि, तथा मैथिलीमे 'ब' 'व'क उच्चारणमे प्राय: भेद नहि अछि, अत: उभयक ऐक्य मानि अन्तस्थवकारादिको वर्गीयबकारादिशब्दश्रेणीमे लिखल अछि । किन्तु 'व' 'ब' यथोचिते लिखल अछि ।

व्याकरणसिद्ध अल्पे कोषमे

हम मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बनाओल, ओकर अङ्गभूत धातुपाठखण्डमे लगभग १२०० धातु पठित अछि, ओहिसँ प्रायः ४०००० कृदन्त ओ तद्धितान्त नाम सिद्ध होइत अछि; से सभ एहि कोषमे नहि देल अछि । हेतु जे ओहिसबहिक अवगम उक्त व्याकरणहुसँ भय सकैत अछि । तखन कोषकेँ अतिविस्तृत बनाएब व्यर्थ तथा अधिक प्रयत्नसाध्य, एवम् ओकर प्रकाशनो बहुव्ययसाध्य होइत । व्याकरणक प्रयोजनो तँ इएह थीक जे अल्पप्रयत्नेँ महान्सँ महान् शब्दपुञ्ज अवगत भय जाय । तथापि धातुक अर्थ बुझबाक हेतु उपदिष्ट धातु सबहिक केवल अबप्रत्ययान्त 'छकब', 'ताकब', 'बिकायब' इत्यादि शब्द एहिमे देल अछि ।

व्याकरणसँ ओतेक नाम कोना बहराइत अछि तकर दिग्दर्शन आब करबैत छी ।

एक 'देख' धातुसं ३० गोट कृदन्त रूप बनैत अछि । कारण जे धातुमात्रसँ प्रेरणामे अब्प्रत्यय अबैत अछि; तथा ओहि अब्प्रत्ययान्तसँ पुनः द्वितीय प्रेरणामे 'अब्' प्रत्यय संस्कृत णिच्प्रत्ययस्थानीय, अबैछ; एवंप्रकारेँ एक धातुसँ तीन धातु सिद्ध होइछ, यथा, 'देख्' 'देखब्', 'देखबब्' जकर तिङन्त रूप क्रमशः 'देखैत अछि', 'देखबैत अछि', 'देखबबैत अछि' इत्यादि होइत अछि । ओ धातुमात्रसँ दशविध कृत्प्रत्यय, 'अनिहार' आदि, अबैत अछि; तस्मात् दशक त्रिगुण तीस रूप, एक 'देख्' धातुक होयत । तद्भिन्न नामधातुक 'अँखिअओनिहार' इत्यादि कृदन्त रूप, तथा तद्धितान्त सेहो संभवतः तीन चारि हजार रूप हो । सर्वैकत्वेँ ४०००० वा तदधि के शब्द व्याकरणसिद्ध होएत । ताहिसँ प्रायः डेढ़े हजार व्याकरणसाधित शब्दक समावेश एहि कोषमे अछि । आब 'अनिहार' प्रभृति दश गोट कृत्प्रत्यय देखू :-

अनिहार	देखिनिहार	देखओनिहार	देखबओनिहार
अल	देखल	देखाओल	देखबाओल
अब	देखब	देखाएब	देखबाएब
अनाइ	देखनाइ	देखओनाइ	देखबओनाइ
ऐत	देखैत	देखबैत	देखबबैत
अने	देखने	देखओने	देखबओने
अना	देखना	देखओना	देखबओना
इ	देखि	देखाए	देखबाए
अय	देखय	देखबय	देखबाबय
ऐक	देखैक	देखबैक	देखबबैक

यद्यपि एहिमे अल ऐक प्रत्ययान्त तिङन्त थीक, तथापि कृदन्तो मन्तव्य,

अन्यथा 'पुस्तक देखब आवश्यक' 'देखल अछि', 'देखैक पड़त' इत्यादि प्रयोगक अनुपपत्ति होयत, ई विषय व्याकरणमे स्पष्ट अछि । एहि तीसहुसँ अतिरिक्त वैकल्पिक रूप सभ, यथा 'देखए' इत्यादि, तथा 'औबलि' प्रत्ययान्त 'देखौबलि' ।

देशभाषामे एक अर्थक एके शब्द, पर्याय नहि

देशभाषानिर्माणमे लाघवो एक कारण छल । अतएव घटादिबोधक 'घैल' इत्यादि एकके शब्द मैथिलीमे राखल गेल, संस्कृतवत् अनेक नहि । 'कलसधारी' 'कलसस्थापन', 'घटस्थापन' इत्यादि अनुरूपसंकृते थीक । एहिसँ इहो स्पष्ट होइछ जे जूता, ईटा इत्यादि शुद्ध मैथिली नहि थीक; कारण जे तद्बोधक पनही पजेबा इत्यादि मैथिली शब्द राखल अछि । यद्यपि जूता मैथिलीमे चिरप्रसिद्ध अछि तथा व्याकरणानुसार लठिआएब इत्यादिवत् जुतिआएब इत्यादिओ बनि चुकल अछि, तथापि ओ मैथिली भाषा नहि थीक, किन्तु हिन्दी तथा हिन्दीभव । यदि चिरप्रसिद्धत्वमात्रसँ शुद्ध मिथिलाभाषा मानल जाय तँ हजूर इत्यादिओ मैथिली कहाय सकत ।

बूड़ि, बुड़िबक, बकलेल, ढहलेल, बुड़िभतन इत्यादि जे समानार्थक जेकाँ बुझल जाइत अछि सेहो सभ किछु-किछु भेदापन्ने अर्थकेँ बुझबैत अछि, अतः पर्यायवाची नहि थीक । 'बूड़ि' भेल सामान्य अज्ञ; 'बुड़िबक' भेल बकसन बूड़ि अर्थात् उपस्थित विपत्तिकेँ अनुमानसँ शीघ्र नहि बुझनिहार । काकादिपक्षी दूरहुसँ हाथ उठओलापर शीघ्र आपत्तिक अनुमान कए उड़ि जाइत अछि, बक बेचारा अनभिज्ञ बैसले रहैत अछि, मनुष्यादि अति निकट अयलापर उड़ैत अछि । अतएव सरनरबाला बकमाराकेँ बक मारब सुकर होइत छैक । एवं 'बकलेल' ओ थीक जकरा नीक जेकाँ धोतिओ पहिरबाक ढङ्ग नहि । एहि रीतिसँ आनो-आनो भिन्नार्थके थीक से सूक्ष्मदृष्टिसँ विचार कयलापर बुझबाक योग्य भए जाएत । एवम् उपरसँ नीचाँ आघातबोधक अनेक धातु अछि यथा, 'हूरब' 'थूरब' 'थकुचब' 'चूरब' 'कूटब' 'ठोकब' 'तामब' इत्यादि । ओहो सब भिन्ने-भिन्न आघातविशेषक्रियाबोधक थीक । यथा-'हूरब' थीक स्तम्भादिक जड़िक माटिपर ओकर स्थैर्यार्थ मुसलादिसँ आघात । 'थूरब' थीक आघातसँ अनेक खण्ड नहि भेनिहार सर्पमुखदन्त-धोवनकाष्ठमुखादिपर यष्ट्यादिक अग्रभागसँ आघात । एहि रीति आनो सभ विभिन्नार्थके थीक ।

'ड़' 'र'-उभयवर्णयुतशब्द विचार

उत्तमकल्प-जाहि शब्दमे स्वरसँ आगाँ 'ड़' 'र' उभय वर्ण अछि, ताहिमे प्रथम 'ड़' ततःपर 'र' चाही, से हमरा ठीक लगैत अछि । हम एहि कोषमे लिखबाक परिपाटिओ ओएह राखल अछि । यथा, 'कड़रा' 'खड़रा' 'गड़र' 'घड़र' 'पाँड़रि' एहि सबहिक स्थानमे 'करड़ा' इत्यादि नहि लिखल अछि । तादृश शब्दक

औचित्यसाधक युक्ति प्रथम ई जे अनेक शब्दमे तादृश क्रम सयुक्तिक अछि; यथा, 'पटोल'क अपभ्रंश 'पड़ोर' थीक, मैथिलीमे टकारक स्थान ड़कार बहुधा दृष्ट अछि, यथा 'वीटी-बीड़ी', 'घटी-घड़ी', 'घोटक-घोड़ा', 'मोटक-मोड़ा' । एवम् संस्कृतशब्दक लकारक स्थानमे रेफ सेहो बहुत शब्दमे दृष्ट होइछ; यथा, 'हल-हर', 'गल-गर', 'फाल-फार', 'गाली-गारि', 'श्याल-सार' । तस्मात् 'पटोल' शब्दक अपभ्रंश 'पड़ोर' होयबाक चाही, 'परोड़' नहि । एवम् मण्डलशब्दक अभठ 'मड़रा' शब्द उचित, 'मरड़ा' नहि; कारण जे लकारकेँ रेफ तथा संयुक्तणकारक लोप बहुधा होइछ, यथा 'मण्ड-माँड़' 'दण्ड-डाँड़' 'शुण्डा-सूँढ़', 'मुण्ड-मूड़' । तथा 'पाटला' शब्दक अभठ उक्त प्रकारेँ 'पाँड़रि' शब्दे उचित । एवंप्रकारक अनेक दृष्टान्तसँ देशीशब्दहुमे तदनुसारे स्थिति मन्तव्य । दोसर हेतु जे 'कड़रा' 'करड़ा', 'कोड़रा' 'कोड़ा' इत्यादि द्विविध शब्दमे पहिल शब्दक उच्चारण मुखसुखावह अछि; तम्मात् 'कड़रा' इत्यादि देशी शब्द मुखसुखोच्चार्ये राखल गेल होएत, तेँ सन्देहदशामे तादृशे रखबाक चाही – ई उत्तम कल्प ।

मध्यम कल्प–पूर्वोक्त विषयमे मध्यम कल्प ई जे संस्कृतभव 'पड़ोर' इत्यादिमे पूर्वोक्त व्यवस्था रहओ, तथा जाहि एकपदक सार्थक पूर्वखण्डमे ड़कार निर्णीत अछि तथा उत्तरखण्डमे रेफ, यथा 'भँड़-हर', ताहूमे औचित्यत् पूर्वोक्त क्रम मन्तव्य । परन्तु जाहिमे एक पदक पूर्वखण्डमे रेफ उत्तरखण्डमे ड़कारे निर्णीत अछि यथा 'मुरबड़', ताहिमे तदनुसारे मन्तव्य होएत । कथ्य जे प्रमाण-सिद्ध 'ड़' 'र' बालामे तदनुकूले क्रम आवश्यक । किन्तु देशीशब्द जाहिमे क्रम प्रमाणित नहि अछि, यथा 'खड़रा' आदि, ताहिमे विपर्यस्तो बेजाए नहि; यथा 'खरड़ा' इत्यादि । तेँ देशीशब्द दुहू प्रकारक राखल जाए–ई मध्यम कल्प । परन्तु स्वरव्यवहित दू 'ड़' किंवा दू 'र' सर्वथा हेय, यथा 'खड़ड़ा' 'खररा' । एहि मध्यम कल्पमे कोषोक्त 'खड़रा' इत्यादिक वैकल्पिक रूप 'खरड़ा' इत्यादि बोद्धव्य ।

'मघोन'शब्दादिविचार

किञ्चिन्मेघयुत समयसदृश समयक तात्पर्यँ अनेक शब्द उपस्थित होइछ – 'मेघोन' 'मेघओन' 'मेघाओन' 'मेघौन', एहिमे उत्तम कल्प जे 'ललोन' शब्दसादृश्यात् 'मेघोन' मात्र राखल जाए । मध्यम कल्प जे आदितः तीन गोट राखल जाए, केवल अन्तिम संस्कृतविरुद्ध औकारक प्रवेशसँ त्याज्य । एवम् 'जड़ोन' 'जड़ओन' 'जड़ाओन' 'जड़ौन' इत्यादिअहुमे । तथा 'अमताइनि' 'अमतानि' 'अमतैनि' इत्यादि त्रिविध रूपमध्य प्रथममात्र किंवा आदितः उभय ग्राह्य, अन्तिम पूर्वोक्तकारणेँ सर्वथा हेय ।

फूल, फड़, गाछ, तीनूक एके नाम

जे नाम जाहि फड़क कोषमे लिखल अछि से नाम ओकर गाछहुक बुझबाक

चाही; यथा, 'आम-आम्र, फलविशेष' एवं समुल्लिखित अछि, से आम संज्ञा ओकर गाछहुक; उदाहरण, 'आम खाएल', 'आमक जारन' । एवं जे फूलक नाम से ओकर गाछहुक; यथा, 'सोनहुल फूल' 'सोनहुलक सीर' । जे गाछमे फड़ए से फड़ थीक, अतः धान्यादिको फड़ भेल, तेँ गाछ ओ फड़ दुहूक नाम धान; उदाहरण, 'ढाढ़मे धान अछि', 'धान काटल' ।

कोषमे फलविशेष पुष्पविशेष वृक्षविशेष एना अर्थ लिखल अछि से उपलक्षण थीक । जकर फूले उपयुक्त वा फड़े, वा वृक्षे, वा जे स्मृतिपथारूढ़ भेल, तकरे उल्लेख कएल । अतः कदम्बादिमे पुष्पविशेष अर्थ लिखल, वस्तुतः ओकर पुष्पविशेषो अर्थ लिखि सकी, फलविशेषो एवं वृक्षविशेषो; हेतु जे कदम्बादिसंज्ञा तीनूक थीक ।

यद्यपि 'आम' आदि फलमात्रक नाम मानी, 'आमक जारन' इत्यादि व्यवहारमे 'आम' आदि ओकर गाछमे लाक्षणिक मानी से संभव थीक, किन्तु 'आम'आदि गाछहिक नाम रहओ, 'आम खाएल' इत्यादि स्थलमे 'आम' आदि फलमे लाक्षणिक रहओ सेहो कहि सकैतछी । तस्मात् विनिगमनाविरहसँ दुहू अर्थ ओकर वाच्ये मन्तव्य । किञ्च, दुहू अर्थमे मुख्यव्यवहारे बुझल जाइछ, गौणव्यवहार नहि ।

कतहु-कतहु एकर अपवाद अछि । यथा, 'कमल' संज्ञा फूल-मात्रक थीक, ओकर गाछक नहि; गाछक नाम 'पुरैनि' थिक । अतएव 'पुरैनिक पात' व्यवहृत अछि, 'कमलक पात' नहि । तथा फलक नाम 'बजरबट्टू' गाछक नाम 'ताड़ी', अतएव ओकर पात 'तड़िपत' कहबैत अछि जाहिमे पहिने ग्रन्थ लिखल जाइत छल । आम्रादिक मजर यद्यपि फूले थीक, किन्तु वैजात्यक कारणेँ ओ फूल नहि कहबैत अछि । संस्कृतहुमे ओ 'पुष्प' नहि कहाए 'मञ्जरी' कहबैत अछि ।

पुष्प फल वृक्ष नामक प्रसङ्ग संस्कृतहुमे तुल्ये सिद्धान्त अछि; विशेष ई जे आम्रादिशब्द फलमे नपुंसक लिङ्ग, वृक्षमे पुंलिङ्ग ओ पुष्पमे लिङ्गभेद नहि ।

रङ्गबोधक नाम ओहि रङ्गसँ रँगलहुक

'लाल' 'पीअर' इत्यादि रङ्गबोधक कहल अछि, से ओहि रङ्गसँ रङ्गल वस्त्रादिअहुमे प्रयोक्तव्य, यथा 'लाल रङ्ग' 'लाल वस्त्र' । रँगल ई उपलक्षण थीक ओहिरङ्गक वस्तुक, अतः 'लाल फूल, इत्यादिओ व्यवहार उपपन्न भेल ।

कतोक संस्कृतशब्द अग्राह्य

संस्कृतमूलक मिथिलाभाषामे संस्कृत शब्द लेल जाइछ, ताहिसँ संकीर्णतादोष नहि । किन्तु कतिपय भाषाशब्दक मूलभूत संस्कृत शब्द नहि व्यवहृत होइछ, यथा 'सब' शब्दक मूल 'सर्व' शब्द थीक, ओकर व्यवहार मैथिलीमे नहि हाइछ । एवम् 'तत्' 'यत्' इत्यादिओ अग्राह्य । एवम् ऋकारन्त 'पितृ' 'मातृ' इत्यादिओ । ओकरा

स्थान पिता माता इत्यादि प्रथमैकवचनान्ते बाजल जाइछ, तथा राजन्, दानिन् इत्यादि प्रातिपादिक राजा दानी इत्यादिरूपहिँ व्यवहृत होइछ, से सभ 'मिथिलाभाषाविद्योतनमे स्पष्ट अछि ।

ओकारान्त, वान्त

ओकारान्त 'जओ' 'घाओ' इत्यादि जे शब्द कोषमे लिखल अछि से सभ पूर्वमे अन्तस्थावकारान्त छल किन्तु संप्रति आकारान्ते व्यवहृत भए रहल अछि । केवल 'एव' 'अपि'क योजनामे बान्ते व्यवहृत होइत अछि । यथा, 'जओ बाग कएल', 'आब जबे नहि, 'जबो लाएब' 'नाबे नहि' 'नाबो फूटल' 'नाबहिसँ' पार होएब, 'छओ गोट' 'छबेटा' 'छबोटा' ।

ओकारान्त व्यवहारक कारण अछि ओकार वकारकेँ किञ्चित् ध्वनिकृत तुल्यता । अतएव हमरा लोकनि 'पठाओल' लिखैत बजैत छी, केओ केओ 'पठावल' लिखैत छथि । तस्मात् 'नाव' 'घाव' इत्यादि लेख असंगत नहि ।

ऐ औ वर्णविचार

ऐकार तथा औकार सन्ध्यक्षर कहबैत अछि; कारण जे 'अइ' एतदुभय वर्ण मीलि ऐकार एवम् 'अउ' एतद्वर्णद्वय मीलि औकार नृसिंहवत् विलक्षणजातिक वर्ण बनैत अछि । अतएव ऐकारक स्थान कण्ठतालु, औकारक कण्ठओष्ठ पाणिनीय-शिक्षादिमे प्रतिपादित अछि । जेँ 'अइ' एतदुभयावयवक ऐकार तथा 'अउ' एतदुभयावयवक औकार थीक तेँ मिथिलाभाषामे संस्कृतभिन्न शब्दमे 'ऐ' 'औ' क स्थानमे 'अइ' 'अउ' लिखब असंगत नहि । यथा 'कहैत' 'कहइत', 'कौड़ी' 'कउड़ी' ।

हिन्दीमे 'अए'-'अओ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' म्लेच्छ-भाषावत् मानल अछि । म्लेच्छ-भाषामे एकाकारक लिपि अनेक वर्णक अभिव्यञ्जक होइत अछि । परन्तु ओकर बहुत दिनसँ संघर्ष भेलहुपर संस्कृतविरुद्ध खकार-गकारादिक प्रवेश शुद्ध हिन्दीमे नहि भेल । तथा म्लेच्छभाषाक संपर्कवश 'कहिस' 'कहिन' इत्यादि जे हिन्दीमे व्यवहृत होअय लागल छल तकरा हिन्दी व्याकरणकार हटओलैन्हि । किन्तु संस्कृत-विरुद्ध 'ऐ' 'औ' हिन्दीमे रहिए गेल । हमरा अनुमानेँ अतिपूर्व 'जाते हौ' इत्यादिक स्थान 'जाते हओ' इत्यादि लिखल जाइतँ छल । यदि म्लेच्छभाषासंपर्कसँ पूर्वक लेख भेटैत तँ एकर स्पष्टीकरण भय जाइत । लोचनकृत 'रागतरङ्गिणी'मे 'है' एकरा स्थान 'हए' एतादृश लेख पाओल जाइत अछि । अस्तु, संप्रति हिन्दीमध्य संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ'क लेख सिद्धवत् भय गेल अछि । प्रत्युत सन्देह जनु हो जे कीदृश ध्वनि-व्यञ्जकतया 'ऐ' 'औ' लिपि कयल गेल अछि एहिहेतु एहनसन हिन्दीमे नियम भय गेल अछि जे अनुरूपसंस्कृतभिन्न शब्दमे संस्कृतविरुद्धे 'ऐ' 'औ' क उच्चारण हो ।

मिथिलाभाषामे 'ऐला', 'घैल', 'मैल', 'पैली', 'औलबौल', 'चौठि', 'बौँसब', इत्यादि अनेकशतसंख्यक सकल नाममे संस्कृतानुरूपे 'ऐ' 'औ' इदानींपर्यन्त सकल मिथिला देशमे व्यवहृत अछि । ताहिमे कृत्रिम कय दुष्ट ऐकारादि चलाएब नितराम् अनुचित ओ असंभव थीक । तस्मात् मिथिलाभाषामे सर्वत्र 'अइ' एतादृशध्वनिके ऐकार एवम् 'अउ' एतादृशध्वनिके औकार मन्तव्य ।

अतः हिन्दीक वासनासँ चलाओल 'ऐलाह' 'जैब' 'औताह' 'पौल' इत्यादिक स्थान 'अएलाह' 'जाएब' 'अओताह' 'पाओल' इत्यादिए परिशुद्ध मानबाक चाही । विद्यापति, मनबोध, गोविन्द प्रभृतिक लेखमे 'गाओल' 'पाओल' इत्यादिए शब्द अछि 'गौल' 'पौल' इत्यादि नहि; अन्यथा 'उचित वर पाओल' इत्यादिमे छन्दोभङ्ग दोष आपतित होयत ।

कतोक व्यक्ति हिन्दीक अनुकरण कय 'अए' 'अओ' एहि दुहूक स्थान 'ऐ' 'औ' लिखय लागल छथि । यथा 'अएना' एकरास्थान 'ऐना', 'पओताह'क स्थान 'पौताह' इत्यादि । कतोक व्यक्ति तँ 'आए' तथा 'आओ' एकरो स्थान 'ऐ' तथा 'औ' लिखैत छथि । यथा 'आएल' एकरा स्थान 'ऐल' 'पाओल'क स्थानमे 'पौल' इत्यादि । किन्तु ई लेख सर्वथा अनुचित थीक ताहिमे अनेक कारण ।

(क) मैथिली संस्कृतसँ उत्पन्न भेल अछि । अतः एकर वर्ण ओ लेख संस्कृतहिक अनुसार उचित ।

(ख) व्याकरणक अनुसार मैथिलीमे भूतकालमे धातुसँ पर 'अल' प्रत्यय अबैत अछि; यथा, 'देखल' 'पढ़ल' । अतः 'धर' धातुमे 'अल' लगओलापर 'धरल' रूप बनल; ताहिमे 'र' क स्थान 'य' आदेश भेलापर 'धयल' रूप भेल; ततः पर 'य'केँ वैकल्पिक 'ए' आदेश (जे सार्वत्रिक अछि) कयलापर 'धएल' बनैतअछि । एवं 'पब'धातुसँ 'अलक' प्रत्यय अयलापर 'पबलक' ई बनल; ताहिमे 'ब'केँ ओकार आदेश (जे 'नाब' 'नाओ', 'यव' 'जओ' इत्यादिमे दृष्ट अछि) कयलापर 'पओलक' एतादृश रूप बनल; 'पौलक' एहन नहि । एहि प्रकारेँ साधन-प्रक्रिया देखलासँ स्पष्ट होइछ जे 'अए' 'अओ' इएह शुद्ध थीक ।

(ग) शब्दक मूल देखलासँ ई आओरो स्पष्ट भय जाइत अछि; यथा 'कओर' शब्द 'कवल' शब्दसँ सिद्ध भेल अछि, अतः 'व' क स्थान ओकार भेलापर 'कओर' शब्द सिद्ध भेल, 'कौर' नहि ।

(घ) ककरो मत अछि जे उच्चारणक अनुरोधेँ 'धएल'क स्थान 'धैल' लिखबाक चाही । परन्तु इहो उचित नहि, कारण जे विलम्बित वृत्त्या उच्चारण कयलासँ 'धएल' इत्यादिए उच्चरित होइछ । किन्तु शीघ्रतया उच्चारणमे किछु ध्वनिक अन्तर होइछ से मानहि पड़त । बजबाक काल लोक शीघ्रताक कारण

भाषाक वास्तविक स्वरूपकेँ बहुत विकृत कय दैत अछि; यथा, 'करैत अछि'-'करैए', 'नहि'-'नै', 'पओलहुँ'-'पौलौँ' । किन्तु ई सभ रूप शिष्ट मैथिललोकनि नहि लिखैत छथि ।

(ङ) यदि केओ कहथि जे लेखलाघवार्थ विलक्षण 'ऐ' 'औ'क स्वीकार कर्तव्य; 'धएल' 'पठाओल' 'अएना' इत्यादिक स्थान 'धैल' 'पठौल' 'ऐना' इत्यादि लेखमे एक आखरक लाघव अछि । एहिपर वक्तव्य जे ई लाघव उपकारकसँ अधिक अपकारके होएत । कारण जे एहि स्थितिमे एकाकारके 'ऐ' 'औ' लिपिकेँ दू प्रकारक ध्वनिक अभिव्यञ्जक मानय पड़त; तखन 'ऐक्य' 'कैल' 'धैल' 'ऐना' 'औन्नत्य पौल' 'और 'ढौरब' इत्यादिमध्य कोन शब्दमे 'ऐ' 'औ' कीदृश स्वरक अभिव्यञ्जक थीक एकर व्यवस्था मैथिलेतरकेँ तथा नेना सभकेँ कठिन भय जयतैन्हि । हमरा मतेँ 'ऐक्य' 'पाओल' 'चैल' 'अएना' 'औन्नत्य' 'पाओल' 'आओर' 'ढौरब' इत्यादि व्यवस्थित अभ्रान्त लेख होइतअछि । वस्तुत: एकपदमे लाघव-गौरव-विचारे नहि अछि अन्यथा 'एक' 'दू' 'तीनि' 'चारि' 'पाँच' इत्यादिक स्थान 'ए' 'दू' 'ती' 'चा' 'पा' चलाओल जाइत; एवम् 'प्रमदवनविहारीशरण' एहन-एहन नाम नहि राखल जाइत ।

एवम् लाघव एकतर पक्षक समर्थक ततहि होइत अछि जतय दुहू पक्ष समकक्ष हो । किन्तु दोषावह एकतर पक्षक समर्थक नहि भय सकैत अछि । तस्मात् शास्त्रप्रातिकूल्य तथा भ्रमजनकत्व एहि प्रधान दू दोषसँ दुष्ट 'ऐ' 'औ' परिग्रह पक्षक समर्थक नहि होएत ।

(च) 'ऐ' 'औ' अंशमे हिन्दीक सादृश्यपर जोर देनिहारकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे मैथिलीकेँ संस्कृतसँ जे योनिसम्बन्ध छैक से हिन्दीसँ नहि; तथा हिन्दीक कतबो उत्थान होयत तथापि संस्कृतक स्थान ओकरासँ उच्चे रहत । अत: हिन्दीक अनुसरणक अपेक्षया संस्कृतहिक अनुसरण करब उचित । हिन्दीभाषा मैथिलीक सहज थीक, ताहिमे यदि एक उपजीव्यविरोध करय तँ ओकर अनुकरण कय दोसरो उपजीव्यविरोध करय से उचित नहि ।

(छ) आठम शताब्दीसँ लय बारहम शताब्दी समय धरि मैथिलीक जे केओ विद्वान् मैथिलीमे किछु लिखलैन्हि से सभ 'अए' 'अओ' इएह लिखलैन्हि 'ओकरा स्थान 'ऐ' 'औ' नहि । अत: एतेक दीर्घकालसँ चल आयल निर्दुष्ट परम्पराकेँ तोड़िकेँ मैथिलीकेँ हिन्दीक अनुगामी बनाएब सर्वथा अनुचित ।

(ज) संस्कृत-विरुद्ध 'ऐ' 'औ'क स्वीकर्ता लोकनिक लेख कोनो व्यवस्थापर नहि अछि । 'आएल' 'पाओल' इत्यादिक स्थान ओ लोकनि 'ऐल' 'पौल' लिखैत छथि, तदनुसार 'जाए' 'जाओ' एकरो स्थान सर्वत्र हुनका 'जै' 'जौ' लिखबाक

चाही; यथा 'आएल जाए' 'आएल जाओ' इत्यादिक स्थान 'ऐल 'जै' 'ऐल जौ' इत्यादिक लेख करब उचित; एवम् 'माए' 'गाए' इत्यादिक स्थान 'मै' 'गै' लेख कर्तव्य । किन्तु से नहि लिखैत छथि । बहुत व्यक्ति तँ एहनो छथि जे कतहु 'पौल' ओ कतहु 'पाओल' लिखैत छथि । किन्तु परिनिष्ठित आधुनिक बहुसंख्यक विद्वान् जे लोकनि मैथिलीभाषातत्त्वक अनुसन्धान कएलैन्हि अछि ओ जे मैथिलीक परिनिष्ठित लेख कीदृश होयबाक चाही तकर विचार करैत छथि से सभ 'अए' 'अओ' सएह लिखैत छथि । प्रतिष्ठित प्रकाशको लोकनि अधिकांश एही लेखमे अपन-अपन पुस्तक प्रकाशित कयलैन्हि अछि । पटना विश्वविद्यालयक मैथिलीविभाग सेहो एही पक्षक समर्थक छथि । एही लेखक ग्रन्थ सब सर्वत्र पठन-पाठनमे अछि । 'मैथिली-साहित्यपत्र' तँ सुतराम् एहि पक्षमे छल ।

अत: एहि कोषमे 'अए' 'अओ' एकरा स्थान वैकल्पिक रूपहु संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ' नहि लिखल अछि ।

ड ढ द्विविध

'ड' दू प्रकारक अछि—मूर्द्धस्थानमे सरल जिह्वाग्रक संयोगजन्य तथा ओही स्थानमे वक्रीकृत जिह्वाग्रक आघातजन्य । एहिमे प्रथम प्रकारक 'ड' पदक आदिमे तथा संयुक्तमे उच्चरित होइत अछि; यथा 'डर' 'अड्डा' 'पण्डा'; द्वितीय प्रकारक 'ड' स्वरसँ आगाँ असंयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'कड़ी' 'गाड़ी' । यादृश ध्वनिक डकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज बुझब । जेना वक्रीकृताङ्गुल्यग्रसँ तन्त्रीमे आघात कयल जाइछ, तेना वक्रीकृत जिह्वाक अग्रसँ आघात कयने ई वर्ण उत्पन्न होइछ ।

एहि दुहू 'ड'क ध्वनिमे किछु भेद रहलहुपर एके स्थानमे जिह्वाग्रक स्पर्शसँ उत्पत्ति होएबाक कारणेँ वर्णभेद नहि मानल जाइत अछि, किन्तु एकजातीयते । 'क' 'ख' इत्यादि जे भिन्न जातिक होइत अछि से प्रयत्नक विभिन्नताक कारणेँ । 'ड'द्वयमे शास्त्रोक्त प्रयत्नहुक भेद नहि अछि । एवम् 'ढ' सेहो डकारवत् द्विविध अछि, संयोगज ओ आघातज । एकरो नियम डकारवते अछि । संयोगज 'ढ' पदक आदिमे ओ संयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'ढक्का' 'बड्ढी' । आघातज 'ढ' स्वरसँ आगाँ उच्चरित होइछ, यथा' 'गढ़' 'बेढ़' । यादृश ध्वनिक ढकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज जानब । 'ड' ओ 'ढ' मे विभिन्नता अल्पप्राणतामहा-प्राणतात्मक प्रयत्नक भेदसँ होइत अछि । वर्णक स्थान ओ प्रयत्न आगाँ कहब ।

दुहू ड तथा ढ मे ध्वनिभेदसूचक कोनो चिह्न (तरमे बुन्दा) देबाक व्यवहार अतिपूर्व नहि छल । अत: हम आघातज 'ड' 'ढ'क नीचाँ बुन्दा नहि दय समाने लेख कयल अछि । दोसर कारण जे भेदसूचक चिह्न बेत्रेको बजबाक प्रकृतिक अनुसारेँ

स्वत: उच्चारणमे भेद भय जाइत अछि । अस्तु, एमहर आबि आघातजक तरमे भेदसूचक बिन्दु देबाक परिपाटी चलल अछि; ताहिमे हमहुँ सहमते छी ।

यकार-षकार विचार

यकारक द्विविध उच्चारण अछि; चवर्गतृतीयवत् तथा 'एअ' एतदुच्चारणवत्– प्रथम प्रकारक 'यमुना' 'यशोदा' इत्यादि संस्कृत शब्दहिमे अछि; द्वितीय प्रकारक 'कय' 'जाय' 'खाय' इत्यादिमे, तथा 'क्य' 'ख्य' इत्यादिमे प्रसिद्ध अछि । यथोचित उच्चारणबाला यकारक लिपिक नीचाँ असंयुक्तमे बिन्दु वा तिर्यक् रेखा मिथिलाक्षरमे देल जाइत अछि ।

मिथिलामध्य यजुर्वेदशाखीय लोकक संख्या अधिक रहबाक कारण यजुर्वेदवत् ओकर द्विविध उच्चारण प्रचलित भेल । अतएव षकारहुक उच्चारण तदनुसार पुराणादिकहुमे प्रचलित भेल । यजुर्वेदक माध्यन्दिनीयशाखाक प्रातिशाख्यमे कहल अछि 'षकारस्य खकार: स्याट्टुकयोगे तु नो भवेत्, अर्थात् षकारक उच्चारण खकारवत् हो परन्तु टवर्गक योगमे नहि । एहि अनुसारेँ 'पुरुष' आदिमे सर्वत्र षकारक कवर्गद्वितीयवत् उच्चारण, केवल टवर्गक योगमे 'कष्ट' 'विष्णु' इत्यादि शब्दमध्य मूर्द्धन्यहिक उच्चारण होइछ ।

परन्तु अत:पर षकारक प्रसङ्ग संशोधन कयल गेल अछि । उक्त प्रातिशाख्यानुशार उच्चारण करब यजुर्वेदहिमे उचित, आन वेद वा पुराणादिमे नहि, से धर्मधुरीण कर्मठप्रवर बाबू श्री गुणेश्वरसिंहप्रभृति तथा जगद्विख्यात विद्वद्वरेण्य श्रीबच्चा झा प्रभृतिक सिद्धान्त भेल । अतएव आब हमरा लोकनि षकारक उच्चारण संशोधनानुसार कय रहल छी । समुचितो इएह थीक । यदि उक्त प्रातिशाख्यानुसार सर्वत्र उच्चारणव्यवस्था मानी तँ 'ऋण' क स्थान 'रेण', 'संस्कृत'क स्थन 'संस्क्रेत', 'हर्ष'क स्थान 'हरेष' इत्यादिओ बाजय पड़त; हेतु जे यजुर्वेदमे तादृशे उच्चारण युक्तिसंगत अछि ।

यकारक द्वैविध्य केवल मिथिला ओ बङ्गला दुइए देशमे व्यवहृत अछि, अन्यत्र यकारक स्थानप्रयत्नानुकूल यथोचित एके प्रकारक उच्चारण अछि ।

आब जाहि शब्दमे यादृश यकारक उच्चारण मिथिलामे व्यवहृत अछि तकर उल्लेख करैत छी । शब्दक आदिमे यकारक जकारवत् उच्चारण होइत अछि; यथा, 'यम' 'योग' । पदक मध्यमे यथोचित; यथा, 'नियम' 'प्रयोग' 'बेजाय' 'जाय' । एकर अपवाद-एकपदस्थ स्वरमात्रव्यवहित दू 'य' क उच्चारण जकारवत्; यथा, 'युयुधान', 'युयुत्सु'; तथा रेफोत्तरवर्ती यकार जकारवत्, यथा 'आर्य' 'वर्य' 'हर्यक्ष' ।

वर्गचतुर्थ-वर्णविचार

वर्गक चारिम घ् झ् ढ् ध् भ् एहि पाँच वर्णक यादृश ध्वनि सुनल जाइछ, तेहनेसन ध्वनि 'अह्' परक तद्वर्गीय तृतीय वर्णहुक होइछ । अर्थात् 'घ्'-'गह',

'झ्'-'जह्' इत्यादि तुल्यश्रुतिके होइत अछि । एहि कारणेँ क्वचित्-क्वचित् दुहू व्यवहृत होइत अछि; यथा, 'मघी' 'मगही', 'सोझाँ' 'सोजहाँ', 'साढ़ू' 'साड़हू', 'खोधा' 'खोदहा', 'उभी' 'उबही' इत्यादि दुहू बाजल ओ लिखल जाइछ ।

परन्तु जाहि ठाम चतुर्थ वर्णसँ आगाँ दीर्घस्वर अछि ताहि ठाम ई विषय; अत: 'पैघ' 'बोझ' 'टेढ़' 'बाध' 'थोभ' इत्यादि स्थलमे आगाँ ह्रस्व रहबाक कारण द्वितीय प्रकारक उच्चारण नहि । प्रत्युत तद्भिन्न स्थलहुमे क्वचिदेव । उत्तम कल्प तँ चतुर्थ वर्णहिक बाजब ओ लीखब ।

रौदा घैला इत्यादि अशुद्ध

'रौदा भेल', 'घैला लाउ' इत्यादि अशुद्ध थीक; 'रौद भेल' 'घैल लाउ' इत्यादिए शुद्ध । कारण जे 'घैल' इत्यादिए नाम थीक । भ्रमक हेतु ई जे 'घैल' 'रौद' 'कोबर' 'माँडब' 'तिलकोड़' 'सोन' इत्यादि बहुत शब्दकेँ विभक्तिसँ पूर्व दीर्घ होइछ, 'घैलाक जल रौदामे' 'सोनाक माला गरामे', इत्यादि । कतोक साक्षरो व्यक्ति एहि भ्रममे पड़ैत छथि । एहि हेतु व्याकरण देखब आवश्यक । तस्मात् 'घैलाक जल, तिलकोडाक पात' इत्यादि प्रयोग देखि 'घैल' 'तिलकोड़' प्रभृति शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे कर्त्तव्य ।

शब्दक अर्थ त्रिविध

शब्दक अर्थ तीन प्रकारक होइत अछि–वाच्य, लक्ष्य ओ व्यङ्ग्य । ताहिमे वाच्य अर्थ ओ थीक जकर प्रथमत: शब्दसँ स्मरणद्वारा बोध हो । यथा 'आगि लाउ' एहि वाक्यमे 'आगि' शब्दसँ अग्निरूप अर्थ उपस्थित भय अवगत होइत अछि । लक्ष्य अर्थ थीक प्रथमोपस्थित अर्थमे असंगति किंवा तात्पर्यक अनुपपत्तिसँ तत्सम्बन्धी जाहि आन अर्थक अवगति हो से; यथा 'क्रोधेँ आगि भय गेलाह' एहि ठाम प्रथमोपस्थित अग्निरूप अर्थ असंगत अछि, तेँ संतप्तत्वरूपधर्मसँ अग्निसदृश अर्थ अवगत होइत अछि; तस्मात् 'आगि' शब्दक दीप्त तथा अग्निसदृश अर्थ लक्ष्य भेल । एवम् मनुष्यमे कहल जाइत अछि जे 'ई मनुष्य नहि थिकाह' एहि ठाम वाच्य अर्थ असंगत अछि, तेँ 'मनुष्य' शब्दसँ मनुष्योचितक्रियावान् प्रतीयमान अर्थ लक्ष्य भेल ।

जयबापर उद्यत अतिथिकेँ गृहस्थ कहल जे 'सन्ध्या भेल, अहाँक गाम दूर अछि ।' एहिसँ ई व्यङ्ग्य भेल जे अहाँ एखन गाम जनु जाइ, आइ राति हमरहि ओहि ठाम रहू ।

नैयायिक लोकनि शब्दक वाच्य ओ लक्ष्य दुइएटा अर्थ मानैत छथि ।

लेखापेक्षया बजबामे भेद

लेखापेक्षया बजबामे स्वाभाविक कोनो-कोनो शब्दमे किछु-किछु भेद भय जाइत अछि; यथा, 'देखलहुँ' ई शुद्ध थीक से जननिहारो 'देखलौँ' बाजि उठैत

छथि। तकर कारण बजबामे शीघ्रता। एवम् 'नहि'क स्थान 'नै', 'कियेक'क स्थान 'किये', 'एतय'क स्थान 'एत'। एवं शीघ्रोच्चारणमे पूर्वोच्चारित शब्दक अन्तिम अकार प्रायः हटाय देल जाइछ; यथा, 'रामदेव राम्देव', 'बलजोरी-बल्जोरी'। एवं प्रकार मध्यवर्ती अकारक बहुधा अनुच्चारण होइछ जेना इङ्गलिशमे होइत अछि। एतादृश उच्चारणक चालिसँ बहुत शब्द सन्दिग्ध होइछ जे अकारमध्यक थीक वा तद्रहित; यथा, 'अनहेर'-'अन्हेर'; ताहि ठाम अगत्या दुहू शुद्धे मानैक पड़त।

वर्णक स्थान

जाहि वर्णक जे स्थान थीक ताहि स्थानमे जिह्वाव्यापारसँ सुस्पष्ट वर्ण उच्चरित होइत अछि। जकर जिह्वा मोट रहैत अछि ओकरा यथोचित स्थानमे यथावत् जिह्वाक असम्बन्धसँ सुस्पष्ट बाजल नहि होइछ। किञ्च, वर्णोच्चारणयोग्य जिह्वायुक्तो व्यक्ति यदि जोरसँ स्थानान्तरमे जिह्वाव्यापार करथि तँ दुष्टवर्ण उच्चरित होयत। तस्मात् वर्णक स्थानज्ञान आवश्यक। अतः वर्ण सबहिक स्थान कहैत छी।

ओष्ठसँ आरम्भ कय लबलबीक समीप पर्यन्त आस्य थीक, ताहिमे वर्णक स्थान पाँच गोट अछि–कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त तथा ओष्ठ। एहि पाँचे स्थानमे जिह्वाव्यापार-जन्य वायुसंयोगसँ वर्णक अभिव्यक्ति वा उत्पत्ति होइत अछि। लबलबीसँ नीचाँ कण्ठविवरक प्रारम्भदेश कण्ठस्थान; ताहिसँ नीचाँक मुखावयव मूर्धा; दन्तसंयुक्त देश दन्तस्थान; तथा मुखक अन्तिम अवयवद्वय ओष्ठस्थान थीक। उक्त क्रमेँ मुखावस्थित एही पाँचो स्थानक क्रमेँ वर्णमालामे कवर्गादि पवर्गान्त पाँचो वर्गक उपन्यास अछि। यथा सर्वोच्च कण्ठस्थानवाला क, ख, ग, घ, ङ; ताहिसँ निम्न तालुस्थानबाला च, छ, ज, झ, ञ; ताहिसँ निम्न मूर्द्धस्थानबाला ट, ठ, ड, ढ, ण; ताहिसँ नीच दन्तस्थानजन्य त, थ, द, ध, न; ताहूसँ अगिला ओष्ठस्थानभव प, फ, ब, भ, म विन्यस्त अछि। जेना स्थान-स्थितिक क्रमेँ कवर्गादि पाँचो वर्ग पठित अछि तहिना य, र, ल, व इहो चारू अन्तस्थो वर्ग तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ, एहि क्रमशः अधोऽधःस्थित चारि स्थानक्रमेँ पठित अछि। एवम् ऊष्महुमे हकार छोड़ि आओर श, ष, स, तीनूवर्णक न्यास स्वस्वजनकस्थानक्रमहिँ अछि। यद्यपि स्थानक्रमें ह श ष स 'एना' पाठ उचित छल किन्तु सर्वोच्चकण्ठस्थानबाला हकार सभक आगाँ पढ़ल गेल तकर कारण अन्वेष्टव्य थीक। एक ई हेतु भय सकैत अछि जे हकारक नियमतः कण्ठेस्थान नहि, 'ह्म' 'ह्य' इत्यादि हकारक ककरो मतेँ वक्षःस्थान थीक। तस्मात् ओकर पाठ वैलक्षण्यात् सभसँ आगाँ कयल गेल हो।

एवम् अ इ उ ऋ ऌ एहि एकैक स्थानबाला पाँच स्वरमे केवल उकारकेँ छोड़ि अन्य चारू स्वरक पाठ कण्ठादिस्थान क्रमहिँ अछि। उचित छल जे 'अ इ ऋ ऌ उ' एहिक्रमेँ पाठ कयल जाइत, किन्तु ऋ ऌ तथा ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षर

थीक तेँ ओहि पाँचोकेँ एक संघीकरणक हेतु उकारसँ आगाँ ऋ ऌ पढ़ल गेल– तखन अ इ उ एकर पाठ स्थान क्रमहिँ अछि; तथा ऋ ऌ एवम् ए ऐ ओ औ एकरो पाठ तदनुसारे अछि – तालुस्थानबाला ए ऐ प्रथम, ततःपर ओष्ठस्थानबाला ओ औ। एकैक स्थानबाला अकारादि ऌकारान्तक पाठोत्तर उभयस्थानबाला एकारादिक पाठ अछि। एतावता वर्णमालामे वर्णस्थितिक क्रम स्थानक्रमेँ अछि तकर स्पष्टीकरण भेल। प्रकृतमनुसरामः।

दन्त, मूर्धा, तालु तीनूकेँ थोड़-थोड़ अन्तर अछि। दन्त-देशसँ आगाँ उच्च-देश मूर्धा ओ ताहिसँ आगाँ लगले नीच देश तालु थीक। वर्णोत्पादक तालुक भागसँ कण्ठस्थान दूर अछि। यद्यपि 'तारु' शब्दसँ प्रसिद्ध तालु कण्ठसँ नीचाँ मूध सिँ ऊपर समग्र थीक, किन्तु मूर्धसंलग्ने तालुभाग वर्णोच्चारणमे साधक अछि।

जिह्वाक मूल, मध्य, अग्र, तीन भागमे कोनो-कोनो वर्णक उत्पत्तिमे उपकारक होइत अछि। कवर्गक उच्चारणमे जिह्वाक प्रारम्भभाग, चवर्गक उत्पादनमे जिह्वाक मध्यभाग, तथा टवर्ग ओ पवर्गक उच्चारणमे अग्रभाग उपयुक्त अछि।

प्रत्येक वर्णक स्थानकथन

अ क ख ग घ ङ ह	७ वर्णक	कण्ठस्थान
इ च छ जझ ञ य श	८ वर्णक	तालुस्थान
ऋ ट ठ ड ढ ण ड़ ष	८ वर्णक	मूर्धस्थान
ऌ त थ द ध न ल स	८ वर्णक	दस्तस्थान
उ प फ ब भ म	६ वर्णक	ओष्ठस्थान
ए ऐ	२ वर्णक	तालुकण्ठस्थान
ओ औ	२ वर्णक	ओष्ठकण्ठस्थान
व	१ वर्णक	ओष्ठदन्तस्थान
ङ ञ ण न म तथा		
अँ इँ आदि अनुनासिक	वर्णक	नासिको स्थान
अनुस्वार	वर्णक	नासिकास्थान
विसर्ग	वर्णक	पूर्वस्थित स्वरकस्थान।

वर्णक प्रयत्न

स्थानक ऐक्य रहलहु पर 'क' 'ख' इत्यादि वर्णक भेद किएक एहि प्रश्नक उत्तरमे कथ्य जे प्रयत्नक भेदसँ। तस्मात् प्रयत्नक परिचय लिखैत छी।

कोनो-कोनो वर्णक उच्चारणमे कण्ठविवरक विकास अपेक्षित, कोनो-कोनोमे ओकर संकोच (घोँकचब), एवम् कोनोमे हृदयस्थ वर्णोत्पादक वायुक अल्पता, कोनोमे आधिक्य अपेक्षित। एहि चारि कार्यक जनक प्रयत्नक नाम क्रमशः विवार,

संवार, अल्पप्राण ओ महाप्राण शास्त्रमे कहल अछि । ई चारू बाह्य प्रयत्न कहबैत अछि जेँ आस्यसँ बहिर्भूत अछि । एहि चारि प्रयत्नमे दू-दू प्रयत्न प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे आवश्यक, विवार-संवारमे एक, तथा अल्पप्राण-महाप्राणमे एक ।

एहि प्रयत्नसँ अतिरिक्त चारिटा आभ्यन्तर प्रयत्न अछि :- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत ओ संवृत । ई चारि प्रयत्न वर्णजनक जिह्वाक स्पर्श, अल्पस्पर्श, दूरस्थिति, समीपस्थिति, एहि चारि कार्यक संपादक होइत अछि ।

ई चारू प्रयत्न मुखाभ्यन्तरकार्यकारितासँ आभ्यन्तर कहबैत अछि । एहि चारिमे एक-एक प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे अपेक्षित होइछ ।

एतद्भिन्न, स्वरक एक दू तीन मात्रा कालस्थितिजनक तीनटा प्रयत्न अछि । एहि तीनूक नाम कार्यक नामहिपर यौगिक ह्रस्वत्वादिजनक प्रयत्न कहि सकी । इहो बाह्ये कहबैत अछि । व्यञ्जनक अर्द्धमात्राकालस्थिति स्वाभाविके अछि तेँ तज्जनक प्रयत्नक अपेक्षा नहि ।

आब कोन-कोन प्रयत्न कोन-कोन वर्णमे अपेक्षित से कहैत छी । बाह्य प्रयत्न जे चारिटा कहल ताहिमे 'विवार' प्रयत्न वर्गक प्रथम, द्वितीय ओ श ष स ह वर्णक । 'संवार' प्रयत्न तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्गक तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, य र ल व तथा स्वरक । 'अल्पप्राण' प्रयत्न वर्गक प्रथम, तृतीय, पञ्चम, य र ल व, तथा स्वरक। 'महाप्राण' तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्गक द्वितीय, चतुर्थ तथा श ष स ह वर्णक ।

आभ्यन्तर प्रयत्नमे – 'स्पृष्ट' पाँचो वर्गक सकल वर्णक । 'ईषत्स्पृष्ट' य र ल वक । 'विवृत' श ष श ह तथा ह्रस्व अकार भिन्न सकल स्वरक । 'संवृत' ह्रस्व अकारक । आब प्रत्येक वर्णक समुदित प्रयत्न देखबैत छी :-

क च ट त प – विवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
ख छ ठ थ फ – विवार	महाप्राण	स्पृष्ट
ग ज ड द ब – संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
घ झ ढ ध भ – संवार	महाप्राण	स्पृष्ट
ङ ञ ण न म – संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
य र ल व – संवार	अल्पप्राण	ईषत्स्पृष्ट
श ष स ह – विवार	महाप्राण	विवृत
'अ'भिन्नस्वरक – संवार	अल्पप्राण	विवृत
ह्रस्व 'अ'क – संवार	अल्पप्राण	संवृत

यद्यपि ग ङ, ज ञ इत्यादि वर्गक तृतीय तथा पञ्चमक उक्त प्रयत्न सभटा समाने अछि ओ कण्ठादि स्थानो तुल्ये, तथापि पञ्चमक नासिको स्थान, तृतीयक नहि, तेँ स्थानभेद-प्रयुक्त भेद ज्ञातव्य । कण्ठादिस्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न, तीनू वर्ण सबहिक अभिव्यञ्जक वा उत्पादक थीक ।

मिथिलाभाषा अनुनासिकप्रचुर

मिथिलाभाषामे अनुनासिक अधिक अछि । 'पाएरेँ काशीसँ प्रयागकेँ बिदा भेलहुँ, इत्यादिमे द्वितीय, तृतीया ओ पञ्चमी विभक्ति तथा 'अलहुँ' तिङ् विभक्ति सानुनासिक अछि । तथा एवकारादिस्थानीय 'अहिँ' 'अहुँ' सेहो प्रायः सानुनासिक अछि-'सबहिँ' 'सबहुँ' । एतद्भिन्नो 'आगाँ' 'पाछाँ' इत्यादि बहुत शब्दमेँ अनुनासिक अछि । तेँ केओ-केओ जाहिमे अनुनासिक नहि चाही ताहूमे अनुनासिक बजैत छथि; यथा, 'साँप' । किन्तु 'सर्प' शब्दमे रेफलोप ओ पूर्वकेँ दीर्घ कय 'साप' शब्द बनल अछि, तेँ ओहिमे अनुनासिक नहि उचित । वर्गक पञ्चम वर्णक लोप भेलापर पूर्व स्वर अनुनासिक होइत अछि; यथा, 'अङ्क' 'आँक', 'पङ्क' 'पाँक', 'अङ्गण' 'आँगन', 'अञ्जन' 'आँजन' 'घण्टी' 'घाँटी', 'वण्टन' 'बाँटब', मण्ड 'माँड़', 'कान्ति' 'काँति', 'संक्रान्ति' 'सँकराँति' । यथा, 'चक्र' 'चाक', 'चुक्र' 'चूक', 'वड्' 'बड', 'वार्ता' 'बात' । संस्कृतभवमे तँ ई नियमे जकाँ अछि । क्वचित् भेदो, यथा, 'आगाँ' 'पाछाँ' ई दूहू शब्द 'अग्रे' 'पश्चात्' सँ सिद्ध भेल अछि । हम अपना जनैत एहि कोषमे समुचित रूपमे अनुनासिक लिखल अछि । कोनो-कोनोमे अनुनासिक अननुनासिक दुहूक प्रचुर प्रयोग देखि दुहू रूप देखाओल अछि ।

संस्कृतसँ मैथिलीमे भेद

संस्कृतसँ मिथिलाभाषा कोना बनल तत्प्रसङ्ग सविस्तर 'मिथिलाभाषाविद्योतन'क भूमिकामे कहल अछि; तथापि अति संक्षेपसँ कहैत छी । देशाध्यक्ष संस्कृत भाषाकेँ अतिमहान् रहबाक कारण आपामर जनताक हेतु अनुपयुक्त बूझि साधारण जनताक व्यवहारोपयोगी अतिसंक्षिप्तशब्दात्मक देशभाषा बनाओल तथा प्रचार कयल । ततः पर ओकर अधिक प्रचार भेलासँ विद्वानो सभ संस्कृतक व्यवहार हटाय ओही भाषामे व्यवहार करए लगलाह । प्रत्येक सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धितान्त, रूप देखलासँ स्पष्ट बोध होइछ जे देशभाषानिर्माता प्रकृतिभाग संस्कृतसँ साक्षात् तथा प्राकृतादिद्वारा गृहीत कयल ओ बहुत स्वतन्त्रो; तथा प्रत्येक अर्थक एकएकमात्र शब्द राखल; एवम् तद्धित, कृत्, सुप्, तिङ् प्रत्यय सकल स्वकल्पिते राखल । तस्मात् संस्कृतसँ देशभाषामे भेद प्रत्येक वाक्यमे स्पष्टे अछि । तथापि रीतिमे जे वैलक्षण्य अछि तकर दिग्दर्शन करबैत छी ।

मैथिलीमध्य एकार्थक एके शब्द । समासक अत्यल्पता । एकत्वादिबोधक वचनक अभाव । क्यजादिनानाप्रत्ययस्थानीय प्रत्ययक अभाव । सुप्मे तथा तत्प्रकृतिमे विकारक अभाव । प्रथमाक सर्वत्र लोप । आदरानादरादि अर्थभेदसँ तिङ् प्रत्ययक वैचित्र्य । सन्धिकार्यक अभाव ।

संस्कृतसँ साम्य

सुपक प्रकृतिभाग तथा धातु बहुत संस्कृततुल्यवर्णक अछि; यथा, माथ, कपार, गाल, ओठ, दाँत, तारु, कण्ठ इत्यादि नाम, तथा लिख, पढ़, सुन, रुस, कान, कूद, इत्यादि धातु । एवम् 'सुनब' 'कीनब' 'करब' 'धरब' प्रभृति । जेना प्राकृतादिभाषामे संस्कृतसँ साम्य अछि तेना मिथिलाभाषहुमे किन्तु प्राकृतादि मे संस्कृतक सकल नाम तथा निखिल धातु किछु रूपानतर कय गृहीत अछि; मैथिलीमे एकके नाम ओ एकके धातु ।

हिन्दीसँ भेद

हिन्दीमे एकबोधक ओ अनेकबोधक वचन अछि; यथा 'घरमे, घरोंमे' 'जाता है, जाते हैं', 'दाना है, दानें हैं', से हिन्दी व्याकरणमे 'एकवचन' 'बहुवचन'शब्दे कहल जाइछ, किन्तु दू अर्थमे 'बहुवचन' कहब असंगत, तस्मात् 'एकवचन' अनेकवचन' कहब उचित, अस्तु । मैथिलीमे संख्याबोधक वचन नहि अछि । अतएव 'घैल अछि' एहिसँ घटगत संख्या नहि बुझल जाइत अछि । संख्याक बोध 'एक' 'दू' 'तीन' 'चारि' 'बहुत' इत्यादि शब्दहिसँ होइछ; यथा, गणेशकाँ एक दाँत, दू माय, तीनि आँखि, चारि हाथ ।'

हिन्दीमे 'एव' 'अपि' स्थानीय 'ही' 'भी' शब्दक योजना पदक आगाँहिमे होइछ; यथा, 'रामको ही' 'रामको भी' मैथिलीमे सविभक्तिक पदक मध्यहिमे; यथा 'रामहिकेँ' 'रामहुँकेँ' इत्यादि । एवम् समस्त पदक मध्यहुमे ओकर प्रयोग होइछ; यथा 'रामेनाथ वा रामनाथे अयलाह' । 'रामोनाथ वा रामनाथो छथि' इत्यादि । एहि प्रसङ्ग अनेक भेद 'भाषाविद्योतन' मे द्रष्टव्य ।

हिन्दीमे संस्कृतवत् शास्त्रीयो लिङ्ग मानल अछि; यथा, 'छोटी पुस्तक' 'छोटा गाँव', मैथिलीमे लौकिकमात्र, इत्यादि लिङ्गविचारमे कहि आयल छी ।

हिन्दीमे साधारण सप्तमी विभक्ति सँ विलक्षण निर्द्धारण मे 'मेसे' कतोक वर्षसँ मानल गेल अछि; यथा, 'चार घरोंमेसे एक घर मुझे मिला ।' मैथिलीमे निर्द्धारणहुमे साधारणे सप्तमी अछि; यथा, 'चारि घरमे एक घर हमरा भेटल ।' भाषामे परस्पर वैलक्षण्यक अनभिज्ञ ओ हिन्दीक वासना सँ आप्लुत केओ-केओ मैथिलो मैथिलीमे 'मेसँ' लिखय लागल छथि, एवं हिन्दीक 'नकि' जेकाँ मैथिली भाषहुमे 'नहिकि' इत्यादि लिखैत छथि, से आदरणीय नहि ।

हिन्दीमे पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द उत्तरवाक्यगत तच्छब्दानपेक्ष कतोक दिन सँ मानल गेल अछि; अतएव उत्तरवाक्यमे तच्छब्दक अप्रयोग; यथा 'उसने जो कहा, हो गया ।' मैथिली मे संस्कृतसिद्ध निर्णयानुसार पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द नियमतः उत्तरवाक्यगत तच्छब्दसाकाङ्क्ष अछि; यथा, 'ओ जे कहलैन्हि से भए गेल ।'

हिन्दीमे अन्वयिपदार्थगतलिङ्गसंख्याभेदप्रयुक्त षष्ठी विभक्ति 'की' 'का' 'के' तीन प्रकारक होइत अछि; मैथिलीमे सर्वत्र 'क' मात्र एके अछि । प्राचीन गीतमे क्वचित् क्वचित् 'के' 'केर' देखि केओ-केओ 'रामके पुत्र' 'रामकेर आँगन' इहो लिखैत छथि परन्तु से अधमोक्ति थीक । पूर्वक गीतादिमे उत्तम, मध्यम, अधम तीनू उक्ति देखल जाइछ । हमरा विचारेँ अधमोक्तिक त्याग करब उचित ।

हिन्दीमे पूर्वपरवाक्यक सन्दर्भसूचक अव्यय 'कि' इत्याकारक अछि; यथा, 'उसने कहा कि मैं जाऊँगा ।' मैथिलीमे उक्तार्थसूचक 'जे' शब्द अछि; यथा 'ओ कहलैन्हि जे हम जाएब ।' ओ शब्द संस्कृतयच्छब्दस्थानीय थीक । संप्रति केओ-केओ मैथिल बाल्यतः हिन्दीक अधिक व्यवहार कयनिहार लिखैत छथि 'ओ कहलैन्हि की हम जाएब', परंतु ई उचित नहि । एवं 'जेकी' 'भलेही' 'चाहे' इत्यादि सेहो त्याज्य ।

हिन्दीमे संस्कृतभिन्न शब्दमे म्लेच्छभाषास्थित संस्कृतविरुद्ध ऐकार औकार परिगृहीत अछि; मैथिलीमे शास्त्रानुकूल 'अइ' 'अउ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' सर्वत्र अछि । 'ऐन-मैन' इत्यादिक स्थानमे 'एन-मेन', 'और' इत्यादिक स्थानमे 'आओर' इत्यादि लेख उचित । एवंविध हिन्दीसँ मैथिलीमे बहुत भेद अछि; कतेक देखाउ । विस्तरक भयसँ एहि प्रसङ्ग विरत होइत छी ।

जेना हिन्दीमे कान, नाक, मूह, हाथ, इत्यादि कर्ण, नासा, मुख, हस्त, इत्यादि संस्कृतक अपभ्रंश गृहीत अछि तहिना मिथिलाभाषाहुमे । एवं देशिओ लोटा, गोटा, इत्यादि बहुतशब्द हिन्दीमे मैथिलीमे एके रङ्ग अछि । देख, सुन, पढ़, उठ, इत्यादि धातुओ बहुत समाने अछि ।

बहुत शब्दमे ह्रस्व दीर्घ, इकार अकार इत्यादि भेदप्रयुक्त हिन्दीमे भेद अछि, अधिकांश वर्ण तुल्य; यथा 'जीरा-जीर' 'पुतोहू-पुतहु' 'हलदी-हरदि', 'चूड़ी-चूड़ि', 'दाल-दालि', 'आग-आगि', 'रात-राति', 'कल्ह-काल्हि' ।

हिन्दीमे जेना अनेक धातु मीलि एक विलक्षण क्रियाक बोध करबैत अछि- 'देखा करना' 'देख जाना' 'देख देना' 'देख लेना' 'देखने देना' इत्यादि तहिना मैथिली भाषहुमे 'देखल करब' 'देखि जाएब' 'देखि लेब देखि देब' 'देखय देब' इत्यादि विशेषक्रियाबोधक होइछ । एवं आनो-आनो हिन्दीसँ बहुत तुल्यता अछि ।

शब्दक विभाग अनेक प्रकारेँ

प्रथम प्रकार

मैथिलीमे नाम संस्कृतवत् चारि प्रकारक अछि-कृदन्त, तद्धितान्त, समास, तथा अव्युत्पन्न । ताहिमे कृदन्त नाम ओ थीक जाहिमे अन्तभाग 'अनिहार' प्रभृति कृत्संज्ञक प्रत्यय हो; यथा 'देखनिहार' 'देखब' 'देखनाइ' । तद्धितान्त नाम ओ थीक जकर अन्त (अन्तिम भाग) 'गर' 'पन' इत्यादि तद्धितसंज्ञक प्रत्यय रहय; यथा

'धनगर' 'बुडिपन' । समास मे कहबैत अछि जे अनेक नाम मिलाय एक शब्द बनाओल जाइछ जकर संज्ञा व्याकरणमे 'समास' कहल अछि; यथा 'सरबेटा' 'भलमानुस' 'बलिकट्टा' । अव्युत्पन्न ओ थीक जाहिमे प्रकृतिप्रत्ययविभाग नहि अछि तथा सार्थक खण्डद्वययुक्त नहि अछि; यथा 'घैल' 'कोहा' ।

द्वितीय प्रकारेँ शब्दविभाग

रूढ, यौगिक, योगरूढ भेदसँ शब्द तीन प्रकारक होइत अछि । अवयवार्थक बोध नहि कराय समुदायार्थक बोध करओनिहार रूढ थीक; यथा 'घैल' 'घर' 'बासन' । अवयवार्थबोधपूर्वक समुदायार्थक बोधकारक यौगिक थीक; यथा 'भनसिआ' 'सरबेटा' 'पनिभर' । अवयवार्थसंवलित विलक्षण समुदायार्थक बोधक योगरूढ थीक; यथा 'पनबट्टी' पान रखबाक बाटी ई अवयवक अर्थ भेल ओ पात्रविशेष (प्रत्यक्षगम्यजातिविशेषयुत) ई समुदायक अर्थ थीक । दुहूक बोध युगपत् होइछ, अतएव यदि तीमनहिक बाटी पानक पात्र बनाय ली तँ 'पनबट्टी' नहि कहाओत ।

तृतीय प्रकारेँ शब्दविभाग

प्रकारान्तरेँ पुनः शब्द चारि प्रकारक अछि । जातिशब्द, गुणशब्द, क्रियाशब्द ओ संज्ञाशब्द । जातिक बोध करओनिहार 'घैल' 'ब्राह्मण' आदि जातिशब्द थीक; गुणबोधक 'उजर' 'गरम' 'कोमल' इत्यादि गुणशब्द थीक; गमनादिक्रियाबोधक 'गेनिहार' 'गेनाइ' इत्यादि क्रियाशब्द कहबैत अछि; तथा एकमात्र व्यक्तिबोधक 'देवदत्त' 'भवदत्त' इत्यादि संज्ञाशब्द थीक ।

जातिक परिचय

अश्वमे तीन शब्दक प्रयोग होइत अछि—जानबर, पशु, घोड़ा । एहिमे प्रत्येक शब्दसँ विशेषणविधया विशेष अर्थ अवगत होइत अछि । ओही विशेष अर्थक नाम जाति थीक । ओकर फूट-फूट नाम जन्तुत्व पशुत्व अश्वत्व शास्त्रोक्त अछि । किन्तु मिथिलाभाषामे ताहि-ताहि जातिक नाम फूट-फूट नहि अछि । केवल ओकर व्यापक नाम जातिशब्दे अछि । यथा 'अहाँ कोन जाति थिकहुँ' एहि प्रश्नक उत्तर 'हम ब्राह्मण थिकहुँ' एहि शब्देँ कयल जाइछ । एवंप्रकारक प्रश्नोत्तरवाक्यसँ स्पष्ट होइछ जे ब्राह्मणत्वादि जातिविशेष तथा तज्जातियुत व्यक्ति उभयक नाम ब्राह्मणादिशब्दे अछि । अतएव 'अहाँक कोन जाति थीक'; 'गेना कय जातिक होइत अछि'; 'क्षेत्रमे अनेक जातिक घोड़ा अबैत अछि' इत्यादि व्यवहार होइत अछि ।

व्यक्तिसँ भिन्न अनेक व्यक्तिमे रहनिहार कोनो विशेष अर्थ अछि ताहिमे प्रमाणान्तर ई जे वनमे कोनो एक अपरिचित जन्तुविशेष देखलाक उत्तर पुनः ओहने दोसर जन्तु देखि लोक बजैत अछि जे ई ओएह जानबर थीक जे पूर्व दृष्टिगोचर भेल छल । व्यक्तिभेद रहलहुपर पूर्वदृष्टजाति पश्चात् दृष्टहुमे रहबाक कारणेँ 'ओएह'

शब्द प्रयोग करैछ । अवयवो भिन्न रहैत अछि तँ अवयवक ऐक्यनिबन्धन 'ओएह' ई प्रत्यभिज्ञा नहि कहि सकी; अन्यथा गोदर्शनानन्तर तत्सदृश गवयजन्तुकेँ देखि 'ओएह जन्तु ई थीक' एतादृश ज्ञान होइतैक, किन्तु से नहि होइत छैक, अपितु 'ओहने ई अछि' एतादृशे ज्ञान होइत छैक । तस्मात् उभयसाधारण जातिविशेषप्रयुक्ते 'ओएह' शब्दक प्रयोग मन्तव्य । 'ओएह' शब्दक अर्थ 'पूर्वदृष्टगतजातियुक्त' एतादृशे समुचित ।

चारिम प्रकारेँ शब्दविभाग

मैथिलीशब्द चारि प्रकारक अछि, संस्कृतानुरूप, संस्कृतभव, देशी ओ विदेशी । जे संस्कृतशब्द सकलसाधारण मिथिलाभाषामे व्यहृत अछि से संस्कृतानुरूप भेल । यथा देह, वानर, अनाथ, अधिक, अपराध दोष । यद्यपि 'कर्तव्य' 'गन्तव्य' इत्यादिओ संस्कृतानुरूपे थीक तथापि आपामर व्यवहृत नहि अछि; तस्मात् ओ शुद्धसंस्कृत भेल । एवम् 'कथमपि' 'कदापि' 'येनकेनोपायेन' 'तस्मात्' इत्यादिओ शुद्धसंस्कृते थीक । किन्तु संस्कृतमूलक मैथिलीभाषामे संस्कृतशब्दक प्रवेशेँ संकीर्णतादोष नहि, तँ ओ शब्द मैथिलीमे आयलो ठेठ मैथिली भाषा नहि कहाय सकैत अछि; एही कारणेँ ओहि सबहिक उल्लेख एहि कोषमे नहि कयल अछि ।

कतोक संस्कृत शब्द अर्थान्तरमे प्रसिद्ध

कतोक शब्द जाहि अर्थमे संस्कृतमध्य बाजल जाइत अछि से शब्द मिथिलाभाषामे प्रविष्ट भय ओहिसँ आन अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'मात्सर्य' शब्द संस्कृतमे द्वेषार्थक थीक; 'मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे' एहिकोषप्रदर्शित द्वेषार्थक 'मत्सर' शब्दसँ स्वार्थिकष्यञ् प्रत्यय कएलासँ त्रैलोक्यत्रैगुण्ययादिवत् 'मात्सर्य' शब्द सिद्ध भेल अछि; ओ शब्द मैथिलीमध्य स्नेह अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'हमरा एहि नेनापर बड मात्सर्य अछि' । एवम् दीर्घवाचक 'आयत' शब्द मैथिलीमे आबि सुन्दर अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि—'ई गहना बड आयत अछि' अर्थात् सुन्दर अछि । तथा 'संवाद' शब्दक अर्थ मेल अर्थात् तदनुकूलार्थप्रतिपादन अछि, किन्तु मिथिलाभाषामे अनका कहबाक हेतु कथ्य अर्थक बोधक भय गेल अछि । तथा अनवधानतार्थक 'प्रमाद' शब्द मैथिलीमे 'धाखेँ नहि कहब' अर्थक बोधक भय गेल । एवम् संस्कृतमे 'जङ्घा' छाबाक नाम थीक, किन्तु जङ्घाशब्दभव 'जाँघ' शब्द ऊरु (जानुसँ उपर नितम्बसँ निचला अङ्ग)क बोधक भय गेल अछि । एवम् आवेशादिशब्द स्नेहादिमे प्रसिद्ध अछि ।

संस्कृतानुरूप शब्दमे 'व' इत्यादि अविकृते

मैथिलीमे वकारक स्थान बकार, शकारक स्थान सकार, षकारक स्थान खकार आदेश होइत अछि । क्रमशः उदाहरण-'वामन-बाओन', 'विवाह-बिआह',

'श्राद्ध-सराध', 'भरवश-भरोस', 'वर्ष-बरख', 'मूषक-मूस' । परन्तु उक्त तीनू आदेश ताही शब्दमे होइत अछि जाहिमे विकारान्तर भेल हो, किन्तु जाहिमे वर्णान्तर अविकृत अछि ताहिमे नहि, यथा 'विषय' 'विचार' 'शान्ति' शोथ' 'षष्ठी' 'षडानन' इत्यादिमे संस्कृतानुरूपे वकारादि बोद्धव्य । एवम् शकराहुक प्रसङ्ग जानब ।

संस्कृतभव

संस्कृतभव ओ शब्द थीक जे संस्कृत किछु विकृत बनाय गृहीत कयल गेल अछि; यथा 'पसार' 'परबत' 'हर' । विकृत रूप तीन प्रकारेँ बनैत अछि, कोनो आखरकेँ हटाय देलासँ, वर्णान्तरक योजनासँ, तथा कोनो आखरकेँ हटाय ओकरा जगहपर वर्णान्तरक समावेश कय देलासँ । ई तीनू संस्कृत-शास्त्रमे लोप, आगम ओ आदेश कहबैत अछि । विकार तीनू भेल । उदाहरण-'प्रसार' शब्दमे प्रथम रेफक लोप कयलासँ 'पसार' संस्कृतभव भेल । 'पर्वत' मे अकार आगम कयलासँ 'परबत' भेल । एवम् 'हल' शब्दक लकारक स्थान रेफ आदेश कयलासँ 'हर' शब्द । एहिमे आगमबाला थोड़ अछि, लोपादेश-बाला बहुत । तत्रापि संस्कृतभवमे सात प्रकार अछि, 1-लोप-मात्र, 2-आगममात्र, 3-आदेशमात्र, 4-लोपआगम, 5-लोपआदेश, 6-आगमआदेश, 7-लोपआगमआदेश तीनू । क्रमशः उदाहरण- 1-'पसार' रेफक लोपमात्र, 2-'पिरीति' इकारआगम मात्र, 3-'गर' केवल लकारक स्थन रेफादेश, 4-'परेम' प्रेमन् नकारक लोप तथा अकार आगम, 5-'सात' सप्तन् मे नकारक लोप ओ आकारकेँ दीर्घ आदेश, 6-'परान' अकार आगम ओ णकारकेँ नकार आदेश, 7-'सराध' दकारक लोप, अकार आगम, शकारकेँ सकार आदेश ।

उदाहरण देखाओल । आब कतय कोन विकार होइत अछि तकर दिक्प्रदर्शन करबैत छी । क्वचित् लकारकेँ रेफ; यथा, 'हल-हर', 'गल-गर', 'काल-कारी', 'पिप्पली-पीपरि', 'गालि-गारि', 'श्याल-सार', 'धूली-धूरा', 'शृगाल-सिआर' ।

क्वचित् टकारकेँ डकार; यथा, 'त्रोटन-तोडब' 'घोटक-घोडा', 'मोटक-मोडा', 'पर्पट-पापड', 'पाटला-पाडरि', 'कीट-कीडा', 'वीटी-बीडी', 'पटोल-पडोर' ।

क्वचित् तकारकेँ थकार; यथा, 'हस्त-हाथ', 'मस्त-माथ', 'पुस्तक-पोथी', 'मुस्त-मोथा', 'वास्तूक-बथुआ', 'प्रस्तर-पाथर' । संयुक्तमे व्यञ्जनक लोप ततः पूर्वकेँ दीर्घ सामान्य शास्त्रसँ सिद्ध अछि ।

'क्ष' केँ 'ख' वा 'च्छ' 'पक्ष-पख, पाँखि', 'अक्षि-आँखि', 'कुक्षि-कोखि', 'रूक्ष-रुख', 'बुभुक्षा-भूख', 'अक्षर-आखर, अच्छर', 'पक्ष-पख, पच्छ' ।

'द' केँ क्वचित् 'ड'; यथा, 'दर-डर', 'दंशन-डँसब', 'दण्ड-डाँड' ।

ऋकारके क्वचित् इकार; यथा, 'पृष्ठ-पीठ', 'वृश्चिक-बीछ' ।

संयोगमे पूर्व वर्णक लोप; क्वचित् परवर्णहुक; उभयत्र पूर्व स्वरकेँ दीर्घ;

यथा, 'मस्तक-माथ', 'हस्त-हाथ', 'हस्ती-हाथी', 'प्रस्तर-पाथर', 'कर्ण-कान', 'अर्क-आक', 'चर्मन्-चाम', 'सप्तन्-सात', 'गर्भ-गाभ', 'छत्र-छाता', 'पत्र-पात', 'यष्टि-जाठि', 'मुष्टि-मूठि', 'अग्नि-आगि' । क्वचित् दीर्घाभावो; यथा, 'पथ्य-पथ', 'अपभ्रंश-अभठ' ।

वर्गीय पञ्चमक लोप भेलापर पूर्व स्वरकेँ प्रायः अनुनासिक दीर्घ; यथा, 'अङ्क-आँक', 'वङ्क-बाँक', 'अङ्ग-आँग', 'जङ्घा-जाँघ', 'लङ्घन-लाँघ', 'पञ्चम-पाँच', 'वण्टन-बाँट', 'मुण्डन-मूडन' । वर्गपञ्चमोपेत संयोगमे अपञ्चमक यदि लोप तँ पूर्वकेँ शुद्धे दीर्घ हो अनुनासिक नहि; यथा, 'आङ' 'आङन' 'माण' 'कङाल' ।

संस्कृतभव शब्दक लेख उच्चरणानुकूले होयबाक चाही; यथा-जतय, जेना, जनौ, सब, परब, सरबसोख, सार, सेआन, बरख, बरखा, बरखी, इत्यादिमे मूलभूतसंस्कृतानुकूल य व श ष नहि, किन्तु उच्चारणानुसार ज ब स ख । एतबा अवश्य जे अप्राप्तविकारान्तरक जे शब्द गृहीत अछि, -यमुना, यशोदा, वानर, शोथ, शान्ति, षष्ठी, षट्चक्र, इत्यादि-ताहिमे यकारादिओ संस्कृतानुरूपे लिखबाक चाही । ओकर उच्चारण यथोचित वा चालिक अनुसार से दोसर विषय भेल ।

हमर मिथिलाभाषा प्राकृतहुक अनुच्छायापर बनल अछि । प्राकृतमे 'दुहितृ' शब्दक स्थान 'धी' शब्द मानल अछि, से हमरो भाषामे गृहीत अछि । एवम् 'यदा'क अभठ 'जइआ' अछि; तदनुकूल मिथिलाभाषहुमे 'जहिआ' शब्दे उचित, 'यहिआ' नहि । एवम् 'यस्य' क स्थान 'जस्स' प्राकृत थीक, तदनुसार यच्छब्दसिद्ध 'जसु' 'जकरा' 'जनिक' 'जे' 'जेना' इत्यादिए उचित, अन्तस्था य नहि । प्राचीन लेखहुमे तादृशे उपलब्ध होइछ ।

एहिपर यदि केओ कहथि जे बङ्गलाभाषा ओ मिथिला भाषा पूर्व तुल्ये जेकाँ छल ओ अछि तेँ रवीन्द्रनाथादिक जे नियम से मिथिलाभाषहुमे मन्तव्य । हुनका लोकनिक सिद्धान्त भेल अछि जे संस्कृतभवहुमे य व श तथा ष संस्कृतानुकूले रहय जाहिसँ संस्कृतमूलकत्व स्पष्ट हो । एहिपर वक्तव्य जे तादृश हुनकालोकनिक विचार मैथिलीसंप्रदायसँ विरुद्ध थीक तथा प्राकृतभाषो देशभाषासंपादनमे सहायक थीक एकर अपर्यालोचनमूलक थीक । हमरा भाषामे बङ्गलाभाषासँ साम्य अवश्य अछि, किन्तु हिन्दी भाषहुसँ तँ साम्य अछिए जकर विशेष विवरण 'हिन्दीभाषासँ साम्य' एहि शीर्षक लेखमे कहि आयल छी । हिन्दीभाषाक विद्वान्लोकनि तँ हमरे मतक समर्थक छथि, अतएव 'जहाँ' 'जिसको' इत्यादिए शुद्ध मानैत छथि । हमर विचार अछि जे जाहि देशमे यादृश लेख बहुत पूर्वसँ चल अबैत इदानींपर्यन्त अछि ओकर यथासम्भव समर्थने करबाक चाही; प्रचलित लेखसंप्रदायकेँ वृथा उनटएबाक नहि चाही । तस्मात् यच्छब्दभव 'जतय' 'जखन' इत्यादि मे तथा 'या' धातुभव 'जाइत'

इत्यादिमे वर्गतृतीय लेख्य । चरम सिद्धान्त जे संस्कृतभव शब्दमात्रमे उच्चारणानुकूले लेख कर्त्तव्य ।

देशी शब्द

देशी ओ कहबैत अछि जे शब्द ने संस्कृत वा प्राकृतसँ आयल अछि आ ने देशान्तरभाषासँ, किन्तु स्वतन्त्र मानल अछि; यथा 'छाती' 'पहुँचा' 'छकब' इत्यादि अनेक सहस्र शब्द देशी थीक ।

देशीमे द्विरुच्चारण

मिथिलाभाषामे क्वचित् नित्य क्वचित् वैकल्पिक वर्णद्वित्व होइत अछि; यथा 'घट्टी' 'बड्ढी', 'सकत-सक्कत', 'चटपट-चट्टपट्ट', 'अमत-अम्मत' 'अतर-अत्तर', 'गप-गप्प', 'दुबर-दुब्बर' । वर्णद्वित्व भेलापर 'झलां जश् झशि' एहि संस्कृत शास्त्रानुसार ओहिमे पूर्वस्थित वर्गद्वितीयवर्ण ओहि वर्गक प्रथम भय जाइत अछि, तथा चतुर्थवर्ण तृतीय भय जाइछ; यथा 'अक्खा' 'बग्घा' 'आकच्छ' 'दोसज्झा' 'ठट्ठर' 'बड्ढी' 'हत्था' 'गप्फा' । द्विरुक्तसँ पूर्वस्थ दीर्घ ह्रस्व भय जाइत अछि; यथा 'छीका-छिक्का', 'मूका-मुक्का', 'पाखा-पक्खा', जूता-जुत्ता' 'चूटी-चुट्टी' ।

विदेशी शब्द

विदेशी शब्द ओ थीक जे देशान्तर भाषासँ आबि मैथिलीमे मिश्रित भय गेल अछि, यथा 'हजूर' 'अगुबार' 'मिनट' । ई तीनू शब्द क्रमशः म्लेच्छभाषाक, हिन्दीक तथा अंग्रेजीक थीक । मिश्रण होएबाक हेतु थिक तत्तद्भाषाक प्रचुर प्रचार । क्षत्रियक राज्यमे तत्तद्देशीय भाषा भाषान्तरसँ असंकीर्ण छल । कारण जे ओ राजा सभ अपन भाषाक प्रचार राजाक कर्त्तव्य नहि बुझैत छलाह । किन्तु यवनक शासनमे ओ सभ अपन भाषहुक प्रचारमे यत्नशील भेलाह । न्यायालयादिमे म्लेच्छभाषासँ व्यवहार चलाओल गेल । ताहिसँ ओकर पठन-पाठन होअए लागल । ततः पर बहुधा व्यवहार चलबाक कारण 'हजूर' 'हाजिर' 'दरखास्त' 'दस्तगर्दा' 'दस्तखत' इत्यादि 'प्रभु' 'उपस्थित' इत्यादिशब्दापेक्षया गौरवान्वित बुझल जाय लागल । ततःपर गौराङ्ग राज्यकालमे उक्तरीत्या अँगरेजीभाषाक प्रचारसँ 'मिनट' 'सेकेण्ड' 'हाफ' 'पाबर' इत्यादि अँगरेजी शब्दो मिथिलाभाषामे व्यवहृत होअए लागल अछि । पूर्व थोड़ कालक व्यवहार 'छन' 'घड़ी' 'पल' इत्यादि शब्देँ होइत छल; यथा 'हमरा छनो भरि अवकाश नहि' 'पलखति नहि', 'एक घड़ी थमहू' । आब 'सेकेण्ड' 'मिनट' 'घण्टा'सँ व्यवहार चलल अछि । गौराङ्गशासन कालहिसँ अँगरेजी शिक्षामे उपकारार्थ ओहि सङ्ग हिन्दिओ भाषा पठन-पाठनमे आवश्यक भय जयबाक कारणें हिन्दीभाषाहुक प्रचुर प्रचार भेल । पूर्व मिथिलामे ओकर गन्धो नहि छल । हमर बाल्यावस्थासमयमे केओ-केओ अँगरेजीशिक्षापन्ने हिन्दीभाषा-पटु छलाह । हम जन्मतः अठारहम वर्षमे

अध्ययनार्थ काशी गेलापर ओतहि हिन्दी भाषा सीखल । आब तँ सर्वत्र बालको सभ मे अपन मातृभाषापेक्षया हिन्दीभाषहिंमे निपुणताक प्रयत्नशील देखल जाइत अछि । अस्तु, हमर कथ्य जे अँगरेजी तथा हिन्दीक अधिक प्रचारसँ ओहू दुहू भाषाक शब्द सभ जे मिश्रित भए गेल अछि से विदेशी भेल ।

विदेशी शब्द दू प्रकारक अछि—अनुरूप ओ तद्भव । 'हजूर' आदि अनुरूप भेल, 'नजरि' इत्यादि विदेशी 'नजर' आदि शब्दभव । हमरा एहि कोषमे विदेशी शब्द देबाक इच्छा नहि छल, तथापि बहुत व्यक्तिक आग्रहसँ थोड़ेक विदेशियो शब्द देल अछि ।

संस्कृत छोड़ि भाषामात्रक एक प्रधान स्थान होइत अछि । अम्बिकादत्त व्यास अपन कृत हिन्दी व्याकरणमे लिखने छथि जे हिन्दीक कोनो शब्दमे यदि सन्देह हो तँ नागर देशक बाजबसँ निर्णय करबाक थीक । तस्मात् हिन्दीक केन्द्र नागर भेल । तकरा मिथिलासँ विभिन्नताक कारण हिन्दी शब्दकेँ हम विदेशी मानैत छी किन्तु कोषमे ओकर परिचय हिन्दी शब्दें लिखल अछि; बहुतमे छुटिओ गेल होएत ।

मैथिलीकोष कीदृश चाही

हमरा इच्छा छल जे मिथिलाषाक उन्नतिक हेतु एहन कोष बनाबी जाहिमे अकारादिक्रमेँ परिशुद्ध निखिल शब्दक संग्रह हो । मिश्रित विदेशी शब्दक यथासंभव त्याग कएल रहए । यदि रखबहिक आग्रह हो तँ ओहि हेतु दोसर खण्ड रहओ । अर्थनिर्देश यथासंभव मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, तीनू शब्दसँ कएल जाय । विशेष शब्दमे लौकिको प्रयोग देखाओल रहय जे यथावत् अर्थक बोध हो । जे वस्तु जाहि गुणेँ उपादेय होइत अछि तकर उपादान कएल जाय । दृष्टान्त, पक्षीमे कोनो पक्षी प्रिय बजबाक हेतु ग्राह्य होइत अछि, यथा श्यामा; कोनो लड़बाक हेतु, यथा बुलबुल; कोनो मनुष्यजेकाँ बजबाक हेतु, यथा पहाड़ी मेना; कोनो तत्तज्जातीयकेँ भक्ष्यताक हेतु; कोनो सुन्दरताक हेतु । एवं प्राधान्यतः जाहि गुणेँ जे अपेक्षित होइछ से कहल रहए । एवम् जे फूल जाहि हेतु संग्राह्य होइछ, जाहि मासमे फुलाइत अछि, जेना लगैत अछि, जेहन फूल होइत छैक से परिचय यथासंभव देल जाइक । तथा कृतान्न, व्यञ्जन, मिष्टान्नादिक नामोल्लेख एहि रूपेँ कएल जाय जे एहि प्रकारेँ संपादित वस्तुक नाम अमुक । एवम् क्रीड़ासभक नाम ओही रीतिसँ लीखल जाय जे एहि रीतिसँ संपाद्य क्रीड़ा अमुक थीक, जाहिसँ ओकर स्वरूप अवगत हो । धान्यमे हलुकधना, गरुहन, इत्यादि परिचय; सर्पसे एतादृश विषाह इत्यादि । एवम् रत्नाहिअहुमे । सजातीय वस्तुक नामावली वर्गक्रमेँ फूटो लिखल रहय; यथा, मनुष्यवर्ग, मनुष्यावयववर्ग, गृहवर्ग, गृहावयववर्ग; एवम् रत्न, यान, अन्न, वस्त्र, भूषण, इत्यादि जाहिसँ इहो अवगत भय सकय जे एतबा मनुष्यक, एतबा भूषणाहिक नाम एहिमे अछि ।

एहि प्रकारक मैथिलीबृहत्कोष निर्मित भय यदि प्रकाशित हो तँ महान् उपकारक होयत, संस्कृतव्यवहारहुमे उपकार पहुँचत । तस्मात् एतादृश कोष अनेक विद्वान् मीलि अवश्य बनाबथि । हम तँ एकाकी तादृश मनोऽभिलषित कोष नहि बनाय सकलहुँ, स्वल्पाकारे बनाओल । मैथिलबन्धुवर्ग सूर्यक अभावमे दीपवत् एहि कोषक आदर अवश्य करताह से आशा अछि ।

कोषक निर्माणमे साहाय्य

एहि मिथिलाभाषाकोषक निर्माणमे 500) रुपैया राघवपुरक हरिनन्दन सिंह मेमोरिअल ट्रष्टसँ हमरा देल गेल, जाहिसँ छपयबामे बहुत सहायता पहुँचल । एहिसँ अतिरिक्तो जे एहि कोषक मुद्रणमे खर्च पड़ल सेहो सभटा परमकृपया बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयसँ सहज हमरा भेटल ।

ट्रष्टक निर्माण

राघवपुरक बाबू श्रीयदुनन्दन सिंह महोदयक सुयोग्य पुत्र बाबू श्रोहरिनन्दन सिंह महोदयकेँ साहित्यमे विशेष प्रेम तथा पूर्ण योग्यता छलैन्हि । अतः हुनक सुयोग्य पुत्र परमोदारचरित बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहमहोदय हुनक कीर्त्यर्थ हुनका नामेँ ट्रष्टक स्थापना कएल, जाहिसँ मिथिलाकसाहित्यकुसुम विकसित भय रहल अछि । एहि संस्थाक स्थायिता रूपेँ विधानसँ बराबरि मैथिलीसाहित्यक अभ्युन्नति होइत रहत, यदि अधिकारापन्न विचारक लोकनि यथोचित समय-समय पर एकर सञ्चालनमे आलस्य नहि करथि । एहिमे सर्वाधिकार विचारक लोकनिक उपर निर्भर अछि ।

ट्रष्टसँ पूर्व पुरस्कार

ई ट्रष्ट जाहि समयमे स्थायिताक हेतु राजस्वीकृत कराओल गेल ततःपूर्वहिसँ तत्सम्बन्धी पुरस्कारात्मक कार्य आरम्भ भय गेल छल । ओहिसँ अद्यावधि चारि विषयक रचनामे पुरस्कार वितीर्ण भेल अछि (1) मैथिलीव्याकरण, (2) मिथिलाक इतिहास, (3) शतदलकाव्य (मधुपकृत) ओ (4) मिथिलाभाषाकोष ।

ट्रष्टक संक्षिप्त परिचय

नामः– हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रष्ट ।

स्थापकः–बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह, राघवपुर, दरभङ्गा ।

उद्देश्यः–(1) पुस्तकालय तथा संग्रहालयक स्थापना, जाहिमे (क) समीक्षा (ख) भारत ओ मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास (ग) योगदर्शन (घ) दर्शनसभक समन्वय (ङ) व्यावहारिक दर्शन (च) मैथिलकृत सकल भाषाक रचना (छ) मैथिली भाषाक निखिल ग्रन्थ (ज) सिद्धान्त ज्यौतिष (झ) शान्तिमार्गाश्रित व्यक्तिक जीवनी (ञ) भ्रमणवृत्तान्त इत्यादि विषयक ग्रन्थक संग्रह रहत ।

(2) मैथिलीमे विशिष्ट रचनापर 250) सँ 500) पर्यन्त पुरस्कार । पुरस्कारार्ह रचनाक विषय रहत–(क) प्रामाणिक मैथिली व्याकरण, (ख) प्रामाणिक मैथिलीकोष, (ग) मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास, (घ) आधुनिक महाकाव्य, (ङ) जनप्रिय काव्य ओ नाटक, (च) आधुनिक दार्शनिक निबन्ध, (छ) मिथिलाक उन्नतिक उद्बोधक उच्च कोटिक उपन्यास, (ज) अलंकार निरूपण, (झ) अंग्रेजीक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तेहन ग्रन्थक अनुवाद जे मैथिली साहित्यक विकासक तथा स्वसभ्यताक संघटनामे उपकारक हो ।

(3) दोसरा-दोसरा वर्षपर दार्शनिक ओ सांस्कृतिक व्याख्यान, जाहिमे व्याख्याताक पुरस्कार 500) सँ 1000) धरि रहत ओ व्याख्यानलेखमुद्रण ट्रष्टक अधीन रहत ।

अन्तमे उक्त बाबू साहेबक औदार्य तथा मैथिलीमे अनुपम अनुरागक भूरि-भूरि प्रशंसा कए सकलशक्तिमान् सच्चिदानन्द घन श्री विष्णुभगवान्सँ प्रार्थना करैत छी जे एहि बाबू साहेबकाँ सर्वार्थे परिपूरिताभिलाष बनओने रहथि ।

संवत् 2008 वि०

श्री दीनबन्धुः

अथ मिथिलाभाषाकोषः

नत्वा जनकसुतायाः पदकमलं दीनबन्धुरभिरामम् ।
मिथिलाभाषाकोषं तनुते तोषं सतां कलयन् ॥
वैदेहीपदकमलनत हेतु धीरजनतोष ।
दीनबन्धु निर्मित करथि मिथिलाभाषाकोष ॥

अ

अँः–अ, परोक्त वाक्यार्थमे अस्वारस्यजन्य क्रोध ।
अए–अ० सादर स्त्रीक संबोधन ।
अएँ–अ० पुनःश्रवणेच्छा १ । विस्मय २। क्रोध ३ ।
अओ–अ० सादर पुरुषक संबोधन ।
अओरा–धात्रीफल, हिं, आँवला ।
अकचकाएब–क्रि० अकचक्+अब–साश्चर्य इतस्ततः ताकब ।
अकचकाह–साश्चर्य इतस्ततः प्रेक्षणकर्ता ।
अकच्छ–वारंवार क्रियासँ हतोत्साह ।
अकछाएब–अकच्छ होएब ।
अकट–अखण्डनीय १ । गुरुपाकी २ ।
अकटकाँट–साफ नहि कएल ।
अँकटा–अन्नविशेष ।
अकट्टी–हास्यास्पदा अधिक बजनिहार ।
अकठ–साँखुप्रभृति सुकाठसँ भिन्न काठ ।
अँकडा–बिना छाँटल (चाउर) ।
अकडा लागब–क्रि० लग+अब–शिराक रोगविशेष ।
अँकडाह–किञ्चित् आँकड १ । आँकड़+आह–आँकडसँ युक्त २ ।
अकतिआर–वि० शक्ति ।
अकथ–अकथ्य ।
अकनाएब–क्रि० अकनब्+अब–कान एकाग्र कय सुनब ।
अकबक–किछु नहि फुरब ।
अकबारब–क्रि० अकबार+अब–पाँजमे लेब ।
अकर–सं० पोतसँ शून्य खेत १ । तादृश राजा, स्वतन्त्र २ ।
अकरकचाह–साफ नहि कएल (खेत)।
अकरकन / **अकरकनाह** } – साफ नहि कयल । (अन्न)
अकराएब–क्रि० अकरब्+अब–अयोग्य क्रियासँ अयश पाएब ।
अकराओन–घृणास्पद (जगह) ।
अकरी–कर्माक्षम, अकर्मण्य ।
अकरोठ–अक्षोट मेबाविशेष ।
अकर्मण्य–सं० कर्माक्षम ।
अकर्मी–अपकर्मकारी ।
अकसक–अधिक भरबाक कारण सक्लेश पेट ।
अकसकाएब–क्रि० अकसक्+अब–अधिक पेट भरलासँ श्वास–गतिमे क्लेश पाएब ।
अकसकी–पेटक अतिपूर्तिसँ श्वास–गतिमे क्लेश ।

अकस्मात्–अ० सं० दैवात्, हि. अचानक।
अकहुत्थ–अतिविशाल (निन्दामे) ।
अकाट्य–नहि कटबाक योग्य (वचनादि) ।
अकादारुण / **अकादारुन** } – अतिविशाल (निन्दामे)
अकान–सुनबामे असावधान स्वभावक ।
अकानब– क्रि० अकान्+अब–अकनाएब, कान एकाग्र कय सुनब
अकाबोन–दुर्ग जङ्गल ।
अकाल–दुर्भिक्ष समय १। अनवसर २।
अकास–आकाश ।
अकासकाँकोड़–निन्दनीय (मनुष्य) ।
अकासदीप–आकाशदीप ।
अकासी देब–क्रि० अकासी द+अब–वृथा आकाश दिश ताकब ।
अकासी वृत्ति–अनिश्चित जीविका ।
अकारथ–अकृतार्थ, व्यर्थ ।
अकिल–वि० बुद्धि ।
अँकुरब–क्रि० अँकुर+अब–अङ्कुरयुक्त होएब।
अँकुरा–अङ्कुर ।
अँकुरी–अँकुरायोग्य भिजल दलिहन ।
अकुलाएब–ना० आकुल+अब–व्याकुल होएब ।
अँकुसी–अङ्कुशसदृश लाक्षालंकरण १। फल तोडबाक लग्गीक मोरल अवयव २ ।
अकोल–सिकस्त जगह ।
अक्खा–बोरा, सं० गोणी ।
अक्री–अकर्मण्य ।
अक्लेश–विना श्रम ।
अखज–वि० शत्रुता।
अखड़ब–क्रि. अखड़+अब संनद्ध होएब ।
अखड़हा–दङ्गलभूमि १ । बाबाजीक स्थान २ ।
अखड़ा–मेही नहि पीसल (अन्न आदि)।
अखढ़–डाभीप्रभृति उपयुक्त तृणसँ आन तृण ।
अखढ़िआ / **अखढ़िया** }–अखाढ़ा पर शिक्षित। नहि अगुतएनिहार ।
अखत–पत्रविशेष ।
अखतनामा–लेखविशेष ।
अखरकट्टू–अक्षर लिखबामे कच्चा ।
अखरताली–हस्ताक्षर लेख ।
अखरोट–अक्षोट; फलविशेष ।
अखाढ़–आषाढ़ मास ।
अखाढ़ा–अखड़हा–दङ्गल वा व्यायामक हेतु कोड़ल भूमि १। बाबाजीक स्थान २ ।
अखारब–क्रि० अखार्+अब–आक्षालन प्रक्षालन ।
अँखिआएब–ना० आँखि + अब= अँखिअब्+अब=दुष्ट दृष्टिसँ ताकब ।
अँखिउट्ठी–आँखि उठब, अक्षिरोग-विशेष ।
अँखिगर–उ० देखबासँ वस्तुतत्त्ववेत्ता ।
अँखिफोड़ा–कीटविशेष ।
अँखिमुन्नी–क्रीड़ाविशेष ।
अखुआ / **अँखुआ** } – करचीक वंशस्थ मूलाधार ।
अगओँ–ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु प्रथम उद्धृत अन्न ।
अगड़बाला–अग्रबाल जातिविशेष ।
अगड़ाही–दावानल ।

अगण्य–सं० गणनाक अयोग्य ।
अगता–पूर्व उपजनिहार (अन्न) १। अग्रतः बधिआ कएल (घोड़ा) २ ।
अगत्ती–अधिक उकठ कएनिहार ।
अगत्त्या–सं० उपायक अभावेँ ।
अगधाएब–क्रि० अगध्+अब–अतितृप्ति वा गर्वसँ अनिच्छा प्रकाश करब ।
अँगनइ–छोट आँगन ।
अँगनैत–आँगनक मालिक ।
अँगपोछा–अङ्गप्रोञ्छिका, अङ्ग पोछबाक वस्त्र ।
अँगबरिआ–हरबाहसँ आन हरक सङ्ग रहनिहार (जन) ।
अगबा–केवल, अन्नान्तरसँ अमिश्रित एक विध (अन्न) ।
अगबास–वासक अगिला भूमि ।
अँगबाह–उ० चलबामे सङ्ग रहनिहार ।
अगम–अगम्य ।
अगर–अगुरु, वृक्षविशेष ।
अँगरखा–अङ्गाकार पहिरबाक वस्त्र ।
अँगरखी–छोट अँगरखा ।
अगरमस्त–औषधविशेष ।
अगराएब–क्रि० अगर् + अब–आनन्दजन्य निन्दित चेष्टा करब ।
अगरेस–अग्रेसर, मुख्य ।
अगरैल–फुलक थारीक प्रभेद ।
अगल-बगल–एम्हर ओम्हर ।
अगस्ति–सं० पुष्पविशेष ।
अगहड़ी–अग्रखण्ड, केराक अखण्डित सौँस पात ।
अगहन–आग्रहायणिक, कातिकसँ अगिला मास ।
अगहनी–अगहनक उपजा ।
अगहनुआ–अगहनमे तैआर भेल चाउर आदि ।
अगहरा–अग्रहार ।
अगाउ–अग्रिमक हेतु देय वा दत्त । पेशगी ।
अगाओँ–अगओँ । ब्राह्मणोद्देश्यक प्रथम उद्धृत (अन्नादि) ।
अगाड़, **अगाड़ी** } – वंशादिक अग्रभाग ।
अगिआ–आगि तपलासँ उत्पन्न चिह्नविशेष ।
अगिआ-बेताल–अधलाह काज तीव्र वेगसँ कएनिहार, बहुत क्रोध कएनिहार । उद्दण्ड ।
अगिआसी–तपबाक हेतु आगि ।
अगिआह–आनक नीक नहि सहनिहार १ । ढेरी में ताप स्वभावक (नार आदि) २ ।
अगिनझम्प–पुष्पविशेष ।
अगिनबान–व्रणविशेष ।
अगिमुत्तू–आनक अधलाह कार्य कयनिहार ।
अगिलकण्ठ–अधलाह कथा बजनिहार ।
अगिलगी–आगि लगनाइ ।
अगिलह–उ० झगड़ लगओनिहार, उत्पाती स्त्री अगिलहि ।
अगिला–उ० अग्रिम उ० स्त्री अगिली ।
अगिलेसू–अगिलह, उत्पाती ।
अगुअति–घरक अगिला चार ।
अगुआ–अग्रेसर, आगाँ भेनिहार १ । एक प्रकारक लाक्षालंकरण २ ।
अगुआएब–ना० आगु + अब–आगाँ जाएब ।
अगुआड़–गृहक अगिला अवकाश ।

अँगुठा–अङ्गुष्ठ, हाथ पाएरक बुढ़बा आङ्गुर ।
अँगुठी–अङ्गुरीयक, आँगुरक भूषण ।
अगुताइ–शीघ्रता ।
अगुताएब–क्रि० अगुत्+अब–शीघ्रता करब ।
अंगुताह–उ० शीघ्रता कएनिहार ।
अगुबार–हि० आगाँक हेतु । अगाउ ।
अँगुरकट्टा–आँगुरक रोग विशेष ।
अँगुरी–अङ्गुली, आँगुर ।
अँगेजब–क्रि० अँगेज्+अब–अङ्गहित करब, सह्य करब ।
अँगैठी–अङ्गारधानी, आगि रखबाक पात्रविशेष १। अङ्गक ऐँठब २।
अँगैठीमोड़–अङ्गक ऐंठब ।
अँगोछ–अँगपोछ, अङ्ग पोछब ।
अँगोठ–अङ्गोष्ठ, अङ्गक आकार ।
अगोरब–क्रि० अगोर+अब–रक्षा करब ।
अँगोरा–अङ्गार, पजरल काष्ठखण्ड ।
अग्निझम्प–पुष्पविशेष ।
अघट–घाटसँ भिन्न तट ।
अघनुआ–अगहनमे भेल (चाउर आदि)।
अघाएब–क्रि० अघ्+अब–उमठब, तृप्त होएब ।
अघोर–अघोरमतावलम्बी साधु १ । हुनक क्रिया २ ।
अघोरी–उ० अघोरमतावलम्बी ।
अङनइ–छोट आँगन ।
अङनैत–आँगनक मालिक ।
अँङपोछ–अङ्ग पोछब ।
अङपोछा–अङ्ग पोछबाक वस्त्र ।
अङबरिआ–हरक सङ्ग आरि छटनिहार जन ।
अङबाह–हरक संग काज कयनिहार (जन) ।
अङरखा–अङ्गाकार वस्त्र ।
अङरखी–छोट अँगरखा ।
अङुठा–अङ्गुष्ठ ।
अङुरकट्टा–आँगुरक रोगविशेष ।
अङुरी–अङ्गुली, आँगुर ।
अङेजब–क्रि०अङेज्+अब–अङ्गहित करब, सह्य करब ।
अङैठी–अङ्गारधानी, आगि रखबाक पात्र १ । अङ्गक ऐँठब २ ।
अङैठी मोड़–अङ्गक ऐँठब, मोडब ।
अङोछ–अङ्ग पोछब ।
अङोठ–अङ्गसादृश्य ।
अङोरा–अङ्गार ।
अङ्क–सं० आँक ।
अङ्कुर–सं० अँकुरा ।
अङ्कोल–सं० औषधिविशेष ।
अङ्ग–सं० आँग, शरीरावयव ।
अङ्गा–शरीराकार वस्त्र ।
अङ्गित–अपेक्षित (व्यक्ति) ।
अङ्गूर–द्राक्षा, फलविशेष ।
अचक, **अचक्क** } – अ० अचानक ।
अचक्की–अकचकाह ।
अचम्भा–भाँड़ रखबाक वंशरचित आधार ।
अचरज–आश्चर्य ।
अँचरा–बालिकाकेँ पहिरबाक छोट वस्त्र विशेष ।
अँचरी–छोट आँचर १ । चारमे जोड़ल भाग २ ।

अँचरौंत–रक्ताञ्चलक वस्त्र ।
अचल–सं० नहि चलनिहार ।
अचलभारथी–(ती) नहि चलनिहार (निन्दामे) ।
अँचाएब–क्रि० अँचब्+अब–हस्तमुख प्रक्षालन करब ।
अचाञ्चक, **अचानक** } – अ० दैवात् ।
अँचार–आम्रादि फलक सलवण साधित खाद्यविशेष ।
अचेत–संज्ञाहीन।
अच्छत–अक्षत, पूजार्थ धोएल चाउर ।
अच्छर–अक्षर, आखर ।
अछओँ–ग्रहणक अनिच्छा, अतितृप्ति ।
अछताएब–क्रि० अछतब्+अब–पछताएब ।
अछार–अल्पकालिक सुवृष्टि ।
अछारब–क्रि० अछार्+अब–पानिमे बीआ बाओग करब ।
अछाह–छाया ।
अछिआ–चिताक चूल्हि ।
अछिनजल–अच्छिन्न जल, शूद्रास्पृष्ट जल ।
अछोप–अस्पृश्य चाण्डालादि जाति ।
अजग–अयज्ञक, अनुत्सृष्ट (पोखरि प्रभृति) ।
अजगर–सर्पविशेष ।
अजगुत–अयुक्त, अद्भुत ।
अजगेबी–आश्चर्य ।
अजन–अधलाह लोक ।
अजबारब–क्रि० अजबार+अब–शून्य करब।
अजब–वि० आश्चर्य ।
अजबारि–वस्तुयुत (पात्र) १ । वस्तु शून्य (पात्र) २ ।
अजमाएब–क्रि० अजमब्+अब–जाच करब।
अजराजोरी–जबरदस्ती, बलात्कार ।
अजस–अयश, अकीर्ति ।
अजस्त्र–अजस्त्र, बहुत ।
अजान–अज्ञान ।
अजिआ सासु–सासुक सासु ।
अजीर्ण–सं० पेटमे अन्नक विपाक ।
अजुका–अद्यतन, आइ भेल (वस्तु) ।
अजूरा–वेतन, भारा ।
अजेगर–सर्पविशेष ।
अजोध–विशाल सर्प ।
अजोह–अपक्व, बिनु जोआएल (फल)।
अज्ञान, **अज्ञानी** } –सं०–ज्ञान शून्य, अविचारी ।
अझक, **अझक्क** } – अ०–किञ्चित् देखब ।
अञ्चोक–अचिन्तितावसर ।
अञ्चस–लेश (आन्तर ज्वरादिक) ।
अञ्चीर–मेबा, फलविशेष ।
अँटकब–क्रि० अँटक्+अब–गतिनिवृत्ति ।
अँटकर–अन्दाज ।
अँटका–जगन्नाथ प्रभृतिक नियत भोज्य ।
अँटकाओ–प्रतिबन्धक वशात् रहनाइ ।
अँटकारब–क्रि० अँटकार+अब–अन्दाज करब ।
अटपट, **अटपटाँग**, **अटपटाङ** } – अण्टबण्ट ।

अँटब–क्रि० अँट्+अब–समावेश होएब ।
अटल–नहि टरनिहार, दृढ़ ।
अँटाबेस–समावेश ।
अटारी–अट्टालिका, कोठाक छत ।
अँटिआएब–ना० आँटी+अब्=अँटिअब् + अब्–आँटी बान्हब ।
अटूट–अत्यधिक ।
अटोर–संग्रह ।
अठंकपारि–विघ्नाक्रान्त, अलच्छ, अभागल ।
अठकोसल–आठ व्यक्तिक मन्त्रणा, गुप्त मन्त्रणा ।
अठगोड़बा–कीटविशेष ।
अठतालीस–अष्टचत्वारिंशत्, आठ अधिक चालीस ।
अठतालीसम– अष्टाचत्वारिंशत्तम अठतालीसक पूरक ।
अठतीस–अष्टत्रिंशत्, आठ अधिकतीस ।
अठतीसम–अष्टत्रिंशत्तम, आठ अधिक तीसक पूरक ।
अठन्नी–अष्टाणकी, आठ आनाक राजत मुद्रा ।
अठबभना–उपनयनमे आठ ब्राह्मणक भोजन ।
अठसट्ठि–अष्टषष्ठि, आठ अधिक साठि।
अठसट्ठिम–अष्टषष्टितम, आठ अधिक साठिक पूरक ।
अठाइस–अष्टाविंशति आठअधिकबीस ।
अठाइसम–अष्टाविंशतितम, आठअधिक बीसक पूरक ।
अठाबन, **अठाबन्न** } – अष्टापञ्चाशत्, आठ अधिक पचास ।
अठाबन्नम–अष्टापञ्चाशत्तम, अठांबन्नक पूरक ।
अठारह–अष्टादश, आठ अधिक दश ।
अठारहम–अठारहक पूरक ।
अठासी–अष्टाशीति, आठ अधिक अस्सी ।
अठासीम–अष्टाशीतितम, अठासीक पूरक।
अँठिअमत, **अँठिअम्मत** } – अष्टयम्ल, आँठीमे अम्मत ।
अँठिआ, **अँठिया** } – अनुचित आँठी सँ युक्त [अँठिआ केरा]
अठुलाहि – स्त्री० अभिमानिनी, गौरबाहि।
अठैत–सर्पविशेष ।
अठोँगर, **अठोङर** } – ब्राह्मणक विवाहमे प्रसिद्ध कर्मविशेष ।
अठ्ठा–तासक आठम फर्द ।
अठ्ठाइस–अष्टाविंशति, आठ अधिक बीस।
अठ्ठाइसम–अष्टाविंशतितम, अठ्ठाइसक पूरक ।
अँड़कोस–अण्डकोष ।
अड़खीस–कानि, द्वेष ।
अड़चन–हि० बाधा ।
अड़ब–क्रि० अड्+अब–गतिकेँ रोकब, अवरुद्धगतिक होयब ।
अड़रनेबा–फलविशेष । हि० पहपीता ।
अडराएब–यत्रकुत्र कथा बाजब १ । घूमब २ ।
अँड़री–एरण्ड, हि. रेँडी ।
अड़सट्ठा–प्रमाणपत्रविशेष ।
अड़सा–विलम्ब ।
अडाँच–दू ठाठक एकत्र बान्ह ।
अडाँचब–क्रि० दू ठाठकेँ एकठाम बान्हब।

अडाँची–एला ।
अडाँचीदाना–मिष्टान्नविशेष ।
अड़ानी–अड़एबाक वस्तु ।
अड़ारा–नदीक तट ।
अड़ारि–कण्टकविशेष १ । मनमे झगड़ा राखब, अडखीस २ ।
अँड़िआ, अँड़िया – अण्डकोषयुक्त (बड़द आदि) ।
अँड़ुआर–मालक पैघ थन ।
अड़ोपब–क्रि० अड़ोप्+अब–आरोप करब, साग्रह निश्चय करब ।
अड्डबड्ड–अण्टबण्ट, व्युत्क्रम ।
अढ़–व्यवधान ।
अढ़इआ, अढ़इया – अढाए सेरक बटिखारा ।
अढ़ाएब–क्रि० अढ़ब्+अब–प्रवृत्ति कराएब ।
अढ़ाए, अढ़ाय – अद्ध्यर्द्धद्वि, आधा अधिक दू ।
अढ़ाहिस्सी– अन्यक अकरण जन्य क्रोध सँ तत्सम कार्यक अकरण ।
अढ़िआ, अढ़िया – पादप्रक्षालनक पात्र-विशेष ।
अढीठ–अनिर्भय ।
अढ़ैआ–अढ़ाए सेरक बटिखारा ।
अढ़ैपँजरा, अढ़ैपाँजर – मालक रोग विशेष ।
अढैया–अढाय सेरक बटिखारा ।
अढैहत्थी–अढ़ाए हाथक लाठी ।
अणाच–दू ठाठक एकत्र बान्ह ।
अणाचब–क्रि० अणाच्+अब–दुइ ठाठकेँ मिलाए बान्हब ।
अणाची–एला, हि० इलायची, फल-विशेष ।
अणाचीदाना–मिष्टान्नविशेष ।
अणिआ–अण्डकोश सँ युक्त (बड़द) ।
अणुआर–मालक पैघ थन ।
अण्ट बण्ट, अण्ट सण्ट – असम्बद्ध ।
अण्टा–सीर चलबाक हेतु ठारिमे माटि ।
अण्टोटल–असम्बद्ध अप्रिय (बात) ।
अण्टोटाह–उ० असम्बद्ध अप्रिय कथा बजबाक स्वभाव वाला ।
अण्ठाएब, अण्ठायब – क्रि० अण्ठब्+अब-उपेक्षा करब ।
अण्ठिआ, अण्ठिया –समाजसँ आन अपरिचिति ।
अण्डकोष–सं० अँड़कोस ।
अण्डवृद्धि–सं० अण्डकोषक वृद्धि ।
अण्डा–अण्ड, गर्भसँ निःसृत सजीव गोल ।
अण्डी–एरण्ड, अँड़री ।
अतए–अतः ।
अतर–सुगन्धि द्रव्यविशेष, हि. इत्र ।
अतरदान–अतर रखबाक पात्र ।
अतरबात–छारबामे एक एक बाती छोड़ि स्थापित बाती ।
अतराएब–क्रि० अतर्+अब–अन्तर कय जनमब ।
अँतरी–अन्त्र, भोँटी ।
अतिखाइन–किर्शित् कषाय, कनिएँ आतिख ।
अतिथि–सं० अभ्यागत ।

अतिरिक्त–सं० भिन्न ।
अतिवृद्धप्रपितामह–सं० वृद्ध प्रपितामहक पिता ।
अतिवृद्धप्रमातामह–सं० वृद्ध प्रमातामहक पिता ।
अतिसय, अतिसैँ – अतिशय ।
अतीस–अतिविषा, ओषधिविशेष ।
अत्ता–फलविशेष ।
अत्यन्त–सं० अतिशय ।
अथक, अथक्क – नहि थकनिहार ।
अथबल–उ० अस्तबल, पाएरक अयोग्यतादि कारणें चलबामे अक्षम ।
अथाह–अगाध, जकर थाह नहि पाबी।
अदण्ड–अनुचित दण्ड १ । समुचित सँ अधिक (खर्च) २ ।
अदत्त–अतिकृपण ।
अदना–साधारण, अनबूझ ।
अदनार–काँच दानासँ युक्त (धान) ।
अदन्त–बिना दाँतक (माल) ।
अदव–वि० प्रताप ।
अदरदिआह–उ० अदृढ़ ।
अदलबदल–हेरी-फेरी ।
अदलहिसाब–वि० बिना हिसाबक ।
अदलहुकुमी–वि० आज्ञाभङ्ग ।
अदालति–न्यायार्थ निवेदन ।
अदिना–भदबा ।
अदृष्ट–सं० भागधेय ।
अदृष्टघट्टू–अभागल ।
अदौ–अ० सनातन (वास) ।
अदौरी–संहित खाद्यवटीविशेष ।
अद्धी–आधा पाइ ।
अद्भुत–सं० आश्चर्य ।
अधओड़–आध खण्ड ।
अधकट्टी–रसीदक आधा खण्ड ।
अधकपन, अधकपना, अधकपनी – धृष्टता ।
अधकपारी–रोगविशेष ।
अधक्की–धृष्ट ।
अधखँड़–खण्डित ।
अधङा, अधङी – पक्षिविशेष ।
अधडँड़ेर, अधडणेर – शरीरक मध्य भाग ।
अधनट–नटखटाह, योग्यता राखि आनक उपकार नहि कयनिहार मलिन मनक ।
अधनफ्फी–जाहि मालमे आधा नफा हो ।
अधन्नी–आध आनाक मुद्रा ।
अधपइ, अधपै – आध पाओक बटिखारा वा नपना ।
अधबएसू, अधबयसू –अर्द्धवयस्क ।
अधबहुआँ–आधा बहुआँबाला (अङ्ग)।
अधबाड़–पृथक् आधा कएल ।
अधबोलिआ, अधबोलिया –आधा शब्दक अनुच्चारण कए शिशुक बाजब, वा तादृश बजनिहार ।
अधम–सं० अधलाह ।
अधमोनी–आध मोन प्रमाणक (पथिआ वा बटिखारा) ।

अधरति–अर्द्धरात्र, निशीथ ।
अधरतिआ–निशीथमे उगनिहार (तारा)।
अधरम–अधर्म ।
अधरमी–अधर्मी ।
अधर्म–सं० पाप ।
अधर्मी–सं० पापी ।
अधलाह–असुन्दर, दुष्ट ।
अधसर–सर्पविशेष ।
अधसेरा, **अधसेरी** – आधा सेरक बटिखारा वा नपना ।
अधाठी–कोदारिक छओ भरिक प्रमाण।
अधिक–सं० बेशी ।
अधिकरास–अत्यधिक ।
अधिकार–सं० सामर्थ्य १ । विवाहबाधक सम्बन्धाभाव २ ।
अधिकारमाला–विवाह बाधक सम्बन्धाभाववान् व्यक्तिक नामावली ।
अधिकांश–सं० अधिक भाग ।
अधीन–सं० स्वायत्त ।
अधेड़–आधा खण्ड ।
अधोखा, **अधोखी** – गृहाङ्गविशेष ।
अधोड़, **अधओड़** – अधबाड़ ।
अनकट–नहि कटबाक योग्य ।
अनखुनाह–उ० आनक नीक नहि देखनिहार, स्त्री अनखुनाहि ।
अनगनित–अगणित ।
अनगुति–अनुदित, अति प्रातःकाल ।
अनगौआँ–आन गाममे बसनिहार ।
अनघोल–अधिक घोल ।
अनचिन्हार–अपरिचित ।
अनजान–अज्ञान ।
अनट–बेरबाद ।
अनट-बनट, **अनट-सनट** – असमीचीन, अनर्गल।
अनटोटल–असंबद्ध ।
अनठेकान–बिना ठेकान ।
अनत–अन्यत्र ।
अनतए–अन्यकेँ, अन्यत्र ।
अनठीआ–अन्यत्र स्थित ।
अनतए, **अनतय** – अव्य. अन्यत्र ।
अनदिना–अवसरशून्य दिन ।
अनधना–धानमे मिश्रित आन धान ।
अनधुन–बिना ठेकान, विनाविचार ।
अनन्त–सं० अन्तहीन ।
अनन्तमूल–ओषधिविशेष ।
अनपरासन–अन्नप्राशन, प्रथम अन्नभक्षण।
अनबाह–हरबाहक पाछाँ रहनिहार (जन)।
अनबिसबास–अविश्वास ।
अनबूझ–अबोध ।
अनभरोस–अनाशा ।
अनभुआर–स्थानादिसँ अपरिचित ।
अनमना–अन्यमनस्कता, क्रीडादिसँ मन बहटारब ।
अनमनाएब–क्रि० अनमन् – अब– अप्रसन्नमनस्क होएब ।
अनमनाह–उ० अन्यमनस्क होएनिहार ।
अनमूह–बजबामे अप्रौढ़, मुहसच्छ ।
अनमेल–विसदृश, जाहिमे जकर मेल नहि खाए ।

अनमोल–अमूल्य ।
अनरस–खाएल अन्नक विपाक ।
अनरसा–मिष्टान्नविशेष ।
अनर्गल–असंगत ।
अनर्थ–अन्याय ।
अनवसर–सं० अयोग्य समय ।
अनसथरि–अधलाह स्थान ।
अनसाह–असूयायुक्त, आनक नीको काजमे दोष लगओनिहार ।
अनसुन, **अनसुनी** – अश्रवण ।
अनसोहाँत–अप्रिय ।
अनहद–अत्यन्त ।
अनहोनी–असम्भाव्यक होएब ।
अनाइत–अनायत्त, दैवात् ।
अनाज–अन्न गेरह ।
अनाथ–सं० अशरण ।
अनायत–अत्याज्य सम्बन्धिक ।
अनारसा–मिष्टान्नविशेष ।
अनारी–अज्ञ ।
अनुगुति–अनुदित, अति प्रातःकाल ।
अनुखन–अनुक्षण
अनुचित–सं० असमीचीन ।
अनुपान–कदलीविशेष १ । औषध खाय खायब २ ।
अनुपी–पुष्पविशेष ।
अनुभव–सं० तर्क ।
अनुमान–सं० तर्क ।
अनुरूप–सं० अत्यन्त सदृश ।
अनुरोध–सं० रोच १ । इच्छा २ ।
अनुसन्धान–सं० अन्वेषण १ । स्मरण २ ।
अनुसार–सं० रीति ।
अनूप–अनुपम ।
अनेक–सं० नाना ।
अनेर–अ० निष्कारण, वृथा १। अरक्षित २।
अनेर धुनेर–अरक्षित ।
अनोन–लवणहीन १ । स्वल्प नोन सँ युक्त २ ।
अन्त–सं० अवसान ।
अन्तकाल–सं० अवसान काल १ । मरणकाल २ ।
अन्तय–अ० अन्यत्र ।
अन्ता–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।
अन्तिम–सं० अवसानभव ।
अन्दर–वि० अभ्यन्तर ।
अन्दाज–वि० तर्क ।
अन्दाजब–क्रि० अन्दाज्+अब-तर्क करब।
अन्देसा–अनिष्टशङ्का ।
अन्न–सं० धान आदि ।
अन्नप्रासन–अन्नप्राशन, प्रथम अन्नभक्षण ।
अन्नर–अभ्यन्तर ।
अन्यथा–सं० अ० आन प्रकारेँ ।
अन्याय–सं० न्यायसँ अपेत ।
अन्यायी–सं० अन्याय कयनिहार ।
अन्वेषण–सं० गवेषण ।
अन्हरजाली–यथार्थ बुद्धिक प्रतिबन्धक बुद्धिविकार ।
अन्हराएब–क्रि० अन्हर्+अब-अन्धकार युक्त होएब ।
अन्हरिआ– अन्धकारयुक्त ।
अन्हरिया– (राति) ।
अन्हरोख–प्रत्यूष, अन्हारसँ युक्त भोर ।
अन्हरोन–किश्चित् अन्हारसँ युक्त (काल)।
अन्हार–अन्धकार १ । अन्धकारयुक्त २ ।

अन्हारी देब–क्रि० द् + अब-तमबाक प्रभेद ।
अन्हेर–अनर्थ ।
अन्है–सर्पाकार मत्स्यविशेष ।
अपक–विपाक ।
अपकरम–अपकर्म ।
अपकार–सं० आनक अधलाह करब ।
अपकारी–आनक अधलाह कयनिहार ।
अपखोरा–जलपात्रविशेष ।
अपङ्ग–अपाङ्ग, अवयवरहित, शरीर सँ अकर्मण्य ।
अपच–विनु पचल ।
अपजस–अयश ।
अपजसी–अयशस्वी ।
अपटीक खेत–निर्जन स्थान ।
अपथ–अपथ्य, कुसंयम ।
अपन–स्वीय ।
अपना अपनी–अ० स्वयं स्वयम् ।
अपनाएब–ना० अपन+अब्-अपनब् + अब = अपन बनाएब । आत्मसात् करब ।
अपनाभरि–अ० यथाशक्ति ।
अपने–स्वयम् १ । आदरणीय संबोध्य २ ।
अपमान–सं० अवज्ञा ।
अपमानित–सं० अनादृत ।
अपरचाल–घृणास्पद काज कएनिहार, अपरोजक ।
अपतिभ–अप्रतिभ, मुहसच्छ ।
अपरपच्छ–अपरपक्ष, पितृपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष ।
अपरपात–अल्पवयस्कक मृत्यु ।
अपरस–रोगविशेष ।
अपराजित–अपराजिता, एक प्रकारक फुल १ । ओकर लत्ती २ ।
अपराध–सं० कसूर ।
अपराधी–सं० अपराधयुक्त ।
अपरोजक–अप्रयोजक, कार्यमे अपटु ।
अपसराहि–स्त्री. अधिक अपवित्रतायुक्त (स्त्री) ।
अपसेआँत–अधिक श्रमयुक्त, श्रान्त ।
अपसोच–शोक ।
अपाटक–उ० अपटु, स्त्री० अपाटकि ।
अपात–अ० अन्तमे सबसँ थोड ।
अपालन–सं० गायक अरक्षा ।
अपि–अ० समुच्चय, एतत्प्रसङ्ग विद्योतन द्रष्टव्य ।
अपिआड़ी–माछ बझएबाक खाधि ।
अपुआँग, **अपुआङ** – तृणविशेष ।
अपूर्व–विलक्षण ।
अपेच्छा–अपेक्षा, आपकता ।
अपैत–उपहृत ।
अपोआँग–तृणविशेष ।
अप्रिय, **अप्री** – अप्रिय ।
अफजल–असर्ध देह रखनिहार ।
अफनाएब–क्रि० अफन् + अब-उत्सुकता प्रकाश करब ।
अफरब–क्रि० अफर् + अब-खएलासँ अकसक करब ।
अफरा–मालक देहमे रहनिहार कीट-विशेष ।
अफार–बिना जोतल (खेत) ।
अवकाश–सं० छुट्टी १ । अन्तर२ ।

अवकच्चू–सर्वथा अपक्व १ । आधा कएल २ ।
अवगति–सं० ज्ञान ।
अवगुण, **अबगुन** – दोष ।
अबभ्र–अनाक्रान्त ।
अबजोस–मेबाविशेष ।
अबढङ्ग–ढङ्गहीन, अपटु ।
अबढँगाह, **अबढङाह** – उ० अपटु, स्त्री० अबढङाहि ।
अबण्डु–उ० अकर्मण्य ।
अब-तब–अ० इदानीं तदानीम् ।
अबती–अ० अयबाक समयमे ।
अवधि–सं० पर्यन्त देश वा समय ।
अबरख–अभ्रष, धातुविशेष ।
अबरजात–गतायात ।
अवर्ण–जातिभ्रष्ट ।
अबल–सं० दुर्बल ।
अवलम्ब–सं० आश्रय ।
अबहला–उ० निन्दनीय अबल । स्त्री० अबलही ।
अबला–सं० असहाया (स्त्री)
अवश्य–अ० अवश्यम् ।
अवसर–सं० उचित समय ।
अवस्था–सं० स्थिति १ । वय+क्रम २ ।
अवस्थित–सं० स्थित १ । वासी २ ।
अबाक–वचनहीन ।
अबाज–वि० शब्द ।
अबाजाही–अबरजात, गतायात ।
अबाद–बिनु खसल (खेत) ।
अबार–उजाहिमें चलैत माछ ।
अबारा–अवारणीय, कुचालि ।
अबाह–आवाक दोषयुक्त १। पएदार २ ।
अविधि–सं० अनुचित ।
अविष–विषहीन ।
अबीर–पटवास, सुगन्धि द्रव्य ।
अबीरी–अबीरक सदृश (रङ्ग) ।
अबुरबान–विचित्र मनुष्य ।
अबूह–दुष्करता, तर्कक अविषय ।
अबेत–बिनु बेओंतल ।
अबेर–अवेला, अतिक्रान्तकाल ।
अबोध–सं. बोधहीन (शिशु) ।
अव्यवस्थित–व्यवस्था नहि रखनिहार, मिथ्यावादी ।
अभक्ष्य, **अभक्ष** – अखाद्य ।
अभरख–अभ्रष, धातुविशेष ।
अभाग–अभाग्य ।
अभागल–उ० अदृष्टघट्ट, स्त्री० अभागलि।
अभार–अजस ।
अभाव–सं० असत्ता ।
अभास–आभास ।
अभिप्राय–सं० इच्छा ।
अभिमान–सं० अहङ्कार ।
अभिसार–बटगमनी, स्त्रीक स्वामीक समीप जयवा कालक गीत ।
अभेला–अवहेला, अनादर ।
अभ्यन्तर–सं० भीतर ।
अभ्यागत–सं० अतिथि ।
अभ्यास–सं० वारंवार पढ़ब वा करब ।
अमचुकारी–अमत ढेकार ।
अमचूर–शुष्क आमक चूर्ण ।
अमजिहुल–किञ्चित् अमत, किञ्चित् मधुर ।

अमट–आम्रावर्त, आतपशोषित घनीभूत आम्ररस ।

अमड़ा–आम्रातक, अम्लफलविशेष ।

अमत–अम्ल रसविशेष ।

अमतहा–अम्लप्रकारक ।

अमताइ–अम्लता

अमताइनि–किञ्चित् अम्लतायुक्त ।

अमताएब–क्रि० अमत् + अब-अमत होएब ।

अमताह–किञ्चित् अमत ।

अमती–काँटबाला लताविशेष ।

अमतौआ–अमत प्रकारक (नेबो आदि)।

अमरकन
अमरकन्द } –कन्दवत् चिरजीवी (गाछ)

अमरलत्ती–सं० अमरवल्लरी, लताविशेष।

अमरोड़ा–अम्ललोणी, शाकविशेष ।

अमल–वि० समय ।

अमलगिरी–अमलाक कार्य ।

अमलतास–आरग्वध, वृक्षविशेष ।

अमलबेंत–सं० अम्लबेतस, ओषधिविशेष।

अमला–वि० अधिकृत विशेष पुरुषक अधीनस्थ कार्यकर्ता ।

अमलापोस–वि० स्वाधीनस्थक पोषक (हाकिम) ।

अमलासाजी–वि० अमलासँ मेल ।

अमसूल–धान्यविशेष ।

अमाधौर–धान्यविशेष ।

अमात–शूद्रजातिविशेष ।

अमाबस–अमावस्या ।

अमावास्या–अमाबस, अमावस्या ।

अमाल–तृणविशेष १। चरखाक सूत्रविशेष २।

अमिलगर–अधिक आमिलसँ युक्त ।

अमीन–क्षेत्रक मापक ।

अमीर–दु:ख नहि सहनिहार ।

अमूल–सं० बिना मूलक ।

अमृत–सं० पीयूष ।

अमृतफल–फलविशेष ।

अमृतबान–घृतादिक पात्रविशेष ।

अमृतभेला–सूगाक प्रभेद ।

अमृती–मिष्टान्नविशेष ।

अमेढब–क्रि० अमेढ़+अब-ऐँठब ।

अमेढ़ी–ऐँठनाइ ।

अमोल–अमूल्य, मोल नहि भेटबाक योग्य ।

अमोट–आम्रावर्त, अमट ।

अम्बात–आमवात रोगविशेष ।

अयना–आदर्श १ । आगमन २ ।

अरकसिया–आरासँ चिरनिहार जातिविशेष ।

अरखीस–कानि, कोपरक्षा ।

अरगज–अपक्व अनेक औषध मिश्रित तेल ।

अरगट–अनुमान ।

अरगनी–कपड़ा रखबाक टाँगल डण्टा ।

अरघब–क्रि० अरघ्+अब-खएला पीलापर बहार नहि होएब [औषध नहि अरघैत अछि] ।

अरजब–क्रि० अरज्+अब-अर्जन करब ।

अरतल–शीघ्र कर्तव्य ।

अरधङ्ग–अर्द्धाङ्ग, रोगविशेष ।

अरना–जन्तुविशेष, वन्यमहिष ।

अरबधि कए–अ. कृत्रिम कए ।

अरबा–बिनु उसिनल (चाउर आदि)

अरबेठ–अरबा चाउरक चिकस ।

अरस–नीरस ।

अरसी–आरसि, आदर्श ।

अराड़ा–नदीक तट ।

अराड़ि–अड़खीस, द्वेषविशेष ।

अरारि–उदकीय, वृक्षक प्रभेद ।

अरिआ–आरिसम्बन्धी ।

अरिआएब–क्रि० अरि+अब-अकच्छ होएब ।

अरिआत–अनुव्रजन ।

अरिआतब–क्रि० अरिआत्+अब-प्रत्युद्गमन ।

अरिया दुर्भिक्ष–एक खेतमे उपजा समीपहिक खेतमे दुर्भिक्ष ।

अरिआलङ्घन–जाहिमे आरिलाँघिकेँ पानि बहए, तादृश (वर्षा) ।

अरिपन–पिठारसँ लिखल यन्त्र ।

अरिलघाँओ
अरिलघाँन } – आरिक लङ्घन ।

अरुआएब–क्रि० अरु+अब-भातक अधिककालज विकार ।

अरुचि–सं० खएबाक अनिच्छा ।

अरुबी–खाद्यकन्दविशेष ।

अरे–अ० नीचक, सम्बोधन १। आश्चर्य २।

अरेबा–अ० भयशोकादिव्यञ्जक ।

अरोस-परोस–ग्राम समीप ।

अर्घ–सं० अर्घ्य ।

अर्घब–क्रि० अर्घ् + अब-अरघब ।

अर्घासन–दशाहाभ्यन्तर पितरक अन्नार्थ अर्घ आसन ।

अर्घी–अर्घ देबाक पात्रविशेष ।

अर्जी–वि० निवेदन ।

अर्जुन–सं० वृक्ष विशेष ।

अर्थ–सं० प्रयोजन [एहि अर्थें आएल छी] १। वस्तु [कोनो अर्थेँ हम छोट नहि] २ ।

अर्थाएब–क्रि० अर्थब्+अब-ज्ञात रहनहुँ जिज्ञासा करब ।

अर्रदर्र बाजब–अण्डबण्ड बाजब ।

अर्हणा–जामाताक हेतु अर्घादिदान ।

अलगचित्त–दाओविशेष ।

अलगटेँट–योग्यकेँ बजबाक अवसर नहि दय उत्तर देनिहार ।

अलगटेँटाह–अगलटेँट + आह-किञ्चित् अलगटेँट ।

अलगट्ट–अनुचित तर्क ।

अलगफुनगी मारब–क्रि० मार् + अब-बिनु तत्त्वत: बुझनहि बाजि उठब ।

अलगब–क्रि० अलग्+अब-उपर आएब ।

अलग बलग–अ० शीघ्रताजन्य असमीचीनतापूर्वक ।

अलगाह–उ० अलग्न होएनिहार, स्त्री० अलगाहि ।

अलगी–स्त्री० चञ्चल स्वभाववाली ।

अलगोजा–बासुरीविशेष ।

अलङ्करण–सं० भूषण ।

अलङ्ग–एकदेश ।

अलच्छ–अशुभकर ।

अलछपन
अलछपना
अलछपनी } – अशुभकरत्व ।

अलटपलट–हेरफेर ।

अलबटाह–उ० ओरिआएकेँ नहि काज कएनिहार । स्त्री. अलबटाहि ।

अलबल–असम्बद्ध (वचन) ।

अलबेला–उ० स्वेच्छाविहारी । स्त्री० अलबेली ।

अलमान–ऊनक सादा ओढना ।

अलमारी–पुस्तकादि रखबाक पात्रविशेष।
अलसाएब–क्रि० अलस्+अब-आलसयुक्त होएब ।
अलौकिक–सं० लोकव्यवहारानभिज्ञ ।
अल्हुआ–मूलविशेष, हि. शकरकन्द ।
अव्यवस्थित–सं० मिथ्या व्यवस्था कएनिहार ।
अंश–सं० भाग ।
अशुद्ध–सं० अपवित्र १ । विवाहादि निषिद्ध समय २ ।
अशुभ–सं० अमङ्गल ।
अशोक–सं० वृक्षविशेष ।
अशौच–सं० जननमरणादिजन्य अशुद्धि ।
अषाढ़–आषाढ़, जेठक अगिला मास ।
अष्टकोसल–आठ व्यक्तिक मन्त्रणा, गुप्त मन्त्रणा ।
अष्टगन्ध–धूपविशेष ।
अष्टमी–आठम तिथि ।
असक–आवश्यक १ । रोगी २ । अशक्य ३ ।
असकताएब–क्रि० असकत् + अब - आलस्य करब ।
असकताह उ०–आलस्ययुक्त । स्त्री. असकताहि ।
असकूर–असंनिधि ।
असगनी–नूआ टँगबाक डण्टा ।
असगन्ध–अश्वगन्धा, औषधविशेष ।
असगुन–अशकुन ।
असँ–शैथिल्य ।
असनी–कपड़ा रखबाक डोरि ।
असङ्ख्य–सं० अगणित ।
असङ्ग–असंज्ञ, संज्ञा (चैतन्य) हीन ।

असङ्गत–सं० असुष्ठु ।
असंज्ञ–संज्ञाहीन ।
असत्य–सं० मिथ्या ।
असफल–सं० विफल ।
असबाब–वि० वस्तुजात, सामग्री ।
असबार–अश्ववार, सवार ।
असर–वि० प्रभाव ।
असरफी–स्वर्णक मुद्राविशेष ।
असराएब–क्रि० असर्+अब-धातुकेँ ठोकि ठोकि पसारब ।
असरेस–अश्लेषा नक्षत्र ।
असर्ध–श्रद्धाक अयोग्य ।
असर्फी–दस मासाक स्वर्णमुद्राविशेष ।
असल–वि० तात्त्विक ।
असह–चेष्टाहीन ।
असहाज–असह्य ।
असाइ–कीटविशेष ।
असाओन–किछु कम, असान ।
असाध / **असाध्य** } – अप्रतीकार्य ।
असान–किछु कम ।
असामी–प्रजा, रैअति ।
असार–सारिलसँ भिन्न, सारभिन्न (काठ)।
असारब–क्रि० असार+अब-पीटिकेँ लाम बनायब ।
असिआस–अत्यायास ।
असिद्ध–सं० किञ्चित् भागमे पक्क ओ किञ्चित् भागमे अपक्क १ । भातसँ भिन्न पक्व अन्न २।
असिनहट–आसिन ओ तत्समीपक समय ।
असिनी–आश्विनमे भेनिहार एक धान ।
असीतर–अस्सीसँ किछु कम वयसक (लोक) ।

असुआएब–क्रि० असु+अब-पाकक वैगुण्यसँ सक्कत होएब ।
असुस्त–अस्वस्थ, दुःखित ।
असुस्ताह–उ० किछु दुःखित । स्त्री. असुस्ताहि ।
असोक–अशोक, वृक्ष-विशेष ।
असोख–विचारशून्य ।
असोच–अशोच्य, धनादिपूर्ण ।
असोथकित–अत्यन्त थाकल ।
असौजन / **असौजन्य** } –खएबाक वा सिद्ध खएबाक अव्यवहार ।
असौजनिआँ–खएबाक व्यवहार सँ बहिर्भूत ।
अस्त–सं० अस्ताचलक अधः स्थित (सूर्यादि) ।
अस्तर–वि० दोहराक तरका वस्त्र ।
अस्तव्यस्त–कार्यमे व्याकुल, अत्यन्त अनवकाश (निन्दा) ।
अस्तूरा–केश कटबाक अस्त्र, छूरा ।
अस्त्र–सं० हथियार ।
अस्मानखोचा मारब–क्रि० मार् + अब-असाध्य कार्य करब ।
अस्मानतारा–रबाइसक प्रभेद ।
अस्द्धरस–रुकि रुकि श्वास चलब ।
अस्वरस–सं० असम्मति ।
अँह–अ० क्रोधद्योतक १ । निषेध द्योतक २ ।
अहगर–पर्याप्त ।
अहदिपन / **अहदिपना** / **अहदिपनी** } – आलस्यशीलता ।
अहदी–आलसी ।

अहरा–पक्षीक आहार ।
अहा / **अहाहा** } –अ० खेद आश्चर्य आदिक द्योतक ।
अँहा–आदरणीय सम्बोध्य ।
अहाँङ–अहङ्कार ।
अहिबात–सौभाग्य ।
अहिबाती–स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री ।
अहो भाग्य–अ० सं० आनन्दसूचक ।
अह्लाद–आह्लाद, आदर ।
अह्लादब–क्रि० अह्लाद्+अब-सस्नेह आदर करब ।

आ

आ–अ० आओर ।
आइ–अ० अद्य, वर्तमान दिनमे ।
आइसँ–अद्यारभ्य ।
आएँ–अ० विस्मय १ । संबोधनोत्तर सावधानता २ ।
आएत–सुन्दर ।
आएब–क्रि० अब्+अब-आगमन
आओँ–अन्नक विकार-विशेष, सं० आम ।
आओँट–व्याकुल ।
आओन–गाड़ीक पहिआक सामी ।
आओर–अ० समुच्चय १ । अतिरिक्त २ ।
आक–अर्क, पुष्पविशेष ।
आँक–एकसँ नओ पर्यन्त अङ्क १। चिह्न २।
आँकड़–हि० कंकड़, बहुत छोट-छोट पाथर ।
आँकब–क्रि० अँक् + अब-अङ्कित करब ।
आकर–सं० खानि ।
आकरि–बहिला (माल) ।

आकस्मिक–सं० दैवात् होएनिहार
आकार–सं० आकृति, स्वरूप ।
आकाश–सं० अस्मान ।
आँकुर–अंकुर ।
आँकुस–अंकुश, अँकुसी ।
आकृति–आकार ।
आखर–अक्षर ।
आखरि करब–क्रि० कर्+अब-रोसेँ सिंहसँ माटि उखाड़ब ।
आँखि–अक्षि, नेत्र ।
आँखि उठब–क्रि० उठ्+अब-अक्षिरोग विशेष ।
आँखि गुड़ारब–क्रि० गुड़ार्+अब-क्रोधेँ आँखिक उत्फालन ।
आँखि देखाएब–क्रि० देखब्+अब-आक्षेप करब ।
आँखि देब–क्रि० द्+अब-दोषावह अक्षिपात करब ।
आँखि नहि लगाएब–क्रि० लगब्+अब-तुच्छ बुझब ।
आँखि निड़ारब–क्रि० निड़ार्+अब-रोगेँ आँखिक उत्फालन करब ।
आँखि लागब–क्रि० लग्+अब-किञ्चित् काल आँखि मुनब १। दोषावह ओ साश्चर्य अक्षिपात होएब २।
आखिर–वि० अन्त ।
आँग–अङ्ग, शरीर ।
आगत-स्वागत–अतिथि सम्मान ।
आँगन–अङ्गण ।
आगन्तुक–सं० अयनिहार ।
आगम–भाविवर्षादिक चिह्न ।
आगर–अप्रतिरुद्ध वातागम स्थान, हवादार १ । खानि २ ।
आगरह–आग्रह ।
आगाँ–अग्र ।
आगि–अग्नि ।
आँगी–स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आगु–अग्र ।
आँगुठ–अङ्गुष्ठ, बुढ़बा आँगुर
आँगुर–अङ्गुली, हाथ-पाएरक शाखा ।
आगू–अग्र ।
आग्रह–सं० अति प्रार्थना ।
आङ–अङ्ग ।
आङन–अङ्गण ।
आङी–स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आङुर–अङ्गुलि ।
आँच–चूल्हिमे लगाओल जारनक ज्वाला ।
आँचब–क्रि० अँच्+अब-चूल्हिमे जारन देब ।
आचमन–सं० जलसँ मुहक शुद्धि ।
आचमनी–आचमनक पात्रविशेष ।
आँचर–अञ्चल ।
आचार–सं० व्यवहार ।
आचार्य–सं० उपनयन करओनिहार गुरु ।
आच्छन्न–सं० व्याप्त ।
आज–अ० अद्य, वर्तमान दिनमे ।
आँजन–अञ्जन, अक्षिरोगक औषध विशेष।
आजुक–वर्तमानदिनसम्बन्धी ।
आँजुर–अञ्जलि, मिलल दुहू हाथ ।
आँट–अवधि ।
आँटा–गोधूमादिचूर्ण ।
आँटी–प्रमाणविशेषपरिच्छिन्न बद्धतृण ।
आठ–अष्ट, एक अधिक सात ।
आठम–अष्टम ।
आँठी–अष्टि, आम्रादिक बीज ।

आड़–व्यवधायक ।
आडम्बर–सं० आड्वाल ।
आड़ा–व्यवधानकारक लम्बा उच्च माँटि।
आँड़ा–अण्डबीज, सजीव गोल वस्तु ।
आड्वाल–आडम्बर ।
आँत–अन्त्र ।
आँत उतरब–क्रि० उतर + अब-अण्डकोषक रोगविशेष ।
आँत ममोरब–क्रि० ममोर्+अब पेटक व्यथाविशेष ।
आँतर–प्रथम सिराउड़क मध्य भाग ।
आता–फलविशेष ।
आतिख–आतिक्त, कषाय ।
आँती–अण्डकोषमे अँतरीक प्रवेश, रोग विशेष ।
आतुर–सं० अति उत्सुक ।
आतू–अ० कुकुरक आह्वानशब्द ।
आद–आर्द्रक, कन्दविशेष ।
आदङ्क–आतङ्क, भयविशेष ।
आदति–वि० स्वभाव ।
आदमी–वि० मनुष्य १। भृत्य २। व्यक्ति ३।
आदर–सं० संमान ।
आदरस–आदर्श ।
आदाय–वि० गृहीत ऋणक प्रत्यर्पण ।
आदि–सं० प्रथमावयव ।
आद्योपान्त–सं० आदि सँ अन्त पर्यन्त ।
आध, **आधा**–अर्द्ध, समांश ।
आधा-आधी–परस्पर आधा ।
आधार–सं० अधिकरण १ । भक्षण २ ।
आधी–सतरञ्ज मे आधा जीत ।
आध्वान–उद्गार, ढेकार ।
आन–अन्य० भिन्न ।
आनन्द–सं० हर्ष ।
आनन्दित–सं० हर्षसँ युक्त ।
आनब–क्रि० अन्+अब-आनयन ।
आन्दोलन–हल्ला मचाएब ।
आन्हड़–हि० अन्धड़, बिहारि ।
आन्हर–अन्ध, दर्शनशक्तिरहित-नेत्रद्वययुत।
आन्ही–बिहारि, हि० आँधी ।
आप कए–अ० दोषसमुच्चय, सेहो [ई गाए बूढ़ि आप कए (=सेहो) मरखाहि आप कए] ।
आपट–अनुचित आग्रह ।
आपति, **आपत्ति**–विपत्ति ।
आपस–प्रत्यर्पण ।
आपसी–प्रत्यर्पित ।
आफद–वि० आपत्, उपद्रव ।
आफदी–उपद्रव कएनिहार ।
आब–इदानीम्, हि० अब ।
आबा–मृद्भाण्डपाकानल ।
आबाज–वि० शब्द ।
आबाद–वि० बिनु खसल (खेत) ।
आबादी–उपजाबाला (भूमि) ।
आबेस–स्नेह ।
आभड़-खुभड़–उच्चावच, ऊँचनीच ।
आभा–झलक १। सादृश्य २।
आभ्युदयिक–सं० नान्दी श्राद्ध ।
आम–आम्र, फलविशेष ।
आम कलमी–राजाम्र ।
आमद–वि० आय, द्रव्यागम ।

आमदनी–वि० नियत आमद ।
आम सरही–क्षुद्राम्र ।
आमाघौर–धान्यविशेष ।
आमील–काँच आमक सुखाएल खण्ड ।
आमेख–ईर्ष्या ।
आमोद-प्रमोद–अनेक विषयक आनन्द ।
आयत–सुन्दर ।
आरत–अलक्त, नखराग १ । आर्त्त २ ।
आरतक पात–लाक्षारससम्भृत पात ।
आरति–आर्त्ति ।
आरती–आरार्तिक, नीराजन ।
आरब–बिना उसिनल (चाउर) ।
आरम्भ–सं० प्रथमक्रिया ।
आरसि–आदर्श १। औँठीक प्रभेद २ । छातीक खोदहा ३। आगि रखबाक मृत्पात्र ४।
आरा–उभयतः डण्टाबाला आरी ।
आरारोट–वि० खाद्यविशेष ।
आरि–खेतक चारू कातक उच्च सीमा, हि मेढ़ ।
आरी–चिरबाक लौहयन्त्रविशेष ।
आरु–खाद्य कन्दविशेष ।
आल–लाल रङ्गविशेष ।
आलन–टाट वा भीतक मध्यमे देबाक खढ़ ।
आलस–आलस्य ।
आलसी–आलस्ययुत ।
आलात–गजीफाक शरविशेष ।
आलाप–परस्पर गप्प ।
आलू–कन्दविशेष ।
आलू बोखारा–आलू आकारक अमत फल ।
आशा–सं० शुभसंभावना ।
आशीर्वाद–सं० शुभेच्छाबोधक बचन ।
आशीष–शुभेच्छा ।
आश्रम–सं० निवासस्थान १ । गार्हस्थ्यादि २ ।
आषाढ़–जेठसँ अगिला मास ।
आस–आशा, शुभक विश्वास ।
आसकति–अशक्ति, आलस्य ।
आसकूर–दूर, असमीप ।
आसन–सं० बैसबाक कम्बलादि १ । वृक्षविशेष, सं. असन २ ।
आसनी–छोट आसन ।
आसमर्द–घोल ।
आसरम–निवासस्थान ।
आसरा–आश्रय, अवलम्बन ।
आसिन–आश्विन, भादबसँ अगिला मास ।
आसिरबाद–आशीर्वाद ।
आँसु–आश्विनमे उपजनिहार धानक सदृश अन्न ।
आस्था–सं० सेवा परिचर्या १ । आदर-बुद्धि २ ।
आस्फोट–आडम्बर ।
आस्मर्द–घोल ।
आह–अ० क्रोध ओ शोकक व्यञ्जक ।
आहट–किञ्चित् शब्द ।
आहर–खेत लगक जलाशय ।
आहरा–पक्षीक भक्ष्य ।
आहल–परिमाणविशेष (तृणक) ।
आहार–भोजन १ । धान्यादि पटएबाक जलाशय २ ।
आहि–आधि, मानस दुःख ।
आहिरे, **आहिरेबा** } – अ० खेदव्यंजक ।

इ

इआर–मित्र ।
इआरी–मित्रता ।
इकड़ी–तृणविशेष ।
इचना–मत्स्यविशेष, इञ्चाक ।
इछाइन, **इछैन** } – दुर्गन्धविशेष ।
इछैनीबच–औषधविशेष ।
इजमलिया–केबाड़क लोहक छिड़की ।
इजर–इज्जल, तृणविशेष ।
इजहार–वि० वादी ओ प्रतिवादीक कथन।
इजोत–उद्योत, प्रकाश ओ प्रकाशवान् ।
इजोरिया–चन्द्रकिरण वा तद्युक्त (राति) ।
इज्जति–वि० मर्यादा, प्रतिष्ठा ।
इड़हर–संहितव्यञ्जनविशेष ।
इतर–सं० अन्य १ । क्षुद्र २ ।
इतरपन, **इतरपना**, **इतरपनी** } – क्षुद्रता ।
इतराएब–क्रि० इतर + अब-अगराएब ।
इतलाय–वि० निवेदन ।
इनहोर–गरम, उष्ण (जल) ।
इनाम–वि० पारितोषिक ।
इनार–पैघ कूप ।
इन्तजाम–वि० प्रबन्ध ।
इन्द्रजओ–इन्द्रयव, यवाकार औषधविशेष।
इन्द्री–लिङ्ग ।
इन्होर–उष्ण (जल) ।
इयार–मित्र ।
इयारी–मित्रता ।
इरोत–अढ़, व्यवधान ।
इलची–फलविशेष हि. लीची ।
इलमलिआ–केबाड़क लोहक छिड़की ।
इस्–अ० पीड़ाद्योतक ।
इसखिआम–इसखौक योग्य ।
इसखी–सिटनिहार, स्वशरीर-सौन्दर्यप्रेमी ।
इसफगोल–औषधविशेष ।
इसरगत–सापक जड़ी क्षुद्रवृक्ष, सं. पुलिक ।
इसारा–इङ्गित ।

ई

ई–प्रत्यक्ष दृश्य ।
ईर्ष्या–सं० चित्तविकारविशेष ।
ईशानकोण–सं० पूर्वोत्तरक मध्यकोण ।
ईश्वर–सं० निखिलसामर्थ्यशाली ।
ईश्वरी–ईश्वरसम्बन्धी (चक्र वा घटना)
ईस्–अपीड़ाव्यञ्जक ।
ईह–अ० असूया १ । क्रोध २ । खेद ३।

उ

उऋण–ऋण सँ उद्धृत, अनृणी ।
उकटन–उद्वर्तन, आँग उङारबाक वस्तु ।
उकटब–क्रि० उकट्+अब-अनौचित्यपूर्वक कथोद्धाटन करब १ । माटि कोड़ब २ ।
उकठ–अन्योद्वेजक क्रीड़ा, उपद्रव ।
उकठाह–उ० उकठ कएनिहार । स्त्री. उकठाहि ।
उकठिआ–उकठ कएनिहार ।
उकरू–उत्क्रम, अयथावत् स्थित ।
उकस पाकस–अस्थैर्य ।
उकहब–क्रि० उकह् + अब-काष्ठक दृढ़ता हटब ।
उकाठी–उकठाह उपद्रवकयनिहार (नेना)।

उकासी–काश रोग ।

उक्खरि–उदूखल ।

उखड़ब–क्रि० उखड़ + अब-उत्खनन।

उखड़हा–एकोपक्रम कार्यकाल ।

उखड़ा–वृक्षक व्याधिविशेष ।

उखड़ाह–उखड़ि गेनिहार ।

उखरड़–चूड़ा कुटबाकाल उखरिसँ छिरिआएल अन्न ।

उखरि–उदूखल, धान कुटबाक पात्र ।

उखरिमुसरा–शाकविशेष ।

उखाड़ब–क्रि० उखाड् + अब-उत्पाटन ।

उखिआर–इक्षु, कुसिआर, हि. ऊख ।

उखीबिखी लागब–क्रि. अस्थिर रहब ।

उगब–क्रि० उग्+अब-उदित होएब ।

उगरब–क्रि० उगर्+अब-उर्वरित होएब।

उगरा–उर्वरित ।

उगरास–चन्द्रसूर्यक राहुसँ विमुक्ति ।

उगहनि–नीचसँ पानि भरबाक डोरी ।

उगहब–क्रि० उगह् + अब-उद्वहन, हि. ढोना ।

उगारब–क्रि० उगात्+अब-उर्वरित करब।

उँगारब–क्रि० उँगात्+अब-उद्वर्तन करब।

उगिलब–क्रि० उगिल्+अब-उद्गिरण, मुहसँ फेकब ।

उगिला–उद्गीर्ण, उगिलल ।

उघरब–क्रि० उघर्+अब-उद्घटित होएब।

उघार–उद्घाटित, अनावृत ।

उघारब–क्रि० उघार्+अब-उद्घाटन करब।

उङारब–क्रि० उङार्+अब-उद्वर्तित करब।

उचक्क / **उचक्की** –उचङ्ङा, कनेक आँखि घुमने हठात् वस्तु लए लेनिहार ।

उँचगर–अधिक ऊँच ।

उचङ्ङा–उचक्का ।

उचती–विनय-वचन ।

उचरब–क्रि० उचर्+अब-बूझि पड़ब १। फुरब २ ।

उचरिङ–उच्चिटिङ्ग, पक्षिकीटविशेष ।

उँचाइ–उच्चता ।

उचाट–उच्चाटन ।

उचाँढ़–चार अलगओनिहार कोढ़ो ।

उचाँस–उच्चप्राय, कनेक ऊँच ।

उचित–सं० योग्य ।

उचितवक्ता–सं० यथास्थित बजबामे प्रौढ़।

उचित कल्याण–उचित श्राद्धादि कल्याण विवाहादि एतदुभय ।

उचिला–धोतीमे बिनबाक दोषेँ उच्च देश ।

उच्छन्न–सं० समूल विनष्ट ।

उछटब–क्रि० उछट्+अब-एकमे लागिकेँ वेगेँ दोसरा दिस जाएब ।

उछती–विनय ।

उछन्न–उच्छन्न ।

उछन्नर–उ० उच्छृङ्खल । स्त्री. उछन्नरि ।

उछलब–क्रि० उछल्+अब-उच्छलन, जलादिक उपर छिटकब ।

उछाल–पूर्ण भए बहता पानिबाला ।

उछाह–उत्सव ।

उछाही–उत्सवमे देय ।

उछिलब–क्रि० उछिल्+अब-उच्छलन ।

उजबिजाएब–क्रि० उजबिज्+अब-उद्विग्न होयब ।

उजर–शुक्ल ।

उजर दप-दप–अत्यन्त उजर ।

उजरब–क्रि० उजर्+अब-अवयवशः नष्ट होएब ।

उजरा–श्वेत प्रभेदक ।

उजरी–शुक्लता ।

उजरी धबब–क्रि० धब्+अब-श्वेतता प्रकाश होएब ।

उजहब–क्रि० उजह् + अब - माछक जलवेगाभिमुख गमन ।

उजहिआ–जलवेगाभिमुख चलित (माछ)

उजागर–प्रकाश ।

उजार–भग्नाङ्ग होएब (गृहादिक उजरब)।

उजारब–क्रि० उजार्+अब-भग्नाङ्ग करब (वृक्षगृहादिक) ।

उजाहि–वेगाभिमुख गमन (माछक)

उजिआर–प्रकाश ।

उज्जर–उज्ज्वल, शुक्ल ।

उज्झट–उद्भट ।

उझक / **उझक्क** –किञ्चित् (दर्शन)

उझकब–क्रि० उझक्+अब-चढ़ल पात्रक झुकब ।

उझकुन–बरतन आदिमे टेकन ।

उझट / **उझट्ट** –उद्भट १ । उझाँट २ ।

उझट लागब–क्रि. लग्+अब-वेगापन्न बस्त्रादिक किञ्चिन्मात्र सम्बन्ध ।

उझाँट–अलक्ष्यमे लागब ।

उझिलब–क्रि० उझिल् + अब-पात्रक मुह नीच कए भूमि पर धान्यादि खसाएब ।

उझिला–अझिलल पात्रक मुह नीचाँ कय खसाओल ।

उझुक्का–आकस्मिक आघात ।

उञ्चालिस–एकोनचत्वारिंशत् ।

उञ्चालिसम–एकोनचत्वारिंशत्तम ।

उञ्चास–एक कम पचास ।

उञ्चासम–एकोनपञ्चाशत्तम ।

उटङ्ग–उकरू, अयथावत् स्थित ।

उँटनी–स्त्री० उष्ट्रस्त्री, विशाल स्त्री-प्राणिविशेष । पुं० ऊँट ।

उठओना–प्रतिदिन नियत (क्रयण)

उठब–क्रि० उठ्+अब-उत्थित होएब १। खर्च होएब २।

उठल्लू–अगण्य ।

उठाओ–त्याग (पूर्व प्रचलितक) ।

उठाबैसी–वारंवार उठब बैसब ।

उड़कुस्सी–विषाक्त लताविशेष ।

उड़ड़ा–मत्स्यविशेष ।

उड़ता–उड़बाक योग्य ।

उड़नखटोला–एम्हर ओम्हर वृथा घुमनिहार (निन्दामे) ।

उड़न्ती–अमूलक विषय, किंवदन्ती ।

उड़ब–क्रि० उड़ + अब-आकाश मार्गेँ चलब ।

उड़रा–मत्स्यविशेष ।

उड़ाक–उड़निहार ।

उड़ाहब–क्रि० उड़ाह्+अब-नवीन भाँड़केँ काजमे आनब १। इनार पोखरिक पानि उपछिकेँ शुद्ध करब २ ।

उड़ीस–मत्कुण, शोणिताशी कीटविशेष । हि. खटमल ।

उढ़रब–क्रि० उढर्+अब-पुरुषान्तरक सङ्ग स्त्रीक कामवश जाएब ।

उढ़री–स्त्री० पर पुरुषक संग कामवश गेलि (स्त्री) ।

उढ़ारब–क्रि० उढ़ार्+अब-अन्य स्त्रीकेँ अधीन कए पत्नीभावेँ लए जाएब।

उनटन–अन्यथास्थिति ।

उनटब–अन्यथाभाव ।

उनटा–विपरीत ।

उतरंग–उत्तरसँ अबैत बसात ।

उतरब–क्रि० उत्तर्+अब-नीचाँ आएब ।

उतरबरिआ, **उतरबारि** } –उत्तर दिशक ।

उतरा–उत्तरफल्गुनी नक्षत्र ।

उतराढ़ाढ़–उत्तरोत्तर नीच, उत्तरप्लव ।

उतराहुत–किञ्चित् उत्तरदिगवस्थित ।

उतरी–श्राद्धमे यज्ञोपवीताकार उत्तरीय वस्त्र ।

उतान–उत्तान, पीठक भरेँ सुतल ।

उतार–क्रमिक पातर (लाठी आदि)

उतारब–क्रि० उतार्+अब-प्रतिलिपि करब १ । उपरसँ नीचाँ करब २ ।

उतारा–पत्रोत्तर ।

उताहुल–उत्सुक ।

उत्कट–सं० तीव्र १ । अप्रिय २ ।

उत्कट कोटि–सं. तीव्र विभाग ।

उत्तम–सं० उत्कृष्ट ।

उत्तमहा–उत्तम प्रभेदक ।

उत्तर–सं० उदीची दिक् १ । प्रति वाक्य २ ।

उत्तर भर–उत्तर दिस ।

उत्तरीय–सं० द्वितीय वस्त्रविशेष ।

उत्थर–अल्प गहीँड़, उत्थल ।

उत्पटाँग–असङ्गत ।

उत्पति–उत्पत्ति ।

उत्पात–सं० उपद्रव ।

उत्पाती–सं० उपद्रवकर्ता ।

उत्फाल–उद्धत ।

उत्सव–सं० उछाह ।

उत्साह–सं० तीव्र इच्छा ।

उत्साही–सं० उत्साहसँ युक्त ।

उथर–उत्थर, उचितसँ अल्प गहीँड़ ।

उदय–सूर्य चन्द्रमाक उगब ।

उदय-प्रलय–नीक-अधलाह ।

उथल-पाथल–युगपत् नानाक्रिया ।

उदार–सं० दानी ।

उदास–सं० शोकयुक्त, विरक्त ।

उदासी–औदास्य १ । वैराग्यशाली २ ।

उदासी झलकब–क्रि० झलक्+अब-औदास्य देखार होएब ।

उदेस–उद्देश, स्थिति ।

उद्दण्ड–उच्छृङ्खल ।

उद्ध–जलजन्तुविशेष ।

उद्धब–अविषयज्ञ ।

उद्धार–उबारब ।

उद्वृत्त–सं० अधलाह क्रियाबाला ।

उद्वेग–सं० उन्मनस्कता ।

उद्यम–सं० उद्योग ।

उद्यमी–सं० उद्योगी ।

उद्योग–सं० साधनक्रिया ।

उद्योगी–सं० उद्योग कएनिहार ।

उधकब–क्रि० उधक्+अब-वारंवार किञ्चित् उपर नीचाँ होएब ।

उधार–पश्चात् मूल्य देबाक व्यवस्थासँ कीनल १ । उद्धार २ ।

उधारब–क्रि० उधार्+अब-उद्धार करब ।

उधारी–पश्चात् मूल्य देबाक व्यवस्थासँ कीनल ।

उधिआएब–क्रि० उधि+अब-दुग्धादिक तापसँ ऊर्ध्वमुख होएब ।

उधिआन–अधिआएब ।

उधुक्का–जोरसँ उपरदिशकेँ धक्का ।

उधेसब–क्रि० उधेस्+अब-असाधुतया उद्घाटन ।

उनचालिस–ऊनचत्वारिंशत् ।

उनचालिसम–ऊनचत्वारिंशत्तम ।

उनचास–ऊनपञ्चाशत् ।

उनचासम–ऊनपञ्चाशत्तम ।

उनट–परिवर्तन ।

उनट-पनट–हेरी-फेरी ।

उनटन–अन्यथा स्थिति ।

उनटब–क्रि० उनट्+अब-अन्यथाभाव १। अधोमुख होएब २।

उनटल–अन्यथा भेल १। अधोमुख २।

उनटा–विपरीत ।

उनटा खोदहा–खोदहाक प्रभेद ।

उनटा सरिसओ–नीचमुख सरिसब ।

उनतीस–ऊनत्रिंशत् ।

उनतीसम–ऊनत्रिंशत्तम ।

उनमुनाएब–क्रि० उनमुन्+अब-उन्मुख होएब ।

उनरब–क्रि० उनर् + अब-माठा आदि खैँचलासँ अधिक फानक होएब ।

उनसट्ठि–एकोनषष्टि, एक कम साठि ।

उनसट्ठिम–एकोनषष्टितम, साठिक पूरक।

उनहत्तरि–एकोनसप्तति ।

उनहत्तरिम–एकोनसप्ततितम ।

उनारब–क्रि० उनार् + अब-फान पैघ करबाक हेतु आकर्षण ।

उनासी–एकोनाशीति, एक कम अस्सी ।

उनासीम–एकोनाशीतितम, उनासीक पूरक।

उनाह–भाफ लेब ।

उनाहब–क्रि० उनाह् + अब-भाफ लेब ।

उनैस–एकोनविंशति, एक कम बीस ।

उनैसम–एकोनविंशतितम, उनैसक पूरक।

उन्तीस–एकोनत्रिंशत् ।

उन्तीसम–एकोनत्रिंशत्तम ।

उन्नैस–एकोनविंशति ।

उन्नैसम–एकोनविंशतितम ।

उपकार–सं० आनक इष्टसम्पादन ।

उपकारी–सं० आनक इष्टसम्पादक ।

उपज–उपजा, उत्पाद्य धान्यादि ।

उपजब–क्रि० उपज् + अब-धान्यादि उत्पन्न होएब ।

उपजा–उत्पन्न धान्यादि ।

उपटब–क्रि० उपट्+अब-वास हटाएब १ । गाछक सर्वथा विनाश [राड़ीक उपटब कठिन] २ ।

उपड़ब–क्रि० उपड् + अब-मूल सँ अलग्न होएब ।

उपदेश–सं० इष्टकथन ।

उपनयन–सं० व्रतबन्ध । ब्राह्मणादिक संस्कारविशेष ।

उपनयनिआ–अचिरोपनीत १ । उपनयन-सम्बन्धी २।

उपपुरोहित–पुरोहितक सहायक ।

उपमा–सं० सादृश्य ।

उपर–उपरि सं. । अधिकरणार्थक अव्यय।

उपरका–उपरिस्थित, स्त्री० उपरकी ।

उपरफट्ट, **उपरफट्टी** } –उपरिष्टात् प्राप्त ।

उपरबदरा–किछु मात्र वर्षा, क्षणिक मेघकृत वर्षा ।

उपरसहकिआ–भानसमे भनसिआक सहायक ।

उपरसहाक–भानसमे भनसिआक सहायता ।
उपरा–उचितसँ अधिक (अन्नादि) ।
उपराग–दोषकथन ।
उपराड़ि–उच्च चास ।
उपरी–बाइली आएल वस्तु ।
उपरोँझ– एकग्राह्यतया निश्चितक अनका लेबाक आग्रह ।
उपरोटा–उपरका ।
उपहत } – अनुच्छिष्ट प्रक्षालन योग्य ।
उपहँत
उपाड़–उत्पाटन ।
उपाड़ब–क्रि० उपाड़् + अब-उत्पाटन ।
उपाति–अनका देल असिद्ध भोजनसामग्री।
उपाधि–पदवी, मिश्रप्रभृति ।
उपाध्याय–ब्राह्मणक पदवीविशेष ।
उपाम–उत्तम ।
उपाय–सं० साधक ।
उपास–उपवास ।
उपासब–क्रि० उपवास ।
उपासल–उपोषित, उपास कएने ।
उपेखब } –क्रि० उपेख् + अब-उपेछ् + अब-उपेक्षा करब।
उपेछब
उफाँट–अप्रेषित भूत ।
उफाँटि–पचेसीक खेड़िमे कटबाक योग्य स्थानगत (गोटी) ।
उफाँटि लागब–किञ्चिद्भागमात्रेण अस्त्रादिक लागब ।
उब्बरब–क्रि० उबर् + अब-उर्वरित होएब।
उबानि–उद्वान, अनुचित वान्ह १ । अनुचित बान २ ।
उबार–उद्धार
उब्बारब–क्रि० उबार् + अब-उद्धार करब।
उबेर–गतमेघ काल ।
उभड़-खाभड़–उच्चावच (भूमि)
उमकब–क्रि० उमक् + अब – मदजन्य बालक्रीड़ा ।
उमकी–बालक्रीड़ा, दौड़धूप ।
उमगब–क्रि० उमग्+अब उद्गम ।
उमजब–क्रि० उमज्+अब-कृश मालक किञ्चित् पुष्ट होएब ।
उमठब–क्रि० उमठ्+अब-अतिभोजनसँ तृप्त होएब ।
उमड़ब–क्रि० उमड् +अब-आधार परिपूर्ण होएब ।
उमत–उन्मत्त ।
उमतल–उन्मत्त ।
उमेद–वि० आशा, इच्छा ।
उमेदबार–इच्छुक ।
उरङ्गब–क्रि० उरङ्ग + अब-पुनः संप्राप्ति
उरड़–हर जोतबामे हरमें लागल मृत्तिकातृणादि ।
उरमा–मनक तरङ्ग ।
उरम्हब–क्रि० उरम्ह् + अब – पुनः प्रादुर्भाव ।
उरिण } –ऋण सँ उद्धत ।
उरिन
उरीद–माष, अन्नविशेष ।
उरेबं–असमीचीन ।
उलटब–क्रि० उलट+अब-विपरीत होएब ।
उलटा–उद्वृत्त, विपरीत ।
उलटा खोधहा–खोधहाक प्रभेद ।
उलटा सरिसओ–अधोमुख सरिसओ ।
उलबुलाएब–क्रि० उलबुल्-अब-परतारल जाएब ।

उलबुलान–प्रतारणा ।
उलहन–उपराग, दोषकथन ।
उलाएब–क्रि० उलब् + अब -किञ्चिन्मात्र भर्जन सहड़ि आदिक ।
उलाओल–किञ्चिन्मात्र ।
उलार–पाछाँ दिस अधिक भारयुक्त (गाड़ी) ।
उलूक–सं० पक्षिविशेष, बादुर ।
उलोँच–उत्तरच्छद ।
उल्कापात–सं० + आकाशसँ ज्वालाक खसब ।
उल्टा–उलटा, विपरीत ।
उल्टा खोधहा–खोधहाविशेष ।
उल्टासरिसओ–अधोमुख सरिसओ ।
उल्लू–पक्षिविशेष ।
उसकब–क्रि० उसक् + अब-उत्सरण, आगाँ जाएब ।
उसट्ठ } –नीरस ।
उसठ
उसर } –ऊषर । उसबाला भूमि ।
उसड़
उसरग–उत्सर्ग ।
उसरगा–उत्सृष्ट ।
उसरब–क्रि० उसर + अब-शीघ्र शीघ्र क्रिया होएब १। समाप्त होएब २।
उसराहु–शीघ्र होएबाक योग्य ।
उसार–समटब ।
उसारब–क्रि० उसार् + अब-समटब ।
उसास–उच्छ्वास । आश्वास, विश्राम ।
उसास देब–क्रि० द् + अब- अनका काजकेँ अपनापर लए ओकरा विश्राम देब ।
उसाहब–क्रि० उसाह + अब-उद्यमन ।
उसिनब–क्रि० उसिन् + अब-धान्यादिक जलमे अग्निपाक ।
उसिना–पानि मे सिद्ध (धान्य ओ तदीय तण्डुल) ।

ऊ

ऊक–उल्का, मुखमे प्रज्वलित लम्बा बद्धतृणपुञ्ज ।
ऊकाऊकी–ऊकक क्रीड़ा सुखरात्रिक ।
ऊख–इक्षु, कुसिआर ।
ऊगब–क्रि० उग् + अब-उदय ।
ऊघब–क्रि० उघ् + अब – उद्वहन ।
ऊँच– उच्च ।
ऊँट–उष्ट्र, जन्तुविशेष । स्त्री० उँटनी ।
ऊठब–क्रि० उठ् + अब-उत्थान ।
ऊड़ब–क्रि० उड् + अब-उड्डयन ।
ऊद–माछ मारनिहार जन्तुविशेष ।
ऊधम–उत्सव ।
ऊन–ऊर्णा ।
ऊनी–ऊर्णावस्त्र ।
ऊपर–उपरि ।
ऊभी–तीक्ष्णाग्र बाती ।
ऊमी–काँच मरुआक आँटा ।
ऊरीबीरी–मनक अस्थैर्य ।
ऊस–ऊष ।
ऊसर–ऊषर ।
ऊहि–ऊह, तर्क ।

ए

एँ–अ० प्रश्नार्थक ।
ए–एतद्, प्रत्यक्ष निर्देश्य ।
एक–सं० स्वतुल्यद्वितीयशून्य । प्रथमसंख्यायुक्त

एकघरिआ–स्वतुल्य दोसराक घरसँ रहित गाममें बसनिहार ।

एकचारी–तुल्य दोसर चारसँ शून्य घर ।

एकचोपा–साम्यानाक एक प्रभेद ।

एकछाहा–आन अन्नसँ अमिश्रित (अन्न)।

एकजनिआँ–एक गोटाक योग्य छोट (पाकपात्रादि)।

एकजुतिआ–जाहिमे एक व्यक्तिक जूति हो ।

एकटक
एकटक्की } – दीर्घकाल तन्मात्रमे अक्षिपात ।

एकटक्की लगाएब–क्रि० लगब् + अब -तन्मात्रमे बराबरि अक्षिपात करब।

एकटङ्क–एकभगाह, एक भाग अवनत ।

एकटङ्ग–एक पाएरेँ स्थिति ।

एकटङ्ग देब–क्रि० दू+अब-एक पाएरसँ ठाढ़ रहब ।

एकटप–एकावरण वस्त्रगृहविशेष ।

एकटार–पृथक् महानसादिक परस्पर सम्बन्ध ।

एकट्ठा–एकत्रित ।

एकठहुरी–एकमुष्टि, एकहि बेरमे ।

एकठा–एक काठक बनाओल (नाओ)।

एकढ़बा–फुटल बानरक दल्लू ।

एकतरफा–एकदिसाह ।

एकतारा–वाद्यविशेष ।

एकतालीस–एकचत्वारिंशत्, एक अधिकचालिस ।

एकतालीसम–एकतालिसक पूरक ।

एकतीस–एकत्रिंशत् । एक अधिक तीस।

एकतीसम–एकतीसक पूरक ।

एकतुरिआ–एकवयस्क ।

एकदम–वि० नितान्त ।

एकदिना–एक दिनमे सम्पन्न भेनिहार ।

एकदिसाह–एकतरफा ।

एकन्नी–एक आनाक राजकीय मुद्रा ।

एकपट्टा–एक पाटक ओढ़नाविशेष ।

एक परतार–कोनो एक समय ।

एकपिठिआ–अव्यवहित कनिष्ठ वा ज्येष्ठ।

एकपुरुषिआ–एकपुरुषभोग्य (धनादि)।

एकपेँड़िआ–एक गोटाक चलबाक रास्ता ।

एकफक्का–आधा फाँक कएल (सुपारी)।

एकबग्घा–क्रीड़ाविशेष ।

एकबटिआ–एक व्यक्तिक चलबाक योग्य बाट ओ तादृश नीपल भूमि ।

एकबट्टी–एकक चलबाक योग्य बाट ।

एकबतरिआ–एक बयसबाला ।

एकबरखा
एकबरखू } –एक वर्षक निर्मित १। एक वर्ष रहनिहार २।

एकबार–समाचारपत्र ।

एकबाहि–एकभगाह ।

एकभगत–एकभुक्त ।

एकभगाह
एकभग्गू } – एक भाग झुकल ।

एकमसिआ
एकमस्सू } – एक मासक जनमल (नेंना) ।

एकमहला–एक महलक (कोठी) ।

एकमुहिआ–एकोन्मुख ।

एकम्मा–पृथक् लटकल एक आम ।

एकरङ्ग–वस्त्रविशेष ।

एकलखत–बराबरि ।

एकलयँ
एकलेँ } –एकार मात्राक चिह्न ।

एकलेब–एकबेर लेबल ।

एकसओं–एकसम, बराबरि, अनुच्चावच।

एकसट्ठि–एकषष्टि, एक अधिक साठि।

एकसर
एकसरुआ } – एकाकी ।

एकसट्ठिम–एकषष्टितम, एक सट्ठिक पूरक ।

एकसम–एकरङ्ग समीकृत भूमि ।

एकसंभर–एकाटार ।

एकहत्तरि–एकसप्तति, एक अधिक सत्तरि।

एकहत्तरिम–एकसप्ततितम, एक-हत्तरिक पूरक ।

एकहत्थी–एक हाथक सोटा ।

एकहत्थू–एक गोटाक हाथें लगनिहारि माल १ । एक गोटाक हाथेँ सम्पादित २ ।

एकहारा–एक तहक वस्त्र ।

एकहेड़िआ–एकसंघसम्बन्धी ।

एका–घोड़ागाड़ीक प्रभेद ।

एकाएकी–अ० एकैकशः ।

एकाङ्गी–ओषधिविशेष ।

एकाटार–एकसंभर, परस्पर संबद्ध ।

एकाढ़–जेरफुट्टू मुख्य बानर ।

एकादशी–सं० एगारहम तिथि ।

एकान्त–सं० व्यत्ययन्तरशून्य स्थान ।

एकान्ती–खानगी, जनान्तिक ।

एकान्नब्बे–एकनवति, एक अधिक नब्बे।

एकान्नब्बेम–एकनवतितम, एकान्नब्बेक पूरक ।

एकाबन
एकाबन्न } – एकपञ्चाशत्, एक अधिक पचास ।

एकाबन्नम–एकपञ्चाशत्तम, एकाबनक पूरक ।

एकार–श्रेष्ठक नीच शब्दें सम्बोध १ । ए आखर २।

एकार मारब–क्रि० मार्+अब-श्रेष्ठक नीच शब्देँ सम्बोधन करब ।

एकारि–जकर चारू दिश जजाति कटल हो एहन जजातिबाला खेत ।

एकार्णवा–अतिजलव्याप्त ।

एकासी–एकाशीति, एक अधिक अस्सी

एकासीम–एकाशीतितम, एकाधिक अस्सी ।

एकासीम–एकाशीतितम, एकासीक पूरक।

एकैस–एकविंशति, एक अधिक बीस ।

एकैसम–एकविंशतितम, एकैसक पूरक ।

एकोँछ–एक दिसाह, एक दिस झुकल (खाम्हीप्रभृति) ।

एकोद्दिष्ट–वार्षिक श्राद्ध, वर्षी ।

एकोन–एक दिस टेढ़ ।

एकोर
एकौर } –एक दिस कम (भार आदि)।

एक्का–घोड़ाबाला गाड़ीक प्रभेद ।

एखन–एतत्क्षण ।

एखनुक
एखनुका } –एतत्क्षणिक, एहि कालक।

एगारह–एकादश, एक अधिक दश ।

एगारहम–एगारहक पूरक ।

एटन दोटन–क्रीड़ाविशेष ।

एड़ा–जूताक एडीलगक तरी ।

एड़ी–पाएर तरक गोल भाग ।

एड़ी दोड़ी–गुल्ली डण्टाक एक खेलि।

एतनी–एहि अल्प परिमाणक ।

एतने–एतावदेव सं०, एतबे ।
एतबा–एतावत्, एहि परिमाणक ।
एतय–अ० एहि ठाम ।
एतीकाल–एतेक समय धरि ।
एतीखन–एतेक क्षण धरि ।
एतेक–एतावत्, एहि परिमाणक ।
एत्ता–इयत्ता ।
एनमेन–अ० हूबहू ।
एना–अ० इत्थम् सं०, एहि प्रकारेँ ।
एनाएनी–अ० हस्तदर्शितदिगनुसार ।
एमहर–अ० एहि दिश ।
एमाढ़–तृणविशेष ।
एम्हर–अ० एहि दिश ।
एव–अ० सं० अवधारण । एहि प्रसङ्ग विद्योतन द्रष्टव्य ।
एसकर–एकाकी ।
एसकरुआ–दोसर समाङसँ हीन ।
एह–अ० क्रोधार्थक ।
एहन–एतादृश, एकर सन ।

ऐ

ऐआम–वि० समय ।
ऐँचब–क्रि० ऐँच् + अब-तिर्यक् होएब १। तिर्यक् करब २।
ऐजन–ओएह व्यक्ति ।
ऐँट–उच्छिष्ट, हि० जूठ ।
ऐँठकूठ–उच्छिष्ट तत्सम उभय ।
ऐँठकुआर–जलमिश्रित अधिक ऐँठ ।
ऐँठन–घुमाएब ।
ऐँठब–ऐँठ् + अब-घुमाएब ।
ऐँठलाह–कथा नहि माननिहार । स्त्री. ऐँठलाहि ।
ऐँठा–डोरि, केशबन्धक ।
ऐँठार–उच्छिष्ट फेंकबाक स्थान ।
ऐँठी–ऐँठन ।
ऐँढब–क्रि० ऐँढ् + अब-घुमाएब ।
ऐँढ़ी–पाकक हेतु घुमाएब ।
ऐतिस–अभिमान ।
ऐयाम–वि० समय ।
ऐला–रोगविशेष, छोट मांस बढ़ल ।
ऐसतैस–क्रोधसँ भयवचन ।
ऐहब–स्त्री० अविधवा, सधवा ।

ओ

ओ–असौ, परोक्ष निर्देश्य १। अ० आओर २।
ओआक–पक्षिविशेष ।
ओआजिब–वि० उचित ।
ओइरी–धानक प्रभेद, सं० नीवार ।
ओकाएब–क्रि० ओक् + अब-बमनो-पस्थितियुक्त होएब ।
ओगरब–क्रि० ओगर् + अब-रक्षार्थ लगमे रहब ।
ओगरबाह–रक्षक, स्त्री० ओगरबाहिनी ।
ओगरबाहि–रक्षकता, रक्षा ।
ओगारब–क्रि० ओगार् + अब-मालकेँ घास देब ।
ओङठन / **ओङठनी** }–जाहिमे सटि पीठक भरेँ बैसी से ।
ओङठब–क्रि० ओङठ् + अब-पीठक भरेँ बैसब ।
ओछ–छोट १। कृपण, नीच २।
ओछओन–आस्तरण ।
ओछाएब–क्रि० ओछब्+अब-आस्तरण करब ।
ओछाह–नीच प्रकृतिक, स्त्री० ओछाहि ।

ओज–थोड । अल्पमान, शिकस्ती ।
ओजन–वि० परिमाण ।
ओजी–एबज, प्रतिनिधि ।
ओझराएब–क्रि० ओझर् + अब-अनायासेँ उद्धारक अयोग्य होएब ।
ओझरोट–ओझराएब ।
ओझा–ब्राह्मणक उपाधि १। गुनी २।
ओझैगिरी–यन्त्रमन्त्रप्रयोग ।
ओँटी–वस्ति, नाभिक नीचाँभाग (पेटमे)।
ओठ–ओष्ठ ।
ओठग(ङ)न करब–क्रि० कर्+अब-उपबासार्थ रात्र्यन्तमे भोजन करब।
ओठग(ङ)न / **ओठग(ङ)नी** }– जाहिमे सटि पीठक भरेँ बैसी ।
ओठग(ङ)ब –क्रि० ओठग् + अब-पीठक भरेँ बैसब ।
ओठर–अबेर, अन्तिम समय ।
ओड़नी–डोम आदिक वाद्यविशेष ।
ओड़हुल–पुष्पविशेष, सं० जपा ।
ओड़िआ–उत्कल, उड़ीसा ।
ओड़िका–दूध लारबाक ओ परसबाक वस्तुविशेष ।
ओढ़ना–ओढ़बाक वस्त्र ।
ओढ़नाएब–क्रि० ओढ़न्+अब-उनटि पनटि सर्वाङ्ग लगाएब ।
ओढ़नी–ओढ़बाक छोट वस्त्र ।
ओढ़ब–क्रि० ओढ़्+अब-वस्त्रकेँ देहने आच्छादनक हेतु लगाएब ।
ओढुल–सं० जपा, पुष्पविशेष ।
ओतनी–ओहि परिमाणक अल्प ।
ओतने–ओतबे, ओहि अल्प परिमाणक ।
ओतप्रोत–व्याप्त, भरल ।
ओतबस्थित–तदवस्थित, तद्रूप ।
ओतबा–तत्परिमाणक, तावान् सं० ।
ओतय–अ० ओहिठाम, सं० तत्र ।
ओतीकाल–ओतबा काल ।
ओती खन–ओतबा क्षण ।
ओती राति–ओतेक राति ।
ओतेक–ओहि परिमाणक ।
ओदरब–क्रि० ओदर्+अब-विदरण ।
ओदार–विदरण ।
ओदारब–क्रि० ओदार+अब-विदारण ।
ओदावर्त–परिच्छेद ।
ओदासोखा–किछु शुष्क किछु तीतल (वस्त्रादि) ।
ओदि–सं० दोहद, गुर्विणीक स्वाभाविक रोग ।
ओधि–बाँसक जड़ि ।
ओना–ओहि प्रकारेँ ।
ओनाओनी–अ० हस्तनिर्दिष्ट दूर सरल दिगनुसार ।
ओफ–रौदक आगर ।
ओबा–हैजा, सं० महामारी ।
ओमहर / **ओम्हर** } – अ० ओहि दिस ।
ओर–अन्त ।
ओरहा–साक्षात् आगिसँ छिम्मडि सहित पक्व द्विदल ।
ओराहब–क्रि० ओराह+अब-साक्षात् आगिमे शिम्बीसहित द्विदलक पकाएब ।
ओरि–भारक प्रथमभागक समान द्वितीय भाग ।
ओरिआएब–क्रि० ओरिअब्+अब- वस्तु ठीक करब ।

ओरिआओन–प्रबन्ध, सबील ।
ओल–खाद्य कन्दविशेष, सं० सूरण ।
ओलकोबी–हि० गाँठकोबी, कन्दविशेष।
ओलती–ओसारासँ बढल चारक निचला भूमि ।
ओलब–क्रि० ओल् + अब-गर्दा तर करैत हाथ घुमाए अन्नकेँ उपर आनब ।
ओलरब–क्रि० ओलर् + अब-पलरब ।
ओला–अतिसंशोधित वर्तुलाकार चीनी ।
ओलिआ–सिद्ध बाबाजी ।
ओस–बिनु मेघक आकाशपतित अति सूक्ष्म तुषार ।
ओसाएब–क्रि० ओसब् + अब-बसातसँ अन्नकेँ साफ करब ।
ओसाओन–ओसओनिहारक वेतन १। ओसयबासँ पृथक् भेल तृणादि २।
ओसारा–घरक बाह्य अनावृत कोष्ठ ।
ओसूल–आसादित (आदेय धन) ।
ओसूली–आदेय धनक आसादन ।
ओस्ता–वैद्यविशेष ।
ओस्ताद–वि० कारीगर ।
ओह–अ० खेद ।
ओहदा–वि० पद ।
ओहन–तादृश ।
ओहाएब–क्रि० ओह् + अब-बाहब ।
ओहार–आवरण ।
ओहासी–बलिष्ठ भूरससहित जल ।

औ

औआएब–क्रि० औ + अब - व्याकुल होएब ।
औक–वमन ।
औखध–औषध ।
औखधार–औषधविधया उपयोगी ।
औँघी–निद्राक पूर्वरूप ।
औँघाह–औँघीसँ युक्त । स्त्री० औँघाहि।
औँटन–दुग्धादिक पाक ।
औँटक–क्रि० औँट् + अब-दुग्धादिक पाक ।
औँठ–वस्त्रादिक प्रान्त ।
औँठा–अँगुठा १। अँगुठाक भूषण २।
औँठी–आँगुरक भूषण । अङ्गुलीयक ।
औनाएब–क्रि० औन् + अब-औलबौल होएब, अनवस्थिति ।
औनापथारी–आकुलतापूर्वक अन्वेषण ।
औन्हब–क्रि० औन्ह् + अब-सं० न्युब्जीकरण ।
औन्हा–मुरगा विशेष १ । बिना मुहक गुर २ । वासनक मुखबन्दकए उपरसँ आगिमे पकाओल फल ३।
औन्हापथारी–औनापथारी उठब ।
औन्ही–पाएरक भूषणविशेष, सं० मञ्जीर।
औबल–वि० उत्तम ।
औल–गरमी ।
औलबौल–गरमीसँ मनक व्याकुलीभाव ।
औषध–सं० भेषज ।
औषधी–चिकित्सा ।
औँसब–क्रि० औँस् + अब-स्नेहलेपन।

क

कएथा–कन्था ।
कएनिहार–उ० कर्त्ता । स्त्री कएनिहारि।
कएम–कतम, कोन संख्याक पूरक ।
कएल–कृत ।
कओर–कवल, खयबाक प्रमाण-विशेष ।

कँकड़ोहरि–काँकोड़क बिल ।
ककबा–कङ्कतिक, ककही ।
ककरासिंही–ओषधिविशेष ।
ककरेज / **ककरेजा** } – ओषधिविशेष ।
ककरैल–ओषधिविशेष ।
ककहा / **ककही** } – कङ्कतिक, ककबा ।
कँकोड़हा बाजू–बाँहिक भूषणविशेष ।
कखन–अ० कोन क्षणमे ।
कखनुक / **कखनुका** } – कोन क्षणमे भेल ।
कखहरा–कखप्रभृति शषसहान्त वर्णमाला।
कँखौर–काँखक गूर ।
कगजंघ–छोट-पैघ जाँघबाला ।
कँगना–कङ्कण, पहुँचाक स्त्रीभूषणविशेष।
कँगनी–उच्च भूमिक ओर ।
कँगहिआ–ओषधिविशेष, सं० अतिबला।
कङना–कङ्कण ।
कङनी–उच्च भूमिक अन्तभाग ।
कङहिआ–अतिबला ।
कङ्काल–शरीरक अस्थिपञ्जर ।
कच-कच–बालुकायुक्त (भातआदि) ।
कचकचाएब–क्रि० कचकच्+अब - क्रोधाकुल होएब ।
कचकचाह–उ० क्रोधस्वभावक । स्त्री० कचकचाहि ।
कचकब–क्रि० शिरा दुखाएब ।
कँचका–काँच प्रभेदक ।
कँचकुआह–आबासँ उद्धत किञ्चित् अपक्क (मृद्भाण्ड) ।
कचनार–काञ्चनाल, पुष्पविशेष ।
कचनारी–ओड़हूल फूलक प्रभेद ।
कचब–क्रि० लग-लग छओ देब ।
कचबच करब–क्रि० बहुत बाजब ।
कचबचिआ–पक्षिविशेष ।
कचरब–क्रि० असमग्र भक्षण, आम आदि किछु खाएब किछु छोड़ब ।
कचरमकूट–अनेक वस्तुक पर्य्याप्त भोजन ।
कचरा–हाथमे पहिरबाक काचक गहना १। मोट हथजौड़ २।
कचलोहिआ–परिश्रमसँ देह चोरओनिहार।
कचहरी–वि० न्यायालय ।
कचार–थालपानिसँ युक्त (स्थान) ।
कचारब–क्रि० प्रक्षालन ।
कचाल–अधिक थालसँ युक्त (स्थान)।
कचिआ–खढ़ कटबाक दाँतबाला हाँसू १। कच्ची प्रभेदक (मोति आदि) २।
कँचिआएब–ना० काँची+अब-काँचीसँ युक्त होएब ।
कचुआबध–छिन्न-भिन्न काटब ।
कचुरी–कबै माछक छबरा १। जलज तृणविशेष २।
कचूर–कर्चुर, ओषधिविशेष ।
कचोआबध–छिन्न-भिन्न काटब ।
कचोट / **कचोठ** } – पश्चात्ताप ।
कचौरी–दालिसँ युक्त पूरी ।
कच्ची–नकली, अवास्तविक (मोति आदि) ।
कच्चू–कार्यमे अयोग्य, कार्य करबामे अपरिपक्व ।

कच्छाछोप–भरि जाँघ (जल) ।
कछटा–कच्छटिका, नङोटा ।
कछन काछब–क्रि० कछ् + अब- व्याजसँ अवंस्थान्तरक चेष्टा करब ।
कछब–क्रि० व्याजचेष्टा करब ।
कछबी–काछुक समान (पिलही) ।
कछमछ करब–क्रि० स्थिर नहि रहब ।
कछमछाएब–क्रि० कछमछ् + अब - कच्छपमत्स्यवत् स्थिर नहि रहब ।
कछमछी–अस्थैर्य ।
कछार–अस्त्रविशेष ।
कछुआडाबर–काछुक उदराकार डाबर ।
कछुआपीठ–कच्छपपृष्ठाकार (भूमि) ।
कछुबी–काछुक समानाकार गोल (पिलही) ।
कछेर–जलक प्रान्त, तट ।
कछोटा–कच्छटिका, कच्छी ।
कछौर–शुष्क पुरैनिक पातक बोझ ।
कजरगौर–धान्यविशेष ।
कजरङ्गी–कारी गाए । कज्जलाङ्गी ।
कजरी–जमल पिच्छड़ जलविकार १। कज्जल २। धान्यविशेष ३।
कजरोट–पैघ कजरौटी १। तत्सदृश भूषणविशेष २।
कजरौटी–काजरक पात्रविशेष ।
कजला–बटेरक प्रभेद ।
कजली–कज्जल, अग्निशिखाविकार ।
कज्जी–वि० अङ्गवैगुण्यसँ अक्षम ।
कञ्चटक–कानमे मारब १। सुखाएल काठमे उत्पन्न ओषधिविशेष २ ।
कञ्चगति–अ० कञ्चाक हिसाबेँ ।
कञ्चा–पैसा, पण ।
कञ्चु–कञ्ची सं० कन्दसम्भव शाक विशेष।
कञ्छब–क्रि० पेट किञ्चित् दर्द युक्त होएब ।
कञ्छी काटब–क्रि० कट् + अब- परोक्ष देने (चलब) ।
कट–अवधि ।
कटकटाएब–क्रि० कटकट् + अब- कटकट शब्द करब (दाँत कटकटाएब रोग थीक) ।
कटकी–पातर काठी ।
कटकुट करब–क्रि० अस्थिर विचार करब ।
कटकेना–बन्धकी ।
कटगर–उ० नीक काटबाला, सुन्दर । स्त्री कटगरि ।
कटगैनी–कण्टकारी, ओषधिविशेष ।
कटनिआँ–तटक कटनाइ ।
कटनी–कटनाइ, सं० कर्त्तन, धनकटनी ।
कटनौत–काटल वस्तुक बनाओल (तीमन) ।
कटब–क्रि० छिन्न होएब ।
कटबन्धक–छोड़एबाक कटसँ युक्त बन्धक ।
कटबी बाजू–अलङ्करणविशेष ।
कटमट करब–क्रि० क्षोद-क्षेम करब ।
कटमटी–क्षोद-क्षेम ।
कटरा–कटाह (घोड़ा) ।
कटसरि–कण्ठभूषण, काँट ।
कटहर–कण्टकिफल, पनस, फलविशेष ।
कँटहा–काँटबाला १। कँटाह प्रभेदक २।
कटाउझ–परस्पर दाँतसँ काटब (कुकुर आदिक) ।

कटाओ–कषण, काटब । यथा कौशिकी बहुत कटाओ करैत छथि ।
कटार–अस्त्रविशेष, खोड़ेआ १ । वृक्षविशेष २ ।
कटारि–अधिक कटाओ ।
कटारी–अस्त्रविशेष ।
कटाह–दाँतसँ कटनिहार (कुकुरप्रभृति)।
कँटाह–अधिक काँटबाला ।
कटैआ–काँटबाला क्षुपविशेष ।
कटोँझ–कुकुर आदिक परस्पर दाँतसँ काटब ।
कटोरी–कटोरिका सं०, पूड़ी ।
कट्टर–अत्यन्त दृढ़ (मनुष्य) ।
कट्टू–लड़ाइमे हारि गेल, (बटेर आदि)।
कट्ठा–बिगहाक बीसम अंश ।
कठकेरा–पकलहु पर कठोर रहनिहार वा आँठीबाला केरा ।
कठकोकाँड़ि–अतिदृढ़ (निन्दामे)
कठखोधी–काठ खोधनिहार एक पक्षी ।
कठगर–कठोर (फलादि) ।
कठताल–वाद्यविशेष ।
कठधारा–न्यून बटिखारासँ हेरी-फेरी कए साधित बृहत् परिमाण ।
कठपीरी–पीताम्लानक, पुष्पविशेष ।
कठपुतरी–काठक पुतरी, काष्ठपुत्तलिका ।
कठबाद–बकबाद, वितण्डा ।
कठबादी–कठबाद कएनिहार ।
कठबाप–जन्मदातासँ अन्य माताक स्वामी ।
कठबेङ–बेङक प्रभेद ।
कठबेली–बेली फूलक प्रभेद ।
कठम–गुलगुल नहि भेल, पक्व कठिन फल ।
कठमाम–विमाताक भ्राता ।
कठरा–वाद्यादिक शरीर, ठट्ठर १। इजलास लग वादी-प्रतिवादीक ठाढ़ होएबाक स्थान २।
कठरिआ–रङ्गविशेष १। ताहिसँ रङल वस्त्र २।
कठलाज–कृत्रिम लज्जा ।
कठहर–कण्टकिफल, पनस ।
कठहँसी–कृत्रिम हास, हास्याभास ।
कठाइन–गन्धविशेष १ । तद्युक्त वस्तु २ ।
कठार–अस्त्रविशेष ।
कठाल–गाछ कटबाक स्थान, काष्ठालय ।
कठिआरी–दाहक स्थान १। पसारीसँ ग्राह्य वार्षिक कर २।
कठिन–सं० कठोर १। कष्टसाध्य २।
कठिनाएब–ना० कठिन+अब-कठिन होएब ।
कठिनाइ–किञ्चित् कठिन ।
कठुआएब–क्रि० कठु + अब-शैत्यसँ काष्ठप्राय होएब ।
कठुऐनी–काष्ठप्राय होएब ।
कठुली–छोट कोठी ।
कठैत–सर्पविशेष ।
कठोर–सं० सकत ।
कठोह–कठोर ।
कठोहि–काठमे रहनिहार बेँग व साप ।
कठौत–काठक पात्रविशेष ।
कड़कड़ाएब–क्रि० कड़कड् + अब- कड़कड शब्द करब ।
कड़कब–क्रि० क्रोधसँ उत्कटक्रियेच्छा ।
कड़गर–अत्यन्त कड़ा ।

कड़रब–क्रि० बड़दक दाँतकड़कड़ाएब १। ककरो उन्नतिक वारंवार उल्लेख करब २।
कड़रा–क्रकर, पक्षिविशेष ।
कड़रि–कदली, केराक गाछ ।
कड़हर–खाद्य जलीय कन्दविशेष ।
कड़हा–क्वाथ ।
कड़ही–अधिक दही दए बनाओल झोर ।
कड़ा–सक्कत, कठिन ।
कड़ाङ्कुल–बृहदाकार पक्षिविशेष ।
कड़ाम–दाउनिमे पाँती जोरसँ बड़दकेँ बन्हबाक रस्सा
कड़ार–व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।
कड़ारी–व्यवस्थाबाला ।
कड़ी–शृङ्खला १। कोठाक छतक छोटका चौपहल काठ २।
कड़ुआइ–कटुता ।
कड़ू–कटु, खएबामे कटुरस ।
कड़ू तेल–सरिसब वा रैँचीक तेल ।
कड़ोरिआ–जातिविशेष ।
कढ़ी–दहीक घोरमे बनाओल तीमन ।
कण्टहा–पुँ० पात्र, श्राद्धमे पाएर पुजओनिहार ब्राह्मण ।
कण्टि–कन्ति, परिमाणविशेष ।
कण्टिरबा–उ० छोट नेना। स्त्री० कण्टिरबी।
कण्ठ–सं० शरीरावयवविशेष ।
कण्कठगत–कण्ठमे आएल ।
कण्ठदाह–सं० कण्ठक जलनि ।
कण्ठपुष्पी–ओषधिविशेष ।
कण्ठमलिआ–कण्ठीधारी, बाबाजी ।
कण्ठा–कण्ठक पैघ दानाक छोट माला।
कण्ठिआ–कण्ठीधारी बाबाजी ।
कण्ठी–कण्ठमे पहिरबाक तुलसीक माला ।
कण्डरिएँ-ताकब–क्रि० तक् + अब-कटाक्ष-वीक्षण ।
कण्डली–वृक्षविशेष, शिशुकन्दली ।
कण्डा–शरकाण्ड, सरकण्डा ।
कतका–कातमे स्थित ।
कतनी / **कतने** } – किंपरिमाणक अल्प ।
कतबा–कियत् सं०, किंपरिमाणक ।
कतबाहि–तटसमीपक जलभूमि ।
कतय–अ०, कुत्र सं०, कोन स्थानमे ।
कतरनी–कर्त्तरी, पान कतरबाक वंशरचित अस्त्र ।
कतरब–क्रि० कर्त्तन, कैंचीसँ काटब ।
कतरा–कतरल, यथा सुपारीक कतरा १। मत्स्यविशेष २। उशीर, तृणविशेष ३।
कतरी–मत्स्यविशेष ।
कतहु–अ० कोनो स्थानमे, क्वचित् ।
कतिआ–काती, अस्त्रविशेष ।
कतिकहर–कार्त्तिक तथा तत्समीपक समय ।
कतिका–धान्यविशेष ।
कवितकाबतर–कार्त्तिकावतारसमय ओ तत्समीप पूर्व समय ।
कतिकी–कार्त्तिकमे होएनिहार (आम आदि)
कती काल–कियत् काल ।
कती खन–कियत्क्षण ।
कती राति–कियद्रात्रि ।
कतेक–कियत्, किंपरिमाणक ।

कतोक–कतिपय ।
कत्तल–कृत्त, काटल ।
कत्ता–काता, हाँसूक प्रभेद ।
कथ–कपित्थ, फलविशेष ।
कथक्कड़–बहुत कथा जननिहार ।
कथा–कथन १। दुर्वचन २। इतिहास ३।
कथोपकथन–नाना प्रकारक निन्द्य उत्तर-प्रत्युत्तर ।
कदन्न–सं० अधलाह अन्न ।
कदबा–कर्दम, खेतक कादो ।
कदबापखार–कदबाक अनवशेष ।
कदम–कदम्ब, वृक्षविशेष १। घोड़ाक गतिविशेष २।
कदम्ब–सं० वृक्षविशेष ।
कदराएब–क्रि० कदर+अब-शीतसँ भीत होएब ।
कदरिआएब–ना० कदरी + अब-शीत भीत होयब ।
कदरी–शीतसँ भीत ।
कदीमा–पीतकूष्माण्ड, लताफलविशेष ।
कदूकस–सजमनि प्रभृति केँ मेही बनयबाक सच्छिद्र वस्तुविशेष ।
कदै–थालमिश्रित जल ।
कन–कण १ । फल वा अन्नक आनुमानिक परिमाण २ ।
कनउसास–खेतक किंचित् ऊँच भाग १। भारी उठएबा मे मद्दति २।
कनकजीर–धान्यविशेष ।
कनकट–उ० जकर कान काटल हो । स्त्री० कनकटि ।
कनकट्टा–उ० अनादियमाण काटल कानबाला । स्त्री० कनकट्टी ।
कनकट्टू–पु० काटल कानबाला आदर-विषय ।
कनकन–शीत ।
कनकन करब–मारबाक उत्साह करब ।
कनकनाएब–क्रि० कनकन्+अब – वेदनाविशेष ।
कनकनी–वेदनाविशेष १। शीतता २।
कनकुत्ती–जे खेत बराबरि कूत कएल जाए ।
कनखरल–कानि कएने स्थित
कनखा–फुटल भाँड़क टुकड़ा ।
कनखी–छोट कनखा १। चाउर आदि अन्नक टूटल अग्र-भाग २। आँखिक इसारा ३।
कनखुर–माछक कर्णाकार अङ्ग ।
कनखुराह–उ० खोचाह १। उपद्रव कएनिहार २।
कनगुरिआ–कनिष्ठा, सभसँ छोट आँगुर ।
कनगोज / **कनगोजर** } – कीटविशेष १। कानक मूल भाग २।
कनचटक–कानक उपरका घाओ १। ओकर औषधविशेष २। कानमे मारब ३।
कनछी-काटब–क्रि० कट् + अब- परोक्ष बाट धरब ।
कनछेदी–कर्णवेध ।
कनझप्पा–कान झपनिहार (टोपी) ।
कनतोप–चुपकी, मौन ।
कननमुह–उ० क्रन्दनक पूर्वरूपापन्न मुहबाला । स्त्री० कननमुहि ।
कनना–उ० अधिक क्रन्दनशील । स्त्री० कननी ।

कनपट्टी–कान ओ नेत्रक मध्यभाग ।
कनफट्टा–संन्यासीक प्रभेद ।
कनफुसकी } – कान लग सुस्तेसँ कहब।
कनफुस्सी } (निन्दा में)
कनबधा–मुख्य बाध सँ अन्यत्र थोड़ खेत ।
कनबह–अप्रधान बाहा ।
कनबहार–गतायात शून्य बहार ।
कनमन करब } –क्रि० मारबाक चेष्टा
कनमनाएब } करय ।
कनमा–सेरक षोड़शांश प्रमाण, छँटाक हि० ।
कनमाहीँ–एक कनमाक बटिखारा वा पैली ।
कनमुनिआँ–कनमुन्ना कएनिहार ।
कनमुन्ना–खेड़ि मे असत्य व्यवहार ।
कनरी–उपाड़ल गाछक सीर सहित माटि।
कनसार–भूजाक स्थान ।
कनसुन–अन्यमनस्क, कर्णशून्य ।
कनसुपती–बाँसक शूर्पाकार बल्कल ।
कनात–परदाक हेतु आवरणपटविशेष ।
कनाती–परदाक टाट ।
कनारि मारब–क्रि० मार+अब–जोर सँ चिकरब ।
कनारोहट } –अतिक्रन्दन ।
कनारोहठ }
कनाह–काण, एक आँखि सँ दर्शन शक्तिशून्य । स्त्री० कनाहि ।
कनिआँ–स्त्री० कन्या, अविवाहिता वा नवविवाहिता ।
कनिआँ पुतरा–कपड़ाक स्त्री-पुरूष ।
कनिआरि–वृक्षविशेष ।
कनिएँ–किञ्चित् ।
कनियाँ–स्त्री० कन्या, अविवाहिता १। वा नवविवाहिता २।
कनियाँ पुतरा–क्रीड़ार्थ वस्त्रनिर्मित स्त्री पुरुष ।
कनियेँ–किञ्चित्, अल्प ।
कनीटा–स्वल्प प्रमाणक ।
कनेआ–स्त्री० कन्या ।
कनेआँ पुतरा–कनिआँ पुतरा ।
कनेक–किञ्चित् ।
कनेठब–क्रि० ऐँठिकेँ कान्ह घुमाएब ।
कनैठी–कानक ऐँठब ।
कनैल–कर्णिकार, पुष्पविशेष ।
कनैली–कानक भूषणविशेष ।
कनोजरि–ठारिक अङ्कुर ।
कनोजिआ–ब्राह्मणजातिविशेष ।
कनोत–खाम्ह-खाम्हीक उपरका वस्तु मे बन्धन।
कनोतब–क्रि० खाम्ह खाम्ही केँ उपरकासँ बान्हब ।
कनौसी–कर्णाङ्कुश, भूषणविशेष ।
कन्ताकनैल–पुष्पविशेष ।
कन्तोड़–मञ्जूषा, बन्द कए वस्तु रखबाक काष्ठादिरचित पात्रविशेष ।
कन्तोड़ी–छोट कन्तोड़ ।
कन्तोर्प–चुपकी, मौन ।
कन्था–सं० गुदड़ी ।
कन्न कन्न करब–क्रि० मारबाक हेतु कसमस करब ।
कन्ना–खेड़िमे अनौचित्य १। शाकविशेष २।
कन्नी–रत्नादिक टुकड़ा १। कण २।

कन्या–सं० पुत्री ।
कन्यागत–कन्या दिसक लोक ।
कन्यादान–सं० कन्याक दान, विवाह ।
कन्हगर–दृढ़ कान्हसँ युक्त ।
कन्हुआएब–क्रि० कन्हु+अब–क्रोधसँ कुटिलवीक्षण ।
कन्हेठब–क्रि० कान्हपर लादब ।
कन्हेर–तट ।
कन्हौर–कान्हक वहनप्रयुक्त मांसवृद्धि ।
कपचब–क्रि० कैचीसँ केशादिक काटब ।
कपट–सं० छल ।
कपटी–सं० छली, ठक ।
कपड़ा–हि० वस्त्र ।
कपड़िया–पु० बाबाजीक प्रभेद ।
कपनी–कम्प ।
कपब–क्रि० कम्पन ।
कपहा–कापबाला (तृण) ।
कपार–ललाट ।
कपाह–काप+आह–किंचित् कापसँ युक्त।
कपिली–कपिला गाय, कैल गाय ।
कपुतनेड़हा–पु० कुपुत्र, नेढ़हा सन अकार्यक पुत्र (निन्दामें) ।
कपूत–पु० हि० कुपुत्र ।
कप्पा–वस्त्रक छोट खण्ड ।
कफ–स० श्लेष्मा ।
कफनचोर–वि० मुरदाक नूआ चोरओ-निहार ।
कफाह–उ० कफी । स्त्री कफाहि १। कफकारक (खाद्यवस्तु) २।
कबइ–कवयी, मत्स्यविशेष ।
कबकब–खएलापर मुहमे कुचकुची लगओनिहार (ओल कञ्चु प्रभृति)
कबकबाएब–क्रि० कबकब+अब- ओल आदिक भक्षणसँ विकारविशेषयुक्त होएब ।
कबजंघ–उ० छोट पैघ पाएरबाला । स्त्री० कबजङ्घि ।
कबजा–दू काठक संयोजक लौहादि निर्मित पेँचबाला वस्तुविशेष १। पहुँचा २। स्वाधीनता ३।
कबडील–क्रीड़ाविशेष ।
कबाएब–क्रि० कब् + अब–आबाक तावेँ वा आनो प्रकारेँ दरकयुक्त होएब ।
कबाछु–कपिकच्छु, विषबाला लताविशेष।
कबाड़–कपाट ।
कबाला–वि० विक्रय पत्रविशेष ।
कबाहटि–कठिनता, असौकर्य ।
कविता–कविकर्म, कवित्व आदि ।
कवितम–काव्याकार काव्यभिन्न (लेख) ।
कवित्त–छन्दविशेष ।
कबीला–काम्पिल्ल ।
कबुलचोर–उ० स्वीकारक अवसरपर नठनिहार । स्त्री० कबुलचोरनी ।
कबुला–पूर्व अङ्गीकार ।
कबुलापाती–देवाराधनाक पूर्व अङ्गीकार ओ सम्प्रति आचरण उभय ।
कबूल–वि० स्वीकार ।
कबूची } –उपद्रावक ।
कबुच्ची }
कबै–कवयी, मत्स्यविशेष ।
कब्बू–बटेर रखबाक पिजड़ा ।
कम–अल्प ।
कमचा–छुरिकाकार तीक्ष्ण बाती ।

कमचालि–मन्दगामी, कम चलनिहार ।
कमची–छोट कमचा ।
कमठाइनि, **कमठान**–तृणरहित करब ।
कमण्डल–कमण्डलु ।
कमण्डलु–सं० जलपात्रविशेष ।
कमतिआ–पु० खेतक कार्यमे नियुक्त भृत्य ।
कमती–अल्पता ।
कमब–क्रि० अल्प होएब ।
कमरकस–डाँड़क भूषणविशेष, मेखला ।
कमरसारि–कर्मकारशाला, कमारक कार्यालय ।
कमरा–वि० कोठली ।
कमरिआ–पु० एक प्रकारक बाबाजी ।
कमरी–कटहरक कोमे सटल कोसदृश १। घोड़ाक रोगविशेष २।
कमल–सं० पद्म १। कम्बल २। न्यूनीभूत ३।
कमलगट्टा–ढाठमे मसालक हेतु माटिक चिलम सन १। कमलाक्ष २।
कमलपत्री–कमलक पातक समान रङ्ग।
कमला–स्त्री. नदीविशेष १। नेत्ररोगविशेष, कामला २।
कमलाक्ष–सं० कमलक बीआ ।
कमसरही–स्वल्पकरक, जाहि जमीनक मालगुजारी थोड़ हो ।
कमस्सल–वि० नकली, अतात्त्विक ।
कमहिआ–कामहि, कार्यहीन ।
कमाइ–कमएबाक वेतन १। कमाएब २।
कमानी–छाता चसमा आदिमे लागल तार १। अण्डकोष बन्हबाक यन्त्र २।

कमार–उ० कर्मकार, काठक काज कएनिहार । स्त्री० कमैनि ।
कमालि–पसारीक वार्षिक निश्चित देय ।
कमासुत–कर्मासक्त, कमएबामे पूर्ण प्रवृत्त ।
कमी–न्यूनता ।
कमीला–औषधविशेष ।
कमैनि–स्त्री० कमार जातिकस्त्री ।
कमोट–पसारीक वार्षिक नियत कमाई अन्न ।
कम्पास–पक्षी बझएबाक यन्त्र ।
कम्बल–सं० भेँड़ाक रोमक आसन वा ओढ़ना ।
कम्म–अल्प ।
कम्मल–कम्बल ।
कम्मी–अल्पता ।
कयनिहार–उ० कर् +अनिहार कर्त्ता । स्त्री० कयनिहार ।
कयम–कतम, कोन संख्याक पूरक ।
कयल–कर् + अल=कृत ।
कर–कवल, ग्रास, कओर १। खप्पा २।
करकर करब–क्रि० आनक अप्रिय बाजब ।
करकराएब–क्रि० करबक+अब-करकर शब्द करब ।
करकरेज–ओषधिविशेष ।
करँकुटुमैती–विवाहादि सम्बन्ध ।
करगर–उ० पैघ-पैघ कर खएनिहार । स्त्री० करगरि ।
करची–वंशशाखा ।
करछ–धातुरचित दर्वी ।
करछुली, **करछुल्ली**– छोट करछु ।

करजनी–करञ्ज, ओषधिविशेष ।
करजान–कदल्युद्यान, केराक गाछक स्थान ।
करजोड़ी–पानक प्रभेद ।
करनी–क्रिया १। खुरपीसन लेबबाक साधनविशेष २।
करब–क्रि० करण ।
करवीर–सं० पुष्पविशेष ।
करम–कर्म १। अदिष्ट २।
करमसह–अ० क्रमशः ।
करमसाँढ़–भाग्यवान् ।
करमा–धान्यविशेष ।
करमी–कलम्बी, लताविशेष ।
करलत–बन्धनोपयोगी दृढ़ लताविशेष ।
करसी–सुखाएल गोबर ।
करहड़–करहाट, कन्दविशेष ।
कराओ–कलाय, अन्नविशेष ।
करामाति–वि० युक्ति ।
करामाती–वि० युक्ति कएनिहार ।
कराह–कटाह, पैघ कराही ।
कराहब–क्रि० दुःखसँ कहब ।
कराही–माटिक छोट कराह ।
करिअंमा–जे पकलहुपर हरिअर रहए से आम ।
करिआ–कारी प्रभेदक ।
करिआएब–ना० कारी+अब-कारी होएब।
करिआ झाँप–ओषधिविशेष ।
करिआझुमरि–स्त्रीक क्रीडाविशेष ।
करिआरी–कलिकारी, ओषधिविशेष ।
करिओँछ–ईषत् कृष्ण ।
करिऔत आबाद, **करिऔती आबाद**–फागुन चैतमे छीटिकँ आबाद ।

करिक्का–उ० कारी प्रभेदक । स्त्री० करिछाँहि ।
करिछोँह–किञ्चित् कारी ।
करिनपट, **करिनबह**–करीनसँ पटएबाक बाहा ।
करिनबाह–पु० करीन पटओनिहार ।
करिनबाहि–करीन पटओनाइ ।
करिहारी–ओषधिविशेष ।
करीन–पानि पटएबाक गहींड़ लम्बा पात्र।
करीब–वि० लगभग ।
करुआरि–नाओ खेबबाक साधन ।
करेज, **करेजा**– हृदयाभ्यन्तरक मांसपिण्डविशेष ।
करैत–सर्पविशेष ।
करैल, **करैला**–कारवेल्ल, लत्तीमे फड़निहार फलविशेष ।
करोट–पार्श्व ।
करोना–करमर्द, अम्ल फलविशेष ।
कर्करेज–ओषधिविशेष ।
कर्णफूल–कानक पुष्पाकार अलङ्करण।
कर्णवेध–सं० कनछेदी, कानमे छिद्र करब।
कर्ज, **कर्जा**–वि० ऋण ।
कर्जान–कदलीक उद्यान, केराक गाछी ।
कर्तव्यता–सं० विवाहादि क्रिया ।
कर्त्ता–सं० कएनिहार १। श्राद्धकर्ता २।
कर्नाल–वाद्यविशेष ।
कर्पूर–सं० कपूर हि० ।
कर्म–सं० क्रिया १। अदिष्ट २।
कर्मकाण्डी–सं० शास्त्रोक्त क्रिया कएनिहार ।

कर्मसाँढ़–भाग्यवान् ।
कर्माधर्मा–सं० भाद्र शुक्लक एकादशी।
कर्रा–बनगोइठा ।
कर्रा छाउर–बनगोइठाक छाउर ।
कर्रोआ–वृक्षनाशक कीटविशेष ।
कल–यन्त्र १। निचेनी, शान्ति २।
कलकल करब–क्रि० अतिबुभुक्षा जनाएब ।
कलकलाएब–क्रि० अति बुभुक्षा जनाएब।
कलकलि–पामा, रोगविशेष ।
कलकली–अति बुभुक्षा
कलकोसल–अ० करकौशल सँ, सुस्ते सँ ।
कलगी–पागक अङ्गविशेष ।
कलगैआँ–लोटाक प्रभेद ।
कल जोरब–क्रि० दुहू हाथ जोड़ब ।
कलजोड़िआ–शाकविशेष १। अञ्जल्याकारक (पान) २।
कलपनाथ–ओषधिविशेष ।
कलपब–क्रि० कलप् +अब-अति दैन्यक प्रकाश करब ।
कलबल–अ० चेष्टा नहि करैत, चुप्प ।
कलबाड़–जातिविशेष ।
कलम–लेखनी १। वि० गाछ मे गाछक जोड़ २।
कलमकाठी–कलमयोग्य खड़हीसन एक गाछ १। धान्य विशेष २।
कलमदान–वि० मसि लेखनी रखबाक पात्र ।
कलमबाग–वि० वृक्षान्तर मे जोड़ल गाछक समूह ।
कलमी–वि० कलमक (आम), राजाम्र।
कलर–उ० नि:स्व, खाद्याखाद्य-विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री० कलरनी ।
कलस–कलश, घट ।
कलसस्थापन–सविधि घटस्थापन ।
कलसा–देवघट ।
कलसी–छोट देवघट ।
कलह–सं० झगड़ा ।
कलहन्त–कलहान्त, झगड़ा पर्यन्त ।
कलाबतू / **कलाबत्तू** –आभूषण मे लगएबाक सोनाचानीक तार १। तार सँ मढ़ल डोरी २।
कलाल–जातिविशेष ।
कली–कलिका ।
कलेजा–उदरस्थ अङ्गविशेष १। सामर्थ्य २ ।
कलेस–क्लेश ।
कलोल–घोल, कोलाहल ।
कलौ–मध्याह्नक भोजन ।
कल्लर–उ० नि:स्व, खद्याखाद्य विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री० कलरनी ।
कल्ला–दाँतक आधार ।
कल्ली–कलिका, फूलक अङ्कुर ।
कल्हुका–जे काल्हि भेल वा होएत तकर प्रभेद ।
कष्ट–सं० दु:ख ।
कसकसाएब–क्रि० कसकस् + अब-सक्कत होएब ।
कँसकूट–धात्वन्तरमिश्रित कांस्य ।
कसब–क्रि० दृढ़ करब १ । कसौटी मे घषण २ । बोरा आदि मे धान्यादिक भरब ३ । घोड़ा सुसज्जित करब ४ ।

कसमस करब–क्रि० उकसपाकस करब, अस्थैर्य ।
कसमसाएब–क्रि० कसमस्+ अब-अस्थैर्य ।
कसरति–वि० व्यायाम ।
कसरात–वि० हिसाबक शेष ।
कसरि–वि० सिद्धिमे किञ्चित् क्रियाक शेष ।
कँसहेंड़ी–पितड़िक लोहिआ, व्यञ्जनपाक-पात्र ।
कसाइ–वधकर्त्ता, चाण्डाल ।
कसाए–कचूरक चूर्णमिश्रित यवक चूर्ण।
कसामसी / **कसामस्ती** –अनवकाशता, सिकस्ती।
कसाय–सुगन्धित कचूर आदिक चूर्ण ।
कसीदा–वि० वस्त्र पर सुइ सँ निर्मित चित्र ।
कसीस–रङ्गकसीस, रञ्जक द्रव्यविशेष।
कसूर–वि० अपराध ।
कसूरी–वि० अपराधी ।
कसेरा–उ० बरतन बेचनिहार जातिविशेष ।
कसेरनी–स्त्री० कसेरा जातिक स्त्री ।
कसैआ–पु० व्याध, बड़दक अण्डकोष कटनिहार ।
कसोन्ह–धान्यविशेष ।
कसौटी–निकष, स्वर्णपरीक्षाक प्रस्तरविशेष ।
कस्तर–अपाकरणीय तृणादि ।
कहब–क्रि० कथन ।
कहबी–लोकोक्ति ।
कहर–अनर्थ ।
कहरब–क्रि० दु:खें 'अहँ अहँ' इत्यादि शब्द करब ।
कहरबा–पुं० कहार+वा-अनादरणीय कहार ।
कहाँ–अ० कुत्र, कोन स्थानमे १। निषेध २।
कहाओत–द्विरागमनक पूर्व दिन कहबाक हेतु भार १। वि० दुर्भिक्ष २।
कहाँदन–अ० अज्ञात स्थानमे ।
कहाँधरि–अ० किमवधि, कहाँ तक हि०।
कहार–उ० शिविकावाहक जाति-विशेष।
कहारनी–स्त्री० कहारक स्त्री ।
कहारी–कहारक कर्म, शिविकावाहन ।
कहाँसँ–अ० कोन स्थानसँ ।
कहासुनी–परस्पर कहब-सुनब ।
कहिआ–अ० कोन कालमे । प्राकृत-कइआ ।
कहुआ–वृक्षविशेष ।
कहुखन–अ० कोनहु क्षणमे ।
काइनि–कानि, अभ्यन्तर स्थापित क्रोध।
काइल–उ० वि० वादमे प्रमाण सँ मिथ्यावादी निश्चित । स्त्री० काइलि ।
काउन / **काउनि** –कङ्गु, अन्नविशेष ।
काएथ–उ० कायस्थ, जातिविशेष । स्त्री० कैथिनी ।
काकरासिंगी–ओषधिविशेष ।
काँकड़ि–फलविशेष ।
काकमाची–ओषधिविशेष ।
काका–उ० पितृव्य । पितृव्यक स्त्री० काकी ।

काँकोड़–कर्कटी, जन्तुविशेष ।
काँख–कक्ष, बगल हि० ।
काँखी–पातक लगसँ चलल तमाकू आदिक डाँट ।
काग–अयुग्म ।
कागज–वि० पत्र, बनाओल पात ।
कागजी–हिसाब-किताबमे पटु १। नेबोक प्रभेद २। बदामक प्रभेद ३।
कागत–वि० कागज, पत्र ।
कागदोस्त–वि० क्रीड़ाविशेष ।
कागातूआ–पक्षिविशेष ।
काङ्क्षा–सं० इच्छा ।
काच–सं० सीसा ।
काचनोन–काचलवण ।
काँच–अपक्व (फलादि) ।
काँची–नेत्रविकार ।
काछ–कच्छ, अङ्गविशेष ।
काछब–क्रि० कछ + अब-अवस्थान्तरक चेष्टा करब १। हाथक निचला भाग लगाए घृतादिक उद्धार २।
काछु–कच्छप ।
काज–कार्य ।
काजबूत–कार्यादि ।
काजर–कज्जल, अञ्जन ।
काँजी–फलविशेष ।
काजुल–उ० कार्यपटु । स्त्री० काजुलि ।
काजू–फलविशेष ।
काञ्चन–आकारक मात्रा ।
काट–आकार १। विद्वेष २। छेदन ३।
काँट–कण्टक १। गरदनिक भूषण २।
काँटकूस–कण्टकादि ।
काटछाँट–खण्डन-मण्डन ।
काटब–क्रि० कट्+अब-छेदन ।
काँटा–लोहाक कील ।
काटि–तेलक विकार ।
काँटी–छोट लौहशङ्कु ।
काठ–काष्ठ ।
काठी–छोट पातर काष्ठ ।
काँड़–बोझक राशि ।
काड़ा–पाएरक भूषणविशेष ।
काड़ाबीड़ी–पानक एक प्रकारक बीड़ी।
काँड़ि–मालकेँ औषध पिअएबाक चोँगा।
काढ़ब–क्रि० काढ़ + अब-पाकपात्रसँ उद्धार करब ।
काढ़ा–क्वाथ ।
कात–दिश १। पोखरि आदिक समीप देश २। बाह्य ३।
कातकरोट–कात वा ताहूसँ बाह्य।
कातर–उ० सं० कदरी, कार्यभीरु स्त्री० कातरि ।
काँति–ग्लह, हारिमे देय धन १ । कान्ति २ ।
कातिक–कार्त्तिक ।
कातिब–वि० प्रमाणपत्र लिखनिहार ।
काँती–कर्त्री, छोट खड्ग ।
कादर–कातर ।
कादो–कर्दम, पाँक, कदबा ।
कान–कर्ण, श्रवणेन्द्रिय १। कर्ण-शष्कुली २।
कान कुकुहाएब–क्रि० कुकुह+अब–कान कुड़िआएब ।
कान टनकब–क्रि० कानक व्यथा ।
कान पाथब–क्रि० पथ्+अब-सुनबाक हेतु कान एकाग्र करब ।

कानब–क्रि० कन् + अब-क्रन्दन ।
कानब-खीजब–क्रि० कन्+अब, खिल+अब-रोदन ओ शोकजन्य चेष्टान्तर।
कानर–करीन पटएबाक हेतु कोढ़ल जलाधार ।
काना–शाकविशेष ।
कानाकानी–परस्पर कोप ।
कानारोहट / **कानारोहठ** }–अधिक क्रन्दन ।
कानि–सञ्चित कोप, ईर्ष्या ।
कानी–कानलग विन्यस्त राखल केश ।
कानू–उ० जातिविशेष । स्त्री० कानूनि ।
कानून–वि० नियम, न्याय ।
कानोकान–अ० कान पर्यन्त, कन्हेर धरि।
कान्ति–सं० शोभा ।
कान्ती–माटि मिलाएकेँ बनाओल (लोहक लोहिआ)
कान्ह–स्कन्ध ।
काप–तीक्ष्ण तृणादिसँ त्वचाक भेद ।
कापब–क्रि० कप् + अब-कम्पन ।
कापा–कप्पा, वस्त्रखण्ड ।
कापी–वि० नाथल कागत ।
काफर–कट्फल, ओषधिविशेष ।
काफी–वि० पर्याप्त ।
काबा–देहमे पहिरबाक वस्त्रविशेष १। मुसलमानक एक तीर्थस्थान २।
काबिल–वि० बुद्धिमान, लौकिक व्यवहारपटु ।
काबू–बटेरक पिजड़ा १। वि० अधीनता २ ।
कामत–जिरात, खाप खेत ।
कामति–शूद्रविशेषक उपाधि ।
कामधु–धान्यविशेष ।
कामना–इच्छा ।
कामरु–भार, जाहिमे गङ्गाजल बोझल जाए १। देशविशेष २।
कामला–रोगविशेष ।
कामि–टकुरी आदिमे लगएबाक वंशादिनिर्मित लाम पातर शलाका।
कामिनी–पुष्पविशेष ।
कायथ / **कायस्थ** }–उ० कायस्थ, लेखजीवी जातिविशेष । स्त्री कैथिनी।
कार–कार्य ।
कार कौआ–द्रोणकाक ।
कारखाना–वि० कार्यालय ।
कारण–सं० हेतु ।
कारन–हेतु १। कारण्डव पक्षी २ ।
कारनी–चिकित्स्य, जकरा कारणेँ देवालयगमन हो ।
कारबार–वि० व्यापार ।
कारी–कृष्णवर्ण ।
कारीगर–शिल्पी ।
कारीगरी–वि० शिल्प ।
कार्य–सं० कृत्य ।
काल–सं० समय ।
कालकण्टक–दुष्ट, कण्टकतुल्य कष्टद, बलाय ।
कालदार–दस मासाक असरफी ।
कालि–न्याय कएलासँ मिथ्यावादित्वेन निर्णीत ।
कालिह–अव्यवहित पूर्व ओ पर दिन ।
कालहुक–अव्यवहित पूर्व वा पर दिन सम्बन्धी ।
काशीबाल–काशीमे बनल (लोटा आदि)।

काँस–कांस्य, धातुविशेष ।
कासनी–काँटबाला क्षुपविशेष ।
कास्मीरी–काशमीर में भेनिहार ।
काहकूह–कस्तर, अपाकरणीक तृणादि।
काहि काटब–क्रि० कट् + अब-दुर्दशाप्राप्त होएब ।
किआरी–आलवाल ।
किएक–अ० कुतः, कोन कारणें ।
किच्छु, **किछ** – किञ्चित्, कुछ हि०।
किञ्चित्–अ० सं० अल्पपरिमाणक, थोड़, किछु ।
किड़री–अधिक काल जल मे रहनहु नहि फुलल (केराओ आदि) १। भुजलहु उत्तर नहि फुटल (मखान) २।
किनब–क्रि० क्रयण ।
किनहेरि–तट, धारक उभय भाग जलसँ अव्याप्त ।
किनार–कात, जलाशयक तट ।
किन[illegible]री–कपड़ामे लगयबाक द्रव्यसूत्ररचित चकचक वस्तु ।
किन्नहु–अ० कथमपि ।
किफाइत–वि० सस्त, अल्प मूल्यग्राह्य ।
किमती–मूल्यवान् ।
किम्मति–वि० मूल्य १। पराक्रम २।
कियारी–आलवाल ।
कियेक–अ० कस्मात् कारणात्, क्यों हि०।
किरची–एक प्रमाणसँ परिमित सूत्र ।
किराया–भारा, मासूल ।
किरिया–शपथ ।
किरीच–ठेँगामे पैसाए रखवा योग्य अस्त्रविशेष ।
किरीट–सं० देवताक वा राजाक शिरोभूषण ।
किलहोरि काटब–क्रि० कट्+अब-दुःखेँ शब्द करब ।
किलोल–अधिक शब्द, चीत्कार ।
किल्ला–पैघ कील ।
किल्ली–छोट कील ।
किसमिस–बिनु आँठीक शुष्क अङ्गूरक प्रभेद ।
किसान–खेती कएनिहार ।
किस्तान–क्रिस्तान, क्रिश्चियन ।
किस्ती–सतरञ्जक एक गोटी ।
की–किम्, जिज्ञासाविषय १। अ० क्या हि० ।
कीआ–सिन्दूरादि रखबाक युग्म पात्र विशेष ।
कीड़ा (रा)–कीट ।
कीदन–अ० अज्ञात, यत्किञ्चित् ।
कीनब–क्रि० किन्+अब-क्रयण ।
कीमति–वि० मूल्य ।
कीर्ति–सं० यश ।
कीर्तिशिला–सं० मन्दिरादिक समयादि सूचक लेखयुक्त शिला ।
कील–सं० पैघ किल्ली ।
कुअन्न–कदन्न ।
कुअवसर–अधलाह अवसर ।
कुइर–कम कारी डिम्हाबाला ।
कुकर्म–सं० अधलाह क्रिया ।
कुकर्मी–सं० अधलाह कर्म कएनिहार ।
कुकुर–कुक्कुर, श्वान ।
कुकुरकटाउझ–कुकुरक परस्पर काटब ।

कुकुरकाँट, **कुकुरटङ्ग** –काँटक प्रभेद ।
कुकुरचालि–अस्थिर प्रकृतिक अविवेकी।
कुकुरभुक्की–गिदरनोच, निन्द्य (कपड़ा)
कुकुहाएब–क्रि० कुकुह्+अब-कानक कुड़िआएब ।
कुकूर, **कुक्कुर** –श्वान ।
कुगर–उचित गरेँ नहि बैसल (सिन्धुक आदि) ।
कुङ्कुम–सं० केसरि ।
कुचकुच करब–क्रि० कण्डूजनक होएब।
कुचकुचाएब–क्रि० कुचकुचरु+अब होएब । जाहि में कुड़िअएबाक इच्छा हो तादृश वेदना ।
कुचकुची–कण्डूजनक वेदना विशेष ।
कुचरब–क्रि० अस्पष्ट बाजब ।
कुचराह–कतोक सिद्ध कतोक असिद्ध (भात आदि) ।
कुचालि–अधलाह चालिबाला ।
कुचेष्टा–अधलाह चेष्टा, परनिन्दा ।
कुच्च लागब–क्रि० लग्+अब-घोड़ा आदिक चलबाक काल पाएरमे पाएर लागब ।
कुच्चा–साना, चोखा हि० ।
कुच्ची–रञ्जनादिक साधनविशेष ।
कुञ्जबाह–हाथीक सङ्ग बर्छा लेने चलनिहार ।
कुञ्जी–कुञ्जिका, ताला खोलबाक यन्त्र।
कुटकी–कटुका, ओषधिविशेष ।
कुटना–कुटबाक साधन ।
कुटनी–स्त्री० जारकेँ अननिहारि, कुट्टिनी।
कुटब–क्रि० कुट्टन, मुसलादिसँ आघात देब ।
कुटाओन–कुटबाक बोनि ।
कुटिआ–कुट्टी १ । खण्ड २ ।
कुटुम–उ० कुटुम्ब, स्त्री० कुटुमिनी ।
कुटुमारए–कुटुम्बालय, कुटुम्बक व्यवहार।
कुटुमैता, **कुटुमैती** –कुटुम्बक व्यवहार ।
कुटुम्ब–सं० सम्बन्धिक ।
कुट्टी–धान्यादिक कुटब ।
कुठट्ठ, **कुठाठ** –कुत्सित रीति ।
कुठाठ मचाएब–क्रि० मचब् + अब –कुत्सित रीति करब ।
कुठाम–कुत्सित स्थान ।
कुड़कुड़ाएब–क्रि० कुड़कुड़् + अब-किञ्चित् क्रोधयुक्त होएब ।
कुड़नी–छोट सोझ कानक घैल ।
कुड़बार–पैघ कूड़ा ।
कुड़रा–गण्डूष ।
कुड़री–पक्षिविशेष ।
कुड़हरि–कुठार ।
कुड़िआएब–क्रि० कुड़ि+अब-कण्डूयुक्त होएब ।
कुड़िऐनी, **कुड़िहठि** –कण्डू ।
कुड़ुर–गण्डूष ।
कुड़ेर–पक्षिविशेष ।
कुडोरि–मार्गक वक्रता ।
कुढ़ब–क्रि० मनहि मन क्रोध करब ।

कुढब–बेडोल, कुत्सिताकारक ।
कुण्ड–सं० होमाद्यर्थ खाधि।
कुण्डल–सं० कर्णभूषणविशेष ।
कुण्डली–फलविशेष, लताविशेष ।
कुण्डा–भाँग वा नोसि घोँटबाक पात्र।
कुण्डाबोर–पूरा रङ्ग ।
कुण्डी–नोसि घोँटबाक गँहीड़ पात्र।
कुतकुताओन–सतरञ्ज मे ताराउपरी दू प्यादा सँ मातु ।
कुतब–क्रि० अन्दाजसँ परिमाण करब ।
कुतरुम–क्षुपविशेष ।
कुतर्क–सं० अनुचित तर्क १ । कुताक २ ।
कुतहगरदनि–छोट गरदनि बाला ।
कुताक–सम्पन्नताक कारणक विघटन ।
कुताही–कार्पण्य ।
कुत्ता–कुक्कुर ।
कुथनी–पक्षिविशेष ।
कुथब–क्रि० सक्लेश अपान वायुकेँ गुदामार्ग दिस प्रेरित करब ।
कुदब–क्रि० कूर्दन, हि० फाँदना ।
कुदिन–अधलाह दिन ।
कुदेश–अधलाह देश ।
कुन्द–सं० पुष्पविशेष ।
कुन्ह–कानि ।
कुपच–अपक्वता, विपाक ।
कुपथ–पथ्यविरूद्ध ।
कुपीठ–कुडोरि ।
कुप्पा–घृतादिभाण्ड ।
कुप्पी–छोट घृतादिभाण्ड ।
कुप्फर, **कुफर** –वि० कलह ।
कुफर मचब–क्रि० अधिक झगड़ा होएब ।
कुबाट–अधलाह मार्ग ।
कुबेर, **कुबेरि** –अधलाह वेला ।
कुब्योँत–कुप्रबन्ध ।
कुभाँजि–असरल मार्ग ।
कुमरम–कुमारकर्म, उपनयन ओ विवाहसँ पूर्व दिन कुमार ओ कुमारिक कर्मविशेष १ । कुमर्म २ ।
कुमर्म–सं० मर्मक नहि बचाओ ।
कुमार–उ० सं० अनुपनीत १ । अकृतविवाह २ ।
कुमारि–स्त्री० कुमारी, अकृतविवाह ।
कुमुदिनि, **कुमुदिनी** – कुमुद्वती, राति केँ जलमे फुलएनिहार उजर फूल ।
कुम्भी–जलाशयक आच्छादक तृणविशेष।
कुम्हड़–श्वेत कूष्माण्ड ।
कुम्हड़ा–कीटविशेष ।
कुम्हरौड़ी–कुम्हड़सँ बनाओल वटी।
कुम्हरौट–कुम्हारक उपयोगी माटि ।
कुम्हलाएब–क्रि० कुम्हल्+अब-पात फूलक मूर्छित होएब ।
कुम्हार–उ० कुम्भकार, जाति-विशेष । स्त्री कुम्हैनि ।
कुम्हिलाएब–क्रि० कुम्हिल्+अब-पात फूलक मूर्छित होएब ।
कुम्ही–कुम्भिका, कुम्भी ।
कुम्हैनि–स्त्री० कुम्हारक स्त्री ।
कुयोग–अधलाह योग ।
कुरकुट–कस्तर, अपाकरणीय तृणादिपुञ्ज।
कुरकुटाह–कुरकुटसँ युक्त ।

कुरङ्ग–कुलक्षण ।
कुरथी–कुलत्थ, अन्नविशेष ।
कुरमी–शूद्रजातिविशेष ।
कुल–सं० वंश ।
कुलच्छन–अधलाह लक्षण ।
कुलच्छनि–स्त्री० कुलटा ।
कुलदेवता–सं० कुलपूज्यदेवता, गोसाउनि।
कुलपुरुष–कुलक विशिष्ट पुरुष ।
कुलवृक्ष–सं० वृक्षसदृश कुलपुरुषक नामावली ।
कुलामय–सं० कुलागत रोग ।
कुलीन–सं० नीक कुलमे जनमल ।
कुल्ली–वि० जन, दैनिक नियोगवाला भृत्य ।
कुल्हा–जाँघक ओ बाँहिक जोड़ ।
कुश–सं० दर्भ ।
कुष्ठ–सं० चर्मरोगविशेष ।
कुष्ठी–सं० कुष्ठरोगी, कोँढ़ि ।
कुसमय–सं० अधलाह समय ।
कुसंयम–सं० संयम विरुद्ध ।
कुसिआर–इक्षु, ऊख हि० ।
कुसुम–कुसुम्भ, वस्त्ररञ्जक पुष्पविशेष ।
कुसुमलता–लतापुष्पविशेष ।
कुसुमी–कुसुमसम्बन्धी (रङ्ग) ।
कुसोथरि–धरना देब, कुश बिछाए देवागारमे कामना विशेष सँ पड़ब।
कुसोन्ह–नीक जकाँ नहि सोन्हाओल ।
कुस्तमकुस्ता–परस्पर अधिक कुस्ती ।
कुस्ती–वि० मल्लयुद्ध ।
कुहकब–क्रि० कोकिलादिक बाजब ।
कुहक मचब–क्रि० कठिन समस्या उपस्थित होएब ।
कुहकी–पक्षिविशेष ।
कुहठ–सं० दुराग्रह ।
कुहब–क्रि० कष्ट देब, क्लेशयुक्त करब।
कुहुकब–क्रि० कुहकब ।
कुहुक-मचब–क्रि० कोकिलादिक अधिक बाजब ।
कुहेस–कुज्झटिका, नीहार, धओन ।
कुहेसफाटब–क्रि० फट्+अब-नीहारक नाश होएब ।
कूआ–कुब्जक, पुष्पक प्रभेद ।
कूआँ–कूप ।
कूचब–क्रि० कुच+अब-दबाब ।
कूच लागब–क्रि० लग् + अब-घोड़ाक चलबाक काल पाएर में पाएर लागब ।
कूटब–क्रि० कुट + अब - कुट्टन, मुसलादिसँ आघात देब ।
कूटब-पीसब–क्रि० कुट+अब, पिस्+अब -कुट्टनादि क्रिया ।
कूड़–छोट ढेरी, राशि ।
कूँड़ा–पैघ घैल ।
कूड़ि–पटएबाक पात्रविशेष ।
कूड़ी–ढेरी ।
कूढ़–कुष्ठ, ओषधिविशेष ।
कूढ़ब–क्रि० कुढ़+अब-मनहि मन क्रोध करब ।
कूतब–क्रि० कुत+अब-अन्दाज सँ परिमाण करब ।
कूथब–क्रि० कुथ+अब-सक्लेश अपान वायुकेँ गुदमार्ग दिस प्रेरित करब।
कूदफान–कूदब प्रभृति क्रीड़ा ।
कूदब–क्रि० कुद्+अब-कूर्दन, फाँदना हि०।

कूप–सं० कूआँ ।
कूबड़–उ० कुब्ज । स्त्री कुबड़ी ।
कूर, **कूरी**–राशि, ढेर ।
कूहब–क्रि० कुहू-अब-कष्ट देब, क्लेशयुक्त करब ।
कृपण–सं० मितम्पच ।
कृपा–सं० दया ।
कृष्णकेतसी–पुष्पविशेष ।
कृष्णजीर–सं० काला जीरा हि० ।
कृष्णहरिन–कृष्णमृग ।
कृष्णौत–गोआर जातिक एक प्रभेद ।
केँ–अ० उत्तर काल ।
केआरी–आलवाल ।
केआल–तौलनिहार ।
केआली–केआलक कार्य ओ वेतन ।
केउआँ–शाकयोग्य क्षुपविशेष ।
केओट–उ० शूद्र जातिविशेष । स्त्री० केओटनी ।
केँघुनिआएब–क्रि० केँघनी + अब-टेढ़ भए बढ़ब ।
केँघुनी–हाथ ओ बाँहिक बिचला जोड़।
केचुआ–कञ्चुकी, सापक परित्यक्त त्वचा १। स्त्रीक पहिरबाक वस्त्रविशेष २ ।
केचुआएब–ना० केचुआ सँ युक्त होएब (सापक) ।
केतकी–पुष्पविशेष ।
केथरा–गदेला ।
केदन–अ० अपरिचित केओ ।
केवली केराओ–मट्टर ।
केबलौट–कुम्हारक हाथक पोछल माँटि।
केबाड़–कवाट ।
केबाड़ी–छोट कवाट ।
केरबा–पानिमे रहनिहार पक्षिविशेष १। केरा सन लाम (आम) २ ।
केरा–कदली ।
केराओ–कलाय, द्विदल अन्नविशेष ।
केलिकदम्ब–कदम्बफूलक प्रभेद ।
केस–केश, बाल हि० ।
केसरि–काश्मीर, मृगमद; सुगन्धि द्रव्यविशेष।
केसौर–कसेरुक, कन्दविशेष ।
केहन–कीदृश ।
केहनदन–अधलाह ।
केहुनी–कफोणि, हाथ ओ बाँहिक सन्धिक उच्च भाग ।
कैएक, **कैक**–अनेक ।
कैँच–कैँची जेकाँ बाँसमे बान्हल बाँस ।
कैँची–कर्तरी ।
कैँता–लताफलविशेष ।
कैथिनि–स्त्री० कायस्थक स्त्री ।
कैथी–रङ्गविशेष १ । नागरी अक्षर २ ।
कैल–कपिल, रङ्गविशेषयुत (बड़द प्रभृति) ।
को–कटहरक बीजाधार ।
कोइली–कोकिल १ । अजोह आम्रबीज २ । चाउरमे रोगवश कारी भाग ३ ।
कोकटी–रङ्गविशेष ।
कोकटी बाङ–कोकटी रङ्गक बाङ ।
कोकनब–क्रि० निःसार होएब ।
कोँकिआएब–क्रि० कोँकि+अब-कोँ कोँ शब्द करब ।
कोख, **कोखि**–कुक्षि, पेट ।

कोच–वि० पर्यङ्कविशेष ।
कोँचब–क्रि० बलपूर्वक मध्यमे ठूसब ।
कोचबन्द–डाँड़क भूषणविशेष ।
कोचबान–वि० बग्गी हँकनिहार ।
कोँचा–स्त्रीक पहिरल नूआमे बान्हल कोचिआओल भाग ।
कोचिला–कपीलु, उपविष फलविशेष।
कोजागरा–सं० आश्विनक पूर्णिमा ।
कोटि–सं० करोड़ हि० ।
कोठबार–राब रखबाक स्थान ।
कोठली–कोष्ठ, कोठाक वा घरक एकदेश ।
कोठा–प्रासाद ।
कोठि–कोष्ठ, पेट ।
कोठिघरा–कोठी रखबाक घर ।
कोठिला–साज, भाँड़ रखबाक उच्च आधारविशेष ।
कोठिसारि–कोठी रखबाक घर ।
कोठी–कुसूल, मृत्तिकानिर्मित अन्न रखबाक पात्र ।
कोठुला, **कोठुली**–छोट कोठी ।
कोड़ब–क्रि० खनन ।
कोड़रा–कशा ।
कोड़हा–सामक चाउर १ । यन्त्रादि भूषणमे ताग पैसएबाक हेतु सच्छिद्र अवयव २ । मधुमाछीक छाता ३ ।
कोँड़हिआएब–ना० कोँड़ही + अब-कोँड़हीसँ युक्त होएब ।
कोँड़ही–कली १। फूल-पातक अङ्कुर २ ।
कोड़ो–ठाठक उपयोगी कृतच्छिद्र बाँस।
कोँढ़–अन्तःकरण ।
कोँढ़फट्टू–जकर कनिएँमे अन्तःकरण विदीर्णा हो ।
कोँढ़ फाटब–क्रि० फट् + अब-अन्तःकरण विदीर्ण होएब ।
कोँढ़ि–कुष्ठी १ । आलसी २ ।
कोँढ़िआ–कोँढ़ि + आ = अनादरणीय कुष्ठी वा आलसी ।
कोढ़िला–कोमलतम तृणविशेष ।
कोढ़ी–कलिका ।
कोत–अम्लसम्बन्धेँ तत्काल सकत वस्तु खएबामे अक्षम (दाँत) ।
कोतबाल–रातिकेँ गामक रक्षा कएनिहार।
कोतबाली–कोतबालक क्रिया १ । कोतबालक हेतु देय २ ।
कोतर–कोली, खेतक अंश ।
कोतरा, **कोतरी**–मत्स्यविशेष ।
कोतहगरदनि–छोट गरदनि बाला ।
कोताही–कृपणता ।
कोथ, **कोथी**–बरछी आदि अस्त्रक अग्रभाग ।
कोदबा–देहमे भेनिहार रोगविशेष ।
कोदरिकट्टा–कोदारि सँ काटल-काटल सन (मेघ) ।
कोदारि–कुद्दाल, माटि कटबाक अस्त्र विशेष ।
कोदैआ–कोयष्टिक, पक्षिविशेष ।
कोदो–कोद्रव, कदन्नविशेष ।
कोन–कोण १ । कतर वा कतम २ ।
कोनटबेध–आँगनक दोषविशेष, एक घरक कोणाभ्यन्तर दोसर घरक कोण ।

कोनटा–घरक बहार कोन लगक भूमि ।

कोनही–क्षेत्रक कोन ।

कोना–अ० कोन प्रकारेँ, किस भाँति हि० ।

कोनाकोनी–कोण सँ कोण दिश समुख १ । कोमहर सँ कोमहर २ ।

कोनिआँ–घरक दुहू पार्श्वक ठाठ १ । घरक दुहू पार्श्वक ओसारा २ ।

कोनी–नेत्रकोण ।

कोनेकानी–कोणसहित सकल स्थान ।

कोनैला–गाछी आदिक कोन में स्थित (वृक्षादि) ।

कोपड़ (र)–बाँसक अंकुर ।

कोपड़ा–पात्रविशेष ।

कोप हारि–बिना गोटी बहार भेने पचीसीक हारि ।

कोबर–वर-कन्याक सम्मेलन ।

कोबरा घर–कौतुकागार, वर-कन्याक सम्मेलनागार ।

कोबी–रान्हि कए खएबाक एक फूल।

कोमल–सं० मृदु ।

कोमहर / **कोम्हर** }–अ० कोन दिस ।

कोर–क्रोढ़ १। धोती आदिक स्थूलतन्तुकृत दुहूं कातक प्रान्त २ ।

कोरदार–वि० कोर वाला ।

कोरबाह–स० नेनाकेँ कोरमे लेनिहार । स्त्री० कोरबाहिली

कोरबाहि–नेनाकेँ कोरमे लेब ।

कोरा–विनु धोयल (नवीन-वस्त्र) १ । काजमे नहि लागल तहदर्ज (वस्तु) २ । सतुष अन्न ३ ।

कोराएब–क्रि० कोर+अब-पानि किनार होएब ।

कोराँटी–चर्म मध्यस्थ शङ्कु ।

कोरान–मुसलमानक धर्म-शास्त्र ।

कोरि–उ० शूद्र जातिविशेष । स्त्री० कोरिनि ।

कोरिआनी–कोरिक टोल ।

कोरैआ–कुटज ।

कोरैला–उ० कोरमें लेबा योग्य नेना, स्त्री० कोरैली ।

कोला–खेतसमूहक एक खण्ड ।

कोलाकोली–खेतक प्रत्येक खंड ।

कोलिऐती–नगदी बिना सबूतक खाप ।

कोलिसद्द–रोगाह आम ।

कोली–छोट कोला ।

कोल्हु–सरिसओ कुसिआर प्रभृति पेरबाक कल ।

कोल्हुआ–कोल्हुमे बहनिहार (बड़द) ।

कोल्हुआपेरन–सतरञ्जक मातुविशेष ।

कोल्हुआड़ (र)–कोल्हु पेरबाक स्थान।

कोस–क्रोश, भूमिमानविशेष ।

कोसब–क्रि० गञ्जन करब ।

कोसल करब–गुप्त धनसंग्रह ।

कोसलिआ–गुप्त धन १ । गुप्तधन संग्रही २ ।

कोसा–केराक फूल ।

कोसिआ–माटिक पात्रविशेष ।

कोसिका झल्ला–शाकविशेष ।

कोहबर–कोबर ।

कोहा–छोट तौला, मृद्भाण्डविशेष ।

कोही–छोट कोहा ।

कौअलि–पक्षिविशेष ।

कौआ–काक ।

कौआठारि–कोनो-कोनो ठारिमे फड़ल (आम) ।

कौआ ठुठ्ठी–क्रीड़ाविशेष ।

कौचालि–कौआक सदृश वक्र चालि ।

कौजङ्घ–उ० छोट-पैघ पाएर वाला, स्त्री० कौजङ्घि ।

कौटङ्ग–उ० छोट पैघ पाएर वाला । स्त्री कौटङ्गि ।

कौड़िआ–पीलुविशेष ।

कौड़िआकातर–उ० जे एक कौड़ीक हेतु कातर हो, अति कृपण ।

कौड़ी–कपर्दक ।

कौड़ीटीप–कौड़ीक एक खेल ।

कौषी–कौपीन ।

कौपीन–सं० भगबा ।

कौशल–सं० नैपुण्य ।

क्योला–केओला, केतकी, पुष्पविशेष ।

क्रम–सं० प्रथमत्व-द्वितीयत्वादि ।

क्रमशः–सं० अ० क्रमपूर्वक, यथाक्रम ।

क्रिया–व्यापार ।

क्रोध–सं० कोप ।

क्लेश–सं०-कष्ट ।

क्वताही–कृपणता ।

ख

खड़–छोट आड़ा देल खेत ।

खएरा–रङ्गविशेष १ । बकक प्रभेद २ ।

खँओत–अन्तर्दाह ।

खखड़हर–बरतनविशेष ।

खखड़ी–बुस, चाउरसँ रहित धान ।

खखाएब–क्रि० खख्+अब-धान्यक तुच्छ फड़ीसँ युक्त होयब ।

खखार–खाट्कार, कण्ठागत कफादिक निःसारण ।

खखारब–क्रि० कण्ठागत कफादिकें निःसारित करब ।

खखाह–खखड़ीसँ युक्त (धान) ।

खगता–खगब, कार्यक अनुपपत्ति ।

खगब–क्रि० कार्यक अनुपपति ।

खगरा–ओ तारक गाछ जे ने फुलाए ने फड़ए ।

खग्गी–खगता, कार्यक अनुपपत्ति ।

खँघरब–क्रि० प्रवाहसँ कटब ।

खँघारब–क्रि० प्रवाहसँ काटब ।

खच्खच् काटब–क्रि० कट् + अब-अतितीक्ष्णतया छेदन ।

खच्चर–गदहीमे घोड़ासँ जनमल जातिविशेष ।

खजबा–कड़ा कोबाला (कटहर) ।

खजाञ्ची–वि० खजाना रखबामे नियुक्त।

खजाना–वि० सुवर्ण रजत रत्नादि ।

खजुड़ी–वाद्यविशेष ।

खजुरिआएब–क्रि० खजुरि+अब-संकुचित पत्रादिक होयब ।

खजुली–छोट खाजा ।

खजूर–खर्जूर, फलविशेष ।

खञ्जखोहर–अगण्य जनसमूह (निन्दामे)।

खञ्जन–सं० पक्षिविशेष ।

खञ्झा–मालक रोगविशेष ।

खटकब–क्रि० अनिष्टचिन्ताविषयीभवन।

खटकर्मी–शास्त्रोक्तक्रियानिरत ।

खटका–सन्देह १ । अशौच २ ।

खटकार–वैनट्य ।

खटकाह–उ० सन्देही । स्त्री खटकाहि ।

खटखट करब–क्रि० खटखट शब्द करब १। अमङ्गल बाजब २।
खटखटाह–उ० कनिओँ टोकने क्रोध कएनिहार। स्त्री० खटखटाहि।
खटछप्पर–खाटक उपरका छप्पर।
खटनटाह–उ० नियम-निष्ठा कएनिहार।
खटपट–वैमनस्य।
खटपटाएब–क्रि० खटपट् + अब-अमेल, विरोध होएब।
खटपारब–क्रि० शोकेँ पड़ब।
खटबताह–उ० ईषत् विक्षिप्त।
खटबानर–वानर-सदृश खटखटाह।
खटबारब–क्रि० शोकेँ पड़ब।
खटमिट्ठी–हि० चटनीक प्रभेद।
खटरस–छबो रससँ युक्त भोज्य।
खटरास–वैनट्य।
खटाक दए–अ० झट दए, अति शीघ्र।
खटाखटि–अ० झटझट।
खटाँस–रात्रिचर जन्तुविशेष।
खटिआएब–क्रि० खटि+अब-न्यून होयब।
खटुली–स्कन्धबाह्य एक सबारी।
खट्कर्मी– कर्मठ, ब्राह्मणविहित दानादि छबो कर्म कएनिहार।
खट्टी–फलव्यापारी जातिविशेष।
खँड़–खण्ड।
खड़कब–क्रि० अचेतन वस्तुक किञ्चित् आगाँ वा पाछाँ चल जाएब।
खड़खड़ाएब–क्रि० खड़खड़ + अब-खड़खड़ शब्द करब।
खड़खड़िआ–मनुष्यवाह्य यानविशेष।
खड़गर–उच्च।
खड़ना–स्त्रीकर्तृक एकभुक्त।

खड़बड़–वैमनस्य।
खड़बड़ाएब–क्रि० खाड़बड़+अब-वैमनस्य होएब।
खड़बड़ी–वैमनस्य, झगड़ा।
खँड़मण्डल–खण्डमण्डल, कतहु उपजा कतहु नहि।
खड़रब–क्रि० तृणक अपाकरणार्थ खडरासँ बढ़ारब।
खड़रा–व्रणविशेष १। करची आदिसँ रचित खड़रबाक साधन २।
खँड़हर–प्रवाहेँ माटि कटलासँ नीच भूमि।
खँड़हरब–क्रि० प्रवाहेँ माटि कटब।
खँडहरा–खँड़हर।
खड़ही–लम्बा आँगुरसन मोट टाटमे उपकारक तृणविशेष।
खड़ा–हि० उत्थित, ठाढ़।
खड़ाइ–उच्चता।
खड़ाओँ / **खड़ाम** – पादुका।
खड़िका–पान लगाएब इत्यादि कार्यमे उपकारक मेही बाँसक कामि।
खड़ी–खटी, कठिनी, भूमिलेखादि-साधन।
खड़ुकी–भगबासँ पैघ नूआ।
खढ़–तृण।
खढ़कट्टा–गृहाच्छादक तृण कटनिहार।
खढ़गर–अधिक खढ़सँ युक्त।
खढ़होरि–खढ़ उपजबाक स्थान।
खढ़ी–खड़ही।
खणाओ / **खणाम** –पादुका।

खणोत / **खणओत** –कागतक खण्ड।
खण्ड–सं० अर्द्धभाग।
खण्डमण्डल–चित्रवृष्टि।
खण्डहर–प्रवाहें माटि कटलासँ नीच भूमि।
खण्डन–सं० निराकरण।
खण्डित–सं० खण्ड कएल।
खत–वि० लिखा १। काटबसँ चिह्न २।
खतब–क्रि० काष्ठादिकेँ छेदनसँ चिह्नयुक्त करब।
खतबय–शिविकावाहक जातिविशेष।
खतम–वि० समाप्ति, अवसान।
खतरा–वि० जान जएबाक शङ्का १। अङ्कक छेदनभेदन २।
खतरी–जातिवशेष।
खत्ता–खात, गर्त्त।
खत्री–जातिवशेष।
खदकब–क्रि० अग्नितापसँ खलबल करब।
खदका / **खदकी** –पीसिकेँ बरकाओल, खदकाओल।
खदुका–रीन लेनिहार, अधमर्ण।
खद्धर–चरखाक सूतसँ बीनल वस्त्र।
खद्धी–अत्यन्त अधलाह (वस्त्र)
खन–क्षण।
खनखन करब–क्रि० अतिबुभुक्षायुक्त होएब १। लेशतः ज्वरादिपीड़ित होएब
खनखनाएब–क्रि० खनखन + अब-खनखन करब।
खनिज–सं० खानिमे होएनिहार।

खन्ता–खत्ता, पल्वल।
खन्ती–खनित्र।
खन्धक–गर्त्त।
खपकी–नाराजगिरीसँ भृत्यक सावधि कार्यवहिष्कार।
खपखप-काटब–क्रि० कट्+अब-निर्बाध छेदन।
खपटा–खर्पट, फुटल भाँड़क खण्ड।
खपड़िआ–बाबाजीक प्रभेद।
खपब–क्रि० एक भागसँ कम होयब।
खपरा–माटिक बनल पकाओल धार छारबाक साधन।
खप्पर–कपाल, माथक उपरका गोल हाड़।
खप्पा / **खप्पी** –कीआ प्रभृति पात्रक उपरका भाग।
खबरि–वि० वार्ता १। सूचना २।
खबरिगिरी–वि० सावधानता।
खबास–उ० टहल कएनिहार शूद्र। स्त्री खबासिनी।
खबासी–खबासक क्रिया।
खम्हारु–खाद्य कन्दविशेष।
खम्हेली–बिना गाड़ल खाम्ह।
खयरा–रङ्गविशेष १। बकक प्रभेद २।
खर–तीव्र।
खरकटब–क्रि० जोरसँ सटब।
खरखर–अश्लक्ष्ण।
खरखराएब–क्रि० खरखर+अब–आघातसँ तृणादिक खरखर शब्द होएब १। खरखरब + अब-खरखर शब्द कराएब २।
खरखराएन–सतरञ्जमे तराउपरी दू प्यादाक सहसँ मातु।

खरखराह–किंचित् खरखर १ । नहि पचनिहार (साग आदि) २ ।
खरखोँच–खोंचाह ।
खरखोँचब–क्रि० बाँसक अगाड़ीसँ खोँचारब ।
खरखोँच-लागब–क्रि०लग+अब–अनेक खोँच लग्न होएब ।
खरच–खर्च, व्यय ।
खरना–स्त्रीकर्तृक एकभुक्त ।
खरभुज / **खरभुजा** }–लताक फल विशेष खर्बूज।
खरभुसिआ–साधारण ।
खरमास–तीव्र मास, बैसाखज्येष्ठ ।
खरलुच्ची–अत्यन्त उकठ कयनिहार ।
खराइन–दुर्गन्धिविशेष ।
खराज–शाण ।
खराजब–क्रि० शाणसँ छीलब ।
खराप–वि० अधलाह ।
खरि–गोट रैँचीक सिट्ठी ।
खरिआ नोन–लवणविशेष ।
खरिहान–अन्न तैआर करबाक स्थान, सं० खल ।
खरिहारी–खरिहान बनएबाक हेतु आदेय अन्न ।
खरुआन / **खरुहान** }–अगण्य नेनाक समूह (निन्दामे) ।
खरेहा–शशक ।
खरोसा–अन्वेषण
खर्च–व्यय ।
खर्चदारी–अधिक खर्च ।
खर्चोटा–नित्य खर्च लिखबाक (बही)।
खल–खल्व, पाथरक गहीड़, पिसबाक पात्र ।
खलखल हँसब–क्रि० स्पष्ट हँसब ।
खलखलाएब–क्रि० खलखल्-अब-सशब्द हँसब ।
खलपट / **खलपट्ट** }–खल्वाट ।
खलब–क्रि० श्वासक तेजीसँ नेनाक पेट दबब १। औषधकें खलमे पीसब २।
खलबल-करब–क्रि० तापसँ जलादिक खलबल शब्द करब ।
खलबलाएब–क्रि० खलबल-अब-तापजन्य जलादिक सशब्द सञ्चर ।
खलबली मचब–क्रि० चिन्ता सँ अधिक अशान्ति होयब ।
खलरी–देहक अशुष्क चाम ।
खल्ला–नेनाक पेट खलब रोग ।
खस–उशीर, कतराक सीर ।
खसता–परता (खेत) ।
खसब–क्रि० पतन, स्खलन ।
खसल–परता (खेत) १ । निपतित २ ।
खस्ता–खसल, बिनु आबाद कएल (खेत)।
खाउक–खाधुर, अधिक खएनहार ।
खाएब–क्रि० ख+अब–खादन भक्षण ।
खाएर–खदिरसार १ । खदिरवृक्ष २ ।
खाँओ–मुसलमान ओ कतोक ब्रह्माणक उपाधि ।
खाक–वि० भस्म ।
खाँखड़ / **खाँखर** }–पोखरि वा धारक निचला जलक उपरका चारू दिसक भाग ।
खीच–खिचार १ । काठमे काठ पैसबाक छिद्र २ ।

खाजा–मिष्टान्नविशेष ।
खाँझमाझ–तारतम्य ।
खाट–खट्वा ।
खाँड़–छोट खड्ग १ । मिसरीक पैघ खण्ड २ ।
खाढ़ी–परम्परा, श्रेणी ।
खातिर–वि० कृपा ।
खाधि–गर्त ।
खाधुर–अधिक खएनिहार ।
खानगी–वि० रहस्य ।
खानि–खनि, आकर, हीरा प्रभृतिक स्थान।
खाप–जकर पोत लागए से (खेत) ।
खापट–खर्पर, फूटल माटिक बासनक खण्ड ।
खापडि / **खापरि** }–भुजबाक, अर्द्धभग्न माटिक बासन ।
खाम–लिफाफ ।
खामखाह–अ० वि० अवश्यमेव ।
खामिन्द–वि० प्रभु ।
खामिन्दी–वि० प्रभुक कृपा ।
खाम्ह–स्तम्भ, बरीक आधार ।
खाम्ही–पाढ़िक आधार स्तम्भ ।
खायब–क्रि० ख+अब–खादन, भक्षण ।
खायर–खदिरसार १ । खदिरवृक्ष २ ।
खार–क्षार ।
खारु–रोपल धानक बीआ ।
खाल–खली ।
खाली–केवल १ । रिक्त २ ।
खास–वि० स्वमात्रसम्बन्धी ।
खासा–अत्यन्त मेही (मलमल)
खाँहिस–वि० इच्छा ।
खिआएब–क्रि० खि+अब–घर्षणसँ क्षीण होएब ।
खिखिर–खिङ्खुर, जन्तुविशेष ।
खिचाड़ / **खिचार** }–पादाघातसँ उत्पन्न थाल ।
खिचारब–क्रि० थाल उकटब ।
खिच्चड़ि–कृसर, चाउर ओ दालि सहपक्व।
खिजमती–वि० कार्यमे आनल (वस्त्रादि) ।
खिड़की–वातायन, छोट कपाट ।
खिड़हरि–चटाइ ।
खिनखिनायब–क्रि० खिनखिन+अब–खिन्न होएब । किछु किछु दुःखसँ युक्त रहब ।
खिनहरि / **खिन्हरि** }–चटाइ ।
खिन्हारा–पैघ चटाइ ।
खिरकिट्टी–अत्यन्त कृश ।
खिरसा–फाटल दूधक सारभाग ।
खिरोधनी–कुम्हारक बासन विशेष ।
खिलखिलाएब–क्रि० खिलखिल+अब–प्रच्छन्न भए हँसब ।
खिलतोड़–नव तोड़ल (जमीन) ।
खिलबट्टी–खिल्ली रखबाक पनबट्टी।
खिलाल–गजीफा खेलक हारि ।
खिल्लति–वि० पदवी ।
खिल्ली–खएबाक योग्य लगाओल पान १ । बड़दक पहिल दाँत २ । अङ्कक जोड़ ३ ।
खिल्ली तोड़ब–क्रि० बड़दक पहिल दाँत तोड़ब ।
खिसिआएब–क्रि० खिसि+अब–क्रोध करब ।

खिसिआह–उ० कोपन, क्रोधशील । स्त्री० खिसिआहि ।
खिस्सा–कथा, इतिहास, छोट चरित्र ।
खीँचब–क्रि० खिंच+अब-कर्षण ।
खीर–क्षीरोदन, दूधमे सिद्ध तण्डुल ।
खीरमोहन–मिष्टान्नविशेष ।
खीरा–सोहाँस, त्रपुस ।
खीरी–फलविशेष ।
खील–कील ।
खीलनि–व्रणक कील ।
खीसा–कथा, इतिहास, छोट चरित्र ।
खुखना–अतिस्थूल (व्यक्ति) ।
खुटका–अशौच १ । सन्देह २ ।
खुटकी–सन्देह ।
खुटब–क्रि० खुट+अब-घरक भूमि खुट्टा गाड़ि सोझ करब ।
खुटरी–देबालमे लागल वस्तु लटकएवाक खुट्टी, नागदन्तिका ।
खुटिआ–एक प्रकारक अङ्ग ।
खुट्टा–टाट फड़क गाए आदि बन्हबाक स्तम्भ ।
खुट्टी–छोट खुट्टा १। भूषणविशेष २।
खुड़लुच्ची–एमहर-ओमहर लुचलुच कएनिहार ।
खुड़ुर / **खुड़ुरबट्टी** }–एक गोटाक चलबाक योग्य बाट ।
खुदरा–रुपैआसँ कम अठन्नी आदि १। पचेसी खेड़िमे दूओ सँ छ धरि चित्त कौड़ी २ ।
खुदरिआ–कम द्रव्यसँ दोकान कएनिहार ।
खुदिआह–खुद्दीसँ मिश्रित ।
खुद्दी–तण्डुलकण ।
खुभरी–जारनक छोट-छोट टुकड़ी ।
खुरखराएब–क्रि० खुरखुर+अब-खुरखुर शब्द करब ।
खुरचन–शुक्तिक खप्पा, सितुआ ।
खुरचब–क्रि० छोलब ।
खुरछारी काटब / **खुरछाही काटब** }–क्रि० कट+अब–ओढ़ना-बिछाओनकेँ नोचब आदि ।
खुरदक–वाद्यविशेष ।
खुरदकिआ–खुरदक बजओनिहार ।
खुरपा–पैघ खुरपी ।
खुरपी–घास छिलबाक छोट अस्त्रविशेष ।
खुरमा–मिष्टान्नविशेष ।
खुरलुच्ची–एमहर ओमहर कए उपद्रव कएनिहार ।
खुरेठब–क्रि० खूरसँ धाँगब ।
खुलता–अनावृत ।
खुलब–क्रि० खुल-अब–प्रकाश करब १ । शोभा देब २ ।
खुलासा–वि० स्पष्ट ।
खुष्टमख्याल–अत्याग्रह ।
खुसकी–स्वतन्त्र सबारी ।
खुसखुस टुटब–क्रि० बिना बलेँ टुटब ।
खुसनामा–वि० खुसीक बात ।
खुसामद–वि० अनुव्रजन ।
खुसी–वि० आनन्द, प्रसन्नता ।
खूट / **खूँट** }–वस्त्रादिक कोण ।
खूटब–क्रि० खुट्+अब-घरक भूमि खुट्टा गाड़ि ठीक करब ।
खूब–वि० अत्यन्त ।
खूभी–दण्डक तीक्ष्ण अग्रभाग ।

खूर–खुर १ । क्षुर २ ।
खूलब–क्रि० खुल्+अब–प्रकाश करब १ । शोभा देब २ ।
खूलि–गजीफा खेलिमे सभ हुकुम खसब।
खेआल–हास्यास्पद चेष्टा ।
खेआली–हास्यास्पद चेष्टाकारी ।
खेँख–अधिक हँसनिहार (निन्दामे) ।
खेँखिआएब–क्रि०खेखि+अब- अधिक हँसब (निन्दामे) ।
खेँखी–अधिक हास्य ।
खेढ़ही–मूँग, द्विदल अन्नविशेष, मुद्ग सं०।
खेड़ा–क्रीड़ाविज्ञ ।
खेड़ि–क्रीड़ा ।
खेड़िआ–खेल कएनिहार ।
खेत–क्षेत्र, धान्यादि उपजावक भूमि ।
खेतउतार–रोपनिक समाप्ति ।
खेतकोना–आबाद नहि भेल खेतक एक कोन ।
खेतमास–उरीद, घठिहन द्विदल अन्नविशेष ।
खेतिआहा / **खेतिहर** / **खेतिहार** }– खेत कएनिहार गृहस्थ ।
खेती–कृषि, खेतक क्रिया ।
खेप–आवृत्ति १ । खेपब २ ।
खेपब–क्रि० काल काटब ।
खेपी–आवृत्ति ।
खेबब–क्रि० नाओ चलएबाक हेतु पानि टारब, नाओ चलाएब ।
खेबा–आतर, तरणपण्य ।
खेल–क्रीड़ा !
खेलओना–बालक्रीड़ाक वस्तु ।
खेलओनिआ–हास्यप्रिय, चेतन कैं खेलओनिहार, पैघ लोकक हास्यविनोद मे नियुक्त धूर्त ।
खेलधूप–क्रीड़ा आदि ।
खेलबाड़ / **खेलबाड़ी** }–खेलएनिहार, क्रीड़ानिपुण ।
खेलाएब–क्रि० खेल् + अब--क्रीड़ा करब।
खेलाएब-धुपाएब–क्रीड़ादि करब, खेलिधूप ।
खेलाड़ी–खेड़ि में पटु ।
खेलि–क्रीड़ा ।
खेलौड़ि–बालकक क्रीड़ा ।
खेलौड़िआ–क्रीड़ासक्त ।
खेलौना–बालक्रीड़ाक सामान्य ।
खेसरा–माछक प्रभेद १। खेतक नम्बर २ ।
खेसारी–खञ्जारि, द्विदल अन्नविशेष !
खेहब–क्रि० खेह+अब–तागक घोंटब ।
खेहार–पएबाक हेतु पाछाँ सँ दौड़ब ।
खेहारब–क्रि० पकड़बाक हेतु पाछाँसँ ने गाड़ब ।
खै–छोट आड़ा देल क्षेत्र ।
खैँक–सूक्ष्म शल्य ।
खैँचब–क्रि० आकर्षण ।
खैँठी–शुष्क जमल विकार ।
खोँइँचा–फलक त्वक् ।
खोइँछ–स्त्रीक बान्हल आँचर जाहिमे अन्नादि लए जाए ।
खोखड़न–अस्त्राग्रघर्षण सँ वियोजित डाढ़ी आदि ।
खोखड़ब–क्रि० अस्त्राग्रघर्षण सँ वियुक्त करब ।

खोखड़ना } –खोखड़बाक साधन ।
खोखड़नी }

खोँखी–काश, उकासी, खाँसी हि० ।

खोँखीमरखा–ओषधिविशेष ।

खोँची } –वस्तु रखबाक बाँसक
खोङची } पात्र ।

खोँच–त्वचाछेदनयोग्य तीक्ष्णाग्र अवयव।

खोँचड़ि–मध्यमे वस्तु रखबाक हेतु दूनू दिसिसँ बान्हल तृणसमूह ।

खोँचारब–क्रि० दण्डाग्रसँ आघात करब।

खोँचाह–खोँचसँ युक्त ।

खोड़–खञ्ज, नाँगड़ ।

खोड़ } –असम्पूर्ण, खण्डित ।
खोँड़ }

खोड़बन्ह–टुटल बान्हक खाधि ।

खोड़संग–उचित चलवामे असमर्थ लोकक सङ्ग ।

खोड़हा–पचेसी आदि खेड़िक हेतु वस्त्रादि रचित घर ।

खोड़ेआ–अस्त्रविशेष, काती ।

खोढ़ा–खोड़हा, पचेसी आदिक घर ।

खोता } –नीड़, पक्षीक गृह ।
खोँता }

खोदहा–सूचीद्वारा काजरक प्रवेश कराए देहमे बनाओल चित्र ।

खोधब–क्रि० किञ्चित् खनन ।

खोधा–खोदहा ।

खोधामा–खोधिकेँ बनाओल नकसा ।

खोन–जकर ठोर कटल हो ।

खोनही–आवृत स्थान, घरक कोन लगक स्थान ।

खोना–अनादरणीय खोन ।

खोनाठ } –प्रज्वलित चेरा आदि ।
खोनाठी }

खोनू–आदरणीय खोन ।

खोप–परबा रहबाक मनुष्यनिर्मित खोता।

खोपड़–माथक उपरका भाग ।

खोपड़ि–धान्यादि ओ परबाक अति छोट घर ।

खोपबन्ह–खोपा बन्हबाक डोरि ।

खोपा–धम्मिल, केशपाश ।

खोपी–छोट खोपा ।

खोभ–मोट लकड़ीक तीक्ष्ण भाग ।

खोभब–क्रि० खेतक विपन्न देशमे रोपब।

खोभाड़–सूगरक घर ।

खोभी–माटि कोड़बामे उपयुक्त वंशादि-निर्मित सूक्ष्माग्र यष्टि ।

खोम–मनमे अमंगलक आशंका ।

खोमाह–उ० खोम माननिहार ।

खोरनाठी–दग्धाग्र जारन ।

खोल–गेड़ुआ आदिक उपरका वस्त्र ।

खोलब–क्रि० मोचन ।

खोलसा–बड़द आदिक दृष्टि प्रतिबन्धक झपना ।

खोली–कन्तोड़ प्रभृतिक छोट कोष्ठ १ । चसमा आदि रखबाक पात्र २ ।

खोँसब–क्रि० अन्त:प्रवेशनपूर्वक अवलम्बित करब ।

खोह–गुहा १ । दाउनिक हेतु छीटल धान्यादि २ ।

खोहब–क्रि० कोड़ब, भीतर शुद्ध करब ।

खौआ–खाधुर, अधिक खएनिहार ।

ख्याल–वि० स्मरण १ । नाना चेष्टा २ ।

ख्याली–नाना चेष्टा कएनिहार ।

ग

गए–अ० अनादरणीय स्त्रीक सम्बोधन ।

गएब–वि० अदृश्य ।

गएब बाजी–परोक्षस्थितिपूर्वक खेड़ि सतरञ्जक ।

गएर–मेघक घटा ।

गएरह–वि० प्रभृति ।

गओँ–उपकार, इष्टसिद्धि ।

गंगा–सं० जाह्नवी, नदीविशेष ।

गंगाजल–गङ्गानदीक जल ।

गंगाजली–गंगाजल रखबाक पात्र ।

गंगौट–गङ्गाक मृत्तिका ।

गच–रोड़ा-सुरखोसँ दृढ़ कएल मकानक सहन ।

गच्छ–सजातीयक झुण्ड ।

गछगर–गच्छ+गर-अधिक समांगबाला १। गाछ + गर-अधिक गाछसँ युक्त 2 ।

गछपक्कू–गाछमे पाकल फल ।

गछब–क्रि० स्वीकार करब ।

गछार–दूक एकत्र बन्धन ।

गछारब–क्रि० दू बोझ आदिक एकत्र कए बान्हब ।

गछिअन–अधिक गाछी ।

गछौन्ही–गाछक अधिक छाह ।

गज–दू हाथक प्रमाण वस्त्रादिक नपना १ । तत्परिमित (वस्त्रादि) २ ।

गजगज करब–क्रि० पानिसँ अधिक भिजने स्थलक अति कोमलीभाव।

गजपटाएब–क्रि० गजपट+अब-विजातीयसँ मिश्रित होयब

गजपटी–विजातीय सँ साङ्कार्य्य ।

गजपीपरि–गजपिप्पली, औषधि विशेष (महाबृक्ष) ।

गजब–क्रि० मनमे आनन्द होयब ।

गँजबाह–गाँजसँ माछ मारनिहार ।

गँजबाहि–गाँजसँ माछ मारनाइ ।

गजमुक्ता–सं० हाथीक मस्तकमणि ।

गजरथ–सं० हाथी-लागल रथ ।

गजरा–मोट माला १ । कन्दविशेष २ ।

गजिआ–तोड़ा, खजाना रखबाक झोरा ।

गजीफा–क्रीड़ाविशेष ।

गजुरा–अङ्कुरक पात ।

गंजन–सं० भर्त्सन ।

गंजित–सं० भर्त्सित ।

गटगट गीड़ब–क्रि० गीड़+अब-बिना चिबओनहिं खाएब (निन्दामे) ।

गट्टा–पहुँचा मणिबन्धक जोड़ ।

गड़कब–क्रि० घुमैत चलब ।

गड़खइ–परिखा, घरक वेष्टन-गर्त्त ।

गड़गड़ाएब–क्रि० गड़गड़+अब-गड़गड़ शब्द करब ।

गँड़गोआरि–इन्द्रवधूटी, सहस्रपाद पीलु ।

गड़ब–क्रि० निखात होयब, कण्टकादिक प्रवेश ।

गड़बड़–सन्दिग्ध १। अयथावत् प्रवृत्त २ ।

गड़बड़ाएब–क्रि० गढ़बड़+अब-सम्पन्न नहि होयब १। अयथावद् होयब २।

गड़बड़ी–सन्देह १। यथावत् असम्पत्ति २ ।

गड़र–वृक्षविशेष १ । पटिया आदि बनएवाक प्रथम क्रिया २ ।

गड़रब–क्रि० देह-हाथक टटैनी १ । गाछसँ सड़िकेँ खसब २ ।

गड़हा–गहींड़ गर्त ।

गड़ही–आवृत राजाऽऽवास-भूमि ।

गड़ार–गाछक पीलु ।

गँड़ास–अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र ।

गड़िआएब–क्रि० गड़ि+अब आँखिक दुखाएब ।

गँड़िआह–पुरुष्क सङ्ग मैथुनप्रवृत्त पुरुष।

गड़िऐनी–गड़िआयब, अक्षिवेदना ।

गँड़िखुल्ला–निर्वस्त्र बेहाया ।

गँड़िथोभ–थोड़ पसरल जल ।

गँड़िमोथी–मोथी तुल्य तृणविशेष ।

गड़ुआ–उपधान ।

गरु–कठिन ।

गड़ेगड़े–क्रीड़ाविशेष ।

गढ़–किला, दुर्ग ।

गढ़ब–क्रि० भूषणादिक निर्गाण ।

गढ़ा–गहींड़ खाधि ।

गढ़ाइ–गढ़ब १ । गढ़बाक वेतन २ ।

गढ़ी–दुर्ग, राजाक देबालसँ घेरल आवास।

गढुआरि–स्त्री गुर्विणी ।

गणगोआरि–इन्द्रबधू, गँड़गोआरि ।

गणास–अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र ।

गणिआह–पुरुषक सङ्ग मैथुन कएनिहार।

गणिखुल्ला–निर्वस्त्र नग्न (निन्दामे) ।

गणिथोभ–थोड़ पसरल जल ।

गणिमोथी–मोथी तुल्य तृणविशेष ।

गण्डा–चारि संख्याक १ । जीवशून्य (अण्डा) २ । बद्धी विशेष ३ ।

गतात–गतागत, गमनागमन ।

गतानब–क्रि० घोर सक्कत कए खाट आदिकेँ सक्कत करब ।

गतायात–गमनागमन ।

गत्तर–गात्र, अङ्ग ।

गत्ता–पुस्तकक रक्षा हेतु मोट आवरण ।

गदह–कलह ।

गदहपुराने–पुनर्नवशाकविशेष ।

गदह मचब–क्रि० घोलपूर्वक बहुत झगड़ा करब ।

गदहा–गर्दभ ।

गदहिआ–जातिविशेष ।

गदही–स्त्री० गदहाक स्त्री ।

गदा–सं० अस्त्रविशेष ।

गदिआएब–क्रि० गदिअब् + अब–बातीकेँ गादिसँ रहित करब ।

गदिगर–अधिक गादिबाला (बाँस आदि)।

गदेला–छोट गद्दी, कन्था ।

गदौस–त्याज्य तृणादि, कस्तर ।

गद्गद–सं० आनन्दादिसँ अस्पष्ट कण्ठ।

गद्दर–आसिन मे भेनिहार धान, तादृश अन्नविशेष, आँसु ।

गद्दह–कलह उच्चैः शब्दपूर्वक झगड़ा ।

गद्दह मचब–क्रि० बहुकर्तृक उच्चैः शब्दसँ कलह होयब ।

गद्दी–सतूल आस्तरण ।

गनगनाएब–क्रि० गनगन+अब–गनगन शब्द करब १। उद्घुष्ट होयब २।

गनगनी–गनगनाएब, गनगन शब्द ।

गनगोआरि–इन्द्रवधूटी, सहस्त्रपाद पीलु।

गनब–क्रि० गणना ।

गनिआरि–गणिकारिका, वृक्षविशेष ।

गन्ती–गणना ।

गन्धक–सं० धातुविशेष ।

गन्धकी–गन्हकी । हि० कुकरोधा ।

गन्धपलासी–ओषधिविशेष ।

गन्धपसारनि–गन्धप्रसारिणी, ओषधिविशेष ।

गन्हकी–गन्धकी, हि. कुकरौंधा ।

गन्हकौआ–दुर्गन्धोपेत ।

गप
गप्प } –वार्तालाप ।

गप्पसप्प–बातचीत ।

गप्पी–मिथ्या गप्प कएनिहार १ । अधिक गप्प कएनिहार २ ।

गप्फा–अङ्गुरीमूलक मध्यदेश ।

गफलति–वि० भूलचूक ।

गब–रोपबाक हेतु आँटी सँ फुटाओल धान्यादिक बीआ ।

गब लेब–क्रि० ल+अब–प्रथमतः धान्य रोपण ।

गबसूआ–पीलुविशेष ।

गबहा संक्रान्ति–गर्भहा संक्रान्ति, कार्तिक मासक (संक्रमण) ।

गबाह–वि० साक्षी ।

गबाही–साक्षिता ।

गबैया–गायक ।

गब्बर–मना कयलहु पर चुप्पे रहि ओहि काजकेँ नहि छोड़निहार ।

गभ–धान्यादिक गर्भ ।

गभछभ–क्रि० मालक गर्भधारण करब ।

गभहा संकृान्ति–कार्तिकक संकृान्ति ।

गभिनाएब–ना० गाभिन+अब–गाभिन होएब ।

गमइ–छोट गाम ।

गमक–सौगन्ध्य ।

गमकब–क्रि० अपन सुगन्धि पसारब ।

गमकी–सुगन्धि ।

गम खाएब–वि० क्रि० ख+अब–तत्काल निवृत्त होएब ।

गमगम–किञ्चित् उष्णता पाएब १ । गमकब २ ।

गमगमाएब–क्रि० गनगम्+अब–किञ्चित् उष्णता पाएब १ गमकब २ ।

गमब–क्रि० परीक्षा करब ।

गमरपन
गमरपना } –ग्राम्यता, अनभिज्ञता ।
गमरपनी

गमाएब–क्रि० गमब्+अब–काल व्यतीत करब १ । विनष्ट करब २ ।

गमागम–अत्यन्त सौगन्ध्य ।

गमार–ग्राम्य, अनभिज्ञ ।

गमै–छोट गाम ।

गमैआ–गामक (विषय) ।

गमैती–ग्रामान्तर गमन ।

गमैया–गामक विषय ।

गम्भीर–स्थिरान्तःकरणक, अचञ्चल-प्रकृत्तिक ।

गम्हड़ा–धान्यादिक गर्भ ।

गम्हड़ी–व्रीहि, षष्ठिका ।

गम्हारि–गम्भारी ।

गर–गल, गरदनि १ । ठीकसँ बैसबाक योग्य भाग २ । चारक उतार ३। अवसर ४ ।

गरगट–गलगत, गलेपतित, बलाय ।

गरगोटा
गरगोटिआ } –गलहस्त, गरदनिक आगाँ पकड़ि ठेलब ।

गरचुन्नी–माछक प्रभेद ।

गरदनि–ग्रीवा ।

गरदनिआँ–गलहस्त, ग्रीवाक पछिला भाग पकड़ि ठेलब ।

गरदा–धूलि ।

गरदाम / **गरदामी** }–गलदास, मालक गरदनिक डोरी ।

गरय–चारक क्रमिक उतार १ । घरक उच्चता २ ।

गरयगर–उच्च गरय बाला (घर) ।

गरलग्गू–जे खयलासँ गरमे लागिजाय ।

गर लागब–क्रि० गरक यथोचित उच्चारणमे असामर्थ्य ।

गरसँ / **गरसओं** }–गलसम, भरि गरदनि (जल)

गरसब–क्रि० ग्रसन, राहूपराग ।

गरहत्था–गलहस्त ।

गरागरौबलि–परस्पर गारि ।

गरा लागब–क्रि० लग+अब-गलविवरमे अँटकब ।

गरीब–वि० दरिद्र ।

गरुड़–सं० पक्षिविशेष ।

गरुहन–गुरु धान्य, मालभोग आदि, जे अधिक दिनें गाछमे पाकए ।

गरू–कठिन, असमसाध्य ।

गरै–माछक प्रभेद ।

गर्जा–वि० आवश्यकता १। मेघक शब्द २ ।

गर्जू–वि० गर्जबाला ।

गर्द–घोल, कोलाहल ।

गर्दमघोल–अधिक घोल ।

गर्दा–वि० धूलि, धूरा ।

गर्व–सं० अभिमान ।

गर्म–वि० उष्ण, गरम १ । परिणाम मे उष्णगुणक २ ।

गलकट–गरदनि कटनिहार, दुष्ट ।

गलगलाएब–क्रि० गलगल् + अब-शिशु शुकादिक अत्यन्त अस्पष्ट बाजब, प्रथम बजबाक आरम्भ करब ।

गलझर–घोल १ । किंवदन्ती २ ।

गलब–क्रि० द्रवीभूत होएब विलय ।

गलमोचनी–छोट गेडुआ ।

गलमोछ–गाल पर्यन्त अवस्थित मोछ ।

गलिआरी–गल्ली, सिकस्त रास्ता ।

गलौधी–गलबन्धनी, माथ गालमे लपटएबाक वस्त्र ।

गल्ली–रथ्या, सिकस्त बाट ।

गल्लीकुच्ची–गल्ली प्रभृति सिकस्त जगह ।

गस–वि० अचैतन्य, मूर्च्छा ।

गसब–क्रि० दृढ़ सम्बद्ध करब ।

गह–दोग ।

गहकरन–ओषधिविशेष ।

गहड़ि–लूरि, अवगति ।

गहदाएब–क्रि० गहद्+अब-अनास्था, उपेक्षा करब, गौरव करब ।

गहन–ग्रहण, राहूपराग ।

गहनमरू–गहनक कारण अङ्गभङ्गबाला ।

गहना–भूषण ।

गहना-गुरिआ–गहना आदि ।

गहब–क्रि० गह्+अब-जोरसँ पकड़ब १ । छिद्रक पूर्ति करब २ ।

गहबर–ग्रामदेवताक गह्वर, आगमन गृह।

गहाकि–ग्राहक ।

गँहिड़का–गहींड़ प्रभेदक ।

गहिंड़ाह–गंभीरता ।

गहुआ–पकड़बाक यन्त्रविशेष ।

गहुमन–कृष्णपादाङ्कि सर्प ।

गहुमा–धानक प्रभेद १ । रङ्गविशेष २ ।

गहुमी–रंगविशेष ।

गहूम–गोधूम, अन्नविशेष ।

गाइनि–स्त्री, गायनी, गीत गओनिहारि ।

गाँउज / **गाउजि** }–फेनाकार मुखादिक विकार।

गाए–गौ हि० ।

गाएब–क्रि० गब्+अब-गान करब १ । वि० अदृश्य २ ।

गाँओ–गाम ।

गाओल–उपगीत ।

गागर–माछक प्रभेद ।

गाङ–गङ्गा नदी ।

गाछ–वृक्ष ।

गाछी–बहुत गाछसँ युक्त स्थान ।

गाँज–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।

गाँजर–कन्दविशेष ।

गाजर-बीजर–साफ नहि कयल १ । मिझर २ ।

गाँजा–गञ्जा, भाँग सन ओषधि विशेष, जकर धूआँ पीअल जाइत अछि।

गाँझी–फलविशेष ।

गाड़–निखनन १ । पटएबाक हेतु करीनक पड़ाब २ ।

गाड़ब–क्रि० निखनन ।

गाड़ा–माटिमे गाड़ल मुरदा ।

गाड़ी–पहिआयुक्त वाहन ।

गाढ़–गील सँ आन मोट (दुग्धादि)

गाँती–वस्त्रविशेष ।

गाद / **गादि** }–जलमे बैसल मल १ । बाँसक त्वचासँ भीतर भाग २।

गाँथनि–ग्रन्थन ।

गाँथब–क्रि० गँथ+अब-ग्रन्थन ।

गान–संगीत गाएब ।

गाबिस–बालुका सँ अमिश्रित माटि, कुलालकरमृत्तिका ।

गाभ–राखल दूधक उंपर जमल भाग ० धान्यादिक गर्भ २ ।

गाभिनि–स्त्री० गर्भिणी, गर्भ-युक्त (गाए महीसि आदि) ।

गाम–ग्राम ।

गाय–गौ हि० ।

गारब–क्रि० निगालन ।

गारा–गारल आम्रादिक रस ।

गारागरौबलि–परस्पर गारि देब ।

गारि–गाली, दुर्वाक्यविशेष ।

गारि देब–क्रि० द् + अब-गाली प्रदान।

गारि पढ़ब–क्रि० पढ़+अब-गारिक शब्द बाजब ।

गाल–गल्ल, कपोल ।

गाल करब–क्रि० कर्+अब-अधिक बाजब ।

गाहकि–ग्राहक ।

गाही–पञ्चप्रमाणक ।

गिजटाइ–संकीर्ण, परस्पर सम्बद्ध गाजर बीजर ।

गिजब–क्रि० उनटाए-पनटाए अत्यन्त छुबब ।

गिड़ब–क्रि० निगिलन, भक्षण ।

गिदरनोच–आधा-छीधा फाटल नोचल कपड़ा आदि ।

गिद्ध–गृद्ध ।

गिधनी–अत्यन्त छोट (माछ) ।

गिन्नी–सुवर्णामुद्राविशेष ।

गिरगिट–पल्ली, गृहगोधा ।

गिरथाइनि–स्त्री० गृहस्थायिनी, घरक मुख्य स्त्री ।

गिरहकट–बान्हल गीरह कटनिहार ।

गिरहबाज–परबाविशेष ।

गिरहबात–वातरोगविशेष ।

गिरि–ब्राह्मणविशेष ।

गिरिआइनि–गिरि जातिक स्त्री ।

गिलगर–अधिक गील ।

गिलट–धातुविशेष ।

गिलटी–छट्छट् कएनिहार शरीरस्थ मांसपिण्ड ।

गिलास–जलपानपात्रविशेष ।

गिलेबा–पजेबापर पजेबा बैसएबाक हेतु बनाओल गील माटि ।

गीजब–क्रि० गिज्+अब-उनटाए-पनटाए अत्यन्त छुबब । आलोड़न ।

गीड़ब–क्रि० गिड् + अब-निगिलन, भक्षण ।

गीत / **गीति** }–सं०-गानयोग्य रागबद्ध पद्यविशेष ।

गीदर–शृगाल ।

गीरह–ग्रन्थि १ चारि आँगुर प्रमाण २ ।

गील–अधिक पानिक सम्बन्धें परस्पर सम्बद्ध भात आदि ।

गुग्गुल–गुग्गुलु, धूपविशेष ।

गुच्छा–गुच्छ, एकमे सम्बद्ध अनेक ।

गुजर–वि० निर्वाह ।

गुज्जी–कानक मल ।

गुठरी–गोलाकार सटल सक्कत ।

गुड़कैल–मालक रङ्गविशेष ।

गुड़खीर–गुड़क्षीर, गुड़क सङ्ग रान्हल भात ।

गुड़चल्ला / **गुड़चाला** }–गूड़ा चालबाक भूरबाला सूप ।

गुड़रब–क्रि० आँखिक आस्फालन ।

गुड़ारब–क्रि० आँखि आस्फालित करब।

गुड़ाह–गूड़ासँ युक्त ।

गुड़िआ–गुटिका, छोट गोलाकार बनाओल।

गुडुम बाजा–वाद्यविशेष ।

गुड्डी–क्रीड़ार्थ आकाशमे उड़यबाक कागज ।

गुण–सं० सौन्दर्य्यादि प्रशंसा प्रयोजक धर्म १ । द्रव्यगुण २ ।

गुणमन्त–गुणवान्, स्त्री० गुणमन्ति ।

गुणी–सं० गुणोपेत, पण्डित ।

गुथनी लागब–क्रि० लग् + अब-एकमे वा एक ठाम सटल सटल बहुतक सम्बन्ध ।

गुदगर–अधिक गुद्दासँ युक्त ।

गुद्दा / **गुद्दी** }– फलादिक त्वचासँ आवृत भाग ।

गुन–गुण १ । डोरीमे भत्ता २ ।

गुनखराह–असम्यक् भत्ताबाला (डोरी)।

गुनबाह–नाओल गून (डोरी) धएनिहार।

गुनमन्त–गुणवान । स्त्री० गुनमन्ति ।

गुनी–गुणी ।

गुपचुप–अप्रकाश ।

गुप्ती–गुप्तास्त्रविशेष ।

गुफा–गुहा ।

गुम–अ० मौन, चुप ।

गुमनामा–विना नामक (चीठी) ।

गुमसड़ब–क्रि० गुमसड् + अब-ढेरीक तापसँ निःसार होएब ।

गुमान–वि० अभिमान ।

गुमार–गरमी ।

गुमास्ता–वि० राजाधिकृत पुरुषविशेष ।

गुम्म–अ०, मौन ।

गुम्मा–पुछलासँ उत्तर नहि देनिहार ।

गुरछा–गुच्छ ।

गुरदी–श्रमापनोदक मुक्काक आघात ।

गुरदी पारब–क्रि० श्रमापनयनार्थ मुक्काक आघात करब ।

गुरमही–गोडुम्बा, फलविशेष ।

गुरमुठि–एकमुहडा ।

गुरमुठि-लागब–क्रि० गुर्+अब-चारू दिससँ एकत्र समाविष्ट होएब ।

गुरम्ही–गोडुम्बा, फलविशेष ।

गुरीच–गुडूची लता, ओषधिविशेष ।

गुरू–गुरु, अध्यापक १ । उपनयनमे आचार्य २ ।

गुलगुल–पलपल, कोमल ।

गुलगुलाएब–क्रि०, गुलगुल + अब-आम्रादिक कोमलीभाव १ गुलगुल शब्द होएब ।

गुलगुलाहटि / **गुलगुलाहठि** }–गुलगुल शब्द होएब ।

गुलजाफरी–गेना फूलक प्रभेद ।

गुलजामु–जामुक प्रभेद १ । तदाकार मिष्टान्न वेशेष २ ।

गुलदाबरी–फूलक प्रभेद ।

गुलफा / **गुलफी** }–नारिकेरक फलगत अङ्कुर ।

गुलबिआ–गुलाबी प्रकारक रङ्ग १ । ओहिसँ रँगल २ ।

गुलभण्टा–भाँटाक समान ओषधिविशेष ।

गुलमेख–काँटी जकरा उपर थोपी हो ।

गुलाब–शतपत्री, गन्धाढ्या, पुष्पविशेष १ । गुलाबसँ बासित जल २ ।

गुलाबखाजा–मिष्टान्नविशेष ।

गुलाबजामु–मिष्टान्नविशेष ।

गुलाबपास–वि०, गुलाबसँ बासित जलक पात्रविशेष ।

गुलाबी–रङ्गविशेष ।

गुलेँच–एक प्रकारक फूल ।

गुलेती–गुल्ली फेँकबाक अनुप ।

गुलेबा–वि०, गरञ्जर ।

गुल्लरि–उदुम्बर, फलविशेष ।

गुल्ली–गुलिका, छोट वर्तुलीकृत मृत्तिकादि १ । गुल्ली डंटा खेलिक छोटका खण्ड दण्ड २ ।

गुल्ली डंटा–क्रीड़ाविशेष ।

गुहकीरा–विष्ठाक कीड़ा ।

गुहचोरा–गुह्यचोर, खढ़पात चारओनिहार सिंहा चोरसँ आन चोर ।

गूआ–गुवाक, पूगीफल ।

गूआमाला–लाक्षारचित माल्यविशेष ।

गूड़–गुड, इक्षुक विकारविशेष ।

गूड़ब–क्रि० गुड्+अब-हाथसँ-बुकब ।

गूड़ा–कुटने तण्डुलादिसँ बहराएल चूर्ण १ । चूर्ण, २ ।

गूड़ी–चूर्ण ।

गूथब–क्रि० गुथ् + अब - चुटकीसँ खीचि-खीचि दृढ़ करब ।

गून–गुण ।

गूनब–क्रि० गुन्+अब-गुणना ।

गूना–सारङ्गी, वाद्यविशेष ।

गूमब–क्रि० गूम्+अब-ढेरीक तापसँ शिथिल होएब ।

गूर–विस्फोट, व्रणाविशेष ।

गूह–विष्ठा ।

गूहब–क्रि० गूह+अब–तागमे ससारि ससारि फूल आदिक सटाएब ।
गृमहार–ग्रीवाभूषण ।
गृह–सं० घर ।
गृहबाज–परबाक प्रभेद ।
गृहस्थ–घरमे रहनिहार खेतीसँ निर्वाह कएनिहार ।
गृहस्थाइ, **गृहस्थी** –खेतीपथारी कृषिकर्म ।
गृही–गृहस्थ ।
गेआँति–ज्ञाति, सात पुरुषसँ उपर दशम पर्यन्त ।
गेआन–ज्ञान ।
गेआन पचेसी–क्रीड़ाविशेष ।
गेँग–बकबाद ।
गेँग जोतब–क्रि० जोत् + अब–बकबाद करब ।
गेँट–तराउपरी कए लगाओल काष्ठादिक ढेरी ।
गेँटिआएब–क्रि० गेँटिअब्+अब–गेँट लगाएब ।
गेँठजोड़बा–दम्पतिक वस्त्रद्वय मिलाए ग्रन्थि ।
गेँठरी–हि० मोटरी ।
गेँठिआएब–ना० गेँठ+अब=गेँठिअब् + अब–ग्रन्थिसँ युक्त करब ।
गेठिआबात–वातरोगविशेष ।
गेँठिकट, **गेँठिकट्ट** –गेँठ कटनिहार ।
गेँठिबन–ओषधिविशेष, ग्रन्थिपर्णी ।
गेँड़ा–खड़्गी, जन्तुविशेष ।
गेँड़ी–काष्ठक खण्ड ।
गेडुआ–उपधान ।
गेडुली–वीड आदिमे सटयवाक हेतु सूत्रादिनिर्मित गोलाकार वस्तु ।
गेन–कन्दुक ।
गेना–पुष्पविशेष ।
गेनिआरि–गणिकारी, वृक्षविशेष
गेन्हारी–तण्डुलीयक, गान्धारी, शाकविशेष।
गेरु–गैरिक ।
गेरुआ–गेरुक रङ्ग ।
गेलही, **गेल्ही** –फलविशेष ।
गैघरा–गोगृह, गोशाला ।
गैँच–वक्रताविशेष ।
गैँचब–क्रि० गैंच् + अब–वक्रीभाव ।
गैँचाह–किञ्चित् वक्र ।
गैँची–मत्स्यविशेष ।
गैबार–गोवारक, गोरक्षार्थ का
गैबारि–गोरक्षकक क्रिया गाइक चराएबआदि ।
गैसिंही–मुद्राविशेष, बटेर पकड़बाक हेतु गोशृङ्गाकारग्रहण ।
गो–गोबरक ढेरी ।
गोअरटोली–गोआरक टोल ।
गोअरनट–वस्त्रविशेष ।
गोअरनटुआ–नर्त्तकविशेष ।
गोआर–गोप जातिविशेष । स्त्री० गोआरि ।
गोआह–गबाह, साक्षी ।
गोआही–साक्षीक क्रिया ।
गोइठा–शुष्क गोमय (गोविष्ठा) ।
गोखुला–गोक्षुर, ओषधिविशेष ।
गोँग–अवक्ता १ । दुराग्रह २ ।
गोँग जोतब–क्रि जोत् + अब–दुराग्रहक अत्याग ।

गोँगिआएब–क्रि गोँगि + अब–अस्पष्ट बाजब ।
गोँगिआह–अस्पष्ट वक्ता ।
गोङ–अवक्ता १ । दुराग्रह २ ।
गोङ जोतब–क्रि० जोत् × अब–दुराग्रहक अत्याग ।
गोजर–कनगोजर, बीछ आकारक सूक्ष्म कीट ।
गोझनट–स्त्रीक पहिरल साड़ीक निम्न-प्रान्त ।
गोट–सर्षप १ । बिनु दड़रल (द्विदल) २ । व्यक्ति ३ ।
गोटगर–अधिक व्यक्तिसँ युक्त ।
गोटपगरा, **गोटपङरा** –क्वचित् क्वचित् स्थित ।
गोटरस–क्रीड़ाविशेष ।
गोटा–नूआमे लगएबाक सुवर्णादिक तारसँ निर्मित आध आङुर चाकर वस्तु।
गोटागोटी–अ० एकाएकी, प्रत्येक ।
गोटिना–काष्ठखण्ड ।
गोटी–आपरूपी, देहक फोंका १। सतरञ्ज प्रभृति खेड़िक पात्र २। गुलिका ३ ।
गोटेक–एक गोट ।
गोठ–गोष्ठी, एकत्र उपस्थित जनसमूह १। बैसलक नूआसँ वेष्टित धरसहित दुहू ठेहुन २ ।
गोठदार–बान्हल पागक प्रभेद ।
गोठ मारब, **गोठ लगाएब** –बैसलमे नूआसँ ठेहुन सहितक वेष्टन करब ।
गोठाल–गोस्थल
गोठिआएब–क्रि० गोष्ठीमे बैसब, एकत्र अनेकक उपस्थिति
गोठुला–चिपरीगोइठाक घर ।
गोड़कट–पाएर पसारि सुतबाक अयोग्यता।
गोड़थरि, **गोड़थारी** –पाएर रखबाक स्थान ।
गोड़ना–नेनाक पाएरक काड़ा ।
गोड़पैँच–गतायातव्यवहार ।
गोड़रा–टाङबाला माछ ।
गोड़लगगी–प्रणाम ।
गोड़हन–सुतनिहारक पाएर दिसक भूमि १ । छोट बालकक काड़ा २ ।
गोड़हन्नी–नामनाम पाथल सुखाएल गोबर।
गोड़ाइत–कचहरीमे असामी बजएबाक हेतु नियुक्त पुरुष ।
गोड़ा, **गोड़ानि** –पालक आधार काष्ठादि ।
गोड़ी–पालक अवयव छोट आधार ।
गोड़ैती–गोड़ाइतक काज ।
गोँढ़लत्ती–गोँढ़िकेँ गाँज टापि बनएबामे उपकारक लताविशेष ।
गोँढ़ि–मत्स्योपजीवी जातिविशेष । स्त्री० गोढ़िनी ।
गोँढ़िआरी–गोँढ़ि जातिक टोल ।
गोँत–मालक मूत्र ।
गोँतब–क्रि० गोँत + अब – मालक मूत्रत्याग ।
गोत्र–सं० बीजी मुनि ।
गोधन–गोबरक बनाओल पुरुषाकार गोवर्द्धन पर्वत ।
गोधिआँ–पचेसी प्रभृति खेड़िमे एक सङ्ग हारि जीतक भागी ।
गोन–निम्बनिर्यास, नीमक लस्सा ।
गोनरि (ड़ि)–एकडोरिआ बीनल पटिआ।

गोप–सं० गोआर जातिविशेष ।
गोपलाएब–क्रि०, गोपल् + अब – अदृश्य होएब ।
गोपालखत्ता–वस्तुविनाशगर्त्त ।
गोपीचन्दन–गोपीतड़ागक मृत्तिका ।
गोबर–गोमय ।
गोबरकढ़नी–स्त्री० गोबर कढ़बामे नियुक्त स्त्री ।
गोबरगनेस–गोबरक गणेश, अकर्मण्य ।
गोबरछत्ता–शिलीन्ध्र, छत्राकार भूमिमे उत्पन्न ।
गोबराइन–गोबरक गन्ध सदृश गन्ध ।
गोबराड़–गोबर एकट्ठा करबाक भूमि ।
गोबराह–किञ्चित् गोबरसँ युक्त ।
गोबरौड़–गोबर माटि नूड़ रखबाक पात्र।
गोब्राह्मणी–यथा गाए ब्राह्मण केँ मारब वा गाय ब्राह्मणसँ मरब दुहू अधलाह तथा क्रियान्तर ।
गोर–उ० गौरवर्ण । स्त्री० गोरि ।
गोरका–उ० गौरप्रभेदक, स्त्री० गोरकी ।
गोरब–क्रि० फलादिकेँ पकबाक हेतु माटिक तर वा निमुन्न बासनमे राखब ।
गोरहन्नी–नाम पाथल गोबर १ । डोमक वाद्यविशेष २ ।
गोराइ–गौरवर्णत्व ।
गोरि–स्त्री० गौराङ्गी ।
गोरिआ–गोपजातिविशेष ।
गोरु–बिनु बाहल गाय ।
गोरुआ–गोरलासँ पाकल (फल) ।
गोरस–दही-दूध ।
गोरैया–गोआरक देवता ।
गोरोचन–गोरोचना, गाइक कपारक पीअर रङ्ग ।
गोल–वर्तुल १। वर्तुलकाष्ठ २। वर्णविशेष ३। तादृश कपिशवर्णक माल ४। मण्डल ५। एकमतिआक समूह ६।
गोलका–गोलप्रकारक ।
गोलट–परस्परक बालककेँ परस्पर अपन कन्यादान ।
गोलमाल–अज्ञात प्रकारेँ नष्ट ।
गोलरी–गहूम आदिक सीस थकुचला पर अवशिष्ट गुठरी ।
गोलहत्थी–हरदि दय अधिक पाकसँ रान्हल गोलाकार भात ।
गोला–पैघ ढेप १। अन्नक पैघ दोकान २ ।
गोलाइ–वर्तुलता ।
गोलागोली–अनेक गोल, अनेक विभिन्न मतक मण्डल ।
गोलालाठी–बन्धनविशेष ।
गोलालाठी भरब–क्रि० एक विशेष प्रकारक बन्धन करब यथा- हस्तद्वय-बन्धन, पादद्वय-बन्धन, बलयाकार हाथकेँ जानुक उपर देने प्रवेशन, हाथक उपर देने दुहू जानुक मध्यमे यष्टिक प्रवेशन ।
गोलिआएब–ना० गोलअब् + गोलिअब + अब-धान्यादिक-गोलाकार करब ।
गोली–गुलिका ।
गोलीताग–गोल भिँडिआओल सूत ।
गोलेस–जनसमूहक प्रधान ।
गोलैसी–एकवाक्यतापन्न जनसमूहक प्रधान व्यक्तिक क्रिया ।

गोशाला–सं० गायक आवास प्रभेद ।
गोसबारा–अविभक्त, साझी (धन) ।
गोसाइँ–पु० गोस्वामी, देवता १। बाबाजीक उपाधि २ ।
गोसाउनि–स्त्री० कुलदेवी ।
गोह–गोबरक ढेरी ।
गोहारि–देवकृत रक्षा ।
गोहि–ग्राह ।
गौआँ–एकग्रामवासी ।
गौँआरय–एकग्रामवासीक व्यवहार ।
गौँछब–क्रि० दू बोझकेँ एकत्र बान्हब ।
गौँज–मुहक लेरपोटा १। अतिवृद्धिसँ वा कालातिक्रमसँ निष्फलीभूत (धान्यादिवृक्ष) २ ।
गौँजाएब–ना० गौँज होएब, धान्य-वृक्षादिक अतिवृद्धि वा कालातिक्रमसँ निष्फलीभाव ।
गौर–गौरी, पार्वती ।
गौरनेजा–गौरीपूजासामग्री ।
गौरव–सं० अहंकार १ । गुरुता २ ।
गौरिआ मालभोग–केराक प्रभेद १ । मालभोग धानक प्रभेद २ ।
ग्रामित–ग्राममित्र, एकग्रामवासी ।
ग्रिमहार–ग्रीवाक हार, कण्ठभूषणविशेष।

घ

घओना–क्रन्दनविशेष ।
घघरा–नटुआक पहिरबाक वस्त्रविशेष ।
घघापाल–सभ अंगकेँ लम्बा वस्त्रसँ आच्छादित कएने पुरुष ।
घघरी–कुमारि नेनाक पहिरबाक वस्त्र-विशेष ।
घछफछाएब–क्रि० घछफछ + अब-तारतम्य करब ।
घटक–विवाहक घटनाकर्त्ता ।
घटकैती–घटकक क्रिया ।
घटघट पिअब–क्रि० पिब् + अब-सशब्द पान ।
घटना–सं० योजना, यत्न ।
घटब–क्रि० अल्प होयब ।
घटबार–सं० घाटपर अधिकृत (पुरुष) स्त्री० घटबारनी ।
घटबारि–घाटक अधिकारीक क्रिया ।
घटही–नित्य पार कएनिहार घाटपर स्थित (नौका) ।
घटाओ–घटा, मेघाडम्बर १। अल्पीभाव २।
घटाटोप–आडम्बर, महत्त्वक प्रकाश ।
घटावर्जन–सर्वथा गतायातक निरोध ।
घटिआ–पु० घाटमे नियुक्त (पुरुष) ।
घटिआएब–ना० घट्टी + अब-घट्टी होएब ।
घटुआर–मनघुटाह, अप्रसन्न ।
घटोसब–क्रि० घटोस् + अब-घटघट शब्दपूर्वक अधिक पिअब ।
घट्टी–न्यून ।
घठिहन–घाठिक योग्य अन्न (उरीढ़ आदि)
घड़कब–क्रि० स्थूल वस्तुक किञ्चित् विचलित होयब ।
घड़खसाओन–घाड़ खसओने बजबामे उदासीन ।
घड़बड़ाएब–क्रि० घड़बड् + अब-कर्तव्यविमूढ़ होयब ।
घड़मोमड़ा / **घड़मोमरा** } –मालक रोगविशेष ।

घड़र–अति सम्बन्ध ।

घड़र पारब–क्रि० पार+अब–जोरसँ निद्रामे शब्दविशेष करब ।

घड़रा–नौकाक अनुकल्प घटादि–निर्मित तरणसाधन ।

घँड़सूर–गरदनिक पछिला भाग ।

घड़ारी–घरक स्थान ।

घड़ी–पाबनि पर्वविशेष १ । घटी, एक दण्ड काल २ । घटीयन्त्र ३ ।

घड़ीसाज–घड़ीक मरम्मति कएनिहार ।

घड़ेर करब–क्रि० कर+अब–कोनो उद्देशेँ वारंवार आगमन ।

घण्टा–पैघ घण्टी १ । अढाए दण्ड काल २ ।

घण्टी–देवपूजाद्यर्थ वाद्यविशेष ।

घताह–उ० कृत्रिम बताह । स्त्री० घाताहि।

घन–सं० लग–लग, निविड़ ।

घनगीरह–लगलग गीरहबाला ।

घनघोर–तुमुल, सङ्कुल ।

घनपोर–जग–लग गीरहबाला ।

घपचब–क्रि० आगाँ बढ़ाए हठात् खैंचब।

घपोल–सङ्कुचिताग्र (पात्र) ।

घबहा–उ० अनादरणीय घाओबाला । स्त्री० घबही ।

घबाह–उ० घाओबाला । स्त्री० घबाहि ।

घमण्ड–गर्व ।

घमर्थन–आम्रेड़न, अति विचार ।

घमला–फूल आदि रोपबाक पात्रविशेष ।

घमलौड़–अनेक वस्तुक वा शब्दक मिश्रण ।

घमसान–बहुत व्यक्तिक बजबाक घोल १ । तुमुल २ ।

घमाएब–क्रि० घम्+अब–घामसँ युक्त होयब १ । घमब्+अब–पघिलाएब २।

घमाघट्ट }
घमासान } –तुमुल, सङ्कुल ।

घमौरी–घर्मजन्य देहक फोँसरी ।

घम्हौरी–फलविशेष ।

घम्हौरी दाना–घम्हौरी फल सदृश अलङ्करण ।

घर–गृह ।

घरखसाओन–उत्साहशून्य ।

घरघराएब–क्रि० घरघर+अब–कफक आक्रमणादिसँ घरघर शब्द कहब ।

घरघुमना–उ० घर मात्रमे घुमनिहार बहार नहि गेनिहार । स्त्री० घरघुमनी ।

घरघुसना }
घरघोसरा } –उ० अधिक काल घरमे रहनिहार । स्त्री० घरघुसनी, घरघोसरी।

घरछरा–घर छारबाक (बाती बा जन) ।

घरछरी–घरक छारनाइ, गृहच्छादन ।

घरजना–प्रत्येक आश्रममे एक–एक व्यक्तिसम्बन्धी (निमन्त्रणादि) ।

घरजमैआ–सासुरमे बसल जमाए ।

घरदेखी–विवाहसम्बन्धार्थ घर देखनाइ ।

घरपैसा–घर पैसनिहार (चोर) ।

घरपैसी–घरमे चौरवृत्त्या पैसब ।

घरबन्हि–बन्धनविशेष ।

घरबैआ–घरक लोक ।

घरमुहाँ–घरक सम्मुख (गमनादि) ।

घरहञ्ञ–आश्रममे सभ व्यक्तिक मृत्यु ।

घरहट }
घरहठ } –गृहनिर्माण, घरक छारब आदि ।

घरहटिया–गृहनिर्माणकार्य–कुशल ।

घराड़ी–आवासभूमि ।

घरान–वि० परिवार ।

घरि–घौर, केराक गाछसँ बहराएल फलगुच्छ ।

घरिआएब–क्रि० घरि+अब–दुःखसँ घर लेब ।

घरिआर–ग्राहविशेष ।

घरिआरी–कीटकृत मृत्तिकागृह ।

घरिपक–घरिमे पाकल (केरा) ।

घरेड़–अति सम्बन्ध (निन्दामे) ।

घरैआ–घरमे व्यवहार्य (कार्य आदि) ।

घरैत–उ० घरबासी, घरबाला ।

घरैतनी–स्त्री० घरबाली ।

घसकटनी–स्त्री० घास कटनिहारि ।

घसकट्टा–घास कटनिहार (लोक, हांसू आदि) ।

घसकब–क्रि० बिनु कहने चल जाएब (निन्दामें) ।

घसब }
घँसब } –क्रि० घस+अब–घर्षण ।

घसबार–उ० घास कटनिहार । स्त्री० घसबारनी ।

घसबाह–उ० घास अननिहार । स्त्री० घसबाहिनी ।

घसबाहि–घास कटनिहारक क्रिया = घास काटब ।

घसमोड़ब–क्रि० घसमोड़+अब=घाड़ ठेहुन मिलाए रहब ।

घसिआरा–हाथी प्रभृतिक घास कटनिहार।

घसेट–घर्षण, रगड़ा ।

घसेटब–क्रि० घर्षण ।

घाँइ–तत्त्व बुझबा में निविष्ट (निन्दामें)।

घाइल–वि० अस्त्रसँ छिन्न ।

घाओ–व्रण ।

घाघड़ा–निबिष्ट, परिपूर्ण, पटु ।

घाघस–बदरी, दुर्दिन ।

घाट–घट्ट, पोखरि प्रभृतिमे स्नानादिक स्थल ।

घाटि–घटती, अल्पीभाव ।

घाँटी–घण्टी ।

घाठि–बेसन, द्विदलक श्लक्ष्ण चूर्ण ।

घाड़–घाटा, अवयवविशेष, ग्रीवा ।

घाड़ी लगाएब–क्रि० लगब+अब–उद्ग्रीब होयब, श्रवणादिक हेतु अवधान।

घानि–खानि १ । आधिक्य २ ।

घानी–समूहसँ पृथक् कएल भुजबाक वा कुटबाक योग्य (अन्न) ।

घाम–घर्म, स्वेद ।

घालब–क्रि० अस्त्रसँ छिन्न करब ।

घास–सं० पशुक खएबाक छिन्न तृण–पुञ्ज।

घिआरी–कीटनिर्मित माटिक घर ।

घिकुमारि–घृतकुमारी, ओषधिविशेष ।

घिनही–व्रणविशेष ।

घिनाएब–क्रि० घिन्+अब=घृणास्पद होयब १ । घिनब+अब–घृणास्पद कार्य करब २ ।

घिनाह–उ० घृणास्पद । स्त्री० घिनाहि ।

घिरनी–नचनिहार यन्त्र ।

घिसिआएब–क्रि० घिसिअब+अब घृष्ट करब, माटिक सम्बन्ध करबैत घैंचब ।

घिसिओड़-काटब–क्रि० कट्+अब–चलबा–फिरब सँ अशक्त होएब ।

घिसोट–घर्षण ।

घीउ–घृत ।

घुघना–रोषसूचक मुखाकारविशेष ।

घुघना-लटकब–क्रि० दैन्यमुद्रायुक्त मुह नमरब ।

घुघनी–हि० बदामसँ बनाओल खाद्यविशेष।

घुघरू–डाँड़क भूषणविशेष ।

घुटकब–क्रि० परबाक बाजब ।

घुटमुटार–छोट गोलाकार ।

घुट्ठी–एँड़ीक उपर पार्श्वक उच्च अवयव।

घुट्ठीसोहार–घुट्ठी पर्यन्त (धोती) १ । अत्यन्त हेलमेल २ ।

घुनखौकू–जकरा घून खएने हो ।

घुनघुनाएब–क्रि० घुनघुन् + अब अस्पष्ट मन्दमन्द बाजब ।

घुनलग्गू–जाहिमे घून लागल हो ।

घुनसी–अतसूचम जलकण, सीकर ।

घुनाह–घुनलग्गू ।

घुनेस–विवाहमे पागपर लटकएबाक भूषणविशेष ।

घुमती–मार्गक वक्रता ।

घुमब–क्रि० भ्रमण १ । परावृत्ति २ ।

घुमान–वक्रठा (मार्गक) ।

घुरघुरा–कीटविशेष ।

घुरछा
घुरछी } –गुच्छ ।

घुरछी लागब–क्रि० लग् + अब-एकमे अनेकक लागब।

घुरती–अ० घुरबाक कालमे ।

घुरपेन–घूर कोड़बाक काठी ।

घुरब–क्रि० परावृत्त होएब ।

घुरमा
घुरमी } –भ्रमिरोगविशेष, माथक घुमनाइ जेकाँ लागब ।

घुरमुड़िआ–बहुतक एकमुखीभाव १। घूमब २ ।

घुरिआएब–क्रि० घुरि+अब-पुन: पुन: ओही स्थान वा अवस्थामे आएब ।

घुरिओठ–घुरिआएब ।

घुरेठ–पैघ घूर ।

घुलब–क्रि० फलक परिणामवश कोमलीभाव ।

घुसकब–क्रि० बैसले कनेक हँटब ।

घुसकुनिआ–चौकीमाली बैसि आगाँ चलब।

घुसहा–घूस लेनिहार ।

घुस्सा–हि० मूकाक अग्र ।

घून–घुण, कोटविशेष ।

घूमब–क्रि० घुम् + अब - भ्रमण १। परावृत्ति २ ।

घूर–धूमाद्यर्थ आगि ।

घूरब–क्रि० घुर्+अब-परावृत्त होएब ।

घूर बहोर करब–क्रि० कर्+अब बारबार आएब-जाएब ।

घूरी–मालक छाबा ।

घूलब–क्रि० घुल् + अब - फलक परिणामवश कोमलीभाव ।

घूस–हि० उत्कोच, स्वकार्यार्थ प्रच्छन्न दान ।

घृत–सं० घीउ ।

घेघ–गैलगण्ड ।

घेघहा–पु० गलगण्डयुक्त आदरणीय पुरुष ।

घेघाह–उ० गलगण्डयुक्त । स्त्री घेघाहि ।

घेँच–पक्षीक नाम गरदनि १ । काछुक मुँह २ ।

घेँचुल–कन्दविशेष ।

घेँट–घाड़, ग्रीवा ।

घेँटकट–कण्ठ कटनिहार, आततायी ।

घेथार–अनेकधा एकविषयक प्रश्न ।

घेयारब–क्रि० अनेकधा एक विषयक प्रश्न करब ।

घेबर–मिष्टान्नविशेष ।

घेर–वेष्टन ।

घेरब–क्रि० वेष्टित करब ।

घेरा–कोशातकी, व्यञ्जनफल विशेष ।

घैंचब–क्रि० घैँच् + अब-आकर्षण ।

घैर–आगाँ वा चारू दिसिसँ रोक ।

घैरब–क्रि० आगाँसँ वा चारू दिसिसँ अवरोध करब ।

घैल–घट ।

घैलची–घैल रखबाक उच्च स्थान ।

घैलाढार–स्त्रीक त्याग (शूद्रादिमे) ।

घोकच
घोँकच } –सँकुचब ।

घोकचब
घोंकचब } –क्रि० सँकुचब सङ्कुचित होएब ।

घोकड़िआ–ठेहुन ओ मुहक संयोग ।

घोकड़िआएब–क्रि० घोकड़ि+अब-घोकड़ी लगाएब, ठेहुन मुँह दुनू मिलाएब ।

घोकड़ी–ठेहुनमे मुहक संयोग ।

घोकब
घोँकब } –क्रि० सञ्चालनसँ उद्घाटितमलयुक्त करब ।

घोँखब–क्रि० अवधारणार्थ वारंवार पढ़ब।

घोघ–अवगुण्ठन १। गालक निचला भाग २ ।

घोघ काढ़ब–क्रि० कढ़+अब-अवगुण्ठन करब ।

घोघट–मुखाच्छादन ।

घोघ फुलब–क्रि० घोघक व्याधिविशेष ।

घोघर–बुइया, क्रित्रिम विभीषा ।

घोँघारी
घोङारी } –क्षुद्रशङ्ख ।

घोँट–कण्ठविवरगत जलादि । हि० घूँट।

घोँटब–क्रि० जलादिक कण्ठविवरमे प्रापण १ । घर्षण २ ।

घोड़–घोड़ा (निन्दामे) ।

घोड़करैत–सर्पविशेष ।

घोड़कलस–ग्रामदेवतार्थ माटिक घोड़ा ।

घोड़घोड़ान–सतरञ्जमे दू घोड़ाक सहेँ मातु ।

घोड़छान–बन्धनविशेष ।

घोड़न–गाछमे रहनिहार चुट्टी सन पीअर कीट, रक्तपिपीलिका ।

घोड़मुहा–सर्पविशेष ।

घोंड़सह–सतरञ्जमे घोड़ाक सह ।

घोड़साम–तृणविशेष ।

घोड़सार–घोटकशाला, घोड़ा रखबाक घर ।

घोड़ा–उ० घोटक । स्त्री घोड़ी ।

घोदमोद–गुच्छीभूत ।

घोर–दहीक पानि १ । व्याकुल २ ।

घोरजाउर–दहीक सङ्ग रान्हल भात ।

घोरब–क्रि० द्रव पदार्थक मिलाएब १ । खाट आदिकेँ नेबार आदिसँ संयुक्त करब २ ।

घोल–कोलाहल ।

घोसरब
घोँसरब } –क्रि० विस्मरण (निन्दामे) ।

घोसारब
घोँसारब } –क्रि० विस्मरण कराएल (निन्दामे) ।

घोसिआएब } –क्रि० घोँसि + अब
घोँसिआएब } पैसब ।

घौका–शाकविशेष ।

घौर–कदलीफलक गुच्छ ।

च

चएन–हि० निचेन, झंझटरहित ।

चओड़ा–हि० चाकर, नामानामीक विपरीत, दीर्घ ।

चओड़ाइ–हि० चकराइ, नामानामीक विपरीत, दैर्घ्य ।

चओर–चामर ।

चकचक–चाकचक्ययुक्त, तेजक किरणसँ युक्त (स्फटिकादि)

चकचकाएब–क्रि० चकचक् + अब - चाकचक्य, प्रकाश करब ।

चकचकी–चाकचक्य, तेज:किरणयोग ।

चकचोँधी } –स्पष्ट दृष्टि प्रतिबन्धक
चकचोनही } तेज: सम्बन्ध ।

चकता–पिड़िका, कीटदंशादिजन्य फूलल वर्तुल मांस ।

चकती–सोहारी बेलबाक आधारविशेष ।

चकबा–उ० चक्रबाक । स्त्री० चकबी ।

चकबिदोर–अत्याश्चर्य ।

चकबिदोर लागब–क्रि० लग् + अब- अत्याश्चर्यक उद्भव ।

चकमा–गजीफाक एक प्रकारक खेलि ।

चकरका–उ० चाकर प्रभेदक । स्त्री० चकरकी ।

चकरगर–अधिक चाकर ।

चकराइ–नामानामीक विपरीत, दैर्घ्य ।

चकरी–दालि दरड़बाक पाथरक चक्र ।

चकाचक } –अधिक चाकचक्य
चकाचक्क } युक्त ।

चकुआएल–क्रि० चकु + अब-चारू दिसि ताकब ।

चकुठा–बाँहिक चौखूट अलङ्करण ।

चकुठी–छोट चकुठा १ । तासक एक रङ्ग २ ।

चकेबा–उ० चक्रवाक । स्त्री० चकेबी ।

चकै–सूत धए खेलएबाक काठक चक्र।

चकोढ़–चक्रमर्द, क्षुपविशेष ।

चकोर–स० अगिनभक्षक पक्षिविशेष ।

चक्का–चाक, ताख, देबालमे वस्तु रखबक स्थान १ । गुड़ादिक चक्राकार खण्ड २ ।

चक्की मारब–क्रि० मार् + अब-साँपक चक्राकार भए बैसब ।

चक्कू–चाकू, कटबाक छोट अस्त्रविशेष।

चक्र–सं० चाक ।

चक्रवर्ती–सं० समस्तपृथिवी-शाशक ।

चँगला–पु० चरफर, शीघ्र काज कएनिहार ।

चँगुरा–मड़िआओल एक प्रमाणक सूत ।

चँगुला–चाँगुर, पक्षीक डारि पकड़बाक पाएरक अन्तिम अङ्ग ।

चँगेरा–वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चँगेरी–छोट चँगेरा ।

चङला–पु० चरफर, शीघ्र काज कएनिहार ।

चङुरा–मड़िआओल एक प्रमाणक सूत ।

चङुला–चाँगुर, पक्षीक पाएरक अन्तिमावयव ।

चङेरा–वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चङेरी–छोट चँगेरा ।

चचरा–मत्स्यविशेष ।

चचरी–मत्स्यविशेष ।

चञ्चल–सं० चपल ।

चञ्चु–चञ्चुसदृश लोहक कलम, नीब ।

चट–माटिक बासन सँ अधिक तापक कारण ओदरल चापट भाग १। अ० शीघ्र २ ।

चटक–उड़ता पक्षीक खसल विष्ठा ।

चटकब–क्रि० माटिक बासनक अवयवभङ्गपूर्वक चट शब्द करब।

चटकार–अम्ल वस्तुसम्बन्धसँ मुखक शब्द ।

चटकनी–बहुत छोट चटाइ ।

चटक्की–शीघ्रता ।

चट दए } –अ० शीघ्र ।
चटपट }

चटपट करब–क्रि० कर् + अब-शीघ्र कार्य करब १। मुहक शुष्कीभाव २।

चटपटाएब–क्रि० चटपट् + अब- द्रवरहित होएब ।

चटपटी–शीघ्रता १ । शुष्कता २ ।

चटाइ–कट, खिड़हरि ।

चटाचटि–अ० शीघ्र-शीघ्र ।

चटाचटी-उठब–क्रि० उठ् + अब - चट्चट् शब्द होएब ।

चटान–चत्वर ।

चटिआ–चटाइ १ । प्रारम्भिक शिक्षाक छात्र २ ।

चटिसार–विद्यार्थीक पढ़बाक घर ।

चटुआ–डंटी लागल पिड़ही ।

चट्ट–सरदीसँ ओदरल माटि ।

चट्ट दए–अ० शीघ्र ।

चट्टान–चत्वर ।

चट्टापट्टा–शिशुक क्रीड़ाविशेष ।

चट्टी पड़ब–क्रि० पड् + अब-कूप इनारमे जलक अभाव होएब ।

चठैल–व्यञ्जनार्थ लताफलविशेष ।

चड़िआएब–ना० चाड़ि (यत्न) सँ युक्त कर ।

चड़ै (रै)–पक्षी ।

चड़ै (रै) आ कन्द–औषधार कन्दविशेष।

चढ़नदार–बएलगाड़ीक पाछाँ गेनिहार ।

चढ़न्त–अधिक होइत, वर्द्धमान ।

चढ़ब–क्रि० चढ्+अब-आरोहण ।

चढ़ाइ–मर्गादिक उत्तरोत्तर उच्चता १। चढ़ब २ ।

चण्ठ–निर्दय ।

चण्डाल–डोम १ । क्रूरकर्मा (अति निन्दामे) २ ।

चण्डाली–अतिक्रूर कर्म ।

चण्डुल–कृषणा ।

चण्डोल–सर्वोच्च भूमि ।

चतकार–दम्भ (स्त्रीक उक्तिमे) ।

चतकारी–दम्भकर्त्ती (स्त्रीक उक्तिमे)।

चतरब–क्रि० लतादिक प्रसार ।

चतरी कटगैनी–बृहती, ओषधार क्षुप ।

चतरी कन्ना–शाकविशेष ।

चतरी गेन्हारी–शाकविशेष ।

चतुर–सं० उ० पटु । स्त्री० चतुरा ।

चतुरइ–चातुर्य ।

चतुरा–स्त्री० चातुर्यवती ।

चतुराइ–चातुर्य ।

चतुर्दशी–सं० चौदहम तिथि ।

चदरा–वस्तु निर्माणार्थ लोहादिपट्ट ।

चद्दरि–उत्तरीय वस्त्र ।

चनक–पक्षिविशेष ।

चनकब–क्रि० अँड़री आदिक कोषक प्रस्फोट ।

चनकलोनी–चनकाम्ल ।

चनकी–एरण्डविशेष ।

चनचनाएब–क्रि० चनचन् + अब-छोट नेनाक अधिक बाजब ।

चननकाठी–चानन देबाक पात्र ।

चननसितुआ–चानन रखबाक शुक्तिकाकार पात्र ।

चनबा–वितान ।

चनबार–घरक दुहु कातक टाट ।

चनसूर–चन्द्रशूर, मत्स्यविशेष ।

चनोटा–चन्दनघर्षणशिला ।

चन्दा–चन्द्रमा १ । हि० बेहरी २ ।

चन्द्रकला–पुष्पविशेष ।

चन्द्रहार–भूषणविशेष, चन्द्राकारयुक्त हार।

चन्द्रोटा–चन्दनघर्षणशिला ।

चन्ना–चन्द्रमा १ । मत्स्यविशेष २ ।

चपइ–दूध दुहबाक पात्रविशेष ।

चपकन–पहिरबाक स्यूतवस्त्रविशेष ।

चपरा–सटबाक लाक्षापिण्ड ।

चपेट, **चपेटा** }–करतल ।

चपै–चपइ, दोहनपात्र ।

चप्फर, **चफरा** }–चालाक ।

चबुतरा–कुट्टिम, उच्च बद्धभूमि ।

चमक–चाकचक्य ।

चमकब–क्रि० चाकचक्य प्रकाश करब १ । अङ्गक स्फुरण २ ।

चमकी–गोल चापट भूषणविशेष १ । स्फुरण २ ।

चमगुदरी–घरैआ बादुर पक्षी ।

चमचम–चिरस्थितिसँ विकृत (तैलादि)।

चमचमी–चिरस्थितिसँ विकार (तैलादिक)।

चमड़ा, **चमड़ी** }–हि० प्राणीक त्वचा ।

चमत्कार–आह्लाद १ । कौशल २ ।

चमरउ–तिरहुतिआ चमारक बनाओल (जूता) ।

चमरख–चरखामे टाकु रखबाक चामक आधार ।

चमरदिनाय–दद्रुविशेष, सर्वदा रहनिहार दिनाय ।

चमरनक्क–अभ्यासवश दुर्गन्धक अग्राहक नासिकासँ युक्त ।

चमरबथुआ–बथुआसागक प्रभेद ।

चमरमाछ–मत्स्यविशेष ।

चमरी गाए–चमरी, जकरा नाङड़िक चामर हो ।

चमार–उ० चर्मकार, जातिविशेष । स्त्री. चमैनि ।

चमेली–मालती, पुष्पविशेष ।

चमैनि–स्त्री० चर्मकारजाति स्त्री ।

चमोकूनि–ओषधिविशेष १। कीटविशेष २।

चमौटी–बन्हबाक चाम ।

चम्पइ–चम्पा फूल सन रङ्ग ।

चम्पा–चम्पक, पुष्पविशेष ।

चम्पापुरी–गहुमक प्रभेद ।

चम्पाबीड़ी–पानक खिल्लीक प्रभेद ।

चम्मा–जातिविशेष ।

चर–धान उपजबाक विस्तीर्ण नीच भूमि १ । चोरकेँ वस्तुक ठेकान कहनिहार २ । चामर ३ ।

चरक–श्वेतकुष्ठ १। श्वेतवर्ण (बड़द) २।

चरकट्टा–हाथीक चारा कट निहार ।

चरक फुटब–क्रि० फुट+अब-कुष्ठस्राव ।

चरखकट्टी–चरखा काटब (चलाएब)।

चरखा–सूत कटबाक यन्त्र ।

चरखा काटब–क्रि० कट्+अब-सूत्र बनएबाक हेतु चरखा चलाएब।

चरखी–चर चर बजनिहार खेलओना १। बाँगसँ बँगौर बहार करबाक यन्त्र २ ।

चरचराएब–क्रि० चरचर+अब-वृथा अधिक बाजब १। चरचर शब्द करब २ ।

चरचा–चर्चा ।

चर चाँचर–बाधप्रभृति ।

चरनमा–अधिक चरनिहार (माल) ।

चरफर–उ० चलाक, शीघ्रकारी । स्त्री चरफरि ।

चरफरी–शीघ्रक्रियता ।

चरब–क्रि० मालक बूलि-बूलि तृणभक्षण।

चरबाह–उ० मालक चरओनिहार ओ रक्षक । स्त्री० चरबाहिनी ।

चरबाहि–चरबाहक क्रिया= माल चराएब।

चरल–मालसँ भक्षित तृण १ । तृण खाए चुकल माल २ ।

चरहन–चरमे उत्पाद्य (धान्य) ।

चरही–मोट हथजौड़ ।

चराइ–मालक तृणभक्षण ।

चराँत–मालक चरबाक भूमि ।

चरी–पशुपक्षीक भक्षण ।

चरुभर–वाउरसँ पूर्ण (सीसक धान) ।

चरै (ड़ै)–पक्षी ।

चरै (ड़) आकन्द–औषधार कन्दविशेष।

चर्चा–सं० कथन ।

चर्या–सं० क्रिया ।

चलचलाओ–चलबा कालक संघटन चाञ्चल्य ।

चलता–प्रचलित ।

चलती–प्रचार ।

चलनसार–चलबायोग्य, सम्भूत ।

चलप्रचल–सं० चलबाक हलचल ।

चलब–क्रि० चल् + अब-गमन ।

चलाक–उ० चतुर, स्फूर्तिशाली । स्त्री. चलाकि ।

चलाचलती–अधिक प्रचार ।

चलान–सञ्चालन, प्रेषण ।

चल्हबा–मत्स्यविशेष ।

चसक–लोलुपता ।

चसकय–क्रि० लोलुप होएब ।

चसकी–लोलुपता ।

चसमा–वि० उपनेत्र ।

चह–वृक्षविशेष ।

चहक–फाट ।

चहकब–क्रि० किञ्चित् फाटब ।

चहटगर–कट्वम्लमेलसँ सुस्वादु ।

चहुपाला–शिविका ।

चाँइ–आगाँसँ वस्तु लए पड़एनिहार ।

चाउर–तण्डुल ।

चाउँस–उरीदक चीकस ।

चाक–चक्र (कुलालक) १ । ताख २ ।

चाकर–चओड़ा १ । भृत्य २ ।

चाकरी–नोकरी, दासता ।
चाँकि–सावधानता ।
चाखब–क्रि० चख् + अब–स्वादपरीक्षार्थ भक्षण ।
चाँगला–हि० चलाक ।
चाँगुर–पक्षीक पाएर ।
चाङला–हि चलाक ।
चाङुर–पक्षीक पाएर ।
चाँच चलब–क्रि० चल् + अब जलाशयसँ चलब ।
चाँचर–चरक प्रभेद ।
चाँचरि–गोआरक गीतविशेष ।
चाँछ–घर्षणसँ त्वचाक छेदन ।
चाँछब–क्रि० चँछ + अब–घर्षणसँ त्वचाक उच्छेद ।
चाट–चपेटा ।
चाटब–क्रि० चट् + अब–अवलेहन ।
चाटी–चपेटा ।
चाटी चलब–क्रि० चल् + अब–सर्पविषक उद्देशेँ चपेटा चलब ।
चाढ़–चोरक सरदार ।
चाण्डित्य–अयोग्य कौशल, वैनट्य ।
चान–चन्द्रमा १। चन्द्राकृति बाहुभूषण २ ।
चानन–चन्दन ।
चानि–माथक उपर भाग ।
चानी–रूप्यधातु ।
चान्हर–जलाघातजन्य खाधिबाला क्षेत्र १। क्वचित् क्वचित् उपटल जजातिबाला क्षेत्र २ ।
चापकली–अलङ्कारविशेष ।
चापट–चिपिट ।
चाबुक–कशा ।
चाभ–बाँसक प्रभेद १। चव्य २ ।
चाम–चर्म ।
चार–गृहाच्छादन छदि ।
चारा–हाथी प्रभृतिक भक्ष्य डारिपात ।
चारि–चतु:संख्यक ।
चारिचारि–कौड़ीक क्रीड़ाविशेष ।
चारिम–चतुर्थ ।
चाल–सञ्चाल १। देवसिंहासनविशेष २ ।
चालक–रेचक ।
चालता–फलविशेष ।
चालनि–चालनी ।
चालब–क्रि० चाल्+अब–सञ्चालन १। चालनिसँ सूक्ष्मक नि:सारण २ ।
चालाक–चतुर, शीघ्रता सँ कार्यकर्त्ता ।
चालि–गति १। स्वभाव २। प्रचार ३ ।
चालि-चलन–स्वभाव ओ क्रिया ।
चालिसा–चालीस धारा (अन्नक समूह)
चाली–कृमि ।
चालीस–४०, चत्वारिंशत् ।
चालीसम–चालीसक पूरक, चत्वारिंशत्तम।
चालीसा–चालीस धारासँ परिमित (अन्नक पुञ्ज) ।
चास–आबादी भूमि ।
चासब / **चाँसब** } –क्रि० चस् + अब–प्रथम बेर हरेसँ जोतब ।
चाह–इच्छा १। ओपधिविशेष २ ।
चाहब–क्रि० इच्छा करब १। टभकी सँ माछ झाड़ब २ ।
चाहा–चाष, पक्षिविशेष ।
चिकनइ–तेल ।
चिकनकर–उ० नीके वस्तुक भक्षणशील । स्त्री० चिकनकरि ।

चिकनका–श्लक्ष्णप्रभेदक ।
चिकनौइ–श्लक्ष्णता ।
चिकनाएब–ना० चिकनब्+अब–चिक्कन करब ।
चिकनाहा–चिक्कनप्रभेदक ।
चिकनी–तृणविशेष ।
चिकनै–तेल ।
चिकरब–क्रि० चिकर् + अब–चीत्कार, जोर सँ बाजब हि० चिल्लाना ।
चिकस–रोटीक हेतु चाउर आदिक चूर्ण ।
चिकसा–वृक्षविशेष ।
चिक्कन–चिक्कण, श्लक्ष्ण ।
चिक्कन चुनमुन–श्लक्ष्ण-सुन्दर ।
चिक्कनि–बालसँ शून्य श्लक्ष्ण (माटि)।
चिक्का दरबरि–क्रिड़ाविशेष ।
चिखब–क्रि० चिख्+अब–आस्वादन ।
चिचाँढ़ि–निरर्थक चिन्ह ।
चिचाँढि काटब–क्रि० बेकार चाँच लीखब।
चिचाँढि पारब–क्रि० वृथा रेखा खीचब ।
चिचोढ़–चिञ्चाटक, क्षुपविशेष ।
चिचोढ़ब–क्रि० चिचाँढ़ि लिखब ।
चिट्ट–छोट पत्रखण्ड ।
चिट्ठा–वस्तुनामावली ।
चिट्ठी–व्यावहारिक वृत्तान्तपत्र ।
चितकबरा–चित्रवर्णप्रभेदक ।
चितकाबर–चित्रवर्ण ।
चितङ्ग–उत्तान ।
चितरा–चित्रा (नक्षत्र) ।
चिता–सं० मृतकाग्नि ।
चितिरबितिर–चित्र विचित्र, नाना वर्णक।
चितौर–चित्रक, औषधिविशेष ।
चित्त–उत्तान १ । हृदय २ ।
चित्ता–व्याघ्रविशेष ।
चित्ती–कपर्दकक प्रभेद ।
चित्तीमार–सर्पविशेष ।
चित्र–सं० तसबीर ।
चित्रनष्टा–तारतम्य ।
चित्रविचित्र–नाना रङ्गक ।
चिनगी–अग्निकण ।
चिनगारी–उड़ल चिनगीक समूह ।
चिनिआ–गुलाब फूल आदिक प्रभेद ।
चिनुआर–गोसाउनिक उच्च भूमि ।
चिन्तब–क्रि० चिन्त् + अब–गुरुसँ अधीतक सतीर्थ्यसँ चिन्तना करब ।
चिन्ता–स० साधनोपायचिन्तन १। विषाद २ ।
चिन्तित–स० विषण्ण ।
चिन्हब–क्रि० चिन्ह+अब–परिचित करब, जानब ।
चिन्हार–उ० परिचित । स्त्री० चिन्हारि ।
चिपरी–पाथल शुष्क गोबर ।
चिप्पी–चाउरक नपना ।
चिबाएब–क्रि० चिबब्+अब–चर्वण ।
चिमाटि–अति दृढ़ ।
चिरक्का–विदरण ।
चिरचिरी–अपामार्ग, ओषधिविशेष ।
चिरब–क्रि० चिर् + अब–विदलन ।
चिराक–क्रि० दीप ।
चिराकदान / **चिराकदानी** } –वि० द्रव्यरचित दीपाधारपात्र ।
चिराकी–दीपक हेतु नित्य नियत तेल ।
चिरिआइनि–केशमांसादि जरबाक गन्ध।
चिरुआ–चीरल, विदलित ।
चिरैँत–किरात, ओषधिविशेष ।

चिरोंट–मालक रोगविशेष ।
चिरौजी–प्रियाल ।
चिरौड़ी–विवाद ।
चिलका–स्तनन्धय छोट नेना ।
चिलकाउर, **चिलकारु** –स्त्री० चिलकाबाली ।
चिलतह–अस्त्रविशेष ।
चिलम–धूमपानपात्र ।
चिलमची–हस्तप्रक्षालनपात्रविशेष ।
चिलमिल–तृणविशेष ।
चिलहोड़ि, **चिलहोरि** –पक्षिविशेष । हि० चील्ह ।
चिल्लड़, **चिल्लर** –कीटविशेष ।
चिल्होड़ि, **चिल्होरि** –पक्षिविशेष । हि० चील्ह ।
चिहुँकब–क्रि० चिहुंक् + अब-चौँकब।
चिहुट–बाँसक ओदार ।
चीक–मेही सरकी, वंशरचित जननिका विशेष ।
चीकस–रोटी हेतु चाउर आदिक चूर्ण ।
चीखब–क्रि० चिख् + अब-आस्वादन ।
चीच–डाँड़ि, रेखा ।
चीचकाटब–क्रि० रेखा चीखब ।
चीच खैँचब–क्रि० रेखा लिखब ।
चीच फाड़ब–क्रि० फाड़ + अब- चीच लीखब
चीठा–वस्तुक नामावली, फिहरिस्त ।
चीठी–लिखा, पत्र, चिट्ठी ।
चीन–चीनाक, अन्नविशेष ।
चीनी–सिता ।
चीन्हब–क्रि० चिन्ह् + अब-परिचित करब, जानब ।

चीर–चीरब ।
चीरब–क्रि० चिर् + अब-विदलन ।
चीरा–पचेसीक ओ घर जतए गोटी नहि कटए ।
चीरीचोत–अनेक ठाम फाटल ।
चील्ह–वृक्षविशेष ।
चुइब–क्रि० चुब + अब-छिद्र सँ जलादिक निःसरण ।
चुइल–च्युत, छिद्रा दिसँ निःसृत ।
चुकब–क्रि० चुक् + अब-प्रमाद सँ अकरण ।
चुकरी–छोट मृत्पात्रविशेष ।
चुक्क–चुक्र ।
चुक्की–चुकरी, छोट माटिक बासन ।
चुक्कीमाली–प्रौढ़पाद ।
चुगिलपन, **चुगिलपना**, **चुगिलपनी** –पिशुनता ।
चुगिला–पिशुन ।
चुगिलाह–उ० पिशुन । स्त्री० चुगिलाहि।
चुगिली–पैशुन्य ।
चुटकी, **चुटकुर** –अङ्गुष्ठाङ्गुल्यग्रसंयोग ।
चुट्टा–पकड़बाक यन्त्रविशेष १। बड़का चुट्टी २ ।
चुट्टी–कीटविशेष ।
चुड़लड्डु–ऐक्षवयुक्त चूड़ाक लड्डू ।
चुड़िला–काचनिर्मित बाहुभूषणविशेष ।
चुड़िहर, **चुड़िहरा** –चुड़िला बेचनिहार जातिविशेष ।
चुड़िन, **चुड़िल** –भूतयोनिविशेष ।

चुनचुनाएब–क्रि० चुनचुन् + अब-कण्डूजनक वेदनाविशेष ।
चुनचुनी–कण्डूजनक वेदनाविशेष ।
चुनाएब–ना० चून + अब-चुनब् + अब-चूनसँ मिलाएब ।
चुनिआएब–क्रि० चुनिअब् + अब-वस्त्रक अतिपरिधानसँ तानीभरगीक विचलन ।
चुनेटब–क्रि० चुनेट् + अब - चूनसँ ढौरब।
चुनौटी–चून रखबाक छोट पात्र ।
चुन्नी–रत्नविशेष ।
चुप–अ० मौन ।
चुपकी–अ० तूष्णीम्भाव ।
चुपकी लाधब–क्रि० लघ् + अब - तूष्णीम्भावावलम्बन ।
चुपचाप–अ० पादाघातादि शब्द शून्य, मौन ।
चुप्प–अ० मौन ।
चुप्पा–मौनस्थायी ।
चुभकब–क्रि० डूबि डूबि मुहुः स्नान ।
चुमाओन–माङ्गलिक क्रिया विशेष ।
चुम्बक–अयस्कान्त, आकर्षक लोह ।
चुम्बा, **चुम्मा** –चुम्बन ।
चुरकी–माथमे दुहू कातक विन्यस्त केश।
चुलहा, **चुल्हा** –चुह्लो ।
चुहार–क्षुद्र चोर ।
चू–माथक राखल केश ।
चू उतारब–क्रि० उतार + अब-चू कटाएब ।

चूक–चुक्र ।
चूकब–क्रि० चुक् + अब-अनवधानसँ अकरण ।
चूकि–भूलि, भ्रम ।
चूड़ा–चपिटान्न ।
चूड़ि–लाक्षालङ्करणविशेष ।
चून–शुक्तिभस्म ।
चूल्हि–चुह्ली ।
चेखान–लसिगर वस्तुक पैघ खण्ड ।
चेँगा–मत्स्यविशेष ।
चेँगौल–धान्यविशेष ।
चेङा–मत्स्यविशेष ।
चेतन–जातबोध (मनुष्य) ।
चेतब–क्रि० चेत् + अब-सावधान होएब।
चेथरा–रद्दी पुरान वस्त्रखण्ड ।
चेन–स्वस्थ ।
चेन्ह–चिह्न ।
चेप–कोदारिसँ काटल माटि ।
चेरा–चीरल जारन ।
चेरु–बलिच्छिन्न छागरक जाँघ ।
चेला–शिष्य ।
चेल्हबा–मत्स्यविशेष ।
चेष्टगर–क्रियामे समर्थ ।
चेष्टा–क्रिया १। हस्तादिव्यापार २ ।
चेहरा–वि० आकार ।
चेहाएब–क्रि० चेह + अब-सभ्रमयुक्त होयब ।
चैत–चैत्र मास ।
चैताबरि, **चैतार**, **चैतारि** –चैत्रसहित तत्समीप समय ।
चैती–चैत्रभव ।

चोआ–धुमनक तेल ।
चोकटब–क्रि० } –फलादिक सङ्कुचितावयवक होएब ।
चोकड़ब–क्रि० }
चोकड़ा भोस–कदलीफल विशेष ।
चोकड़ि–सङ्कुचितावयवक (आम्रादि) ।
चोकर–आँटा चालला पर चालनिमे जे रहि जाय ।
चोख–तीक्ष्णाग्र ।
चोखगर–अति तीक्ष्णाग्र ।
चोखा–श्राणा, साना ।
चोँगा–बाँसक पात्रविशेष ।
चोँगी–ताटङ्कादिधारक भूषण ।
चोङा–बाँसक पात्रविशेष ।
चोङी–ताटङ्कादिधारक भूषण ।
चोँच–चञ्चु, पक्षिमुखाग्र ।
चोँचा–पक्षिविशेष ।
चोट–आघात ।
चोटगर–साघात ।
चोट लागब–क्रि० लग् + अब-आघात-सम्बन्ध ।
चोटाह–साघात (फलादि) ।
चोत–गोबर आदिक ढेरी ।
चोन्हराएब–क्रि० चोन्हर + अब-आँखिक गरमी सँ चकचोँधा लागब ।
चोप–उपर मोट मढ़ल लाठी ।
चोपदार–वि० चोप रखबामे राजनियुक्त ।
चोभव–क्रि० मुहमे लगाए आकृष्टरसक करब ।
चोभा–मुहमे लगाए रसाकर्षण ।
चोभा-लगाएब–क्रि० लगब् + अब-रसाकर्षणार्थ मुहमे लगाएब ।

चोर–सं० उ० स्तेन । स्त्री० चोरनी ।
चोरकाँटी–छिमड़ा, तृणविशेष ।
चोरकोड़बा–बान्हल चार मे पश्चात् देल कोड़ो ।
चोर चहार–चोरप्रभृति ।
चोरनी–स्त्री० चोरओनिहारि ।
चोरबत्ती–बातीमे तराउपरी पैसाओल बाती।
चोरहो–चौर्य ।
चोरा–शिराक कड़ापन रोग १। अनादरणीय चोर २ ।
चोरानुक्की–बालक्रीड़ाविशेष ।
चोरामुट्ठी–बालक्रीड़ाविशेष ।
चोरि } –चौर्य ।
चोरी }
चोली–आँगीक प्रभेद ।
चोहारि–प्रसवानन्तर मालक पेय औषध-विशेष ।
चौ–दुहू कातक दाँत
चौअन्नी–चतुराणकी, चारि, आनाक राजमुद्रा ।
चौआलीस–४४, चतुश्चत्वारिशत् ।
चौआलीसम – चतुश्चत्वारिंशत्तम, चौआलीसक पूरक ।
चौक–परस्पर सम्बद्ध चारि घरक १। मध्यवर्ती अवकाशस्थान २।
चौकठा–चौखूट बाँहिक भूषण ।
चौकठि–द्वारशाखा ।
चौकठी–छोट चौखूट बाहुभूषण १। तासक एक रङ्ग २ ।
चौकनी–चौखूट स्थान ।
चौकन्ना–चारू दिस सावधान ।

चौकब } –क्रि० आकस्मात् भयसँ डोलब ।
चौँकब }
चौकस–तेज (बड़दप्रभृति) ।
चौकिआएब–ना० चौकिअब् + अब-चौकीसँ कृष्टक समीकरण ।
चौकी–हलि, हेँगा, कृष्टसमीकरण काष्ठ १ । पहरा २ ।
चौकीदार–कोतवाल, ग्रामरक्षक ।
चौकीमाली–प्रौढ़पाद, काकासन ।
चौकोर–चतुष्कोण, चौपहल ।
चौखड़ी–चारि गोटाक हेड़ १। एकट्ठा होएबाक स्थानविशेष २ ।
चौखूट–चतुष्कोण ।
चौगाना–चारू दिशसँ सावकाश स्थान ।
चौगामा–चारि गाम ।
चौगिर्द } –चतुर्दिश ।
चौगेन }
चौगोला–चारि गोल ।
चौघरा–चारि घर १। चारि घरबाला गाम २।
चौचक्क–चारू दिस दृष्टि रखनिहार ।
चौचङ्ग–चारू दिससँ चङ्ग ।
चौचारा–चारि चारबाला (घर) ।
चौठाइ–चतुर्थांश ।
चौठि–चतुर्थी तिथि ।
चौठिचन्द्र } –भाद्रशुल्क चतुर्थीचन्द्र ।
चौठिचान }
चौठी–कनमाक चतुर्थांश प्रमाण
चौठैआ–चातुर्थिक (ज्वर) ।
चौँतीस–३४ चतुस्त्रिंशत् ।
चौँतीसम–चतुस्त्रिंशत्तम, चौँतीसक पूरक ।
चौदह–१४, चतुर्दश ।

चौदहम–चौदहक पूरक ।
चौदिस–चतुर्दिश ।
चौधरि } –चातुर्धरिक, ब्राह्मणक उपाधि ।
चौधरी }
चौपट } –विनष्ट ।
चौपट्ट }
चौपड़ि–चतुष्पटी, क्रीड़ाविशेष ।
चौपतब–क्रि० तह लगाएब, वस्त्रक मोड़बाक प्रभेद ।
चौपति–पैघ चौपहल काठ ।
चौपहल–चतुष्कोण काठ ।
चौपहला–शिविका ।
चौपाइ–सोलहमात्राक छन्दविशेष ।
चौपाड़ि } –चतुष्पाटी, पाठालय ।
चैपाढ़ि }
चौपाला–शिविका ।
चौपेत–मोड़ल (कपड़ा) ।
चौपेतब–क्रि० मोड़ि मोड़ि छोट बनाएब ।
चौबट्टी–चारुदिस जएबाक बाट
चौबन्न–५४, चतुष्पञ्चाशत् ।
चौबन्नम–चतुष्पञ्चाशत्तम ।
चौबन्हा–बन्धनविशेष ।
चौबारि–चारू दिसक बसात ।
चौबीस–२४, चतुर्विंशति ।
चौबीसम–चतुर्विंशतितम, चौबीसक पूरक।
चौबुतरा–छोट कुट्टिम ।
चौमास–चातुर्मास्य १। चारि मासक जोतल खेत २ ।
चौमासब–क्रि० लगातार चारि मास खेतक जोतब ।
चौमासा–चारि मासक वर्णनात्मक गीत।
चौमुख–चारि दिस मुहबाला (दीप) ।

चौमुहा–चारि मुखबाला (गृहादि)
चौमुहान–हि० चौबट्ठी ।
चौमोहरा–सतरञ्जमे दुहू दिस दुइ दुइ पात्रक शेष ।
चौरङ्ग–क्रीड़ाविशेष १। अक्षक्रीड़ामे पराजयविशेष २ ।
चौरचन–चौरचन्द्र, चौरवलत अट्टश्य चन्द्रमा, भाद्रशुक्ल चतुर्थीक चन्द्र।
चौरस–समतल (भूमि) ।
चौरासी–८४, चतुरशीति ।
चौरासीम–चतुरशीतितम, चौरासीक पूरक।
चौरी–लाक्षाविकार १। छोट चर २ ।
चौसञ्झा–चारि व्यक्तिक साझी, चतु:स्वामिक (धन) ।
चौँसट्ठि–६४, चतु:षष्टि ।
चौँसट्ठिम–चतु:षष्टितम, चौँसट्ठिक पूरक
चौसारि–क्रीड़ाविशेष । [चय ।
चौहदी–क्षेत्रक चारू भागक परि ।

छ

छओ–षटसंख्यापरिमित १। अस्त्रसँ छेद २।
छँओड़ा–उ० अनादरणीय, बालक । स्त्री छँओड़ी ।
छओमासा–छओ मासक वर्णनात्मक गीत।
छक–नासिकाभूषण विशेष ।
छकछक–किञ्चित् उष्ण (गात्र)
छकछकाएब–क्रि० छकछक्+अब-गात्र किञ्चित् उष्ण होएब ।
छकछकी–अङ्गक किञ्चित् उष्णता ।
छकतोड़–छाकक अपूर्ति ।
छक-दए-लागब–क्रि० लग्+अब-क्षणिक तेज:सम्बन्ध ।
छकब–क्रि० अविरोधपूर्वक आनक क्रियासँ दबब ।
छकड़बाजी, **छकोड़बाजी** –नर्तकविशेष ।
छक्कड़ि, **छक्करि** –छओ दाँत माल ।
छक्का–तास ओ गजीफाक छठम फर्द।
छक्का-छूटब–क्रि० छुट्+अब-दोष पाबि अभ्यास छूटब ।
छक्का-बित्ता–क्रीड़ाविशेष ।
छगुनता–चिन्ता ।
छछलब–क्रि० छहलब, पिच्छलता-प्रयुक्त अनायास गमन ।
छछारब–क्रि० टाट वा देबालक गोबर माटिसँ लेपन
छछारी-काटब–क्रि० कट्+अब-भूमिमे निर्वस्त्र पोन रगड़ब ।
छजनी–गाछक उपरका अग्रभाग ।
छजब–क्रि० अनुरूप होएब, वेष ओ क्रिया स्वसदृश होएब ।
छज्जा–तार नारिकेर प्रभृतिक शाखा ।
छटछट-करब, **छटछटाएब** –क्रि० चर्मक अन्त: स्थित अलग्न पिण्डक छुइलासँ इतस्तत: घुसकब ।
छटपट-करब, **छटपटाएब** –क्रि० अङ्गसभ सञ्चालित करब, देहक भूय: संचालन
छटपटाह–उ० अङ्ग स्थिर नहि रखनिहार। स्त्री० छटपटाहि ।
छटपटी–अङ्गक अस्थैर्य ।
छट्टा, **छँट्टा** –छाँटल, कुट्टनसँ साफकयल (चाउर) ।

छट्ठम, **छठम** –षष्ठ ।
छठमी–षष्ठ अंश (हिस्सा) ।
छठि–कार्तिकशुक्लषष्ठी सप्तमीक पाबनि।
छठिआर–जन्मसँ छठम रातिक कृत्य ।
छठिआरी–छटिआरक वस्तुजात ।
छड़ी–पातर हस्तधार्य यष्टिका ।
छड़ीदार–राजद्वारपाल ।
छड़ीमरखा–ओषधिविशेष ।
छण्ठा–छानल चरनिहार घोड़ा ।
छत–कोठाक उपर भाग ।
छतदुलारा–ओषधिविशेष ।
छति–क्षति, हानि ।
छतिबन–सप्तपर्ण, वृक्षविशेष ।
छत्ता–छत्र १। मधुमक्षिका प्रभृतिक घर २।
छत्तीस–३६, षट्त्रिंशत् ।
छत्तीसम–षट्त्रिंशत्तम, छत्तीसक पूरक ।
छत्र–सं० आतपत्र ।
छत्रपुरी–असरफीक प्रभेद ।
छत्री–क्षत्रियविशेष ।
छदाम–पाइक चतुर्थांश ।
छन–क्षण १। पहँचाक भूषणविशेष २ ।
छनकट–विश्वासक अपात्र ।
छनकब–क्र० शूर्पव्यापारविशेष १। तृप्तिमे अल्पता २ ।
छनका–वृष्टिसँ अल्प हाल १। कनेक गरम पेय औषध २ ।
छनछनाएब–क्र० छनछन् + अब व्रणादिमे लवणादिसम्बन्धजन्य वेदना विशेष १। छनछन शब्द करब २।
छनछनी–छनछनाएब ।
छनुआ–घृतादिपक (सोहारीप्रभृति) ।
छनोटा–छण्ठा, छानल चरनिहार (घोड़ा)।
छन्द–दोहाप्रभृति ।
छन्ना–दूधक फटोन ।
छन्नाबाड़ा–मिष्ठान्नविशेष ।
छन्नी–मृत्पात्रविशेष ।
छपकब–क्रि० धर नम्र करब ।
छपकाह–कम ऊँच (घर) ।
छपकुनिआ–घर नम्र करब ।
छपकुनिआँ देब–क्रि० दू+अब-घर नम्र करब ।
छपब–क्रि० जलसँ किञ्चित् व्याप्त होयब
छप्पन्नम–षट्पञ्चाशत्तम, छप्पन्नक पूरक।
छप्पय–छन्दविशेष ।
छप्पर–हि० चार, छदि ।
छप्परछप्पर–जलमे चलबाक ध्वनि ।
छबरा–सौराप्रभृति माछक बच्चा ।
छबि–सं० कान्ति १। आकार २ ।
छब्बीस–२६, षड्विंशति ।
छब्बीसम–षड्विंशतितम, छब्बीसक पूरक।
छयाह–क्षयाह, मरणदिवस ।
छर–लोहादिक दण्ड ।
छरनि–ठाठक प्रथम आवरण (खडही प्रभृति सँ) ।
छरनौती–छारबाक (बाती) ।
छरपब–क्रि० फानब, कूर्दन ।
छरिआएब–क्रि० छरि+अब-अङ्गछिरि आएब।
छरीला–शैलेय, शिलापुष्प, औषधिविशेष।
छर्रा–बन्दूकक छोट-छोट गोली ।
छल–सं० कपट ।

छलरी–देहक अशुष्क चर्म ।
छह–त्रिवली ।
छहर–ऊँच ओ पैघ बान्ह ।
छहरदिबाल–प्राचीर, हि० सैरदिवाल ।
छहरदेबाली–प्राचीर, डीहक चारू कातक दिबाल ।
छहराएब–क्रि० छहर्+अब–छाहरिमे स्थित होएब ।
दहलब–क्रि० छछलब, पिच्छिलता प्रयुक्त अनायास घर्षणपूर्वक अग्रगमन ।
छही–मत्स्यविशेष ।
छहोछित्त–बहुत ठाम फाटल ।
छाउनी–भीतक रक्षार्थ नाम चार १। हि० डेरा २।
छाउर–राख, भस्म ।
छाक–जलपानसँ तृप्ति, एक श्वासे पेय।
छाकी–एक श्वासेँ भरि इच्छा दुग्धा-दिपान।
छागर–पुं० छाग ।
छाँछ–दधिपात्रविशेष ।
छाँछी–छोट छाँछ ।
छाँट–त्याग १। कुट्टन २। कुट्टनसँ त्यजित ३ ।
छाँटब–क्रि० छँट्+अब–अनुपयुक्तक हँटाएब १ कुट्टनसँ स्वच्छ करब २ ।
छाडन, छाड़नि–नदीसँ त्यक्त भूमि ।
छाडब–क्रि० छाड्+अब–त्याग करब ।
छाड़ी–पहीरिकेँ त्यक्त (वस्त्र) ।
छात–छत, कोठाक उपर भाग ।
छाता–छत्र, आतपत्र ।
छाती–वक्षस ।
छान–घोड़ा प्रभृतिक अगिला दू पाएरक बन्धन ।
छानब–क्रि० छन्+अब–घोड़ाप्रभृतिक दू पाएर बान्हब १। वस्त्रादिद्वारा निःसारित करब, निगालन २ ।
छानि, छान्हि–उपरका भाग ।
छाप–मुद्रा, मोहर आदिक चिन्ह ।
छापब–क्रि० छप् + अब – मुद्रणा १। जालादिमे अभ्यन्तरीकरण २ ।
छापा–मुद्रित ।
छाबा–पाएरक उपर ठेहुनसँ नीच देहाङ्ग।
छार–क्षार, भस्मविशेष १। छारब, तृणादिसँ आच्छादन २।
छारतक–घोड़ाक जोरसँ दौड़नाइ ।
छारब–क्रि० छार्+अब–आच्छादन ।
छाल–त्वक् ।
छालही, छाल्ही–दहीक उपरका नेनु ।
छिकब–क्रि० अकृत्रिम नासिका-शब्द करब, क्षुत् ।
छिकनी–तृणविशेष ।
छिकार–स्थलगणितमे अल्प अवशिष्ट अंश ।
छिक्का–छिकब, अकृत्रिम नासा शब्द ।
छिच्चा–सेचन ।
छिछरी पथिआ उठब–क्रि० व्याकुल होएब ।
छिछिआएब–क्रि० छिछि+अब–वारंवार अधिक ठाम जाएब ।
छिछिऐनी–वारंवार एमहर ओमहर चलब (निन्दामे) ।

छिछिऐनी लागब–क्रि० लग्+अब–वारंवार इतस्ततः गमनमे यत्न ।
छिजब–क्रि० धान्यादिक सीससँ खसब ।
छिटकब–क्रि० जेरसँ पृथकहोएब १। जलादिकणक उद्गमन २ ।
छिटका–उद्गत जल बिन्दु ।
छिटकिनी–छिटकी, केबाड़ लगएबाक यन्त्रविशेष ।
छिटकी–अर्गला, केबाड़ लगएबाकयन्त्र विशेष १। आनक पाएरमे घुमाए लगाओल पाएर २ ।
छिटब–क्रि० विकीर्ण करब ।
छिट्टा–पथिआ १। छीटल (धान्यादि) २ ।
छिट्टी–छोट पथिआ ।
छितनार–बीचमे उच्च (डाला आदि)
छितनी–छोट छिट्टा ।
छितराएब–क्रि० छितर्+अब–यत्रकुत्र होएब ।
छितरीबितरी, छितिरबितिर, छित्तीबित्ती–असमीचीनतया यत्रकुत्रचित् स्थित ।
छिनभिन–छिन्नभिन्न ।
छिनब–क्रि० अनका हाथसँ बलात्लेब
छिनार–उ० लम्पट, व्यभिचारी । स्त्री छिनारि ।
छिनाइ–टेढ़ फाड़ल वा चीरल ।
छिन्नाताकब–क्रि० छिद्रान्वेष ।
छिपब–क्रि० नुकाएब १। सत्वर हँटाएब २।
छिपली–हि० छोट थारी
छिपाएब–क्रि० छिपब् + अब–आगाँ सँ नुकाए राखब ।
छिपाह–उ० चोराएकेँ नुकाए रखनिहार । स्त्री० छिपाह ।
छिमड़ि, छिम्मरि, छिम्मी–द्विदल अन्नक बीजकोश ओ कदली फल शिम्बी ।
छिरिआएब–क्रि० छिरि + अब्–विकीर्ण होएब । छिरि अब् + अब–बिकीर्ण करब ।
छिरिऐनी–छिरिआएब ।
छिलब–क्रि० तक्षण ।
छिल्ला–खुरपीसँ छीलल (घास आदि) ।
छी–अ० गर्हयता ।
छीआ–अ० जुगुप्सा ।
छीक–अकृत्रिम नासाशब्द ।
छीकब–क्रि० छिक् + अब–अकृत्रिम नासाशब्द करब ।
छीका–छिक्का, अकृत्रिम नासाशब्द ।
छीजब–क्रि० छिज् + अब–धान्यादिक स्वतः सीससँ खसब ।
छीट–चित्रवस्त्र ।
छीटब–क्रि० छिद् + अब–विकिर ।
छीटा–पथिआ, छिट्टा १। छीटल धान्यादि २ ।
छीनब–क्रि० छिन् + अब–आनक हाथसँ बलात् लेब ।
छीना–कपड़ाक थानक समाप्तिचिह्न ।
छीप–बनसीद्वारा माछ मारबाक दण्ड १। बाँस आदिक जड़ि दिस छोड़ि अगिला भाग २ ।
छीपब–क्रि० छिप् + अब–नुकाएब १। सत्वर हँटाएब २ ।
छीमड़ि, छमरि, छीमी–छिम्मड़ि, शिम्बी, द्विदल अन्न बीजकोष १। कोषसहित कदली फल २।

छीरीबीती } –असमीचीनतया यत्र
छीरीबिती } कुत्रचित् स्थित ।

छीलब–क्रि० छिल् + अब–तक्षण ।

छुइब–क्रि० छुब् + अब–स्पर्श करब ।

छुइल–स्पृष्ट ।

छुच्छ–तुच्छ, रिक्त ।

छुच्छी–स्त्री० निन्दनीया १ । बिअ निक फोँफी २ ।

छुछरी–नेनाकेँ लिङ्गपर हाथ नहि जएबाक हेतु तदाकार भूषण १। बिअनिक फोँफी २ ।

छुछिआ–स्त्री० निन्दनीया ।

छुछुन–स्वल्पाकारताहेतुक अशोभमान

छुछुन्नर–उ० अति कुत्सित क्रिया कयनिहार । स्त्री० छुछुन्नरि ।

छुछुन्नराइनि–छुछुन्नरिक गन्ध सदृश (गन्ध) ।

छुछुन्नरि–छुच्छुन्दरी, गन्धमुखी, मूषिकाकार जन्तु ।

छुछुम–स्वल्पाकारताप्रयुक्त अशोभन

छुटटुटाइ–बन्द कएलापर कदाचित स्वतः छुटनिहार ।

छुटब–क्रि० मुक्त होएब ।

छुट्टा–छुटल, बिनु लगाओल (पान प्रभृति) ।

छुट्टी–क्रियाक विश्राम, कार्यकारीक अवकाश ।

छुतका–सूतकाद्यशौच ।

छुतब–क्रि० स्पर्शसँ दुष्ट होएब ।

छुतहर–छुतल घैल, आँगन आदि लेपनार्थ अपवित्र घट ।

छुतुक–अशौच ।

छुतुकाह–उ० अशौचबाला । स्त्री० छुतुकाहि ।

छुद्र–क्षुद्र ।

छुद्रबिरही–क्षुद्रबृहती, ओषधिविशेष

छुरछुर-मूतब } –क्रि०सशब्द मूत्र
छुरछुराएब } त्याग ।

छुलछुल मूतब } –क्रि० लगले लागल
छुलछुलाएब } थोड़थोड़ मूत्रत्याग।

छुलाह–उ० चोराएकेँ खाद्य वस्तु खएनिहार । स्त्री० छुलाहि ।

छूछ–छुच्छ, तुच्छ, शून्य, रिक्त ।

छूटब–क्रि० छुट् + अब–मुक्त होएब ।

छूटि–आधिक्य ।

छूतब–क्रि० छुत + अब–दुःस्पर्शसँ कमनिहै होएब ।

छूति–अस्पृश्यसँ स्पर्ष ।

छूरा–छुरिका, अस्त्रविशेष ।

छूरी–छोट छूरा, चक्कू ।

छेआ नबेम–षण्णवतितम ।

छेआलीस–४६, षट्चत्वारिंशत् ।

छेआलीसम–षट्चत्वारिंशत्तम ।

छेआसठि–६६, षट्षष्टि ।

छेआसठिम–षट्षष्टितम ।

छेआसी–८६ षडशीति ।

छेआसीम–षडशीतितम ।

छेआँहिबेयाँहिँ–बहुत ठाम छिन्न ।

छेंक } –अवरोध, अश्वबन्धन ।
छेक }

छेकब } –क्रि० अवरोध करब १ ।
छेंकब } अदृढ बन्धन २ ।

छेगाएब–क्रि० छेग् + अब–क्रिया में अनुभूतदोषक होएब ।

छेद–वेध ।

छेदब–क्रि० वेध करब ।

छेरनाति–पु० नातिक बेटा, प्रपौत्र

छेरनातिनि–स्त्री० नातिक बेटी, प्रपौत्री ।

छेला–सोनारक एक हथियार ।

छेहगर } –पृथक् पृथक् स्थित
छेहर } (धान्यबीजादि) ।

छेहत्तरि–षट्टसप्तति ।

छेहत्तरिम–षट्सप्ततितम ।

छैनी–लोहादि कटबाक लोहाक कील

छैनीकाट–थारीक प्रभेद ।

छोआ–इक्षुक विकार, राबसँ त्याजित रस।

छोट–लघु, ह्रस्व ।

छोटका–छोट प्रभेदक ।

छोटकीअड़ाँची–गुजराती एला ।

छोटपन } –नीचता, छोट लोकक
छोटपना } क्रिया ।
छोटपनी }

छोटाइ–कालप्रमाणकृत कनिष्ठता ।

छोटाह–उ० छोट प्रकृतिक । स्त्री० छोटाहि ।

छोटीमाइ–ओषधिविशेष ।

छोड़ब–क्रि० त्याग ।

छोप–उपरसँ काटब १ । अपुष्ट भित्तिक पश्चात् पोषण २ ।

छोपब–क्रि० उपरसँ काटब ।

छोपी–बिना दण्डक छत्र ।

छोभ–क्षोभ, मानस दुःख ।

छोर–परम्परा १ । मालक पैघ डोरी २ ।

छोरब–क्रि० खढ़ काटब ।

छोलगढ़िआ–पुँ० मूर्ति निर्माता कुम्हार ।

छोलदारी–वस्त्रगृहविशेष ।

छोलना–छोलबाक साधन (सितुआ-प्रभृति)

छोलनी–व्यञ्जन लारबाक द्रव्यक दर्वी ।

छोलब–क्रि० घर्षणसँ त्वचाविमोचन ।

छोह–आवृत्ति (ई छोह बीआ खसल) ।

छोहका–बहुत शीघ्र बिक्रयादि ।

छोहाड़ा–मेबाविशेष, खजरप्रभेद ।

छौँक–फोड़न मिलाएब ।

छौँकब–क्रि० उपर सँ फोड़न देब ।

छौँकिआएब–ना० छौँकी + अब= छौँकीसँ मारब ।

छौँकी–पातर दण्ड ।

छौँड़ी–स्त्री० अनादरणीय बालिका

छौर–क्षौर ।

ज

जँ–अ० यदि ।

जइ–यवानी, यवाकार अन्न ।

जइओ–अ० यद्यपि ।

जइती–अ० जयबाक कालमे ।

जइधी–स्त्री० पतिभ्राताक पुत्री ।

जउआँ–जौआँ, एक गर्भसँ-सहोपत्र १ । जोटल कदली फलादि २ ।

जओ–यव, अन्नविशेष ।

जकजिआर–प्रकाश ।

जकड़ब–क्रि० सर्बाबयबेँ सम्बन्ध, दृढ़ सम्बन्ध ।

जकथक–आरब्ध अप्रचलित (कार्य) ।

जकथकाएब–क्रि० जकथक् + अब-प्रारब्ध भए अप्रचलित होएब ।

जकाँ–अ० तुल्य ।

जकीरा–लगलग लगाओल रोपणीय वृक्ष।

जखन–अ० यदा, जाहि क्षणमे ।

जखनुक / **जखनुका** } –जाहि क्षणमे भेल ।
जगति–कूपादिक बद्ध कुट्टिम ।
जगदम्बा–पक्षिरूपा भगवती ।
जगन्नथिआ–जगन्नाधक्षेत्रयात्री ।
जगन्ननाथ–सं० पुरीमे स्थापित कृष्ण ।
जगन्नाथी–जगन्नाथक्षेत्रयात्री ।
जगमोहन–कोठाक वाह्य कोष्ठक कुट्टिम।
जगरना–जागरण ।
जँगलाह–अनिविड़ वन ।
जँगलिया / **जँगली** } –वन्य, वनमे रहनिहार ।
जँघगर–उ० पैघ जाँघबाला, अधिक चलनिहार ।
जँघासब–क्रि० गतायातेन-अनेकधा मार्गक परिच्छेद ।
जँघिआ–पहिरबाक वस्त्रविशेष ।
जङलाह–क्षुपादिसँ संकुल ।
जङलिआ / **जङली** } –वन्य, बनैआ ।
जङली खेहड़ा–वन्य मुद्ग ।
जङ्ग–वि० लड़ाइ, युद्ध ।
जङ्गल–वि० वन ।
जङ्गलझार–वनोपवन ।
जङ्गलिआ / **जङ्गली** } –वन्य, वनभव ।
जङ्गली खेढ़हा–वन्यमुग्द ।
जङ्गी–बि० सैन्य ।
जङ्घर–पैघ जाँघबाला, अधिक चलनिहार।
जङ्घासब–क्रि० अधिक गतायातसँ मार्गक परिच्छेद ।
जङ्घासल–गतायातसँ अभ्यस्त (मार्ग) ।
जङ्घिआ–वस्त्रविशेष ।
जचनिहार–उ० परीक्षक ।
जजमनिका–याजन वृत्ति ।
जजमान–यज्ञ कयनिहार १। पात्र-पुरोहितादिक आश्रय २ ।
जञ्जल–अनेक छिद्रादियुक्त अनुपयुक्त (गृहादि) ।
जञ्जाल–झंझट
जञ्जीर–परतपर सम्बद्ध शृङ्खला, कड़ी।
जट–छोट जटा ।
जटा–सं० सटल लम्बा केशसंघ ।
जटा-जटिनि–स्त्रीक क्रीड़ाविशेष ।
जटाधारी–पुष्पविशेष १ । जटा रखनिहार (साधु) २ ।
जटामसी–जटामांसी, सुगन्धि औषधि विशेष।
जटित–खचित १ । निश्चय रूपेँ अवधृत २ ।
जटिल–दृढ़, कठिन, गूढ ।
जठर–अति शीत ।
जड़–अज्ञ ।
जड़काला–शीतऋतु ।
जड़ब–क्रि० जटित करब ।
जड़ाउ / **जड़ाओ** } –खर्णजटित रत्नभूषण ।
जड़ाओन–किञ्चित् शैत्ययुक्त (वातादि)।
जड़ाह–उ० शैत्ययुक्त, अप्रियशै-त्यस्वभावक (व्यक्ति) ।
जड़ि–बृक्षमूल ।
जड़िआएब–ना० जड़ि + अब-जड़ि रोपब ।

जड़िआठी–वंशादिक जड़ि दिसक खण्ड।
जड़ी–रोगनिवारक मूल वा शाखाक खण्ड।
जढ़–अति अज्ञ ।
जतए–अ० यत्र, जाहिठाम ।
जतनी–जाहि अल्प परिमाणक ।
जतबा–जाहि परिमाणक, यावान् ।
जतय–अ० जाहिठाम, यत्र सं० ।
जतहि–अ० जाही ठाम, यत्रैव सं० ।
जतहु–अ० जाहूठाम, यत्रापि सं० ।
जतिगर / **जतिमन्त** } –उ० उत्कृष्ट जातिसँ युक्त।
जती काल–जतबा काल, यावान् समय ।
जतीखन–जतबा क्षण ।
जतुपुतहु–स्त्री० जाउतक पुत्रक स्त्री ।
जतेक–जतबा, जाहि परिमाणक, यावान्।
जथगर–उ० धनशाली, पर्याप्त ।
जथा–धन ।
जन–सं० लोक १। दैनिककार्य्य नियुक्त २।
जनउ–यज्ञोपवीत ।
जनखइ–अधिक जन लागब ।
जनगर–अधिकलोकयुक्त १ । अधिक दैनिकनियुक्त २ ।
जनम–जन्म, उत्पत्ति ।
जनमब–क्रि० उत्पत्ति ।
जनमौटी–अल्पदिवसोत्पन्न (शिशु) उत्तानशय ।
जनार–गौरैयाक हेतु दूध पिअब ।
जनारो–साधु सबहिँक भोज्य ।
जनि–अ० उत्प्रेक्षाव्यञ्जक ।
जनी–स्त्री० स्त्रीलोक ।
जनी जात–स्त्रीगण ।
जनु–अ० नहि ।
जनेर–अन्नविशेष ।
जनौ–यज्ञोपवीत ।
जनौरी–जन पर रुपैया ।
जन्तर–भूषणविशेष १। तान्त्रिक यन्त्र २।
जन्तु–जानबर ।
जन्त्री–खाम्हकेँ उपर उठएबाक यन्त्र ।
जप–सं० मानस पाठ ।
जपब–क्रि० जप करब ।
जबकब–क्रि० जलादिक अधिक संलग्नता होएब ।
जबकाह–जलादिसँ सार्द्र (भूमि)
जबर–वि० जब्बर, अधिक बलिष्ठ ।
जबरदस्त–वि० अधिक बलिष्ठ (लोक)।
जबरदस्ती–वि० बलात्कार ।
जबरा–साजक झपना ।
जबा–आँगुरक यवाकार चिह्न
जबाखार–क्षारक प्रभेद, यबक्षार सँ०
जबाब–वि० उत्तर ।
जबाबी–वि० अपेक्षितोत्तरक ।
जब्बर–वि० अधिक बलिष्ठ ।
जमकब–क्रि० द्रववस्तुक अधिक सम्बन्ध १ । यथेष्ट अधिक पाएब २ ।
जमघट्ट–अधिक लोकक एकत्र आस्मर्द, तुमुल ।
जमड़ी–मोट भए बैसल मल ।
जमतिगर–पैघ जमाति ।
जमब–क्रि० भोजन १। नृत्यादिक उत्कर्ष २ । मलादिक दृढ़तया स्थिति ३ ।
जमल–उत्कृष्ट होइत (नृत्यादि) १। अधिक जमा भेल (कजरी प्रभृति) २ ।
जमलखानी–गहूमक प्रभेद ।

जमा–वि० एकट्ठा भेल ।
जमाइनि–यवानिका, अन्नविशेष ।
जमाए (य)–पुँ० जामाता ।
जमाएजन–जमाएक सङ्ग रहनिहार लोक।
जमाएब–क्रि० जमब् + अब- महत्वक प्रकाश करब १ । एकत्र मञ्चय करब २ ।
जमाति–बाबाजीक संघ ।
जमादार–वि० सिपाहीक मेट ।
जमान–तरुण ।
जमानि–यावानी, अन्नविशेष ।
जमाय–पुँ० जामाता ।
जमालगोटा–जापाल, जुलाब फलविशेष।
जमुअठि–इनारक तली ।
जमुआ–जामुक लकड़ी १ । कारी रङ्गक प्रभेद २ ।
जमुनिआ रङ्ग–रङ्गक प्रभेद ।
जमोट–जमाओल, वस्त्रादि ।
जयकार–जयशब्दक उच्चारण ।
जयपन्थी–विनाशमार्ग ।
जयपुरी–जयपुरमे निर्मित ।
जयबार–मैथिल ब्राह्मणविशेष, अपज्जीबद्ध ।
जर–जरायु १। ज्वर २। एकत्रित ३ । सघ ४ ।
जरखोड़ / **जरखोर** } –मालक ज्वर ।
जरचौठि–दातव्यक चतुर्थांश ।
जरती–जरबाँस विनष्ट ।
जरती जाएब–क्रि० ज् + अब- जरबाँस विनष्ट हो एब ।
जरदा–वि० पानमे खएबाक सुगन्धित तमाकू ।
जरन–आन्तर दाह ।
जरनघरा–जारन रखबाक घर ।
जरनबाहि–जारनक सञ्चय ।
जरब–क्रि० दग्ध होएब ।
जरलग्गू–जकरा ज्वर लगैत होइक ।
जराइनि–मांस जरबाक गन्ध १ । ज्वरक गन्ध २ ।
जर्राह–वि० हड़जोड़ा ।
जल–सं० पानीय ।
जलकर–सं० जलसम्बन्धी कर ।
जलखइ–हि० जलपानार्थ भक्षण ।
जलगर–अधिक जलयुक्त ।
जलगेन्हारी–शाकविशेष ।
जलधर–जाहिमे जल अधिक समाविष्ट हो से (करीन इनार आदि) ।
जलजन्तु–जलमे रहनिहार जानबर ।
जलपइ–फलविशेष ।
जलपान–जलखइ ।
जलफाँफी–अत्यन्त विरल बानक (कपड़ा) ।
जलबाह–जाल फेकनिहार ।
जलबाहि–जालक व्यापार ।
जलमड़ै / **जलमरै** } –राजाम्रविशेष ।
जलहस्ती–सं० हाथीसन जलजन्तु ।
जलाशय–स० पोखरि ।
जल्दी–वि० शीघ्र ।
जल्ला–मकराक घर १ । घासक हेतु जाली २ ।
जस–यश ।
जसबा–धान्यविशेष ।
जसी–यशस्वी ।

जसोन्ह–भूषणविशेष ।
जस्ता–यसद ।
जहपटार–यत्रकुत्र चत् पसरल ।
जहर–वि० विष ।
जहरकनैल–उपविषविशेष पुष्प-वृक्ष ।
जहरबात–शोणितविकारज वात-रोग ।
जहरमोहरा–सर्पविषशोषक गड्डुरक मस्तकचर्म ।
जहरी–मत्स्यविशेष ।
जहल–कारा ।
जहलखाना–कारागार ।
जहाँ–अ० जतए ।
जहाद–हि० विशाल नौका ।
जहाँ दए–अ० यत्स्थानहेतुक ।
जहिँ–अ० जाही हेतु ।
जहिआ–अ० यदा ।
जहिखन–अ० जाही काल ।
जहिना–अ० जाही प्रकारेँ ।
जहूद–वि० भारी ।
जहूरी–वि० रत्नव्यापारी ।
जा–अ० यावत् १ । खेद २ ।
जाउत–पुं० स्वाभीक भायक बालक ।
जाएब–क्रि० ज् + अब-गमन ।
जाएफर–सुगन्धि फलविशेष, जातीफल ।
जाकड़–चिरस्थापित (वस्त्रादि) ।
जाकब–क्रि० जक् + अब-अवयव शैथिल्यक हेतु एकत्र राखब ।
जाग–प्रबोध ।
जागब–क्रि० जग् + अब-जागरण ।
जागीर–वि० दत्तभूमि ।
जाङ्घ–ऊरु, ठेगँहुनक उपरका अङ्ग ।
जाङ्घिल–पक्षिविशेष ।
जाच / **जाँच** } –परीक्षा, तत्वनिर्द्धारण ।
जाचब / **जाँचब** } –क्रि० जच् + अब-परीक्षा करब ।
जाट–काचक पात्रविशेष ।
जाठि–यष्टि, पोखरिक यज्ञयष्टि ।
जाड़–जाड्य, शैत्य ।
जाँत–पिसबाक यन्त्रविशेष, घरट्ट १। दबाएब २ ।
जाँतब–क्रि० जँत् + अब-दबाएब ।
जाति–सं० सामान्य, ब्राह्मणत्व घटत्वादि।
जादू–वि० मारणादि प्रयोगविशेष १। असत्यक दर्शन कराएब, इन्द्रजाल २ ।
जादूगर–अद्भुत अन्यथा दर्शन कारक, ऐन्द्रजालिक ।
जाधरि–अ० यावत्पर्यन्त ।
जान–वि० प्राण
जानजानी–अ० प्राणानपेक्ष ।
जानब–क्रि० जन् + अब-ज्ञान ।
जान्तबे–अ० ज्ञानानुसार ।
जापत्री–सुगन्धिपत्रविशेष । जातीपत्री स० ।
जापाल–दुःसाध्य, अतिकष्टप्रद ।
जाफर–सुगन्धि फलविशेष, जातीफल स० ।
जाफरी–वंशनिर्मित सच्छिद्र आवरण विशेष ।
जाबी–जालाकार फलादिपात्र विशेष १। तद्आकार बड़दक मुखड़ा २ ।
जामा–स्यूत वस्त्रविशेष ।
जामिन–प्रतिभू ।

जामिनी–प्रतिभूकर्म ।
जामु–जम्बू ।
जामेबार–वस्त्रविशेष ।
जायफर–जायफल, सुगन्धि फल विशेष, जातीफल सं० ।
जारन–इन्धन, आगिक हेतु काष्ठ ।
जारब–क्रि० जार् + अब-डाहब, भस्मीकरण ।
जारी–वि० प्रवृत्त ।
जाल–सं० आनाय ।
जालबन्दी–लहठीक प्रभेद ।
जाला–भुस्सा लएबाक जालाकार पात्र ।
जाली–आम्रादि रखबाक छोट जाल, झोरी ।
जासूस–वि० गुप्तचर ।
जाह–अ० खेद ।
जिआरि–धान्यविशेष ।
जिगा–भूषणविशेष ।
जिच्च–वि० सिकस्त १। सतरञ्ज में शत्रुक असम्मुख-स्थानशून्य बादसाह २।
जिज्ञसपर–जिज्ञासाबाला ।
जिज्ञासा–सं० बुझबाक इच्छा ।
जिञ्जीर–लोहशृङ्खला ।
जितिआ–जीमूतवाहव्रतक पाबनि ।
जिदिआह–उ० दुराग्रही, स्त्री जिदिआहि।
जिद्द–वि० दुराग्रह ।
जिद्द लागब–क्रि० लग् + अब-अधिक आग्रह होएब ।
जिद्दी–आग्रही ।
जिनिस–वि० उपजा अन्न ।
जिनिसी–जिनिससँ आमदनी ।
जिमड़ / **जिम्मड़** –वृक्षविशेष ।
जिरतिआ–कृषिकार्य करएबामे नियुक्त, जिरातक कार्य कएनिहार ।
जिरात–वि० मालिकक क्षेत्र ।
जिला–वि० मण्डल, ग्रामसमूह ।
जिलेबी–मिष्टान्नविशेष ।
जिलो–बारातक जुलुस ।
जिल्द / **जिल्ल** –वि० बद्ध पुस्तक ।
जिल्लो–वि० जुलुम ।
जिस्ता–वि० कागतक प्रमाणविशेष ।
जिहिआ–जह्वोल्लेखनिका ।
जिहुलाह–उ० रमलोलुप । स्त्री जिहुलाहि।
जी–प्राण १ । अ० वि० स्वीकार २ ।
जीअत–जीवित, (गूआप्रभृति) ।
जीत–विजय ।
जीतय–क्रि० विजय ।
जीन–पल्ययन, घोडापर बैसबाक आसन १ । म्लेच्छजातिक भूत २ ।
जीबट–सिद्ध करबाक उत्साह ।
जीबन–स० प्राणधारण ।
जीर–स० जीरक, अन्नविशेष ।
जीह–जिह्वा ।
जीह पनिछाएब–क्रि० जीह पानिसै युक्त, होएब, खयबाक विशेष इच्छा ।
जुआन–जबाव, तरुण ।
जुआनी–तारुण्य, यौवन ।
जुगुताएब–क्रि० ओरियाएकेँ राखब, सुरक्षित करब ।
जुगुति–युक्ति ।
जुगुलात–युक्त, नीक ।
जुटब–क्रि० एकत्रित होएब ।
जुटान–बहुत व्यक्तिक एकट्ठा हो एब।

जुटिकाबन्हन–जूटिकाबन्धन, उपनयनक पूर्वादन राति में कतव्य विशेष ।
जुट्टी–जूटी, वेणी ।
जुड़पित्ती–रोगविशेष ।
जुड़ब–क्रि० उपायसँ प्राप्त होएब ।
जुड़बन्ह–भूषाविशेष ।
जुड़ाएब–क्रि० जुड्+अब-ठण्ढा होएब।
जुतिआएब–ना० जूता+अब-जुतिअब्+अब-जूतासँ मरब ।
जुत्थ–यूथ, समूह ।
जुनेठब–ना० जुनेठ+अब-जुन्नासँ बान्हब ।
जुन्ना–तृणक ऐँठल एकगुणक रस्सा ।
जुबान–स्वीकारवाक्य ।
जुबान देब–क्रि० द्+अब-स्वीकारवाक्य कहब ।
जुबानी–मुखद्वार, कथिता, मौखिक ।
जुमब–क्रि० अधिक प्राप्य होएब ।
जुमहुगर–अधिक जुमाहु ।
जुमाहु–अधिक प्राप्य ।
जुरबन्द–भूषणविशेष ।
जूआ–द्यूत ।
जूआसारि–द्यूतस्थान ।
जूटब–क्रि० जूट्+अब-एकत्रित होएब ।
जूटिकाबन्धन–उपनयनाक पूर्व-रात्रिकर्तव्य शिखामे जूटी बान्हब ।
जूटी–वेणी ।
जूड़–उपरका खोपा १ । शीतल २ ।
जूड़ब–क्रि० जुड्+अब-प्राप्य होएब ।
जूड़शीतल–जलक्रीड़ादिवस, मेष-संक्रान्तिक परात ।
जूड़ा–माथक उपरका खोपा ।
जूता–हि० उपानत्, पनही ।
जूताजुतौबली / **जूताजूती** –परस्पर जूता मारब
जूति–स्वाधीनता १ । वीयवस्था २ ।
जूम–तमाकूक मात्रा ।
जूमब–क्रि० जुम्+अब प्राप्ति ।
जूमा–बटेरक युद्धक आकरण ।
जूस–यूष ।
जूही–यूथिका, पुष्पविशेष ।
जे–यद, सर्वनामा ।
जें–अ० जाहि कारणेँ ।
जेकाँ–अ० सम, तद्वत् ।
जेजा–वि० नामक पाँछा तिर्यग्रेखा
जेठ–ज्येष्ठ, अधिक वयसक १। ज्यैष्ठमास २ ।
जेठजन–उ० ज्येष्ठ व्यक्ति (पुत्र प्रभृति)।
जेठजनी–स्त्री० ज्येष्ठा व्यक्ति (कन्याप्रभृति)
जेठरैअति–पुं० श्रेष्ठ असामी, मालगुजारी ओसूलमे नियुक्त ।
जेठसासु–स्त्री० पत्नीक जेठि बहिनि ।
जेठाइ–ज्येष्ठता ।
जेठीमधु–यष्टीमधु, ओषधिविशेष ।
जेना–अ० जाहि प्रकारें, यथा ।
जेमब–क्रि० भोजन ।
जेमहर / **जेम्हर** –अ० जाहि दिसि ।
जेर–वि० समूह ।
जेरगर–अधिक समूह ।
जेहन–यादृश, जकर सन ।
जेहनसन–अ० यादृश अवसर ।
जेहरि–पादभूषणविशेष ।
जै–यवाकार अन्नविशेष, यवानी ।

जैओ–अ० यद्यपि ।
जैती–अ० जयबाक कालमे ।
जैतुक–जौतुक ।
जैधी–स्त्री० स्वामीक भ्राताक कन्या
जोआएब–क्रि० जो+अब–परिणत होबए।
जोआरि–समुद्रक तरङ्ग ।
जोँक–जलौमा ।
जोकर–अ० योग्य ।
जकटी / **जोकठी** } –पेटमे फड़ल कीट विशेष ।
जोँकी–पेटक छोट छोट चोली ।
जोख–तौल ।
जोखब–क्रि० तौलब ।
जोग–योग्य १ । श्रोत्रियत्वयोग्य मैथिल २ । औषधसहमिश्रण ३ ।
जोग-टोन–तान्त्रिक क्रिया (वशीकरणदि)
जोगाड़ (र) करब–क्रि० सामग्रीक सम्पादन ।
जोगि–उ० पटबा जातिविशेष । स्त्री० जोगिनी ।
जोगिआ–ओड़हुल फूल ओ अण्डीक प्रभेद ।
जोगिनि–स्त्री० पटबा जातिक स्त्री ।
जोगिनी–भूषणविशेष ।
जो (यो) गी–योगाभ्यासी ।
जोँगी हड़ीर / **जोङी हड़ीर** } –बिनु आँठीक हड़ीर, छोटकी हड़ीर।
जोगौली–भूषणविशेष ।
जोट–सर्पादिक मिथुनसम्बन्ध ।
जोट लागब–क्रि० लग्+अब–सर्पादि स्त्रीपुरुषक संयुक्त होएब ।
जोड़–एककार्यकारी दू गोट १। सन्धि २।
जोड़न–जनमबाक हेतु दूधमे देल दही।
जोड़ब–क्रि० जोड़ ।
जोड़ी–दू घोड़ा गाड़ी ।
जोत–हलसँ कर्षण ।
जोतब–क्रि० हलसँ कर्षण १ । अश्वादिक रथादिमे योजन २ ।
जोतल–कृष्ट ।
जोता–कृषीबल, खेत कएनिहार ।
जोति–ज्योति, कान्ति ।
जोतिखी–ज्योतर्विद् ।
जोती–पालोमे बड़द बन्हबाक डोरी ।
जोभ–तृणविशेष ।
जोर–वि० बल ।
जोरगर–उ० बलिष्ठ । स्त्री० जोरगरि ।
जोरबन्द–सतरञ्जक लेखक एक प्रभेद ।
जोर्रा–पाछाँसँ जोर देब ।
जोलहा–तन्तुवाय, वस्त्र बिननिहार जातिविशेष ।
जोलही–जोलहासँ निर्मित (वस्त्र) ।
जोह–धारमे माछक गमन १। अन्वेषण २ ।
जोहब–क्रि० वस्तुक अन्वेषण ओ संग्रह।
जोहारि–समुद्रकतरङ्ग ।
जौआँ–यमज, एक पेटसँ सहोत्पन्न ।
जौड़–रज्जु, साबेक डोरी ।
जौतुक–सं० वरकेँ देल वस्तुजात ।
ज्ञाति–सं० सात पुस्तिसँ उपर दश पुस्ति पर्यन्त ।
ज्ञान–सं० बोध ।
ज्ञानपचीसी–क्रीड़ाविशेष ।
ज्योति–सं० प्रकाश ।
ज्वर–सं० बोखार हि० ।
ज्वरी–सं० ज्वरयुक्त ।
ज्वाला–सं० धाह, आगिक धधरा ।

झ

झकझक–चाकचक्ययुक्त देखि पड़ब ।
झकाएब–क्रि० झकब्+अब–ठारि डोलाए फलक पातन १ । फल खसबाक हेतु गाछक आन्दोलन २ ।
झकास–सवात चिर-वृष्टि ।
झकाझक / **झकाझक्क** } –बहुत चकचक ।
झखनी–दैन्यचिन्ता ।
झखनी लागब–क्रि० दैन्य चिन्ता सँ युक्त होएब ।
झखब / **झख मारब** } –क्रि० औदास्यपूर्वक दीनताक चिन्ता करब ।
झगड़–कलह ।
झगड़ब–क्रि० कलहकरब ।
झगड़ा–कहल ।
झड्खाड़ / **झड्खार** } –अति बृद्ध ।
झझउ–झझौ, बहुधा निशीर्ण (कदलीपत्र)
झझराह–जाहिसँ झरझर जल चुबए तादृश (करीन आदि) ।
झझाएब–क्रि० झझ्+अब–उच्चताप्रयुक्त जलक मन्दगीत ।
झझौ–झझउ, बहुधा-विशीर्ण (केराक पात) ।
झञ्झट–कार्यव्यग्रता, अनेककार्य-पात ।
झट–अ० शीघ्र ।
झटक–वायुवेगसँ तिर्य्यक्कृत वर्षा ।
झटकब–क्रिण वायुवेगसँ तिर्यक् जलपतन।
झटका–अग्रभागक आघात ।
झटकारब–क्रि० झटकार्+अब–शीघ्र-शीघ्र डेग देब।
झट-दए / **झट-पट** / **झट-सन** } –अ० शीघ्र ।
झट्टा–जाहि काटल धानक गाछसँ झाँटिकेँ धान हटाओल गेल हो ।
झठहा–फेंकिकेँ फल तोड़ब आदि कार्यहेतुक डण्टा ।
झड़ (र) ब–क्रि० उद्धूननसँ धूली प्रभृतिक ओ मन्त्रसँ सर्पविषादिक हटब ।
झड़र–छोटका बड़र ।
झड़ी–सवातवृष्टि ।
झड़ी लाधब–क्रि० लध्+अब–सवात वृष्टिक चिरप्रवृत्ति ।
झड़ोखा–कोठाक उपरका भाग ।
झण्ठी–ठुट्ठ, शाखारहित (वृक्ष) ।
झनक–मालक व्याधिविशेष १। किञ्चित् विक्षेप २ ।
झनकब–क्रि० पाएर घँसैत मालक चलब १ । पछबासँ धानक पाकब २ ।
झनकाह–उ० बताहसन ।
झनझनाएब–क्रि० झनझन्+अब–झनझन बाजब ।
झन दए उठब–क्रि० हठात् झनत्कार शब्द होयब ।
झपओन–झपोन, किञ्चित् मेघाच्छादित (समय) ।
झपझप–अ० शीघ्र-शीघ्र ।
झपट–पक्षीक आक्रमण ।
झपटब–क्रि० पक्षीक चांगुरसँ वस्तु लेबाक आक्रमण ।
झपना–झपबाक वस्तु, जाहिसँ झापल जाय।

झपसी–सवात मेही वृष्टि ।

झपसी लाधब–क्रि० लध् + अब – चिरस्थायी सवात मेही वर्षण ।

झपोन–झपओन, किञ्चित् मेघाच्छादित समय ।

झप्पा–झापा, काष्ठमञ्जूषाक प्रभेद ।

झबरब–क्रि० समन्तात् लटकब ।

झबरा–जकरा रोइआँ झबरल रहए से (कुकुर) ।

झबरी–धान्यविशेष ।

झभहा–दूध नपबाक पैघ पात्र-विशेष ।

झभही–दूध नपबाक छोट पात्र ।

झमकब–क्रि० झमझम शब्द करब ।

झमटगर–अधिक शाखाबाला (वृक्ष) ।

झमाएब–ना० झामजेकाँ शोकादिसँ कारी होएब, शोकेँ दुर्वर्ण होएब ।

झमानसँ खसब–क्रि० हठात निराश होएब ।

झमार–आन्दोलनजन्य श्रान्ति ।

झमारब–क्रि० झमार्+अब-जोर सँ आन्दोलित करब ।

झमेल–परिछौटमे विवाद ।

झमेलिआ–परिछौटमे विवादस्वभावक ।

झम्पान–पृष्ठवाह्य यानविशेष ।

झर–नमेरक स्वयंपतित बीजसँ जनमल धान ।

झरक–ज्वालासम्बन्ध ।

झरकब–क्रि० अल्प दाह ।

झरका लागब–क्रि० लग्+अब-धानक सुखैनी, रोगविशेष ।

झरखरब–क्रि० वार्द्धक्यसँ अतिकार्श्य ।

झर-झमेल–लेन-देन कार्यमे विवादप्रभृति।

झरझराएब–क्रि० झरझर्+अब-झरझर शब्द करब ।

झरना–निर्झर, पर्वतीय क्षुद्र नदी ।

झरनी–क्रि० आन्दोलनसँ आम्रादिक पतन १ । मन्त्रसँ विषादिक अपगम २ ।

झरबड़र–छोटका बड़र ।

झरोखा–कोठाक अग्रभाग ।

झलकब–क्रि० नैर्मल्यसँ चाकचक्य युत होएब ।

झलकी–नैर्मल्यजन्य चाकचक्य ।

झलझल–परदा नहि कएनिहार पातर (वस्त्रादि) ।

झलझली–विरलताप्रयुक्त अल्प आवरण।

झलफल–अल्प सुझबाक योग्य समय १ । रोगादिवश सुस्पष्ट सुझबाक शक्तिहीन (नेत्र) २ ।

झलफलाएब–क्रि० रोगवश सुस्पष्टदर्शन शक्तिशून्य होएब ।

झलफली–अल्प सुझब, अल्प प्रकाश ।

झलहेरि–नौकासँ जलक्रीड़ा ।

झलाबोर–जलसँ बहुत दूर आच्छादित ।

झलिबज्जा–झालि बजओनिहार ।

झल्ला–शाकविशेष ।

झहर-झहर–झरना जेकाँ निरन्तर (जलादिक पतन) ।

झहरब–क्रि० उपरसँ क्रमिक देबाल प्रभृतिक खसब ।

झहार–नीचाँ पतनयोग्य भूमि ।

झा–ओझा, कतोक मैथिल ब्राह्मणक उपाधि ।

झाँइ–अल्पसम्बन्ध १ । दुराग्रह २ ।

झाँइ उठब–क्रि० कोनो कार्यमे दुराग्रहक उत्थान ।

झाँक–सुखएबाक हेतु जारनकेँ पजरल चूल्हिपर चढ़ाएब ।

झाँकब–क्रि०-झँक्+अब-पाकपात्रसँ उद्धार कए पात्रान्तरमे भातक राखब ।

झाँकी–भगवानक दर्शन ।

झाखड़–लतादिसंकुल क्षुप ।

झाँखी–गाछक पातर-पातर ठारि ।

झाखुड़, **झाखुर** } –लतादिसंकुल छोट गाछ ।

झाँझ–झल्लरवाद्य १ । अनेकच्छिद्र द्रव्यक दर्वी २ ।

झाँझन–विदीर्ण कए पसारल बाँस ।

झाँट–झाँटब ।

झाँटब–क्रि० झँट्+अब-वारंवार उठाएकेँ पटकब ।

झाँटि–क्षुपविशेष १ । तीव्रवायु २ ।

झाड़–अपाकरण १ । वृक्षाकार शृङ्गारी वस्तुविशेष २ ।

झाड़-फूक–मन्त्रादिद्वारा रोग-विषादिक अपाकरण ।

झाड़ब–क्रि० झाड्+अब-आन्दोलन १। मन्त्रसँ अपाकरण २ ।

झाड़ि–जङ्गल ।

झाड़ी–भृङ्गारक, जलपात्रविशेष ।

झाड़ू–हि०, बाढ़नि, सम्मार्जनी ।

झाँप–आच्छादन १ । शिबिकाक स्यूत आवरणवस्त्र २ ।

झापन–आवरण ।

झाँपब–क्रि० झँप्+अब-आवृत करब ।

झाँपा, **झापा** } झप्पा, काष्ठरचित मञ्जूषाविशेष ।

झाबा–गुच्छ ।

झाम–अधिक तापसँ कारी भेल इष्टका ।

झार–झारब १ । सीसाक गुच्छ २ ।

झारनि–दाउनिमे धानक झारब ।

झार-फुनुस–बरिआत सजबाक झाड़ आदि।

झार-फूक–मन्त्रादिद्वारा रोगक अपाकरण।

झारब–क्रि० झार् + अब - उद्वेनन १। मन्त्रदिसँ रोगादिक अपाकरण २ ।

झालरि–गेडुआ प्रभृतिमे सौन्दर्यार्थ चारूकात घोकचाए लगाओल वस्त्र।

झालि–झल्लक, वाद्यविशेष ।

झिँगुनी–झिङ्गिनी, व्यञ्जनफलविशेष ।

झिङ्गुर–कीटविशेष ।

झिझरी–अल्पछिद्रसमूह ।

झिमझिमिआ–कानक भूषणविशेष ।

झिलम–व्यायामसाधनविशेष ।

झिलमिली–वातायन ।

झिलिआएब–क्रि० झिलिअब्+अब-कोदारिसँ माटि सरिआएब ।

झिल्ला–पक्षिविशेष ।

झिल्ली–वर्षामे शब्दकारी लघु जन्तुविशेष।

झिल्लो–जलीय पक्षिविशेष ।

झीक–जाँतमे पिसबाक हेतु देय एक मुट्ठी अन्न ।

झीकब–क्रि० झिक्+अब-आकर्षण ।

झीकातीरी–परस्पर झीकब ।

झीरो–तृणविशेष ।

झील–जलमय, धान नहि उपजबाक योग्य चर ।

झीलो–एक प्रकारक कौड़ीक खेड़ि ।

झीसी–सूक्ष्म जलकण ।
झुकनी–तन्द्राहेतुक झुकब ।
झुकब–क्रि० नम्र होएब ।
झुकाह–एक भाग झुकल, एकभगाह ।
झुझुआएब–क्रि० झुझु+अब-अल्पता हेतुक असन्तोष ।
झुझुआन–अल्प होएबाक हेतु असन्तोषास्पद (अन्नादि) ।
झुटका / **झुटकी** –फूटल माटिक बासनक बहुत छोट खण्ड ।
झुट्टी–धानक सीसक जूटी ।
झुडुर–झखार, अतिवृद्ध ।
झुण्ड–प्राणीक समूह ।
झुत्थर–झखार, अतिवृद्ध ।
झुनकी–ठेँगाक वाद्य ।
झुनखुना–शाकविशेष ।
झुनझुना–झुनझुन बजनिहार नेनाक खेलओना ।
झुनझुनी–चिरभाराक्रांन्तिप्रयुक्त शोणित-सञ्चारक अल्पतासँ क्षणिक वेदना विशेष ।
झुनझुनी भरब–क्रि० पूर्वोक्त वेदनासँ युक्त होएब ।
झुमक–झुम्मक, कानक भूषणविशेष ।
झुमका–ओड़हुल फूलक प्रभेद ।
झुमकी–छोट झुमक ।
झुमरि–अनेकनर्तकसम्पाद्य नृत्यविशेष १। गीतविशेष २ ।
झुम्मक–झुमक, कानक भूषणविशेष ।
झुरकुटिआ–कदलीफलक एक प्रभेद ।
झुरमुठ / **झुरमुठि** –जोरसँ परस्पर पकड़ब ।
झुलब–क्रि० आन्दोलन ।
झुल्ला–स्त्रीक स्यूत वस्त्रविशेष ।
झूकब–क्रि० झूक्+अब-एक दिस नीच होएब १ । नम्र होएब २ ।
झूटब–क्रि० झुट्+अब-जोरसँ आक्रमण ।
झूर–कड़ा कए तरल (तरकारी आदि) ।
झूला–हाथीक उपरक दुहु दिस नमरल कपड़ा ।
झूलन–भगवानक झुलबाक शृङ्गार १ । जे हाथी सतत झुलैत रहए २। झुलबा कालक गीत ३ ।
झूलब–क्रि० झुल्+अब-आन्दोलन ।
झोँक–कोठाक बाहरक छदि १ । जोर, आघात २ ।
झोँकब–क्रि० अधिक विनियोग ।
झोँका–भूताद्यपसारणार्थ अधिक धूप ।
झोँकारा–अधिक विनियोग ।
झोँकाह–उ० हठात् क्रियाक आवेगबाला (व्यक्ति) ।
झोँकी–हठात् क्रियाक आवेग ।
झोखरब–क्रि० वार्द्धक्यप्रयुक्त देहक ह्रास।
झोँझ–अप्रवेश्य मध्यमे अदृश्य जङ्गल ।
झोँट–बढ़ल समस्त माथक केशपुञ्ज ।
झोटकी–झोँट ।
झोटहा–स्त्रीगण ।
झोँटाझोँटी–परस्पर झोट पकड़ब ।
झोर–तीमनक एक प्रभेद १ । तीमनक जल २ ।
झोरगर–अधिक झोरसँ युक्त (तीमन) ।
झोरब–क्रि० मृगादिक वनमे अन्वेषण ।
झोरा (ड़ा)–वस्तु रखबाक स्यूत वस्त्रविशेष ।

झोराएब–ना० झोरसँ युक्त करब ।
झोरी–छोट झोरा ।
झोल–चार आदिमे लागल धूमादिकृत विकार ।
झोलब–क्रि० शुष्क चूर्णकेँ वस्त्रपूत करब ।
झोलरतू–झोलसँ मलिन ।
झोलराह–नीच भेल (खाट आदि) ।
झोली–झोलक विकार ।
झौआ–वृक्षविशेष १। जम्बीरविशेष २ ।
झौसब / **झौँसब** –अत्यल्पतैलादिसँ धूआँ बहकाए व्यञ्जन रान्हब ।

ञ

ञहाँ / **ञेहाँ** –अहाँ, भवान् सं० ।

ट

टउआएब–क्रि० टउ+अब-अनाथ भए इतस्ततः घूमब ।
टक–एकतान दृष्टि ।
टकगर–अधिक रुपैआबाला ।
टकटक करब–क्रि० अत्यन्त दुर्बल होएब ।
टकटक ताकब–क्रि० तक्+अब-एकतान दृष्टिसँ ताकब ।
टकटकी–एकतान दृष्टि ।
टकटकी लागब–क्रि० लग्+अब-दृष्टि एकतान होएब ।
टकटोरब–क्रि० नहि देखैत हाथसँ ताकब ।
टकटोरिआ–नहि देखैत भूमिमे वारंवार हाथ राखब ।
टकटोरिआ देब–क्रि० द्+अब-नहि देखैत भूमिमे अनेकधा हस्तारोपण।
टकबेल–मल्लीपुष्पक एक प्रभेद ।
टक लागब–क्रि० लग्+अब-एकतान दृष्टि रहब ।
टकसाल–रुपैआक निर्माणस्थान ।
टकुआ–टाकु, तर्कु ।
टकुआ तान–टकुआजेकाँ सोझ ।
टकुरी–सूत कटबाक छोट यन्त्रविशेष ।
टकुरी काटब–क्रि० कट्+अब-टकुरीद्वारा सूतक निर्माण करब ।
टकोरा–आमक बहुत बच्चा फल ।
टक्कर–हि० आघात ।
टगब–क्रि० आबल्यनिद्रादिप्रयुक्त झुकब।
टग हानब–क्रि० हन्+अब-आबल्यसँ झुकैत चलब ।
टघड़ब / **टघरब** –क्रि० स्रवण ।
टघाड़ (र)–स्रवण ।
टघाड़ (र) ब–क्रि० स्रुत करब ।
टङगर / **टङ्गर** –पैघ पाएरबाला, अधिक चलनिहार ।
टटउ–टाटबाला (घर) ।
टटकबाह–कर्षणाद्युत्तर बीजवपनादिये विरामाभाव ।
टटका–तात्कालिक, अपर्युषित (जल आदि) ।
टटबन्हा–टाट बन्हबाक (जौड़) १। टाट बन्हनिहार (जन) २ ।
टटमजार–वैनट्य ।
टटहा–कागतक एक प्रभेद ।
टटाएब–क्रि० टट्+अब-सोहारी आदि शुल्क भए कठोर होएब ।

टटैनी–शिराक वेदनाविशेष ।
टटौ–टाटक (घर) ।
टट्टू–छण्ठा घोड़ा ।
टण्टघण्ट–देखौआ पूजाक घड़ी-घाँटी ।
टनक–कान ओ माथक वेदना ।
टनकब–क्रि० कान वा माथ दुखाएब ।
टनकी–पक्षिविशेष ।
टनटनाएब–क्रि० टनट्न्+अब-टनटन शब्द करब १ । रुग्ण अवस्थासँ किछु उत्थानावस्था पाएब २ ।
टन दए–अ० टन शब्द कए ।
टप–आवरणविशेष ।
टपकब–क्रि० अनवसरमे आगमन (निन्दामे) १ । स्वयं पक्क भए आम्रादिक पतन २ ।
टपटप करब / **टपटप बाजब** }–क्रि० अप्रस्तुत अनधिकार अनेकधा बाजब ।
टपब–क्रि० गहीड़ आदिक लङ्घन ।
टप्पाटोइआ देब–क्रि० द्+अब-अन्हारमे हाथ भूमिपर देने चलब वा कोनो वस्तुक अन्वेषण करब ।
टप्पू–टापु, उपद्वीप ।
टभकब–क्रि० पाकिकेँ फल आदिक स्वत: खसब ।
टभका–माछ बझइएबाक वंशनिर्मित यन्त्रविशेष ।
टभकी–छोट टमका ।
टमटम–एक घोड़ाबाला एक्कासँ पैघ रथ।
टरकारब–क्रि० टरकार्+अब-किछु कहि टारब ।
टरब–व्याजपूर्वक चल जाएब ।
टरुआएब–क्रि० टरु+अब-आबल्यसँ झुकब ।
टर्राएब–क्रि० टर्र्+अब-वृथा इतस्तत: घुमब ।
टलहा–द्रव्यान्तरमिश्रित रूप ।
टलिआएब–ना० टाल + अब - टाल लगाएब।
टहल–परिचर्या ।
टहल-टिकोरा–परिचर्याप्रभृति ।
टहलनी–स्त्री० परिचर्याकर्त्री ।
टहलब–क्रि० देहस्वास्थ्य हेतुक मन्दमन्द चलब, बूलब ।
टहलू–पुं० परिचारक पुरुष ।
टहुकी–वंशरचित माछ मारबाक साधनविशेष ।
टाँक–सोन प्रभृतिक जोड़ करबाक हेतु निर्मित मिश्रित धातु १। टाँकब २।
टाँकब–क्रि० टँक्+अब-दूर दूर कए सीअब ।
टाका–रुपैया ।
टाँकी–उपदंश, रोगविशेष ।
टाकु–तर्कु, छिद्र करबाक साधनविशेष।
टाँग–पाएर ।
टाँगब–क्रि० टँग्+अब-उपरका आश्रयमे लटकाएब ।
टाँघन–पैघ घोड़ा।
टाँघर–चव्य, ओषधिविशेष ।
टाङ–टाँग, पाएर ।
टाङब–क्रि० टङ्+अब-टाँगब, उपरका आधारमे लटकाय संबद्ध करब।
टाट–तृणादिनिर्मित गृहादिक आवरण ।
टाँट–शुष्कताप्रयुक्त कर्षणायोग्य (क्षेत्र)।

टाटक–इन्द्रजाल ।
टाटफरक–टाटप्रभृति ।
टाँटि–क्षुपविशेष ।
टाड़–बाँहिक आभूषणविशेष ।
टाड़ा–तैल घृत रखबाक, माटिक पैघ घटाकार पात्र ।
टाड़ी–छोट टाड़ा ।
टापि–माछ मारबाक वंशरचित साधनविशेष ।
टापू–द्वीप ।
टाभ–नेबोक प्रभेद ।
टारब–क्रि० टार्+अब-हटाएब ।
टारमटोर–किछु-किछु कहि कालक्षपण।
टाल–जलसँ बँचबाक हेतु सुसज्जित तृणपुञ्ज १ । समूह २ ।
टाल ठोकब–क्रि० बाँहिपर करतलध्वनि।
टाल मारब–क्रि० मार्+अब-वञ्चना करब।
टिकटिकाएब–क्रि० टिकटिक्+अब-क्षीणतावस्थासँ किछु नीक स्थिति प्राप्त करब ।
टिकटिकिआ–गिरगिट ।
टिकरी–मिष्टान्नविशेष १। छोट रोटी २ ।
टिकुला–बिना कोइलीक आम ।
टिकुलिआ बीड़ी–ताम्बूलविशेष ।
टिकुलि(ल)हारनी–स्त्री० टिकुली बेचनिहार जातिक स्त्री ।
टिकुलि(ल)हारा–पुं० टिकुली बेचनिहार जातिविशेष ।
टिकुली–कपारमें सटबाक नाना रूपक स्त्रीक अलङ्करण १ । चित्रपतङ्ग, कीटविशेष २ ।
टिक्री–टिकरी, मिष्टान्नविशेष १ । छोट रोटी २ ।
टिङ्ङा–क्रोड़ ।
टिटकारब–क्रि० टिटकार्+अब-प्रतारणा-बुध्या उत्साहक कथा कहब ।
टिटकारी–प्रतारणाबुध्या उत्साहक वचन ।
टिटही / **टिटिही** }–टिट्टिभ, पक्षिविशेष ।
टिण्डीबोह–शलभसमूह, क्षुद्रपक्षिगण ।
टिपका–क्वचित् - क्वचित् प्रवृत्त (महामार्यादि) ।
टिपकारी–कोठा आदिमे मसालासँ पजेबाक छिद्रपूरण ।
टिपब–वाचा सहायता करब ।
टिपोट–संक्षिप्त जन्मकालादिक लेख ।
टिपौटी–असम्यक् नियोग ।
टिप्पा–कौड़ीक एक प्रकारक खेड़ि ।
टिप्पी–स्मरणार्थ गणनाक रेखा ।
टीक–शिखा ।
टीका–सं० व्याख्या ।
टीन–वि० धातुविशेष १ । लौहरचित तेल आदिक पात्रविशेष २ ।
टीप–टीपब १ । बोतलमे तेल ढ़ारबाक सच्छिद्र पात्रविशेष २ । कौड़ीक एक खेड़ि ३ ।
टीपनि–जन्मपत्री ।
टीपब–क्रि० टिप्+अब-क्रीड़ा प्रभृतिमे अनका विचार देब ।
टुअर–माए-बापसँ हीन (नेना) ।
टुक–सुपारीक खण्ड ।
टुकड़ा–खण्ड ।
टुकड़ी–छोट खण्ड ।

टुकना–दालि रन्हबाक पैघ पात्रविशेष।

टुकनी–छोट जलपानपात्र ।

टुघड़(र)ब–क्रि० नेनाक प्रारम्भिक अल्प-अल्प चलब ।

टुटब–क्रि० भग्न होएब १ । अनेकाक्रमण २ ।

टुट्टा–टूटल, भग्न (तण्डुलादि) ।

टुट्टी–क्रयविक्रयव्यापारमे हानि ।

टुट्टी लागब–क्रि० लग्+अब-क्रयविक्रयव्यवहारमे हानि पहुँचब।

टुड़नी–वृक्षादिक अग्रभाग ।

टुनमुन–छोट गोल (लोटा आदि) ।

टुमटाम–छोटछीन गहना ।

टुसकाएब–क्रि० टुसकब्+अब-अनुचित क्रियामे प्रवृत्ति कराएब ।

टुस्सा–शाखाग्रसँ चलल अङ्कुर ।

टूअर–टुअर, मातृपितृहीन (शिशु) ।

टूक–खण्ड ।

टूट–क्रयविक्रयव्यापारमे हानि ।

टूटफाँट–देहक अधिक दुखाएब ।

टूटब–क्रि० टुट् + अब-भग्न होएब ।

टेक–अवलम्बन १ । गौरव; मर्यादा २ ।

टेकना–अवलम्बनवस्तु ।

टेकब–क्रि० अवलम्बन देब १ । अदृढ़ बन्धन २ ।

टेका–छोट सरल रेखा ।

टेकुना–खाद्य कन्दविशेष ।

टेँगार–मत्स्यविशेष ।

टेँगारी–छोट कुठार ।

टेङरा–मत्स्यविशेष ।

टेङारी–छोट कुठार ।

टेँट चलब–क्रि० पातर दस्त होएब (निन्दामे) ।

टेटर–चोट लगने वा आने प्रकारेँ उत्पन्न देहक उन्नत मांसपिण्ड ।

टेँटाह–अप्रिय अप्रस्तुत बजनिहार ।

टेँटिआ–सूगाक एक प्रभेद ।

टेढ़–वक्र ।

टेढ़का–वक्रप्रभेदक (खाम्हआदि) ।

टेढ़बकुली–अत्यन्त टेढ़ ।

टेढ़िआ मालभोग–धान्यविशेष ।

टेढ़ी–वक्रता ।

टेबब–क्रि० अन्वेषण कए पसिन्द करब।

टेम–दीपशिखा ।

टेमब–क्रि० टाट आदिमे बातीकेँ सोझ रहबाक हेतु ठाढ़ बातीक सङ्ग बन्धन देब ।

टेमी–वर्तिका, बाती, दीपक साधनविशेष।

टेर–आनन्दमे मग्न ।

टेरब–क्रि० आनन्दपूर्वक वंशी बजाएब १ । कथा स्वीकार करब २ ।

टेरुआ–सुतरी बँटबाक यन्त्रविशेष ।

टेल्ह–छोट नेना ।

टेल्हबाटेल्हबी–क्रीड़ाविशेष ।

टेसु, **टेसू** } –फलविशेष ।

टोइआ–घरक सर्वोच्च उपर भाग ।

टोइआ करब, **टोइआ देब** } –क्रि० - बिनु देखने स्पर्शसँ वस्तुक अन्वेषण करब ।

टोक–टोकब ।

टोकनि–ढेप फोड़ब ।

टोकब–क्रि० मध्यहिमे प्रश्न कय देब, अकस्मात् पूछब ।

टोँगब, **टोङब** } –क्रि० वंशादिकेँ अनेक खण्ड कए काटब ।

टोटल–वि० मोट संकलन ।

टोटा–फोँक दण्डाकार वस्तु ।

टोँटिआ–जल बहबाक अन्तिम खपरा ।

टोटी–हथहड़प्रभृतिक सच्छिद्र जल-निःसरणाङ्ग १ । ओल ओ कड़हरक उच्च अङ्ग २ ।

टोन–लकड़ी वंशादिक खण्ड ।

टोनब–क्रि० लकड़ी वंशादिक खण्ड काटब ।

टोना–रोगादिक शामक वा उत्पादक मन्त्ररहित क्रिया ।

टोनाटापर–टोनाप्रभृति क्रिया ।

टोनाह–अल्प बलेँ मङ्ग होएबाक योग्य।

टोनी–लकड़ी आदिक खण्ड ।

टोंप–गोरण्डीयक शिरोभूषण ।

टोपटहंकार–डीलडाल, आडम्बर ।

टोपड़, **टोपर** } –अङ्ग गरम रखबाक हेतु मोट तूरयुक्त नूआ १ । बखारीक गोलाकार ओ बीचमे ऊँच चार २ ।

टोपी–माथ झपबाक स्यूत वस्त्रविशेष ।

टोल–गामक एकदेश ।

टोलबैआ–टोलक वासी ।

टोलाटोली–अ० गामक प्रत्येक भाग ।

टोली–छोट टोल ।

टोह–पता, अनुसन्धान ।

टोहिआएब–क्रि० टोहि + अब-पता लगाएब ।

टौआएब–क्रि० टौ + अब-अनाथ भए इतस्ततः घूमब ।

ठ

ठक–वञ्चक ।

ठकठक करब–क्रि० जाड़ेँ दाँतक शब्द करब ।

ठकठकाएब–क्रि० ठकठक्+अब्+अब-भूमिमे ठेँगा आदिक आघातसँ ठकठक शब्द करब ।

ठकठकिआ–ठकठक शब्द कए माछ मारनिहार (मलाह) ।

ठकठेना–ठकब, वञ्चना ।

ठकदरुआ–गारि पढ़बाक योग्य सम्बन्धिक (श्यालादि) ।

ठकपन, **ठकपना**, **ठकपनी** } –ठकक क्रिया, वञ्चना ।

ठकबिदुरी लागब–क्रि० लग्+अब-आत्याश्चर्य लागब, आश्चर्येँ अवाक् रहब ।

ठकुआ–कृतान्न पकमानविशेष ।

ठक्कर–टक्कर, जोरसँ परस्पर आघात ।

ठट्ठर–शरीर, शरीरपञ्जर ।

ठठरी–टाँगिकेँ पुस्तकादि रखबाक साधनविशेष ।

ठठेर, **ठठेरि** } –उ० बर्तनक व्यापारी जातिविशेष । स्त्री० ठठेरिनी

ठड़र–ठरड़, निद्रामे जायमान नासाशब्द ।

ठड़र पारब–क्रि० पार्+अब-निद्रामे नाकसँ शब्द करब ।

ठढ़का–एक प्रकारक ठाढ़ वस्तु ।

ठढ़कानर–अपेक्षितापेक्षया उच्च कानर ।

ठढ़बत्ता–टाटमे देल ठाढ़ बाती ।

ठढ़भगबा–भगबाजेकाँ पहिरल पैघ वस्त्र।

ठढ़िआ–एक प्रकारक साग ।

ठण्ढा–शीत ।

ठण्ढाठण्ढी–अ० केवल ठण्ढा समय ।

ठनक–शुष्क निहाल भूमि १। मेघध्वनि २।

ठनकब–क्रि० मेघध्वनि ।

ठनका–विद्युत्, वज्र ।

ठमाएब–ना० ठमब् + अब - अमुक-स्थानस्थित्वेन बुझब ।

ठरड़–ठड़र, निद्रामे नाकक शब्द ।

ठरब–क्रि० शीत होएब ।

ठर ठेकान–स्थितिस्थानादि ।

ठस–सुदृढ़ ।

ठहक–ग्रामरक्षकक किंवा अनको स्वसूचक शब्द ।

ठहक्का–उच्चैः शब्दपूर्वक हास्य ।

ठहक्का मारब–कि० मार्+अब-उच्चैः शब्दपूर्वक हँसब ।

ठहरब–क्रि० हि० थम्हब, स्थिति ।

ठहराओ–ठहरब, स्थिति ।

ठहाका–ठहक्का ।

ठहाठही–अतिप्रकाश (इजोरिया) ।

ठही–श्रम ।

ठहुरी–काटल छोट शाखा ।

ठाइँपठाइँ–अ० आगाँमे लगले ।

ठाँओ–स्थान १ । स्थानमे लेपन २ ।

ठाकुर–ब्राह्मण, सोनार, कमार ओ नौआक उपाधि ।

ठाठ–गृहाच्छादनक ठट्ठर १। आडम्बर २।

ठाँठ–बहिला (माल) ।

ठाठब–क्रि० ठठ्+अब-ठाठ बान्हब ।

ठाठबाट–परिच्छदादि बाह्य समग्री १। आडम्बर २ ।

ठाढ़–उत्थित, स्थित, खड़ा हि० ।

ठाढ़ि लाल–पचेसीमे पूरे दस वा पचीसमे उठल (गोटी) ।

ठानब–क्रि० ठन्+अब-अधिक वा पैघ कार्यक प्रारम्भ ।

ठाम–स्थान ।

ठामठिम–अ० कोनो-कोनो स्थानमे ।

ठार–शैत्य, ओस ।

ठारब–कि० ठार् + अब-शैत्ययुक्त करब ।

ठारि–शाखा ।

ठाँहिपठाँहि–अ० आगाँमे लगले ।

ठिकादार
ठिकेदार } –ठीका लेनिहार ।

ठिकौती–ठीका ।

ठिठुरब–क्रि० शैत्यसँ अङ्ग सङ्कुचित होएब ।

ठीक–दुरुस्त, प्रस्तुत, शुद्ध १। ठीकब २।

ठीकब–क्रि० ठिक्+अब-सकलन ।

ठीका
ठीकापट्टा } –नियत आदेयपर कार्यभार ।

ठुट्ठ–शाखाशून्य (वृक्ष) ।

ठुट्टा–प्रादेश, प्रसृताङ्गुष्ठतर्जनी-प्रमाण १। ठुट्ठप्रभेदक (वृक्षादि) २ ।

ठुड़री–अत्यन्त काँच (लताम) १। तामाक प्राचीन कच्चा २ ।

ठुनकब–क्रि० क्रन्दनविशेष ।

ठुनका–बद्धमुष्टिक अङ्गुष्ठसँ आघात ।

ठुनकाएब–ना० ठुनका+अब्+अब-ठुनका मारब ।

ठुनका मारब–क्रि० मार् + अब-बद्धमुष्टिक अङ्गुष्टसँ आघात ।

ठुमुक्का–ठुनका ।

ठुमुक्का मारब–क्रि० ठुनका मारब ।

ठुसब–क्रि० बलपूर्वक अन्तःप्रवेशन ।

ठुसुआ–जकरा मध्यमे मसाला ठुसल हो से (मेरिचाइ) ।

ठेक–ठेकना, अवलम्बन (इष्टकादि) १। अवधि २ ।

ठेकनगर–अवगतस्थानक (वस्तु) ।

ठेकना–झुकबाक प्रतिबन्धक अवलम्बन, अड़ानी ।

ठेकब–क्रि० उपरका स्थिर वस्तुक माथमे संयोग ।

ठेकर–निरोधोत्तरो नहि हटनिहार १ । माथक ठेस २ ।

ठेकान–पता १ । अनुसन्धान २ ।

ठेकाना–पता ।

ठेँगा–यष्टिका, दण्ड ।

ठेँगी–लघु जलौका ।

ठेँघुन–जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।

ठेँघुनिआ–ठेँघुनसँ गमन ।

ठेँघुनिआ देब–क्रि० ठेँघुनसँ चलब ।

ठेङा–हस्तधार्य दण्ड ।

ठेङी–लघु जलौका ।

ठेँठ–निकृष्ट १। वन्ध्या (गाए आदि) २ ।

ठेँठपन–निघृष्टता, नीचता ।

ठेँठा
ठेँठी } –बहुत खिआएल (कोदारि हर आदि) ।

ठेलगाड़ी–ठेलबसँ चलनिहार गाड़ी ।

ठेलब–क्रि० पाछाँसँ पकड़ि आगाँ चलाएब ।

ठेला–अङ्गमे घर्षण सँ दृढ़ भेल मांस, किण।

ठेस–पाएरमे चलबा काल स्थिर वस्तुक आघात ।

ठेसगर–ढीठ, निर्भीक ।

ठेसब
ठेस लागब } –क्रि० चलबा काल पाएरमे आहत होएब ।

ठेसी–निर्भीकता, प्रौढ़ता (निन्दामे) ।

ठेहुन–जाँघ ओ छाबाक जोड़ ।

ठेहुनिआ–ठेहुनसँ गमन ।

ठेहुनिआ देब–क्रि० ठेहुनसँ गमन करब।

ठोक–उपरसँ आघात ।

ठोकब–क्रि० उपरसँ आघात ।

ठोकर–सम्मुखसँ आघात ।

ठोकरा–उखरिमे अन्न उसकएबाक खोभीयुक्त दण्ड १ । तृणविशेष २ ।

ठोँठ–ग्रीवाक अगिला भाग १। गलरन्ध्र २ ।

ठोँठ लागब–क्रि० स्वरबन्ध होएब ।

ठोँठिआएब–ना० ठोँठिअब्+अब-ठोठँपर हाथ दए बैलाएब ।

ठोप–बिन्दु ।

ठोर–ओष्ठ ।

ठोर बिजुकब–क्रि० ओष्ठ विवृत होएब, कनबाक पूर्वरूप ।

ठोरबिदुरा–विवृत ओष्ठबाला ।

ठोराह–उ० उचित कथा अवश्य बाजि देनिहार । स्त्री० ठोराहि ।

ठोस–दृढ़ ।

ड

डकब–क्रि० उत्कट गन्धप्रकाशन ।

डकरा–विषविशेष ।

डकहा–मालक सांसर्गिक रोगविशेष, मालक महामारी ।

डकैती–डाकूक क्रिया, जान मारि वस्तु लए लेब ।

डगड़ (र)–मालक जएबाक रास्ता १। एक प्रकारक ढोल २ ।

डगडगी–माटिक गङ्गाजली ।

डगमग–डोलमाल, आन्दोलित ।

डगमगाएब–क्रि० डगमग्+अब–नौका आदिक आन्दोलन, डोलब ।
डगमगाह–आन्दोलनशील (नौका प्रभृति) ।
डगमगी–आन्दोलन ।
डगर (ड़)–मालक गमनमार्ग १ । पर्वमे ढोलक प्रत्यङ्गवादन २ ।
डगरना–मचानक भारसह डंटा १। अग्रभागसँ निचला ठारि २ ।
डगरी (ड़ी)–छोट सूप ।
डगहर (ड़), **डघड़**, **डघर**–मालक चलबासँ बनल रास्ता ।
डघड़ब–क्रि० मालक गमन ।
डङ्का–युद्धक वाद्यविशेष ।
डटकी, **डँटकी**–डण्टी, नाल, वृन्त ।
डँटगर–कड़ा रान्हल (भात) १। डाँटसँ युक्त २ ।
डटब–क्रि० सम्मुख सन्नद्ध होएब ।
डँड़कट्टा–डणकट्टा १ । डाँड़क व्रण-विशेष ।
डँड़िआ–डणिआ, स्त्रीक स्यूत परिधानवस्त्रविशेष ।
डँड़ेर–डणेर, बिचला धर ।
डणकट्टा–डँड़कट्टा, डाँड़कव्रणविशेष।
डणिआ–डँड़िआ, स्त्रीक स्यूत परिधान-वस्त्रविशेष ।
डणेर–डँड़ेर, बिचला धर ।
डण्टा–दण्ड, छोट लाठी ।
डण्टी–डँटकी, नाल, वृन्त ।
डनिपन–डानिक क्रिया ।

डपउ–डपौ, कदलीबल्कल ।
डपटब–क्रि० तर्जन, जोरसँ दबाड़ब ।
डपोड़सङ्ख–बहुत कहि किछुओ नहि देनिहार (निन्दामे) ।
डपौ–शुष्क कदलीक बल्कल ।
डफरा–वाद्यविशेष ।
डबरा–पल्बल, खत्ता ।
डबरी–छोट डबरा ।
डब्बू–तीमन परसबाक पात्रविशेष ।
डमखोड़–अशुत्क कदलीबल्कल ।
डमरू–वाद्यविशेष । सं० डमरु ।
डमाडोल–अति कम्पित ।
डम्फ, **डम्फा**–वाद्यविशेष, डफ ।
डम्भा, **डम्हा**–परिणामक पूर्वरूपापन्न (फल) ।
डर–भय, दर सं० ।
डरपोँक–भयशील (निन्दामे) ।
डरबुक–भयशील ।
डराएब–क्रि० डर्+अब–डेराएब, भीत होएब ।
डल–अनुचित आनक क्रिया, एकर केवल देख धातुक योगमे प्रयोग, 'देखू हिनक डल' ।
डसब–क्रि० दंशन ।
डहकन–गारि देबाक योग्य सम्बन्धिकक प्रति गारि १। गीबतबद्ध गारि २ ।
डहकनुआ–गारि देबा योग्य सम्बन्धिक ।
डहरगेन–अगण्य ।
डहरा–सुगरक बच्चा ।
डाइनि–स्त्री० डाकिनी, मारणादि क्रिया कएनिहारि ।

डाक–मारणपूर्वक धन हरण, डाकूक क्रिया ।
डाकनि–कान लग जोरसँ पढ़बाक सर्पविषहारक मन्त्र ।
डाकनि देब–क्रि० कान लग जोरसँ मन्त्र पढ़ब ।
डाका–दस्युकर्म, डाक, मारणादिपूर्वक बलात् धनहरण ।
डाकू–दस्तु, जागलक बलात् धन-हरणकर्त्ता ।
डाकू सफिआरा–दस्युप्रभृति ।
डाँग–डाङ, दण्ड, ठेँगा ।
डाँगर–डाङर, वाद्यविशेष, एकतारा ।
डाङ–डाँग, दण्ड, डण्टा, ठेँगा ।
डाङर–नाल १ । वाद्याविशेष २ ।
डाँटब–क्रि० डँट्+अब–क्रोधपूर्वक वाचा विरोध दबाड़ब, गञ्जन करब ।
डाँटी–डँटकी, नाल ।
डाँड़–कटि, शरीरक मध्यप्रदेश ।
डाँड़ब–क्रि० डँड्+अब–दण्डन ।
डाँड़ि–रेखा ।
डाढ़ी–दूध औँटलापर पात्रमे सक्कत भए बैसल दुग्धविकार ।
डाण–डाँड़, कटि ।
डाणब–क्रि० डण्+अब–डाँड़ब, दण्डन ।
डाबर–स्नानादिक अयोग्य जलाशय, पैघ पल्बल ।
डाबा–माटिक पात्रविशेष ।
डाभ–दर्भ, तृणविशेष १ । काँच नारिकेर २ ।
डाभी–दर्भ, तृणविशेष ।
डामरु–डमरू, वाद्यविशेष ।
डाम्हं–डम्भा, पकबाक पूर्वरूपापन्न (फल)।

डारि–शाखा ।
डालना–कदीमा प्रभृति अनेक फलसँ सिद्ध तीमन ।
डाला–वंशरचित वितत पात्रविशेष ।
डाली–छोट डाला ।
डाँस–दंश, माँछीसँ पैघ तत्तुल्य पतङ्गविशेष ।
डाँसब–क्रि० डस्+अब–दंशन, सर्पादिक काटब ।
डाह–दाह १ । असूया, ईर्ष्या २ ।
डाहब–क्रि० डाह्+अब–दहन, जराएब ।
डिगिस, **डिग्गिस**–काष्ठमजूषाविशेष ।
डिठौरी–दृष्टिदोषसँ जात व्रण ।
डिँड़िआएब–क्रि० डिँड़ि+अब–गाए प्रभृतिक शब्द करब ।
डिबिआ–बन्द कए रखबाक छोट पात्रविशेष ।
डिमहा, **डिम्हा**–कनीनिका, आखिक कृष्णगोलक ।
डिहबार–डीहक अधिपति, ग्राम-देवता।
डिहार–प्राचीन डीह ।
डिहुली–छोट डीह ।
डीक–अधिक अँटकल (जलादि) ।
डीक लागब–क्रि० लग्+अब–अधिक जलादिक अँटकब ।
डील–मोट देह ।
डीलडोल–आडम्बर ।
डीलाडीली–जीवनपर्यन्त ।
डीह–वासभूमि ।
डीही–डीहबाला १। ओहि डीहक प्राचीन वासी २ ।

डुग्गी–वाद्यविशेष ।
डुबकुनिआ–पानिमे निमग्न चलब ।
डुबकुनिआ मारब–क्रि० मार्+अब–पानिमे डूबिकेँ तरहितर हेलन करब ।
डुबब–क्रि० निमज्ञन ।
डुबाब–जलीय पक्षिविशेष ।
डुब्बा–पानिमे मुइल ।
डुब्बी–डुबब, निमज्जन ।
डुब्बी मारब–क्रि० मार्+अब–पानिमे डूबिकेँ हेलब ।
डुम्मरि–उदुम्बर, वृक्षविशेष ।
डूब–निमज्ञन ।
डूबब–क्रि० डुब्+अब–निमज्ञन ।
डूम–डूब, निमज्ञन ।
डूमब–क्रि० डुम्+अब–निमज्ञन ।
डेउढ़ी–धनिकक निवासालय ।
डेओढ़–अर्धविषम ।
डेओढ़ा–आधा अधिक, डेढ़ बर ।
डेओढ़ी–ड्योढ़ी, धनिकक निवासालय ।
डेग–अग्रिम भूमिमे पादारोपण, चलबामे पादन्यास ।
डेगची–तण्डुलपाकपात्रविशेष ।
डेगाडेगी–अ० क्रमशः डेग बढ़बैत ।
डेगार–झट-झट डेग देनिहार, तेज चलनिहार ।
डेँगाएब–क्रि० डेँगब्+अब–डाँगसँ मारब।
डेँगी–छोट नौका ।
डेङाएब–क्रि० डेङब्+अब–डाँगसँ मारब।
डेङी–छोट नौका ।
डेढ़–आधा अधिक (रुपैआ, सेर, मन आदि) ।
डेढ़ बर–कोनो वस्तुक परिमाणसँ तकर आधा अधिक परिमाण बाला (वस्तु) ।
डेढ़बा–मत्स्यविशेष ।
डेढ़हत्थी–डेढ़ हाथक (अर्थात् छोट) लाठी ।
डेन–मणिबन्धक उपरका अङ्ग ।
डेँफ–तृणशूक ।
डेर–वक्रवीक्षणस्वभावक (आँखि) १। तादृश अक्षियुत २ ।
डेरा–आवास ।
डेराएब–क्रि० डेर्+अब–डराएब, भीत होएब ।
डेरादार–मनसिआसँ आन पाकालयमे नियुक्त ।
डेली–माछ रखबाक पात्रविशेष ।
डोक–स्वरभङ्ग ।
डोक लागब–क्रि० स्वरभङ्ग प्राप्ति ।
डोकहर–पक्षिविशेष ।
डोका–क्षुद्र शङ्ख ।
डोँड़ा / **डोणा** }–अधिक लम्बा गँहीड खेत (मृत नदी पश्चात् डोँड़ा भय जाइछ) ।
डोभ–तृणविशेष ।
डोम–उ० चाण्डाल जातिविशेष । स्त्री० डोमिनि ।
डोमउ–डोमक बनाओल (बंशपात्र) ।
डोमनी–हथकल पैसएबाक केबाड़क यन्त्र १ । नृत्यविशेष २ ।
डोमरा–(डोम, अनादर मे) ।
डोमिनी–स्त्री० डोम जातिक स्त्री ।
डोरा–सूत्र, ताग ।

डोरि–अरघनी, वस्त्र टँगबाक लटकाओल डोरी वा बाँस १ । खोपा बन्हबाक डोरी २ । गमनसौकर्य ३ ।
डोरिआ–अनेक सरल रेखासँ युक्त (वस्त्र) ।
डोरिआएब–क्रि० सक्रमतासम्पादन ।
डोरिगर–गमनागमनमे सुकर ।
डोरी–साबय, सन प्रभृतिक बाँटल रज्जु ।
डोल–भूषणविशेष १ । पानि भरबाक पात्रविशेष २ ।
डोलब–क्रि० कम्पन ।
डोलमाल–कम्पित ।
डोली–दोली, शिबिका ।
ड्योढ़–डेओढ़ ।
ड्योढ़ा–आधा अधिक ।
ड्योढ़िआ–ड्योढ़ि क्रमक (टाट-आदि।)
ड्योढ़ी–अन्तःपुर १ । नृपालय २ ।

ढ

ढक–स्वर्णादि तौलबामे रुपैआ अठन्नी प्रभृतिक प्रतिनिधि परिमाण ।
ढकढक करब–क्रि० वस्तुक संचालनसँ तदभ्यन्तरस्थ वस्तुक ढकढक शब्द करब ।
ढकढकाएब–क्रि० ढकढक् + अब–ढकढक करब ।
ढकढोरब–क्रि० उठाए-बैसाए हड़बड़ाए नाना वस्तु देखब (निन्दामे) ।
ढकढोल–पैघ (निन्दामे) ।
ढकना–सरबासँ पैघ तादृश मृत्पात्र ।
ढकब–क्रि० मिथ्या आत्मप्रशंसा करब ।
ढक्का–सं० डफरा ।
ढङ्गर–चातुर्य, प्रकार, गहड़ि ।
ढङ्ग–उ० चतुर, अधिक गहड़ि बाला ।
ढट्ठा–ढाठ, अवरोधक १ । डाँड़मे आधा बान्हल धोती २ ।
ढट्ठा मारब–क्रि० मार्+अब–आधा पहिरि आधा धोती डाँड़मे बान्हब।
ढठिआएब–ना० ढाठसँ अवरोधन १। ढाठी लागब (ढठिआइत अछि)२। ढाठी लगाएब (ढकिअबैत अछि) ३ ।
ढड़रा ओदरब–क्रि० दाहादिसँ चमड़ा ओदरब ।
ढनढनाएब–क्रि० ढनढन्+अब–ढनढन शब्द करब, मेघध्वनि ।
ढनमन–अयथावत् स्थित (बासन आदि)।
ढनमनाएब–क्रि० ढनमन् + अब–अयथोचित स्थित होएब ।
हढनमनाह–अयथावत् रहनिहार (घैल आदि) ।
ढनमनी लागब–क्रि० लग्+अब–वारंवार ढनमनाएब ।
ढबक–अधिक मोसिक पतन ।
ढबकब–क्रि० अधिक मोसि खसब ।
ढबकाह–अधिक लप (भूमि) ।
ढरक–क्रमिक नीच (भूमि) ।
ढरकब–क्रि० टघड़ब ।
ढरकाह–अधिकप्लव (भूमि) ।
ढरब–क्रि० जलादि द्रव वस्तुक पात्रद्वारा भूपतन १ । शीतला व्रणक अनुकूल होएब २ ।
ढरुआ–ढारिकेँ बनाओल (लोहिआ प्रभृति) ।
ढलइ / **ढलै** }–मत्स्यविशेष ।

ढहनाएब–क्रि० ढहन्+अब–अयथोचित स्थितिक होएब ।

ढहब–क्रि० माटिप्रभृति फाटिकेँ उपरसँ खसब ।

ढहलेल–बूड़ि, मूड़ ।

ढाक–ढक्का, वाद्यविशेष ।

ढाकन–ढकना, मृत्पात्रविशेष ।

ढाकी–पैघ छिट्टा, धान्यादि उद्वहनार्थ वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

ढाठ–मालक अवरोधक वंशादि ।

ढाठब–क्रि० ढठ्+अब–ढाठसँ अवरोधन।

ढाठी–रीति ।

ढाढ़–धान्यादि रखबाक वंशरचित बृहदाकार पात्र ।

ढाढ़स
ढाँढ़स } –धैर्य ।

ढाबा–फुटएबाक भेद ।

ढाबा लगाएब–क्रि० लगब्+अब–परस्पर विरोधक उत्पादन ।

ढाबुस–पैघ पीरा (बेँग) ।

ढार–उतार, प्लव ।

ढारब–क्रि० ढार्+अब–द्रव वस्तु (जलादि) तथा अन्नादिक पात्र द्वारा अधःपातन ।

ढाल–तरवारिक निरोधक गेँड़ाक चाम ।

ढाहब–क्रि० क्रमिक उपरसँ तोड़िकेँ खसाएब ।

ढाही–माथमे परस्पर आघात ।

ढाही लड़ब–क्रि० माथसँ परस्पर आघात करब (भेणा आदिक) ।

ढिकुरी–छोट मृत्खण्ड ।

ढिठपन–निर्भयता, प्रौढ़ता ।

ढिठाइ–हि० निर्भयता ।

ढिठिआएब–ना० ढीठ+अब–ढीठ (प्रौढ़) होएब ।

ढिँड़री–स्त्री० जारपुरुषसँ गर्भवती ।

ढिढ़मदरा–केवल पेट भरनिहार (निन्दामे)।

ढिढुका–बीचमे उच्च भूमि ।

ढिढुकाह–मध्यमे उच्च भूमिसँ युक्त (खेत आदि) ।

ढिढुकी–बीचमे उच्च माटि ।

ढिलढिल–शिथिल, संलग्न नहि होएनिहार (औँठी–प्रभृति) ।

ढिलढिलाह–कनेक ढिलढिल ।

ढिली
ढिल्ली } –शिथिलता, मन्दता ।

ढीठ–निर्भय ।

ढीँढ़–जारपुरुषसँ सगर्भ पेट ।

ढील–शिथिल १ । संलग्न नहि भेल (औँठी आदि) २ । यूका, केशकीटविशेष ३ ।

ढुकब
ढूकब } –क्रि० ढुक्+अब–हठात् प्रवेश करब ।

ढेउआ–पैसा, पण, पाइ ।

ढेउआही–एक ढेउआ प्रमाणक बटिखारा।

ढेकरब–क्रि० उद्गार, कण्ठमार्गे वायुनिःसरणशब्द करब ।

ढेका–पाछाँ दिस खोँसबाक वस्त्रक प्रान्त ।

ढेकार–उद्गार ।

ढेकी–धान कुटबाक यन्त्रविशेष १। अखण्ड (हरदिप्रभृति) २ ।

ढेकुल–करीन आदिमे बाँसक जड़िमे बान्हल स्थूल वस्तु १ । ढेकीमे समीबाला अङ्ग २ ।

ढेँग
ढेङ } –छोट तथा मोट लकड़ी ।

ढेँढ़–ढीँढ़सँ जनमल, जारल ।

ढेढ़बा–नढ़चेतन ।

ढेप–मृत्तिकाखण्ड ।

ढेपचेप–छोटपैघ सभ प्रकारक ढेप ।

ढेपाओज–वारंवार ढेप फेँकब ।

ढेबा–भेदबुद्धि ।

ढेबा लगाएब–क्रि० लगब् + अब–भेदबुद्धिक उत्पादन ।

ढेबाहि–वारंवार प्रवृत्ति ।

ढेबाहि लागब–क्रि० वारंवार एक कार्यक प्रवृत्ति होएब ।

ढेर–राशि, पुञ्ज १। राशीभूत, पुञ्जीभूत २ ।

ढेलमासु–जोरसँ ढेप फेकबाक रज्जुयन्त्र ।

ढेला–हि० ढेप ।

ढेँसब–क्रि० मालक उकासी करब ।

ढेसरि
ढेसरी } –मडुआप्रभृतिक सीस ।

ढेहा–आघात, वेगापन्नक संयोग ।

ढेहिआएब–क्रि० ढेहि+अब–विना हेतुक इतस्ततः करब (निन्दामे) ।

ढोँग–विशाल छोट काठक खण्ड ।

ढोँगा–पैघ बूड़ि, महामूढ़ ।

ढोङ–विशाल छोट काष्ठखण्ड ।

ढोङा–पैघ बूड़ि, महामूढ ।

ढोँढ़–सर्पविशेष, डुण्डुभ १। पैघ ढोँढ़ी २।

ढोँढ़ी–नाभी ।

ढोल–पटह, वाद्यविशेष ।

ढोलक–मृदङ्गाकार वाद्यविशेष ।

ढोलकी–खजुरी, वाद्यविशेष ।

ढोलढाक–पटह, ढक्का, प्रभृति ।

ढोलहो–मुनादी, ढोल बजाए वार्ता देब ।

ढोलिआ–ढोल बजओनिहार ।

ढोली–दू सए पातक पानक मूठि ।

ढोही–बुड़िबक (निन्दामे) ।

ढौर–पिठारक लेप ।

ढौरब–क्रि० पिठारसँ लेपन ।

त

त–अ० स्वीकार, एहिमे अकार गुरूच्चारण ।

तँ–अ० विशेष, तु सं० १ । तखन, तदा सं० २ ।

तइओ–अ० तथापि ।

तकड़ार–वि० विवाद, झगड़ा, विरोध ।

तकड़ारी–वि० विवादग्रस्त ।

तकथपोस
तकथपोस्त } –वि० काठक खाट ।

तकथा–सिन्धुक आदि बनएबा योग्य पातर ओ चाकर कए चीरल काठ, पट्टा ।

तकथी–छोट तकथा, फलक ।

तकलीफ–वि० क्लेश ।

तकेआ–उपधान, गेड़ुआ ।

तक्र–सं० जीरलवणयुक्त मथल दही ।

तखन–अ० ताहि क्षणमे, तदुत्तर ।

तखनुक
तखनुका } –ताहि कालक ।

तगड़–तगर, पुष्पविशेष ।

तगबा–सर्वविशेष ।

तगर–सं० पुष्पविशेष, तगड़ ।

तगादा
तगेदा } –वि० आदेयक माँग ।

तग्गी–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।

तङ
तङ्ग } –वि० दिक्क, व्याकुल ।

तच्छ–वायुसँ फूलल सक्कत (पेट) ।

तज–त्वक्, ओषधिविशेष ।

तड़क–चारक आधारभूत लकड़ी ।

तड़कब–क्रि० शब्द करब ।

तड़का–कानक भूषणविशेष ।

तड़की–कानक भूषणविशेष, छोट तड़का।

तड़ख–तड़क, चारक आधारभूत काष्ठ ।

तड़(र)गर–कड़ा ।

तड़(र)पब–क्रि० फानब ।

तड़फड़–अ० शीघ्र ।

तड़फड़ी–शीघ्रता ।

तड़िपत–तालीपत्र, बजरबट्टूक पात ।

तड़ेरा–बनसीक डोरीमे बान्हल कोढ़िला आदि ।

ततए–अ० ताहि ठाम ।

ततखनात–अ० तत्क्षणात्, ताही क्षणमे ।

ततनी
ततने } –ताहि अल्प परिमाणक ।

ततबा–ताहि प्रमाणक ।

ततमत–तारतम्य ।

ततमताएब–क्रि० ततमत्+अब–तारतम्य करब ।

ततमताह
ततमतिआ } –तारतम्य कएनिहार ।

ततमा–जातिविशेष ।

तत मारि मारब–क्रि० ततेक मारब ।

ततमिनी– स्त्री० ततमा जातिक स्त्री० ।

ततय (ए)–अ० तत्र, ताहि ठाम ।

ततहि–अ० ताही ठाम, तत्रैव सं० ।

ततहु–अ० ताहू ठाम, तत्रापि सं०।

ततारब–क्रि० ततार्+अब–बड़क दूधप्रभृति लसिगर वस्तु बेमाए आदिमे दए आगिक ताओ देब ।

तती काल–ततेक काल ।

तती खन–ततेक क्षण ।

ततेक–ताहि परिमाणक ।

तत्पर–सं० उद्युक्त, सावधान ।

तनतन–पीजु आदिक पूर्णतासँ वेदना–विशेष ।

तनतनाएब–क्रि० तनतन्+अब–पूर्वोक्त वेदनाविशेषयुक्त होएब ।

तनतनी–पूर्वोक्त वेदना ।

तन्द्रा–आलस्यादिवश आँखि किछु ताकब ओ किछु मुनब, आँखिक सर्वथा मुद्रणक अभाव ।

तपत–तप्त, उष्ण ।

तपसी–तापसि ।

तब–रोटी पकएबाक लौहपात्रविशेष ।

तबक–पान आदिमे उपरसँ सटबाक वस्तुविशेष ।

तबब–क्रि० तप्त होएब ।

तबला–वाद्यविशेष ।

तबालची
तबाल्ची } –तबला बजओनिहार ।

तबाह–वि० व्याकुल ।

तमकुलाइनि
तमकुलानि } –तमाकूक गन्ध १। तमाकूक गन्धसँ युक्त २।

तमकुलाह–तमाकूक सम्पर्की (गूआ आदि) ।

तमघैल–ताम्रघट १ द्रव्यक घैल २ ।

तमतम करब–क्रि० क्रोधाकुल होएब।

तमनी–तामनि, तामब, कोदारिसँ क्षेत्रमृत्तिकोघद्‌टन ।

तमसगीर–तमासा देखनिहार ।

तमसाएब–ना० तामस + अब–तामस (क्रोध)सँ युक्त होएब ।

तमसाह–उ० क्रोधी । स्त्री० तमसाहि ।

तमाकू
तमाकूल } –तमाखु, खैनी ।

तमासा–नृत्याद्युत्सव १। अद्भुत दृश्य २ ।

तमोलि–उ० पानक व्यवसायी जातिविशेष।

तमोलिनि–स्त्री० तमोलि जातिक स्त्री ।

तमौर–सितार प्रभृतिक तुम्बा ।

तम्बू–उपकार्या, पटगृहविशेष ।

तर–तल, अभ्यन्तर १ । वृक्षादि आच्छादक वस्तुक नीच देश २ ।

तरउपरा–डाँड़क नीचाँ उपर दुहूमे पहिरल स्त्रीसम्बन्धी (वस्त्र) ।

तरक–अत्युष १ । तर्क २ ।

तरकट–तरमे जमल घृतादिक विकार ।

तरका–तरमे स्थित ।

तरकारी–व्यञ्जन ।

तरक्की–वि० उन्नति ।

तरख–चारक आधारभूत काष्ठविशेष ।

तरखाएब–क्रि० तरख्+अब–किञ्चित् शुष्क होएब ।

तर(ड़)गर–कड़ा (खढ़ आदि) ।

तरङ– तरङ्ग १ । आवेग २ ।

तरङब–क्रि० शुष्कतासँ खेत जोतबा योग्य नहि रहब ।

तरङ्ग–सं० ऊर्मि १ । आवेग २ ।

तरहुत–वि० चिन्ता ।

तरपट–बीच, तारतम्य, अन्तर ।

तरफ–वि० दिश ।

तरब–क्रि० तैल वा घृतमे व्यञ्जनक पाक ।

तर-बतर–अ०वि० समग्र देहमे अधिक (घाम चलब) ।

तरबा–चरणतल ।

तरबातारू–तरबा रगड़ब प्रभृति निखिल परिचर्या ।

तरबोरा–पश्चिम दिशाक इन्द्रधनुष ।

तरल–तैलादिपक्व (व्यञ्जन) ।

तरहत्थी–हस्ततल ।

तरहरा–कृत्रिम खाधि, धरतीक तर देने जयबाक कृत्रिम अवकाश ।

तरहा–घोड़ाक गद्दी १ । गहीँड़ रहबाक स्थान २ ।

तराउपर
तराउपरी } –उ० तर उपर कए राखल ।

तराए–कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

तराजू–तुला ।

तराटक
तराटक्क } –त्राटक, आँखिक चिरकालिक एकाग्रता ।

तराय–कट, बिछाओन, तालपत्रक पटिआ।

तरास–अधिक पिआस ।

तरासब–क्रि० तरास्+अब–उपरसँ काटब ।

तरी–वृक्षतल १ । वृक्षतलक उपजा २ ।

तरुआ–तरल (तरकारी) ।

तरुआरि–करवाल, खड्ग, अस्त्रविशेष।

तरेगन–तारा ।

तरेड़ा–बनसीक डोरीमे बान्हल कोढ़िला आदि ।

तरैआ–बानिक प्रभेद, तराएतुल्य (बानि)।

तरोटा–पौतीप्रभृति पात्रक तरका खप्पा ।

तर्क–सं० अनुमान ।

तलबी–वि० आह्वान ।
तलास–वि० अन्वेषण ।
तलासब–वि० क्रि० तलास्+अब-अन्वेषण करब ।
तली–वस्तुक तल, अधस्तल ।
तल्ला, **तल्ली** –जूताक निचला भाग १ । अधस्तल २ ।
तसबीर–वि० चित्र ।
तसमइ, **तसमै** –पायस, खीर, क्षीर ।
तसर–रेशमक प्रभेद ।
तसला–पाकपात्रविशेष ।
तसली–छोट तसला ।
तह–मोड़ब, आवृत्ति ।
तहदर्ज–वि० प्रथम चौपेतल, परम नवीन (वस्त्रादि) ।
तहसनहस–वि० छिन्न-भिन्न ।
तहसील–वि० ओसूल ।
तहसीलदार–वि० माल ओसूल करबामे नियुक्त ।
तहाँ–अ० ताहि ठाम ।
तहिआ–अ० ताहि समयमे ।
तहिना–अ० ताही प्रकारेँ ।
तहुना–अ० ताहू प्रकारेँ ।
ता–अ० तावत् ।
ताइ–दही पौरबाक वंशपात्र ।
ताओ–ताप, ज्वाला १ । अच्छिन्न एक कागत २ ।
ताक–समयक आनुकूल्य १। अन्वेषण २ ।
ताकति–वि० शक्ति, बल ।
ताकब–क्रि० तक्+अब-अवलोकन १ । अन्वेषण २ ।
ताक-हेर, **ताकाहेरी** –खोजपुछारी, निरीक्षण ।
ताकूति–रक्षा ।
ताकूती–तत्परता ।
ताख–चक्का
ताखी–ताज, एक प्रकारक टोपी ।
ताग–सूत्र, डोरा ।
तागब–क्रि० तग्+अब-दूर दूर कए सिअब ।
ताँगा, **ताङा** –बड़दसँ रहित शकट, गाड़ी ।
ताज–क्रि० शिरोधार्य वस्त्रविशेष १। राजमुकुट २ ।
ताड़–तात्कालिक आवश्यकता ।
तातकाल–अ० तत्काल, सम्प्रति १ । ताहि काल २ ।
ताँति–चामक तन्तु ।
तात्पर्य–सं० अभिप्राय ।
तान–गीत गएबामे शब्दविशेष १। तानब २।
तानपूरा–वाद्यविशेष ।
तानब–क्रि० तन्+अब-जोरसँ पसारि बान्हब [तम्बू तानल अछि] ।
तानी–वस्त्रनिर्म्माणक नामानामी सूत १। एक यज्ञोपवीत २ ।
तापसि–महादेवक पण्डा, ब्राह्मणजाति-विशेष ।
तावत्–अ०सं० ता धरि ।
ताबेदार–वि० नोकरी, हुकुम मानब ।
ताम–ताम्र, धातुविशेष ।
तामदान–नरवाह्य वाहनविशेष ।
तामब–तम्+अब-कोदारिसँ माटि काटि केँ उनटाएब ।

तामस–क्रोध ।
तामा–चूड़ा चाउर नपबाक काष्ठक पात्रविशेष ।
तामा मानब–क्रि० आज्ञाक अङ्गीकार ।
तामि–कालज्ञानार्थ यन्त्रविशेष ।
ताम्बूल–सं० लगाओल पान १ । वि० तारतम्य २ ।
तार–द्रव्यक तन्तु १ । तालवृक्ष २ ।
तारकून, **तारकूल** –काँच तालफल ।
तारतम्य–सं० कर्तव्याकर्तव्य-विचार १ । अन्तर, वैषम्य २ ।
तारब–क्रि० भिजल धानकेँ किञ्चित् भुजब ।
तारभूज–लताफलविशेष ।
तारमताड़, **तारमतार** –अ० अविरामेण बारबार ।
तारमूली–औषधिविशेष ।
तारा–सं० नक्षत्र, तरेगन ।
तारी–तालमद्य ।
तारु–तालु ।
ताल–हास्यास्पद चेष्टा १। सं० तान २।
ताल ठोकब–क्रि० बाँहि पर करतलध्वनि करब ।
तालमखाना–ओषधिविशेष ।
तालमिसरी–बनाओल एक प्रकारक मिसरी ।
ताला–यन्त्रिका, बन्द करबाक यन्त्र ।
ताली–हास्यास्पद नाना चेष्टा कएनिहार ।
ताली देब–क्रि० आनकेँ उद्देश कए करतलध्वनि करब ।
तालीसपत्र–सं० ओषधिविशेष ।
तालुक–वि० अधीन ।
तालुका–वि० जमीन्दारी टुकड़ा ।
तास–खेलएबाक ५२ गोट मोट कागतक पत्र ।
तासा–भेरी, वाद्यविशेष ।
तिअ–स्त्री० स्त्री ।
तिउरा–पुष्पविशेष ।
तिखुर–आँटाक प्रभेद ।
तिग्गी–तास आदिक तेसर फर्द ।
तितपड़ली–तिक्तपटोली, लताफलविशेष।
तितपरली–लताफलविशेष ।
तितब–क्रि० भीजब, जलादिसँ सार्द्र होएब ।
तितरिम–वृक्षविशेष ।
तिरि, **तितीर**, **तित्तिर** –तित्तिर, पक्षिविशेष ।
तितुआ–तृणविशेष ।
तिनकनमाही–तीन कनमाक (बहिखारा वा नपना) ।
तिनखण्डी–भूषणविशेष ।
तिनपइ, **तिनपै** –तीन पाओक बटिखारा वा नपना ।
तिरछाह–तिर्यक्, असरल ।
तिरछी–वक्र ।
तिरछी काटब–क्रि० असरल मार्गेँ जाएब ।
तिरतीआ–तृतीय तिथि ।
तिरपन्न–त्रिपञ्चाशत्, ५३, संख्याविशेष।
तिरमिराएब–क्रि० तिरमिर्+अब-आबल्यसँ बहुधा झुकब ।
तिरमुहानी–तीन मार्गक सन्धिस्थल ।

तिरसट्ठि–त्रिषष्ठि, ६३ ।
तिरसट्ठिम–तिरसट्ठिक पूरण, त्रिषष्ठितम ।
तिरहुता–मिथिलाक अक्षर ।
तिरहुताम–मैथिलोचित (वेषादि) ।
तिरहुति–तीरभुक्ति, मिथिला ।
तिरहुतिआ–तिरहुतिमे भेल १ । तिरहुतिवासी २ ।
तिराएब–क्रि० तिर्+अब-तैआर कएला पर धान आदिक मोन पूरब ।
तिरान्नबे–त्रयोनवति, ९३ ।
तिरान्नबेम–तिरान्नबेक पूरण, त्रिनवतितम।
तिरान्नब्बे–त्रयोनवति, ९३ ।
तिरान्नब्बेम–तिरान्नब्बेक पूरण, त्रिनवतितम।
तिल–सं० अन्नविशेष ।
तिलक–सं० कपारक चानन ।
तिलका–वृक्षविशेष ।
तिलकोड़–लताविशेष, बिम्बफल ।
तिलठी–तिलयुक्त मिष्टान्नविशेष ।
तिलबा–तिलक मिष्टान्नविशेष १ । तिलक, देहमे तिलाकार बिन्दु २ ।
तिलरी–कण्ठक भूषणविशेष ।
तिलाठी–तिलक डाँट ।
तिलासँकराँति / **तिलासंक्रान्ति** }–मकर-संक्रान्ति ।
तिलौरी–तिलमय बटी, व्यञ्जनविशेष ।
तिसिऔटा–तीसीक सनसँ बीनल ।
तिसिऔरी–तीसीक वटी, व्यञ्जनविशेष ।
तीअ–तृतीया तिथि ।
तीअर–जातिविशेष ।
तीआ–तास आदिक तेसर फर्द ।
तीख–तीक्ष्ण ।
तीत–तिक्त ।
तीतब–क्रि० तित्+अब-जलादिसँ आर्द्र होएब, भीजब ।
तीन / **तीनि** }–त्रिसंख्यक, ३ ।
तीमन–तेमन, झोर ।
तीर–बाण १ । सं० तट २ ।
तीरब–क्रि० पकड़िकेँ घैँचब ।
तीरा–पुष्पविशेष ।
तीसी–अतसी सं० ।
तुअब–क्रि० तु+अब-बेलसि भए फलादिक पतन १ । नक्षत्रक प्रवेशदिनमे किञ्चित् जलबिन्दु पतन २ ।
तुतिआ–तुत्थ ।
तुनब–क्रि० चुटकीसँ तूरक विश्लेषण ।
तुन्न–फुलल ।
तुफान–वि० पैघ बिहारि, भारी उपद्रव ।
तुमब–क्रि० तूरक विशकलन करब ।
तुम्बा–सुखाएल सजमनिक ठट्ठर ।
तुम्बी–सं० छोट तुम्बा १ । रक्तमोक्षणक यन्त्रविशेष २ ।
तुम्मा–तुम्बा ।
तुम्मी–तुम्बी ।
तुरकान–तासक क्रीडाविशेष ।
तुरन्त–लगले ।
तुरफान–चीनी बनएबाक यन्त्रविशेष ।
तुरभरा–जाहिमे तूर भरल रहए से (दोहरि) ।
तुरमारि–समयपर नहि बाहनिहारि, दोसरा-तेसरा वर्षमे गर्भ लेनिहारि (माल)।
तुरहा–जातिविशेष ।

तुरही–वाद्यविशेष ।
तुराइ–अधिक तूर देल ओढ़ना ।
तुरुक–तुरुष्क, तुर्कदेशोद्भव, म्लेच्छ ।
तुरोड़ा / **तुरोरा** }–नेनाक हेतु तूरबाला छोट गद्दी ।
तुल–सम १ । तैआर २ ।
तुलना–सं० सादृश्य, उपमा ।
तुलब–क्रि० संनद्ध होएब ।
तुलबुलिआ–चञ्चल (बालिका) ।
तुलसी–सं० क्षुपविशेष ।
तुसारी–माघक कुमारिकाक एक पाबनि ।
तूअब–क्रि० तु+अब-बेलसि भए फलादिक पतन १ । नक्षत्रक प्रवेशदिनमे चिञ्चित् जलबिन्दुपतन २ ।
तूँति–फलविशेष ।
तूँती–पक्षिविशेष ।
तूनब–क्रि० तुन्+अब-चुटकीसँ तूरक विश्लेषण करब ।
तूनि–वृक्षविशेष ।
तूमब–क्रि० तुम्+अब-तूरक विश्लेषण ।
तूर–तूल, कपास ।
तूल–सज्ज, प्रस्तुत ।
तृणकुङ्कमा–ओषधिविशेष ।
तृतीया–सं० तेसर तिथि ।
तेँ–अ० तस्मात्, ताहि हेतु ।
तेआगब–क्रि० तेआग्+अब-त्यागब, छोड़ब ।
तेकठ–संश्लिष्ट तीन काठ १ । असरल कार्य २ ।
तेकठी–तीन काठी वा बाँसकेँ जोड़ि बनाओल आधार ।
तेकमिआ–तीन तीक्ष्णाग्र कामिबाला अस्त्र।
तेकुसा–तीन कुशसँ बनाओल ।
तेखार–तीन बेर जोतल ।
तेखारब–क्रि० तेखार्+अब-तेसर बेर जोतब ।
तेगा–अस्त्रविशेष ।
तेगाड़–तीन गाड़ (पटएबामे) ।
तेगुन–त्रिवृत्त, त्रिगुण ।
तेगुनाएब–ना० तेगुन+अब-त्रिगुणीकरण।
तेघारब–क्रि० तेघार्+अब-वारंवार पूछब।
तेज–वि० तीव्र १ । तीक्ष्णबुद्धि २ ।
तेजपात–पत्र सं० ।
तेजब–क्रि० त्यागब ।
तेजबल–ओषधिविशेष ।
तेजाब–वि० गन्धकादिक सारांश तीक्ष्ण द्रव ।
तेजी–वि० तीव्रता ।
तेठठ–तीन ठाम निवासगृह ।
तेड़ारि–पक्षिविशेष ।
तेतर–पचेसीमे तीन खुद्दरेँ लाल होएबा योग्य (गोटी) १ । तीन कन्याक उत्पत्तिक अनन्तर उत्पन्न (बालक) २ ।
तेतरि–तिन्तिड़ी, वृक्षविशेष ।
तेतलिआ–बएलगाड़ीक एक अङ्ग ।
तेतार–तृणविशेष ।
तेताल–तीन तालबाला (राग) ।
तेँतालिसम–त्रिचत्वारिंशत्तम, तेँतालीसक पूरण ।
तेँतालीस–त्रिचत्वारिंशत् ४३ ।
तेँतिस–त्रयस्त्रिंशत्, ३३ ।
तेँतिसम–त्रयस्त्रिंशत्तम, तेँतिसक पूरण ।
तेधरिया / **तेधारा** }–तीन धारीबाला (पसीझ) ।

तेना–अ० ताहि प्रकारेँ ।
तेनु–तिन्दुफल ।
तेनुआ–व्याघ्रविशेष ।
तेपखा / **तेपखिआ** }–तीन पक्षमे होएनिहार (गम्हड़ी) ।
तेपतिआ–शाकविशेष ।
तेपहर–तृतीय प्रहर ।
तेपाइ–वस्तुजात रखबाक चारि पादसँ युक्त तकथा (एहिमे तीनिक बोधक 'ते' पद प्रयोगक मूल विचारणीय)।
तेबट्टी–तीन दिश जएबाक मार्ग ।
तेबर–त्रिवृत्त, त्रिगुण ।
तेबरखा–तीन वर्षक (गृहादि) ।
तेबासि–तीन दिनक पर्युषित (भात आदि) ।
तेभाग–तीन भाग १। त्रिकोण (क्षेत्रादि) २।
तेमहर–अ० ताहि दिस ।
तेमहल / **तेमहला** }–तीन महलबाला, त्रिभूम (प्रासाद) ।
तेमसिआ–त्रैमासिक (शिशु) ।
तेरह–त्रयोदश, १३ ।
तेरहम–तेरहक पूरण ।
तेरहम चास–सर्वविरुद्ध बात (निन्दामे)।
तेरहा–दशाहाशौचोत्तरक (श्राद्ध) ।
तेरोदसी–त्रयोदशी तिथि ।
तेल–तैल ।
तेलगर–अधिक तेलसँ युक्त ।
तेलचट्ट–अधिक मैल ।
तेलबासा–तेल रखबाक चोँगी ।
तेलहन–तेल देनिहार अन्न (सरिसओ प्रभृति) ।
तेलही–तेलमे पक्व (सोहारी आदि) ।
तेलारि–तृणविशेष ।
तेलाह–तैलसम्पर्की (तण्डुलादि) ।
तेलि–उ० तेलक व्यवसायी जातिविशेष, तैलिक । स्त्री० तेलिनि ।
तेलिआ–सर्पविशेष १ । अनादरणीय तेलि २ ।
तेलिआरी–तेलिक आलय ।
तेलिआह–तेलिवत् मलिनवस्त्रा दिधारी ।
तेलिनि–स्त्री० तेलि जातिक स्त्री ।
तेलिबभना–तेलिकेँ पुजओनिहार ब्राह्मण।
तेसज्झा–तीनि व्यक्तिक साझी ।
तेसर–तृतीय ।
तेसरी–तृतीय (हिस्सा) ।
तेसरुकाँ–अ० तेसर वर्षमे ।
तेहड़ा–तेहरा, पैघ कोड़ल तीन थुमहाक चूल्हि ।
तेहत्तरि–त्रिसप्तति, ७३ ।
तेहत्तरिम–त्रिसप्ततितम, तेहत्तरिक पूरण।
तेहन–तादृश ।
तेहरा–पैघ कोड़ल तीन थुमहाक चूल्हि ।
तेहराएब–क्रि० तेहर्+अब-तृतीयावर्त्तन ।
तेहल्ला–उदासीन, तटस्थ ।
तेहाइ–तृतीयांश ।
तेआर–वि० दुरुस्त, सज्ज, प्रस्तुत ।
तैआरी–वि० ओरिआओन, दुरुस्ती, सुम्पन्नता ।
तैओ–अ० तथापि ।
तैस–त्रयोविंशति, २३ ।
तैसम–त्रयोविंशतितम, तैसक पूरण ।
तोँ / **तोहेँ** }–अनादरणीय सम्बोध्य, त्वम् सं० ।
तोकार–अनुचित व्यक्तिमे तोँ शब्दक प्रयोग

तोड़–झोँक १ । खेप २ ।
तोड़ब–क्रि० त्रोटन, खण्डशः करब १ । गाछसँ पुष्पादिक चयन २ ।
तोड़ा–रुपैया रखबाक जाली, थैली ।
तोड़ी–रक्तसर्षप ।
तोतराएब–क्रि० तोतर्+अब-वर्णकेँ दोहराए-तेहराए सेहराए बाजब ।
तोतराह–वर्णकेँ दोहराए-तेहराए बजनिहार।
तोनी–संयुक्त तर्जनी ओ अंगुष्ठाग्र, चुटकी।
तोप–बृहत् भुशुण्डी, अस्त्रविशेष ।
तोपब–क्रि० झाँपब ।
तोला–हि० दश मासा, परिमाणविशेष ।
तोसक–सुतबाक गद्दी ।
तोसखाना–वि० कोष ।
तौनी–उत्तरीय वस्त्र, प्रावार ।
तौल–तोलन, तुलासँ सम्मितकरण ।
तौलब–क्रि० तराजू आदिसँ परिमाणज्ञान करब ।
तौला–माटिक पैघ पाकपात्र ।
तौलिआ–हि० एक प्रकारक अँगपोछा ।
त्याग–सं० छोड़ब ।
त्यागब–क्रि० त्याग्+अब-छोड़ब ।
त्रयोदशी–सं० तेरहम तिथि ।
त्रिदोष–सं० सन्निपात (ज्वर) ।
त्रिफला–सं० अओरा, हड़ीर, बहेड़ ।
त्रुटि–सं० हीनता, दोष, छूटब ।
त्रेटह–उत्पटाङ कार्यकर्त्ता ।
त्रोटि–विश्राम (बाजब आदिमे) ।
त्वचा–सं० त्वक ।
त्वक्षहञ्च–सं० वाचा कलहविशेष ।

थ

थउआ–थौआ, संचूर्णित ।
थकथकाएब–क्रि० थकथक्+अब-स्तब्ध होएब ।
थकनी–परिश्रमजन्य वेदनाविशेष ।
थकरनी–केशमार्जनी, केश थकरबाक साधन, बद्ध कामिसमूह ।
थकरब–क्रि० केशक सम्मार्जन ।
थकुचब–क्रि० चूर्णन, चोटसँ शिथिलावयव करब ।
थकुचा–थकुचल, चोटसँ शिथिलावयवी-कृत।
थन–स्तन, स्त्रीक पयोधर ।
थनैल–नारीक स्तनमे दुग्धाधिक्यप्रयुक्त भेनिहार रोगविशेष ।
थपड़ाएब–ना० थपड़ब+अब-थापड़सँ मारब ।
थपड़ी–करतलध्वनि, ताली ।
थपुआ–चापट कोर मोड़ल (खपड़ा) ।
थम्भ / **थम्ह** }–कदलीकाण्ड, स्तम्भसदृश कदलीवृक्षाङ्ग ।
थम्हगर–थम्हि सकनिहार, भारसह, दृढ़।
थम्हब–क्रि० स्थित रहब, रुकब, ठहरना हि० ।
थर–पैघ माछक बच्चा ।
थरथर–सकम्प ।
थरथराएब–क्रि० थरथर्+अब-कापब, कम्पन ।
थरथरी–कम्प ।
थरि–माल बन्हबाक स्थान ।
थल–स्थल ।
थलकमल–स्थलकमल, कमलसन पुष्पविशेष ।

थलगर–अधिक थालसँ युक्त ।

थलथल–भितर जलमयताप्रयुक्त पाएरसँ दबि गेनिहार (भूमि) ।

थलाह–थालसँ युक्त ।

थलिआएब–ना० थलिअब्+अब-थाला (आलवाल) सँ युक्त करब ।

थाक–ढेरी, समूह ।

थाकनि–थकनी, श्रान्ति ।

थाकब–क्रि० थक्+अब-परिश्रान्त होएब ।

थाकर–धान्यविशेष ।

थान–कपड़ाक परिमाणविशेष १। देवादिक स्थान २ ।

थाना–राजकीय पदातिक स्थान ।

थाप–व्यवस्था १। निर्भरता स्थान २ ।

थापड़–चपेटा, ताड़नोद्यत करतल ।

थापना–स्थापन (देवादिक) ।

थापब–क्रि० थप्+अब-स्थापित करब ।

थापा–स्थासक, सम्पूर्ण करतललग्न पिष्टातक कुङ्कुमादिक चिह्न ।

थापी–चाकर मुङरी ।

थार–पैच थारी ।

थारी–भोजन करबाक कांस्यादिपात्र ।

थारू–जातिविशेष ।

थाल–कर्दम, कीच ।

थाल-खीच–कर्दमादि ।

थाला–आलवाल १। पुष्पादिक बीजवपन २ । लगबाक हेतु वृक्षक गाड़ल खुट्टी ३ ।

थाह–तलस्पर्शयोग्य (जलाशय) ।

थाह पाएब–क्रि० पब्+अब-तलस्पर्श करब ।

थाहब–क्रि० थाह्+अब-तलस्पर्शयोग्यताक परीक्षा करब ।

थिति–अवस्था, स्थिति १। सम्पत्ति २ ।

थितिगर–विभवशाली ।

थिर–स्थिर ।

थिराएब–क्रि० थिर्+अब - मालक आर्तवप्राप्ति ।

थीर–स्थिर ।

थुकरब–क्रि० थूत्करण, मुखस्थ वस्तुक वेगपूर्वक उद्गिरण ।

थुकहा–तृणविशेष ।

थुक्कम-थुक्का, **थुक्कम-फझैती** } –निघृष्ट कलह ।

थुथनाएब–ना० थुथनब्+अब-थुथूनसँ आघात देब ।

थुथुन, **थुथून** } –पशुक मुखाग्रभाग ।

थुमहा–कृत्रिम मृत्पिण्डविशेष ।

थुलथुल–अधिक स्थूल ।

थूक–मुखोत्पन्न जल ।

थूकब–क्रि० थुक्+अब-थूक फेकब ।

थूरब–क्रि० थुर्+अब-स्थूलयष्टिमुखसँ चूरब ।

थेथर–दुर्निवार अनेक निवारणहु नहि माननिहार (निन्दामे) ।

थेथरिऔ देब–क्रि० निराकरणहु वारंवार याचनादि ।

थेहगर–अक्षमताशून्य ।

थैली–रुपैआप्रभृति रखबाक जाली ।

थोड़–अल्प ।

थोड़बए–अ० अल्पे ।

थोड़बओ–अ० अल्पो ।

थोड़ेक–अल्प ।

थोथरब–क्रि० उत्पीड़नजनक दुलार करब १ । तीक्ष्ण अग्रक मूर्च्छित होएब २ । मूर्च्छित करब ३ ।

थोप-थाप लगाएब–क्रि० लगब्+अब-कोनहुना कलहादिक तात्कालिक निवृत्ति करब ।

थोपब–क्रि० कार्य समर्पित करब १। आच्छादित करब २ ।

थोपी–फुदनाबाला खोपाक डोरि ।

थोपी ममरखा–पानिक कातमे होनिहार चौपतिआक जड़ि, ममरखाक प्रभेद ।

थोभ–स्तोभ, समता, जलक गतिनिवृत्ति।

थोभ लागब–क्रि० लग् + अब-जलद्वयसमताप्रयुक्त प्रवाहहीन होएब ।

थोम-थाम लगाएब–क्रि० थोप-थाप लगाएब, कलहादिक तात्कालिक कयचित् शान्ति करब ।

थोर–थोड़, अल्प ।

थौआ–थउआ, संचूर्णित ।

थौका–फलविशेष ।

द

दए–अ० दय, प्रसङ्गेँ, मादए ।

दओन–करीनक कृत्रिम पनिबह ।

दओना–पुष्पविशेष ।

दओनाकदम्ब–कदम्बपुष्पविशेष ।

दक–तेजाब आदि तीव्र वस्तुक दाप ।

दकचब–क्रि० अनेक ठाम छओ देब १ । वृथा लिखब २ ।

दक्षिण–सं० अवाची दिश ।

दक्षिणा–सं० कर्मप्रतिष्ठार्थ उत्सृष्ट ।

दक्षिणी अडाँची–गुजराती एला, छोटी लाँयची हि० ।

दक्षिणी सुपारी–पूगीविशेष ।

दगदग–हृदयक कम्प ।

दगदगाएब–क्रि० दगदग्+अब-छातीक कम्पन ।

दगदगी–हृदयकम्प ।

दगध–दग्ध ।

दगधब–क्रि० व्याकुलीभाव ।

दगधल–व्याकुल (मन आदि) ।

दगनी–बाछा दगबाक लौहनिर्मित अङ्कुश ।

दग्ध–सं० जरल ।

दङ्ग–वि० दिक्क, चिन्ताऽकुल ।

दच्छिन–दक्षिण दिक् १। दक्षिण देश २ ।

दच्छिन भर–दक्षिण दिशा ।

दछिनबरिआ–दक्षिणदिगवस्थित प्रभेदक (गृहक्षेत्रादि) ।

दछिनबारि–दक्षिण दिशामे स्थित (गृहादि) ।

दछिनहा–दक्षिणदेशभव (अनादरमे) ।

दछिना–दक्षिणा ।

दछिनाहा–दछिनहा ।

दछिनाहुत–समीप दक्षिणस्थित ।

दछिनी अँडाची–उपकुञ्चिका, एला, छोटकी अँड़ाची ।

दड़रब–क्रि० चकरीसँ दलिहनकेँ विदलित करब ।

दड़ारि–दीर्घ फाट ।

दड़िमी–धान्यविशेष १। कोषरहित आमक (आमिल) २ ।

दण्ड–सं० सजाए १। ठेँगा २। व्यायामविशेष

३। कालक परिमाणविशेष, २४ मिनट ४।

दण्डताल–वद्यविशेष।

दण्डपरनाम / **दण्डप्रणाम** } –दण्डवत् पतनपूर्वक प्रणाम।

दण्डपरनाम देब / **दण्डप्रणाम देब** } –क्रि० घरसँ आरम्भ कए देवालयपर्यन्त बराबरि दण्डप्रणाम करैत जाएब।

दण्डी–तराजूक दण्ड १। सं० संन्यासी २।

दण्डीतराजू–तारात्रितयविशेष।

दँतकड़रि–दाँत कड़कड़ओनिहार।

दँतखिसोट–बहुत पातर असन्नद्ध (कपड़ा)।

दँतगर–उ० बलिष्ठ दाँतसँ युक्त।

दँतबेथा–दन्तव्यथा, दाँतक दर्द।

दँतमनि–दन्तधावन, दन्तकाष्ठ।

दँतमनि करब–क्रि० दन्तमार्जन, दँतमनिसँ दाँत साफ करब।

दँतारि–दन्तव्यथा, दाँतक दर्द।

दँतिआएब–ना० दँति+अब–दैन्यसँ दाँत देखाएब।

दँतुल–दन्तुल, पैघ दाँतबाला (मनुष्य)।

दँतुलाह–उ० किञ्चित् दन्तुल।

ददरी–डाहल शुक्तिकादि।

दन–जलमार्ग, दओन १। अ० विशेषरूपेँ अज्ञायमान, चित् सं० कश्चित् [यथा केदन, ककरादन, कोनादन]।

दनदनाएब–क्रि० दनदन्+अब–दनदन शब्द करब १। सस्फूर्ति रहब २।

दनफन–रगड़-झगड़।

दनादन–बन्दूक आदि शस्त्रध्वनिक अनुकरण १। अ० झटझट २।

दनासी–कचिआ हाँसूक दाँत।

दनूफ–द्रोणपुष्प।

दनौरी–पोस्ता दानाक वटी, व्यञ्जनविशेष।

दन्तकथा–पुस्तकमे अलिखित कथानक।

दन्तभर–स्वारस्य।

दन्तार–पु० दाँतबाला (हाथी)।

दन्ति–कौड़ीक सोड़हम अंश।

दपटब–क्रि० दबाड़ब, वाचा तर्जन।

दपाएब–क्रि० दपब्+अब–अपहरणक हेतु मन करब १। दर्प करब २।

दफदर–वि० बहीआदिक मोटा।

दफदरी–दफदर बनओनिहार वा रखनिहार।

दफादार / **दफेदार** } –वि० कोतबाल सभक सरदार।

दबओट–दाब, दबाएब, प्रतिरोध।

दबकब–क्रि० प्रच्छन्न होएब १। सङ्कुचित होएब २।

दबब–क्रि० नीच होएब, हारब, न्यून होएब १। प्रच्छन्न होएब २।

दबाओट–प्रतिरोध।

दबाड़–वाक्तर्जन।

दबाड़ब–क्रि० दबाड़्+अब–वाचा गञ्जन करब।

दबिला–बाँस काठ कटबाक काता, अस्त्रविशेष।

दम–वि० शक्ति, बल १। प्राण, श्वास २।

दमक–दमस, शब्दविशेष।

दमकब–क्रि० दमसब, मेघादिक शब्द।

दमन्ढड़हू / **दमकढू** } –दाम टुटि गेलापर नहि बिकाएल (माल)।

दमकल / **दमकला** / **दमकाला** } –पानि पटएबाक यन्त्रविशेष।

दमगर–अधिक दामक, मूल्यवान् १। अधिक दम्मक, बलवान् २। अधिक भारी ३।

दमड़ी–कच्चाक चतुर्थांश।

दमस–मेघ आदिक शब्द।

दमसब–क्रि० मेघादिक शब्द करब।

दमाइनि–खाद्य कन्दविशेष।

दमाएब–ना० दमब्+अब–दाम लगाएब, मूल्यनिर्णय करब।

दमपोख्त–वि० एक प्रकारक तीमन।

दम्पोसिआ–दाम कए पोसबाक हेतु देल (माल)।

दय–अ० हेतु, प्रसङ्ग [यथा राम दय कहल, अर्थात् रामक प्रसङ्ग कहल]।

दया–सं० कृपा।

दयाद–देआद, दायाद सं०।

दयादिनी–स्त्री० स्वामीक भ्राताक पत्नी।

दर–भाओ, विक्रयमूल्य।

दरक–विदीर्णता, फाट।

दरकब–क्रि० विदीर्ण होएब।

दरखास्त–वि० निवेदनपत्र।

दरजिआही–दरजीक टोल।

दरजी–वस्त्र सिउनिहार म्लेच्छ जातिविशेष।

दरड़ब–क्रि० दलिहनकेँ चकरीसँ विदलित करब।

दर-दरबार–खुसामदीप्रभृति।

दर-दरमाहा–मासिकवेतनप्रभृति।

दरदराएब–क्रि० दरदरब्+अब–दरदर-शब्दपूर्वक भक्षण। [यथा माल नार दरदरबैत अछि]

दरब–द्रव्य, कांस्यादि धातु।

दरबाजा–वि० घरक अग्रिम सहन।

दरबार–वि० सुसज्जित स्थानमे राजदर्शन, राजसभा।

दरबारी–वि० राजानुग्रहपात्र, अधिक काल राजाक समीप गेनिहार।

दरमाहा–वि० मासिक वेतन।

दरस–दर्शन १। धान्यविशेष २।

दरसनी–दर्शनोत्तर देय फलद्रव्यादि।

दरसा–मत्स्यविशेष।

दरसूदि–वि० सूदिक सूदि।

दरही–मत्स्यविशेष।

दराड़ि–भूतलक स्फोट।

दराध–सर्पविशेष।

दराधिनी–एक जड़ी, मूर्वा सं० जकर गुणसँ मौर्वी बनैत अछि।

दरिआओ–वि० पैघ गर्त्त।

दरिद्र–सं० निःस्व, गरीब।

दरी–सतरञ्जी, आस्तरणविशेष।

दरेराह–वि० सकलसाधारण रास्ता, जाहि देने अधिककाल लोक चलैत हो।

दरोगा–एक राजकर्मचारी १। कार्य करएबामे नियुक्त २।

दर्प–सं० गर्व।

दर्शन–सं० देखब।

दर्शनी–दर्शनोत्तर चढ़ौआ।

दल–झुण्ड १। तुलसीक पात २। बाँसक गादि ३।

दलकब–क्रि० डोलब, उपरनीचाँ कम्पन।

दलगर–अधिक गादिसँ युक्त (बांस)।

दलदल–पादादिक आघातसँ नीचाँ-उपर होएनिहार (भूमि)।

दलदलाएब–क्रि० दलदल्+अब-पादादिक आघातसँ डोलब।

दलदली–पादादिक आघातसँ डोलब।

दलपर्दा–वि० वस्त्रक आवरण १। धोखा देब २।

दलमल–आन्दोलित।

दलमलाएब–क्रि० दलमल्+अब-दलदलाएब।

दलमलित–आन्दोलित।

दलमली–आन्दोलन।

दलान–वि० चतु:शालसँ वहिर्भूत बैसबाक घर, बहरघरा।

दलाल–वि० क्रयविक्रय करओनिहार तदुपजीवी।

दलाली–दलालक क्रिया वा वेतन।

दलिपिट्ठी–कृतान्नविशेष।

दलिपुरी–दालिक फूँटिदए बनाओल पूरी।

दलिभिस्त–मिष्टान्नविशेष।

दलिसगा–दालि ओ साग एकत्र रान्हल।

दलिहन–दालिबाला अन्न (राहड़ि आदि)।

दल्लू–बानरक सरदार, बानरी सेनाक अधिपति।

दश–सं० दस, दशसंख्यापरिमित।

दशम–सं० दशक पूरण।

दशमी–सं० दशम तिथि १। आश्विनक नवरात्र २।

दशहरा–सं० ज्यैष्ठ शुक्ल दशमी।

दशा–सं० अवस्था।

दशावतार–सं० मत्स्यादि दस अवतार।

दशाह–सं० मरणाशौचक दस दिन।

दस–दश, १०, १। पचेसीमे सभ पट एक चित्त कौड़ी २।

दसखत–वि० हस्ताक्षर।

दसगजा–दस गजक (धोती आदि)।

दसगर–नीक शारीरक स्थिति बाला (व्यक्ति)।

दसड्डी–पचेसीमे पबहारिसँ दशम घर।

दसम–दशम।

दसा–दशा, अवस्था।

दसाही–दशदिनोत्तर श्राद्ध।

दसोत–विवाहमे दस सधवासँ निष्पाद्य तान्त्रिक क्रिया।

दसौन्ही–भाट, वन्दी।

दस्त–वि० पुरीषोत्सर्ग।

दस्तगर्दा–वि० हथपैँच।

दस्ताना–वि० प्रत्येक अँगुरीमे पहिरबाक हस्ताकार वस्त्रविशेष।

दस्तावेज–वि० प्रमाणपत्रविशेष।

दस्ती–वि० कलमदान।

दस्तूर–वि० चालि, स्वभाव, सरह।

दस्तूरी–वि० कार्य कएनिहारसँ कार्य करओनिहारक नियत आदेय।

दस्सी–सूताक भीँड़ी।

दह–ह्रद १। पुरैनि २।

दहकब–क्रि० किञ्चित् जरब।

दहलब–क्रि० अनिष्टचिन्ता, अधीर होएब।

दहार (ड़)–जलाप्लावनसँ आक्रान्त।

दहिगन–पक्षिविशेष १। क्षुपविशेष २।

दहिन–दक्षिण।

दहिबाड़ा–मिष्टान्नविशेष।

दही–दधि।

दहेज–जौतुक।

दहोदिस / **दहोदिसा** }–दसो दिस, समन्तात्।

दहोदिसिआ–दुनू पक्षक अनुगामी (व्यक्ति)।

दहोबहो–अ० धाराप्रवाह रूपेँ (नोर खसब)।

दाइ–स्त्री० स्त्रीक उपाधि, देवी।

दाउन / **दाउनि** }–मेधिमे अनेक वृषभ जोड़ि धान्याद्युपमर्दनार्थ घुमाएब।

दाउनि (न) चढ़ाएब–क्रि० दाउनिमे वृषभयोजना।

दाओ–अलगचित आदि मल्ल क्रिया १। अवसर २।

दाख–द्राक्षा।

दाखिल–वि० समर्पित।

दाग–वि० चिह्न, कालिमादिसम्बन्ध।

दाड़िम–सं० अनार हिन्दी।

दाढ़–सं० दंशस्थान १। पैघ दाढ़ी २।

दाढ़ी–चिबुक, मुहक निचला उच्च अङ्ग १। चिबुकमे जनमल केश २।

दाँत–दन्त।

दाँत कीचब–क्रि० क्रोध ओ कार्पण्यक द्योतक दनतप्रकाशन।

दाँत खिसटब / **दाँत सिखोटब** / **दाँत निपोड़ब** }–क्रि० दैन्यसूचक दन्तप्रकाशन।

दाँतब–ना० दँत्+अब-मालक दाँतसँ युक्त होएब।

दाँतमनि–दन्तकाष्ठ।

दाता–सं० दानी।

दाँती–रोगतः दाँतपर दाँत जोरसँ बैसब, हनुस्तम्भ।

दाँती लागब–क्रि० रोगवश दाँतपर दाँत बैसब।

दाँतुल–दन्तुल।

दादा–पितृव्यादि गुरुजन।

दादी–पितृयादि गुरुजनपत्नी।

दादु(रु)हरदि–दारुहरिद्रा, वृक्षविशेष।

दान–सं० देब।

दाना–हाथी आदि पशुपक्षीक भक्ष्य धान्यादि १। प्रत्येक अन्न २।

दाप–धोंक, दाब, दूरसँ तीव्र तेज:सम्बन्ध।

दाब–अवरोध, आक्रमण।

दाबब–क्रि० दब्+अब-भाराक्रान्त करब, उपरसँ आक्रमण।

दाबा–पाएरसँ दाबि-दाबि बनाओल भित्ति जाहिपर टाट रहए वा जे ओसाराक अग्रभाग हो।

दाबा बान्हब–क्रि० बन्हू+अब-खेतमे धसना बचएबाक हेतु दाबा देब।

दाबि–वंशकाष्ठनिर्मित दर्वी।

दाबिल–ओषधिविशेष।

दाबी–वि० आदेयकथन १। अभिमान २।

दाम–मूल्य।

दाम तोड़ब–क्रि० मूल्यनिर्णय करब।

दामस–शीतलासम्बन्धी रोगविशेष।

दारु–धोती खिचब प्रभृतिक हेतु स्थापित काष्ठ।

दारुहरदि–दारु-हरिद्रा।

दारू–मद्य।

दालि–दड़रल दलिहन, विदलित द्विदल अन्न।

दालिचीनी–त्वक्, एक प्रकारक वृक्षक त्वचा ।
दालिपाक–कृतान्नविशेष ।
दास–सं० सेवक ।
दासिनी–स्त्री० संन्यासिनी ।
दाह–मृतकसंस्कार ।
दाहा–तास प्रभृतिक दशम फर्द १ । मुसलमानक तजिआ २ ।
दाही–धान्यादिनाशक जलाधिक्य ।
दिअठि–दीप रखबाक काष्ठादिरचित पात्र ।
दिअर / **दिअरि** –नदीक बीचमे जलसँ जागल भूमि, द्वीप ।
दिआ–दीप १ । अ० द्वारा २ ।
दिआबाती–दीपावली, सुखरात्रिक दीपोत्सव ।
दिक्–वि० तङ्ग, व्याकुल ।
दिक्साधन–दिशाज्ञानक यन्त्र ।
दिगर–वि० अन्य, उदासीन ।
दिघोँच–जलीय पक्षिविशेष ।
दिन–सं० वासर ।
दिनगर–अधिक दिन ।
दिनजौड़–समयपर नहि खएनिहार ।
दिन-दुपहर–अ० दिनक दोपहरिआ ।
दिन-देखार–अ० दिनक प्रकाशमे ।
दिन-बेकाल–अधलाह दिन ।
दिनाए–दद्रु ।
दिनुक / **दिनुका** –दिनमे भेल ।
दिनेक–अ० कोनो दिन ।
दिब–दिव्य, सुन्दर ।
दिबड़खौकू–जकरा यत्किञ्चित् भागमे दिबाड़ खएने रहए ।
दिबड़ाक भीड़–बल्मीक ।
दिबड़ाह–दिबाड़क सम्बन्धबाला ।
दिबाड़–कीटविशेष ।
दिबाड़ी–माटिक छोट दीप ।
दिबाल–इष्टकाभित्ति ।
दिलजमइ (मै)–वि० विश्वास ।
दिलमोटाओ–वि० वैमनस्य ।
दीअठि–दीप रखबाक काष्ठादि-रचित पात्र ।
दीअर / **दीअरि** –नदीक बीचमे जलत्यक्त भूमि, द्वीप ।
दीआ–दीप ।
दीआबाती–सुखरात्रिक दीपाबली ।
दीठि–दृष्टि ।
दीप–सं० दीपपात्र ।
दीपझाड़–शोभार्थ दीपवृक्ष ।
दीपदान / **दीपदानी** –दीपाधारपात्र ।
दीबान–वि० लेखमे नियुक्त राजपुरुष ।
दीर्घसूत्री–सं० चिरकारी ।
दुइ–दू, द्विसंख्यक २ ।
दुख / **दु:ख** –दु:ख १ । रोग २ ।
दुखनामा–दु:खवार्ता कहब ।
दुख-बेकाल–दु:खकृत वैकल्य ।
दुखाएब–ना० दुख्+अब-दुख (पीड़ा) सँ युक्त होएब ।
दुखित / **दु:खित** –दु:खसँ युक्त १। रोगयुक्त २।
दुखिताह–उ० किञ्चित् रोगयुक्त ।
दुखी–दु:खयुक्त ।
दुग्गी–तास आदिक दोसर फर्द ।

दुतिआ / **दुतीआ** –द्वितीया, दोसर तिथि ।
दुद्धा दाँत–शिशुक प्रथमोत्पन्न दाँत ।
दुद्धी–वृक्षविशेष १ । धान्यविशेष २ । भोस केराक प्रभेद ३ ।
दुधगरि–स्त्री० अधिक दूध देनिहारि ।
दुधपीबा–दूध पिउनिहार (शिशु) १ । शिशुकेँ दूध पिअएबाक पात्रविशेष २ ।
दुधभरा–दूधसँ भरल (धान्यादि) ।
दुधमुँगर–फलविशेष ।
दुधमुह–शिशु, स्तनन्धय ।
दुधबार–जातिविशेष ।
दुधिआ–शाकविशेष ।
दुन्ना–द्विगुण ।
दुपत्ता–दू पातसँ युक्त ।
दुबर–उ० दुब्बर, दुर्बल । स्त्री दुबरि ।
दुबराएब–ना० दुबर्+अब-दुबर (दुर्बल) होएब, देहेँ कृश होएब ।
दुब्बर–उ० दुर्बल । स्त्री दुब्बरि ।
दुम्मा–पर्वतीय मेषविशेष ।
दुरगमनिआ–द्विरागमनसम्बन्धी (वस्तुजात) ।
दुरछी–अ० धिक्कार ।
दुरदुट–दुर्द्दुट, दुर्मुखं, अधलाह कथा बजनिहार ।
दुरागमन–द्विरागमन ।
दुराहु–किछु दूर ।
दुरि करब–क्रि० अनुपयुक्त करब, नष्ट करब, बिगाड़ब ।
दुरि जाएब / **दुरि होएब** –क्रि० अनुपयुक्त होएब, नष्ट होएब, बिगड़ब ।
दुरुस्त–वि० प्रस्तुत, सज्ज, सर्वाङ्गपूर्ण ।
दुरुस्ती–सज्जीकरण ।
दुर्गति–सं० कष्टक अवस्था ।
दुर्गा–सं० देवताविशेष ।
दुर्निवार–सं० जकर निवारण नहि कएल हो ।
दुर्भगा–सं० स्त्री० विधवा ।
दुर्भिक्ष–सं० रौदी आदिसँ अन्नक अभाव।
दुर्मति–सं० अधलाह बुद्धि ।
दुलकब–क्रि० किञ्चित् उपर-नीचां डोलब, कम्प ।
दुलहा–पुं० वर ।
दुलहिनि–स्त्री० नवविवाहिता वधू ।
दुलार–लालन ।
दुलारा–ओषधिविशेष ।
दुलारू–दुलारसँ पालित ।
दुल्लह–हि० वर ।
दुष्ट–सं० खल १ । शत्रु २ ।
दुसब–क्रि० दूषण, दोषक उल्लेख करब।
दुसाध–उ० चाण्डाल जातिविशेष । स्त्री० दुसाधिनी ।
दुसाधी–दुसाधक वृत्ति (चोरि) ।
दुहब–क्रि० दोहन ।
दू–द्विसंख्यक ।
दूआ–क्रिड़ामे दूसंख्याबाला (तास आदि) ।
दूध–दुग्ध ।
दूधा दाँत–शिशुक प्रथमोत्पन्न दाँत ।
दूबर–द्विगुण १ । कृश २ ।
दूबि–दूर्वा, तृणविशेष ।
दूर–सं० विप्रकृष्ट ।
दूरि करब–क्रि० नष्ट करब, बिगाड़ब ।

दूरि जाएब } –क्रि० नष्ट होएब,
दूरि होएब } बिगड़ब ।
दूर्वाक्षत–सं० आशीर्वादार्थ दूबि ओ अक्षत ।
दूसब–क्रि० दुस्+अब–दूषण, दोषक उल्लेख ।
दूहब–क्रि० दुह्+अब–दोहन, गाए आदिक स्तनसँ दूध बहार करब, चुटकीसँ पुनःपुनः निःसारण ।
देआएब–क्रि० दू+ अब्+अब–दापन, दान कराएब ।
देआद–दायाद ।
देआदिनी–स्त्री० पतिक भ्रातृ-पत्नी ।
देओर–पुं० देवर, पतिक छोट भाए ।
देखनुक–दर्शनीय, रमणीय ।
देखब–क्रि० दर्शन ।
देखसी } – देखलासँ उत्पन्न अनुकरणक
देखाँउस } इच्छा ।
देखादेखी–पारस्परिक दर्शनजन्य प्रवृत्ति।
देखार–दृश्य, अनावृत, प्रत्यक्ष ।
देन–दातव्य ।
देने–अ० स्पर्श करैत [यथा, काशी देने प्रयाग गेलाह] बाटेँ, [यथा, एम्हर देने चलू] ।
देब–क्रि० द्+अब–दान ।
देबडधड़–आकाशमे मार्गाकार सूक्ष्मतारा समूह ।
देवता–सं० स्वर्गवासी इन्द्रादि ।
देबतासारि–धान्यविशेष ।
देवदारु–सं० वृक्षविशेष ।
देवनागर–देवाक्षर ।
देवालय–सं० देवताक स्थान ।

देवी–स्त्री० स्त्रीदेवता ।
देरी–वि० विलम्ब ।
देश–सं० प्रान्त ।
देशी–स्वदेशसम्बन्धी ।
देसकोस–प्रान्त ।
देसरिआ–धान्यविशेष ।
देसाँतर–देशान्तर, अन्य देश ।
देसिला–स्वदेशमे उत्पन्न ।
देह–सं० शरीर ।
देहगर–उ० पैघ देहसँ युक्त । स्त्री देहगरि ।
देहफुल्ली–देहक फुलब ।
देहरि–देहली, द्वारकाष्ठ ।
देहात–नगरसँ भिन्न जनस्थान ।
देहाती–नगरसँ भिन्न स्थानमे रहनिहार १। देहातसम्बन्धी २ ।
देहादेही–अ० यावज्जीवन, डिला डिली ।
देही–व्यावहारिक, खिजमती (वस्त्रादि) ।
दैव–स० अदृष्ट, पूर्वजन्मार्जित धर्माधर्म।
दैवी–दैवकृत ।
दोअन्नी–दुइ आनाक मुद्राविशेष ।
दोअम्मा–एक डँटकीमे फड़ल दूआम ।
दोआति–वि० मोसिआनी, मसीपात्र ।
दोआदसी–द्वादशी तिथि ।
दोआरा–द्वारा ।
दोआरि–द्वार ।
दोआरेँ–अ० (निन्दामे) हेतुएँ ।
दोआली–बेरमा घुमएबाक यन्त्रविशेष ।
दोएम–मध्यम श्रेणीक ।
दोकठ } –दू काठक अभ्यन्तर ।
दोकठी }
दोकड़ा–पाइक चतुर्थांश ।
दोकन्धा } –दू डारिक सन्धिस्थान ।
दोकन्हरा }

दोकमिआँ–दुइ कामिसँ युक्त भोंकबाक अस्त्र ।
दोकान–विक्रयालय ।
दोकानदार–वणिक्, दोकान कएनिहार ।
दोकानदारी–वाणिज्य ।
दोकिस्त–वि०अ० दुइ बेरि कए देय ।
दोखड़ब–क्रि० बहुत मोट-मोट पीसब ।
दोखड़ा–मोट-मोट (बालि आदि) ।
दोखाह–उ० दोषयुक्त । स्त्री दोखाहि ।
दोग–दुइ वस्तुक मध्यस्थ अवकाश ।
दोगमिआ } –अगिला पुस्ति पर्यन्त ।
दोगामी }
दोगासी–दोग ।
दोगोला } –मतभेदेँ भेल दू दल ।
दोगोली }
दोचारा } –दू चारबाला (घर) ।
दोचारी }
दोचोपा–दू चोपबाला (तम्बूक) ।
दोछब्बी–अ० दू छओ कए ।
दोजनिआ–दू व्यक्तिक उपयोग योग्य ।
दोटप–तम्बूविशेष ।
दोटप्पी–अ० बहुत थोड़ काल ।
दोठठ–दोहराएकेँ ठाठब, दोहरौनी ।
दोतर–पचेसी खेड़िक से गोटी जे दू खुदरामे लाल हो ।
दोदाउन } –दू कड़ामसँ दाउनि ।
दोदाउनि }
दोनबार–उ० जातिविशेष ।
दोना–पत्ररचित पुटक १। पुष्पविशेष २ ।
दोनाइ–बीस पर्यन्त अङ्ककेँ दस पर्यन्त अङ्कसँ गुणनाक पाठ ।
दोना कदम्ब–पुष्पविशेष ।

दोपटा } –दू पाटसँ युक्त ओढ़बाक
दोपट्टा } वस्त्रविशेष ।
दोपढ़िआ–दू पाढ़िसँ युक्त (साड़ी आदि)।
दोपत्ता } –दू पातसँ युक्त ।
दोपत्ती }
दोपहरबा–मध्यरात्रमे उगनिहार एक तारा।
दोपहरि } –मध्याह्न ।
दोपहरिआ }
दोफक्का–दुइ फाँक कएल ।
दोफसिला–वि० दू फसिल जाहिमे उपजए से (खेत) ।
दोफाँक–दू फाँक भेल ।
दोबगली–वि० अ० दुनू कातमे ।
दोबट्टी–से बाट जतएसँ दुइ दिस बाट गेल हो ।
दोबर–द्विगुण ।
दोबरखा–दुइ वर्षक ।
दोबराएब–ना० वस्त्रादिक द्विरावृत्त करब ।
दोबिधा–विधाद्वय, संशय ।
दोम–आन्दोलन ।
दोमञ्जिला–वि० दू महलबाला (कोठा)।
दोमब–क्रि० आन्दोलित करब ।
दोमस–अ० दोसर हेतु ।
दोमसिआ–दू मासक जनमल (नेना) ।
दोमहला–दू महलबाला (कोठा) ।
दोमाँगि } –दू सीमापर स्थित
दोमाङि } स्थान ।
दोमोनी–दू मोनक (नपना वा बटिखारा)।
दोयम–मध्यम श्रेणीक ।
दोरब्बी–दोबर राबाबाला (भूषणविशेष)।
दोरस } –जाहिमे किछु बाल ओ किछु
दोरसि } चिक्कन माटि दुनू मिलल हो से (भूमि) ।

दोलँग
दोलँगी
दोलङ
दोलङी } –धान्यविशेष ।

दोलाइ–अल्प तूरसँ भरल ओढ़ना ।

दोलू–वि० गजीफामे एक फर्द राखि अगिला हुकुम फर्द ।

दोलेब–दोसर खेपक लेबब ।

दोलेँ–ऐकारक मात्रा (ै) ।

दोष–सं० अपराध, दूषण ।

दोष देब
दोष लगाएब } –क्रि० दोषक आरोप करब, दोष कहब ।

दोषभागी–सं० दोषक आश्रय ।

दोषी–सं० दोषयुक्त ।

दोसञ्झा
दोसञ्झी } –दुइ व्यक्तिक सम्मिलित (धन) ।

दोसर–द्वितीय ।

दोसराइत
दोसराति } –द्वितीय सहायक ।

दोसरासाँझ–पहिल सन्ध्याक बाद झलफल समय ।

दोसह
दोसहा } –सतरञ्जमे तेहन स्थानसँ लगाओल सह जाहिसँ दोसरो गोटी बीन्हल जाइत हो । एक गोटीक दू गोटी पर साम्मुख्य।

दोसंझी–अ० दुनू साँझमे ।

दोसाहा–दोसह ।

दोसीरा–वि० मालिक ओ रैअति दुनूक अंशबाला (वृक्षादि) ।

दोसेरा
दोसेरी } –दू सेरक बटिखारा वा नपना ।

दोस्त–वि० मित्र ।

दोस्ती–वि० मित्रता ।

दोहठ–एक व्यक्तिक दू ठाम बास ।

दोहन–मिश्रित दू अन्न ।

दोहमति–वि० मिथ्या दोषारोपण ।

दोहराएब–क्रि० दोहर्+अब-पुनः होएब।

दोहराएब–क्रि० दोहरब्+अब-पुनः करब।

दोहरि–दोलाइ, अल्प तूरबाला ओढ़ना ।

दोहरौनी–दोहराएब ।

दोहसाएब–क्रि० दोहसब्+अब-एके बातक प्रसङ्ग दुइ बेरि टोकब ।

दोहा–शपथ १ । छन्दोविशेष २ ।

दोहाइ–दीनवात्सल्य ।

दोहाइ देब–क्रि० 'दोहाइ' शब्द कहि दैन्य प्रकाश करब ।

दोहारा–दुइ तहसँ युक्त (अङ्गा, फूल इत्यादि) ।

दोहारि–दोआरि, द्वार ।

दौगब–क्रि० दौड़ब, धावन ।

दौड़–धावन ।

दौड़धूप–इतस्ततः अधिक धावनादि ।

दौड़ब–क्रि० दौगब, तीव्र गतिसँ चलब, धावन ।

दौड़ब-धूपब–क्रि० धावन-कूर्दनादि क्रिया ।

दौड़बरहा–वारंवार दौड़ब ।

दौहित्र–उ० दुहिताक पुमपत्य ।

दोहित्री–स्त्री० दुहिताक स्त्री अपत्य ।

द्वादशी–सं० बारहम तिथि ।

द्वारि–गृहप्रवेशमार्ग ।

द्वारि छेकाओन–वर-कन्याक द्वारि छेकबाक पारितोषिक ।

द्वितीया–सं० दोसर तिथि ।

द्रव्य–धातु १ । रुपैआ कञ्चाप्रभृति २ ।

ध

धओन–नीहार, कुहेस ।

धओना–गर्दनिक धारिणी शिरा ।

धओना खसब–क्रि० गर्दनिक धारिणी शिराक पतन ।

धकधकाएब–क्रि० धकधक्+अब-जोरसँ वारंवार हृदय कापब ।

धकरी–तृणविशेष ।

धकिआएब–ना० धकिअब्+अब-धक्का देब ।

धकेलब–क्रि० जोरसँ धक्का देब ।

धक्कमधक्का
धक्कमधुक्का } –अनेक व्यक्तिक पारस्परिक धक्का ।

धक्का–आघात, अनका ठेलब ।

धक्का देब–क्रि० लोककेँ ठेलब ।

धखछुट्टू–जकरा धाख छूटि गेल छैक से।

धखाएब–क्रि० धख्+अब-धाखसँ युक्त होएब ।

धछेक–किञ्चित शेष (दिन) ।

धड़धड़–वारंवार (हृदयक) कम्पन १ । अ० शीघ्रतापूर्वक २ ।

धड़धड़ाएब–क्रि० धड़धड्+अब-वारंवार (हृदय) कम्पित होएब १ । धड़धड़ शब्द करब २ ।

धड़धड़ी–हृत्कम्प ।

धड़फड़–अ० शीघ्रतापूर्वक ।

धड़फड़ाएब–क्रि० धड़फड्+अब-शीघ्रता जन्य चञ्चलतासँ युक्त होएब ।

धड़फड़ी–शीघ्रता ।

धड़हर–अत्युच्च प्रचीन डीह ।

धड़हेर–मध्यमे आबि युद्धक निरोध ।

धड़हेरिआ–धड़हेर कएनिहार ।

धड़ाक–बन्दूक आदिक शब्दक अनुकरण।

धढ़ेर–धड़हेर, मारि झगड़ाक मध्यमे आबि निरोध ।

धतपत–अ० कनेक, पूर्ण रूपेँ नहि ।

धधकब–क्रि० धधरासँ युक्त होएब, प्रज्वलित होएब ।

धधरा–अग्निशिखा ।

धन–सं० वित्त ।

धनकटनी–धानक काटब ।

धनकट्टा–धान कटनिहार १ । जाहिसँ धान काटल जाए से (हाँसू) २ ।

धनखेती–धानक खेत ।

धनगर–अधिक धानसँ युक्त १ । अधिक धनसँ युक्त २ ।

धनचर–अनेक कार्यक युगपत् प्राप्ति ।

धनछ–पक्षिविशेष ।

धनछूहा–पक्षिविशेष ।

धनपनिआ–धान ओ धानक अनुसार पानि ।

धनपापड़–ओषधिविशेष, पर्पटी ।

धनबधा–धानक बाध ।

धनमन्त–उ० धनवान् । स्त्री धनमन्ति ।

धनमी–धनुष ।

धनरोपनी–धानक रोपब ।

धनस–पक्षिविशेष ।

धनसन–अ० उपेक्षाबुद्धि ।

धनसीस–मकैक उपरका सीस ।

धनहर–धान उपजएबाला (खेत) ।

धनहा–धानसँ युक्त (चूड़ा आदि) ।

धनिआँ–धान्यविशेष ।

धनिक–उ० सं० अधिक धनसँ युक्त । स्त्री० धनिकाइनि ।

धनिकठेँठ–अभिमानी धनिक ।
धनी–धन्नी, धान्यक सं० ।
धुनुकाइनि–स्त्री० धानुक जातिक स्त्री ।
धनुख–धनमी ।
धनेसरी–भालसरी १ । धान्यविशेष २ ।
धन्ध–द्वन्द्व, विस्मय, चिन्ता ।
धन्धा–चिन्ता १ । कार्य २ ।
धन्वन्तरि–आदिवैद्य १। ओषधिलता-विशेष २ ।
धपाड़ब } –क्रि० जलकेँ सञ्चालित
धपारब } कए तरङ्गित करब ।
धबब–क्रि० उजरी आदिक कनेक प्रकट होएब ।
धबाएब–क्रि० धबब्+अब-प्रच्छन्न भए चोरक प्रतीक्षा करब ।
धमक–मेघादिक गम्भीर घोष १। धमधम पादादिशब्द २ ।
धमकब–क्रि० गम्भीर घोष करब १। धम-धम शब्द करब २ ।
धमकी–धम-धम शब्द १। भयप्रदर्शन २।
धमगज (ज्ज) र–आस्मर्द ।
धर–हस्तधार्य आवरण-पट १। शरीरक मूड़ीसँ निचला भाग २ । पकड़ब ३ ।
धरकट–पुं० लोभातिशयेँ अपन अपमानक विचार नहि कएनिहार, निघृष्ट ।
धरखन–गृध्नुता ।
धरखनाह–उ० गृध्नुतायुक्त । स्त्री० धरखनाहि ।
धरछन–दू जनसँ माटि आदि उघबाक साधनविशेष ।
धरती–धरित्री, पृथ्वी ।
धरना–शरीरपातन, पृथिवीशयन, प्रायोपवेश ।
धरना देब–क्रि० कोनो कार्यक उद्देश्येँ पृथिवी-शयन, प्रायोपवेश करब ।
धरनि–बड़ेरीक भार थम्हनिहार गृहाङ्ग काष्ठविशेष ।
धरनिआ–धरना ।
धरपड़न–शरीर-पातन ।
धरब–क्रि० धारण १। स्थापन कड़ब २। दंशन ३ ।
धरम–धर्म ।
धरमदोष–धर्मदोष ।
धरहेर–मरतरिआक बीच आबि दुहू पक्षक लोककेँ हटाएब ।
धरहेरिआ–पुं० धरहेर कएनिहार
धरहोरि–जिम्मा राखल (वस्तु) ।
धरानी–कष्ट ।
धराह–उ० धरबाक स्वभावबाला (कुकुर आदि) । स्त्री० धराहि ।
धरि–पोखरिक चारू कातक जलसँ उपर भाग १ । अ० अवधि, पर्यन्त २ ।
धरिआ–कौपीन ।
धरिका–अमोटक लम्बाकार खण्ड ।
धरिकार–उ० जातिविशेष ।
धरी–धारा तौलल ।
धरोहर–न्यास, जिम्मा लगाओल (वस्तु)।
धर्म–सं० पुण्य ।
धर्मात्मा–सं० धार्मिक ।
धरोहि–श्रेणी ।
धरोहि लागब–क्रि० पंक्तिबद्ध होएब ।
धसना–जलादिमे धसल भूमिखण्ड ।
धसब–क्रि० भूमिक नीच होएब ।
धसमस–तारतम्य ।

धसमसाएब–क्रि० धसमस्+अब-तारतम्य करब ।
धसमसी–दोबिधा, तारतम्य ।
धाइँ–ओषधिविशेष ।
धाए–स्त्री० नेनाकेँ नित्य अपन दूध पिअओनिहारि माएसँ भिन्न, धात्री सं० ।
धाकर–बिना दागल साँढ़ ।
धाख–वि० संकोच, गुरुत्वबुद्धि या उचितो कहबामे भय ।
धाँगब–क्रि० धँग्+अब-चरणसँ आक्रमण करब ।
धाँगर–उ० जातिविशेष ।
धाङब–क्रि० धाङ्+अब-धाँगब ।
धाङर–जातिविशेष ।
धात्री–सं० अओरा ।
धाधर–अशुभ ।
धान–धान्य, अन्नविशेष, शालि सं० ।
धानी–पीत-हरित (रङ्ग) ।
धानुक–उ० शूद्रजातिविशेष ।
धाप–ओसारा १ । पैघ डेग २ ।
धाबा–धोषधिविशेष, धव सं० ।
धामन–सर्पविशेष ।
धामा–बाँसक पात्रविशेष ।
धामि–मन्त्र-यन्त्र जननिहार जातिविशेष ।
धाय–स्त्री० धाए, धात्री सं० ।
धार–खड्गादिक तीक्ष्ण भाग १ । नदी २ । धारब ३ ।
धार फुटब–क्रि० जलक धारा १ । अस्त्रक धार स्फुट होएब २ ।
धारब–क्रि० धार्+अब-अपरिशोधित ऋणक धारण करब १ । शुभप्रद होएब २ ।
धारा–दुइ पसेरीक परिमाण १ । सं० प्रवाह २ ।
धारी–पंक्ति ।
धाह–ताप ।
धिआ–स्त्री० कन्या ।
धिआ-पूता–छओँड़ा-छओँड़ीसभ, छोट नेनासब ।
धिपब–क्रि० तप्त होएब ।
धिपल–तप्त ।
धिपलकोँढ़ि–अति आलसी ।
धिम्मर–उ० धीवर, जातिविशेष । स्त्री० धिम्मरि ।
धिरकार–धिक्कार ।
धिरकारब–ना० धिक्कार देब ।
धीआ–स्त्री० कन्या ।
धीआ-पूता–बालिकाबालकसमुदाय ।
धीपब–क्रि० धिप्+अब-तप्त होएब ।
धीमर–उ० जातिविशेष ।
धुँआएब–ना० धुँ+अब-धूआँसँ युक्त होएब ।
धुकधुक–मन्द-मन्द प्रज्वलन ।
धुकधुकाएब–क्रि० धुकधुक्+अब-मन्दमन्द प्रज्वलित होएब ।
धुकधुकी–भूषणविशेष १ । हृदयवातक गति २ । आतङ्क ३ ।
धुथहू–सीँगा, वाद्यविशेष ।
धुथुरमूहा–उ० अप्रसन्नमुख । स्त्री० धुथुरमूही ।
धुथूर–धत्तूर सं०, पुष्पविशेष ।
धुधुआएब–क्रि० धूधू+अब-धूधू शब्द करब ।

धुधुनमूह–उ० अप्रसन्नमुख । स्त्री० धुधुनमूहि ।
धुनब–क्रि० तूरक विश्लेषण करब ।
धुनि–ध्वनि १ । शीतज्वरक चरमावस्थाक ताप २ । चिन्ता ३ ।
धुनिआँ–तूर धुननिहार म्लेच्छजातिविशेष।
धुनी–बाबाजीक पैघ घूर ।
धुनेठ–तूर धुनबाक यन्त्र ।
धुपकाठी–धूपार्थ रचित शलाका ।
धुपछाँह–वस्त्रविशेष ।
धुपदानी–धूपक आधारपात्र ।
धुपब–क्रि० केरा आदिकेँ धूमसँ पक्व करब ।
धुपबत्ती–धुपकाठी ।
धुमन–सर्जनिर्यास, शालवृक्षक लस्सा ।
धुमनाइनि, **धुमनाह** }–धुमनक सदृश गन्धबाला।
धुमस–अनेक बालकक कलहक्रीड़ा ।
धुमसाह, **धुमसिआ** }–धूमस कएनिहार (नेना) ।
धुमसुर–आघात दए माटि बैसएबाक डण्टा लागल काष्ठखण्ड वा लौहपिण्ड।
धुमूह–उ० धूआँसन मुहबाला । स्त्री० धुमूही ।
धुरकिल्ली–धूरीमे पैसाओल जएबाक किल्ली ।
धुरखुड़, **धुरखुर** }–दोआरिक कातक भित्ति ।
धुरबन्हू–वलिक हेतु बान्हल (छागादि) ।
धुरिआएब–ना० धुरि+अब-धूरासँ युक्त करब ।
धुसब–क्रि० गञ्जन ।
धुसरी–धान्यविशेष १ । पुष्पविशेष २ ।
धूआँ–धूम ।
धूआँकस–धूआँ बहरएबाक कृत्रिम कोठाक अङ्ग ।
धूनब–क्रि० धुन्+अब-तांतिक ताड़नसँ तूरक विश्लेषण करब ।
धूनि–चिन्ता, भावना १ । शीतज्बरमे शीतावस्थानन्तर उत्तापावस्था २ ।
धूप–सं० सुगन्धित धूम ।
धूपब–क्रि० धुप्+अब-धूआँक गरमीसँ पक्व करब १ । धूपक सौरभसँ युक्त करब २ ।
धूमन–यक्षधूप, सालनिर्यास ।
धूमधाम–पैघ आयोजनक कोलाहल ।
धूम मचब–क्रि० पैघ आयोजनक कारण अधिक कोलाहल होएब ।
धूमा खेड़हा, **धूमा खेढ़ा** }–धान्यविशेष ।
धूर–कट्ठाक बीसम अंश १ । सफटैतीमे उपजल हरक अंश ।
धूरा–धूलि ।
धूरा माटि–माटिक धूरासँ भेनिहार खेल।
धूरी–गाड़ीक पहिआक आधार लौहदण्ड, अक्ष ।
धूर्त्त–सं० प्रपञ्चसँ स्वकार्यसाधनमे पटु, परिहासपण्डित ।
धूर्त्तबाज–गारियुक्त परिहासक योग्य व्यक्ति, सार बहिनोए प्रभृति ।
धूर्त्ता–गारियुक्त परिहास ।
धूसब–क्रि० धुस्+अब-भर्त्सना करब ।
धेनु–नव बिआएलि गाए ।

धेनुआर–पूर्ण दूध देनिहारि बिआएलि गाए ।
धैरज–धैर्य्य ।
धोआ–धोआओल नव वस्त्र ।
धोआइ–धोबिकेँ देय कपड़ा धोएबाक वेतन ।
धोएब–क्रि० धो+अब-प्रक्षालन ।
धोकड़ा–छोट बोरा, छोट अक्खा, गोणी सं० ।
धोकड़ी–छोट धोकड़ा
धोखरब–क्रि० जलसंयोगसँ अपगत होएब ।
धोखा–भ्रम, प्रमाद ।
धोखारब–क्रि० धोखार्+अब-जलक आघातसँ अपगत करब ।
धोँछ–उ० अनुचितकार्यकरणशील । स्त्री० धोँछि
धोँछिआ–स्त्री० अनादरणीय धोँछि ।
धोटकी–ओष्टपुट ।
धोटकी लगाएब–ओष्ठपुटसँ धरब ।
धोतिआहा–दरभङ्गाराजकीय धौत परीक्षामे उत्तीर्ण भय धोती पओनिहार (पण्डित) ।
धोती–धौतवस्त्र, पुरुषक परिधानीय ।
धोधर, **धोधरि** }–कोटर ।
धोधि–मेदवृद्धिसँ स्थूलभूत उदर, तुन्द ।
धोधिगर, **धोधिल** }–धोधिबाला (व्यक्ति), तुन्दिल ।
धोधैल–पैघ धोधिबाला ।
धोनि ढेकार–विपाकजन्य विकृत रसगन्धसँ युक्त ढेकार ।
धोपब–क्रि० झाँपब ।
धोबि–उ० धावक, वस्त्र धोएनिहार जातिविशेष । स्त्री० धोबिनि ।
धोबिआही–धोबिक टोल ।
धोबिघट्टा–धोबिक वस्त्र धोएबाक घाट।
धोबिनि–स्त्री० धोबि जातिक स्त्री ।
धोयब–क्रि० धो+अब-प्रक्षालन ।
धौरबी–स्त्री० रखौली, नियुक्त पुंश्चली ।
धौला–पक्षिविशेष ।
ध्यान–सं० स्मरण ।

न

न–अ० निषेध ।
नएन–मत्स्यविशेष १ । नेत्र २ ।
नओ–नवसंख्यापरिमित, ९ ।
नओतिमना–नओ तीमनसँ युक्त भोज्य ।
नओरतन–नओ दाँतबाला (बड़द) १ । नवरत्नयुत २ ।
नकछिक्की–तृणविशेष ।
नकटा–पक्षिविशेष ।
नकटी–नाकक शुष्क मल, सिंघाण सं०।
नकडुबाब–जलचर पक्षिविशेष ।
नकदड़री–आतुरतापूर्वक नितान्त प्रार्थना।
नकबसा–दुनू नासिकापुटक मध्यम अवयब ।
नकबेसरि–भूषणविशेष ।
नकमुन्नी–नासिकाक भूषणविशेष ।
नकल–वि० अनुकरण ।
नकली–वि० अनुकृत, अवास्तविक १ । अवास्तविक रोदनादि कएनिहार २।
नकलोल–पक्षिविशेष १ । बूड़ि २ ।
नकसा–वि० कोठा खेत आदिक चित्र १ । खोधामा २ ।

नकार–नक्र, जलीय हिंस्र जन्तुविशेष ।
नकारि–नासिकाव्रण ।
नकुब्बा / **नकुब्बी** } –नाकसँ युक्त (आम) ।
नकुनी–नोक, तीक्ष्ण अग्रभाग ।
नक्की मुट्ठी–कौड़ीक एक खेड़ि ।
नक्कू–पैघ नाकबाला ।
नखनखी–ओषधिविशेष ।
नखसिख–नखसँ शिखापर्यन्तअङ्ग ।
नखास / **नखासी** } –द्रव्यक उपर खोधिकेँ चित्रनिर्माण ।
नग–मोतिक मध्यमे रखबाक मणिविशेष १ । औँठीखचित मणि २ ।
नगद–तत्काल देल रुपैआ इत्यादि ।
नगदा-नगदी–अ० बिना उधार, सद्यः मूल्य दए (क्रयविक्रय) ।
नगनिपी–द्विरागमनक एक विधि जाहिमे नाग (वस्त्रवेष्टित भूमि) नीपल जाइत अछि ।
नगर–स० पुरी, ग्रामसमुदाय १ । आपणादि -युक्त देश २ ।
नँगड़ा–नङड़ा, ओषधिविशेष १ । अनादृत नाँगड २ ।
नँगड़ाएब–क्रि० नँगड्+अब-खञ्जगत्या चलब, स्खलितगति ।
नँगड़ा खेसारी–अन्नविशेष ।
नँगड़िमोड़ देब–क्रि० लोभवश पुनः पुनः इष्टवस्तुक सन्निधिमे घूमब (निन्दामे) ।
नँगाड़ा–वाद्विशेष, डका ।
नङड़ा–नँगड़ा, खञ्ज (अनादरमे) ।
नङड़ाएब–नँगराएब, स्खलितगति ।
नङाड़ा–नँगाड़ा, डंका ।
नङोचङो–अशान्ति ।
नछोड़–नखक्षत ।
नछोड़ब–क्रि० नखसँ क्षत करब ।
नट–उ० असभ्य जातिविशेष । स्त्री० नटिनि ।
नटखट–अशुभोक्ति ।
नटखटाह–उ० शुचिताक विषय कनेको अन्यथा भेलासँ क्रोधशील । स्त्री० नटखटाहि ।
नटखटिआ–अलिङ्ग, नटखटाह ।
नटिनि–स्त्री० नट जातिक स्त्री ।
नटुआ–नर्तक ओ नर्तकी ।
नठब–क्रि० अपलाप ।
नठाल–अकिञ्चन ।
नड़ाएब–क्रि० नड़ब्+अब-त्याग ।
नड़िरा–गहूमक ओ यवक एक प्रभेद ।
नढ़री–स्त्री० परपुरुषगामिनी ।
नढ़ेआ–गिदर, शृगाल ।
नढ़ेर–पु० परस्त्रीगामी ।
नढेरी–परस्त्रीगमन ।
नतिनिजमाए–नातिनिक स्वामी ।
नत्थी–नाथब, सूचीवेधपूर्वक बन्धन ।
नथ / **नथिआ** / **नथुनी** } –नाकक भूषणविशेष ।
ननदि–स्त्री० ननान्दा, स्वामीक बहिनि ।
ननदोसि–पुं० ननदिक पति ।
ननिआ सासु–स्त्री० स्वामीक मातामही।
नन्दोसि–ननदोसि, ननदिक पति ।
नन्हघस्सी–छोटछोट घास ।
नपना–जाहिसँ नापल जाए (से पात्र) ।

नपुंसक–सं० बलगोबिना, क्कीब ।
नफगर–वि० जाहिमे नफा हो से, लाभप्रद।
नफा–वि० लाभ ।
नब–स० नूतन ।
नबकर्मी–कर्मठ ।
नबका–उ० नवीन प्रकारक । स्त्री० नबकी ।
नबग्रह–भूषणविशेष १। सूर्यादि नबो ग्रह २।
नबति–वि० तोरणवाद्य १। अवस्था २ ।
नबतिखाना–वि० तोरण ।
नवम–नओक पूरण ।
नवमी–सं० नवम तिथि ।
नबसिक्खा / **नबसिखुआ** } –नवशिक्षित ।
नबान / **नवान्न** } –नब अन्नक प्रथम भोजन ।
नबाब–वि० मुसलमानक राजा १। तीसीक लस्सा २ ।
नबाबी–वि० नबाब सदृश विलास ।
नबाबी छाँटब–क्रि० नबाब जेकाँ केवल आज्ञा चलाएब, कोनो काज नहि करब।
नबारी–यौवन ।
नबासी–एकान्नवति ८९ ।
नबासीम–नबासीक पूरण, ऊननवतितम।
नब्बे–नवति, ९० ।
नब्बेम–नवतितम, नब्बेक पूरण ।
नमछोड़–घोड़ाजेकाँ लाम ।
नमछुरती / **नमघोर** } –लम्बाकार ।
नमती–लम्बाइ ।
नमब–क्रि० नत होएब १ । मालक पानि पिअब २ ।
नमरब–क्रि० नम्र होएब १ । घैँचने लम्बा होएब २ ।
नमहर–पैघ, दीर्घ ।
नमाइ–लम्बाइ, दैर्ध्य ।
नमूना–वि० आदर्श, अनुकार्य ।
नमेर–स्वयं क्षेत्रपतित धानक गाछ ।
नयन–मत्स्यविशेष १ । नेत्र २ ।
नर–व्याधक छीप १ । पुमान् (पक्षी-प्रभृति) २ ।
नरइ–छोट गाछी ।
नरकटि–तृणविशेष ।
नरासाहि–आपकीर्ति, निन्दा ।
नरी–सूतक प्रमाणविशेष ।
नरेठी–गर्दनिक शिरा ।
नरैठी–गर्दनिक पाछाँ भाग ।
नल–सं० कृत्रिम कए बनाओल लघु जलप्रवाहपथ ।
नली–छोट नल ।
नह–नख ।
नहकट्टी–अशौचनिमित्तक नखच्छेदन ।
नहकेश–अशौचनिमितक नखके-शकद्देदनकर्म ।
नहँगा–साड़ीक तर पहिरबाक छोट नूआ।
नहरनी–नह कटबाक अस्त्र ।
नहरि–नदीसँ सम्बद्ध कृत्रिम दीर्घ बाहा।
नहसूर–नखाच्छादनक चमड़ा ।
नहाए–अयोघन, लौहादि पिटबाक लौहनिर्मित आधार ।
नाहएब–क्रि० नह+अब-स्नान ।
नहाएब-सोनाएब–क्रि० स्नानभोजनादि क्रिया ।
नहि–सं० अ० निषेधद्योतक ।

नहू-नह–अ० मन्द-मन्द, शनैः शनैः ।
नहेरि–उ० लहेरि, लाक्षाभरणकारी जातिविशेष । स्त्री० नहेरिति ।
नाउच्च–अनुच्च
नाओ–नौका ।
नाओँ–नाम ।
नाओ काढ़ब–क्रि० कढ्+अब-नौका खेबब ।
नाओँ काढ़ब–क्रि० कढ्+अब-मन्त्र द्वारा चोरक नाम जानव ।
नाओँ काढ़ा–चोरक नाम कढ्-निहार मान्त्रिक ।
नाक–नासिका ।
नाकर-नूकर–अ० निषेधप्राय, अस्पष्ट निषेध ।
नाग–सं० उ० सप । स्त्री० नागिनि ।
नाँगट–उ० नग्न । स्त्री० नाँगटि ।
नाँगड़–उ० खञ्ज । स्त्री० नाँगड़ि ।
नाँगड़ि–लाङ्गूल, पुच्छ १ । खञ्ज (स्त्री) २ ।
नागफेनी–कण्टकमय चापट पत्रहीन क्षुपविशेष ।
नागरी–हिन्दी अक्षर १ । हिन्दी भाषा २ ।
नागा–जातिविशेष ।
नागिनि–स्त्री० सर्पिणी ।
नागेसर, **नागेश्वर** } –पुष्पमहावृक्षविशेष, नागकेसर सं० ।
नाङट–उ० नग्न । स्त्री० नाङटि ।
नाङड़–उ० खञ्ज । स्त्री० नाङड़ि ।
नाङड़ि–लाङ्गूल, पुच्छ १ । खञ्ज (स्त्री) २ ।
नाच–नृत्य ।
नाचघर–नृत्यभवन ।
नाचब–क्रि० नच्+अब-नर्तन ।
नाचार–विवश, उपायहीन, लाचार हि० ।
नाटक–अभिनय ।
नाड़ी–सं० शिरा ।
नाढ़ी–स्त्री० व्यभिचारिणी ।
नाति–उ० नप्ता, अपत्यक अपत्य, पौत्र ओ दौहित्र । स्त्री० नातिनि, पौत्री वा दौहित्री ।
नादड़ी–गजीफाक अन्तिम छोट फर्द ।
नाथ–मालक नासारज्जु १ । बेधन २ ।
नाथब–क्रि० नथ्+अब-मालक नासिकामे छेद करब १ । बेधन २ ।
नादि–मालकेँ गूड़ासानी देबाक पात्र-विशेष ।
नानन–वृक्षविशेष ।
नाना–अ०स० अनेक १ । मातामह २ ।
नानाभैआ–नेनाक नवम दिनमे कर्त्तव्य योग टोन ।
नानी–स्त्री० मातामही ।
नान्दन–मत्स्यविशेष ।
नान्हीटा–स्वरूपेँ बहुत छोट ।
नाप–परिमाण ।
नापजोख–परिमाणादिक्रिया ।
नापता–जकर पता (स्थितिस्थान) केओ नहि बुझैत हो ।
नापब–क्रि० नप्+अब-नाप करब ।
नापल–मित, जकर नाप कएल गेल हो ।
नाभरोस–निराश ।
नाभी–सं० ढोँड़ही ।
नाम–सं० आख्या १ । लाम, लम्बा २ ।
नाम काढ़ब–क्रि० कढ्+अब-नाओँ काढ़ब ।

नामनबैसी–नामावलीक उल्लेख ।
नामावली–सं० श्रेणीबद्ध नाम ।
नामी, **नाम्बर** } –विख्यातनामा ।
नाम्बरी–नामक विख्याति ।
नायक–कीर्तनिआँ नटुआक प्रधान पुरुषपात्र १ । सं० नेता २ ।
नार–धान आदिक नाल १ । धानक डँटकी २ ।
नारदी भजन–भगवानक भजन जे झालि पर गाओल जाइत अछि ।
नाराज–वि० अप्रसन्न, क्रुद्ध ।
नाराजगिरी–वि० सेवकपर मालिकक क्रोध ।
नारि–नारी, स्त्री ।
नारिकेर, **नारिकेरि** } –नारिकेल ।
नारिकेरी–नारिकेरक लोखड़ा जकर ओढ़िका ओ हुक्का बनैत अछि ।
नाल–सं० कमल आदिक डाँट १। खिआए नहि तदर्थ जूता ओ घोड़ाक टापक तरमे देय लोहनिर्म्मित वस्तु २ ।
नाला–पनिबट, इष्टकादिबद्ध पानि बहबाक मार्ग ।
नालायक–वि० अयोग्य (व्यक्ति), बूड़ि ।
नालिस–वि० न्यायालयमे वादीक विज्ञप्ति ।
नाश–सं० विनाश ।
नास–हलाङ्ग, हरकठक अगिला भाग ।
नासकार–वि० अस्वीकार, नठब ।
नासपाती–अमृताह्व, रुचिफल, अमृतफल।
नासी–मृत नदी ।
नाह–नाथ, स्वामी १ । नौका २ ।
नाहक–वि० अ० वृथा ।
नाहा–तास आदिक नवम फर्द ।
निकती–स्वर्णादि तौलबाक छोट तुला ।
निकलुआ–निष्कासित ।
निकम्मा–वि० अधलाह ।
निकलब–क्रि० निकल्+अब-निःसृत होएब ।
निःकसरि–सर्वथा शुद्ध, दोषमुक्त (स्वर्णादि), सर्वथा रोगमुक्त (व्यक्ति) ।
निकहा–नीक प्रभेदक ।
निकाएब–क्रि० निकब्+अब-मत्स्यादिकेँ छेदनादिसँ रन्धनोप युक्त करब ।
निकाओन–निकएबासँ त्याजित हेय अंश १ । निकओनिहारकेँ देय २ ।
निकायब–क्रि० निकब्+अब-निकाएब ।
निकालब–क्रि० निकाल्+अब-निष्कासन।
निकास–वि० घरक लग फैल जगह १। रुपैया आदि देबाक हुकुम २ ।
निकेँ–सुखेँ, सुखपूर्वक ।
निकेँना–अ०नीक रीतिएँ ।
निखड़ब–क्रि० स्फुट रूपेँ अङ्कित होएब ।
निखरूस–वि० सर्वाङ्गपूर्ण, अविकल ।
निखाड़ब–क्रि० निखाड्+अब-स्पष्ट रूपेँ अङ्कित करब ।
निघटब–क्रि० सधब, अनवशेष होएब ।
निघारब–क्रि० निधार्+अब-निभालन, निहारब ।
निघास–निघेस, मालक भक्षिता वशिष्ट ।
निघुरब–क्रि० नत होएब ।
निवृष्ट–सं० अत्यन्त अधम ।

निघेस–निघास, मालक भक्षितावशिष्ट ।

निचका–निचला, नीचस्थित ।

निचगर–अधिक नीच ।

निचला–नीचस्थित ।

निचामि–नीचात्मा ।

निचास–नीच चास, नीच खेत ।

निचेन–निरुपद्रव, शान्त, कार्यभारमुक्त ।

निचोड़–निष्कर्ष ।

निचोरब–हि० क्रि० गारब ।

निछाउर–इनाम, न्यौछाबर हि० ।

निछाएब–क्रि० निछब्+अब–तृणक संशोधन ।

निछाओन–तृणादिक संशोधनसँ त्याजित अंश ।

निछाबरि–इनाम ।

निछायब–क्रि० निछब्+अब–तृणक संशोधन ।

निछार(ड़)–सर्वथा गर्भमुक्त (धान्यादि)।

निछोह–अ० निच्छोह, वेगपूर्वक (दौड़ब) ।

निजगुति–निश्चय ।

निट्ठाह–उ० प्रबल, दृढ़ । स्त्री० निट्ठाहि ।

निट्ठर / **निठुर** –उ० निष्ठुर । स्त्री० निट्ठरि ।

निडर–उ० निहुर, निर्भय । स्त्री० निडरि ।

निड़ारब–क्रि० निड़ार्+अब–आँखिक आस्फालन ।

निड्डर–उ० निर्भय । स्त्री० निनिड्डरि ।

नित–अ० नित्य, प्रतिदिन ।

नितराएब / **नितरायब** –क्रि० नितर्+अब–गर्वसँ अगराएब ।

नित्त / **नित्य** –अ० नित्य, प्रतिदिन ।

निधार–निराधार ।

निधूह–निर्द्धूम ।

निधोख–धोखासँ रहित, निःशङ्क ।

निन–निन्द, निद्रा १ । निद्रित २ ।

निनाइ–पेटक वायुविशेष ।

निनाइ उखड़ब–क्रि० उदरवायुक स्थानत्याग ।

निनान्नब्बे–एकोनशत, ९९ ।

निनान्नब्बेम–एकोनशततम ।

निन्दित–सं० निन्दास्पद ।

निन्न–निद्रित १ । निद्रा २ ।

निपट–निपट्ट, अन्ध ।

निपटब–क्रि० फरिछोट होएब, विवादक पर्यवसान होएब ।

निपटाएब–क्रि० निपट्ब+अब–फरिछोट करब, विवादक पर्यवसान करब ।

निपट्ट–अन्ध ।

निपब–क्रि० लेपन ।

निबहता–निर्वाह ।

निबहब–क्रि० सम्पन्न होएब १ । निर्वाह करब २ ।

निबाह–निर्वाह ।

निबाहब–क्रि० निबाह्+अब–सम्पादित करब, निर्वाहण ।

निभरोस–निराश ।

निमकी–सौंस नेबोक मसाला रहित अँचार ।

निमन–निम्मन, उत्तम ।

निमरसखा / **निमरसेखा** –अनवशेष, जकर शेष नहि रहए ।

निमहता–निर्बाह ।

निमुठ हाथ–मुट्ठी बान्हल हाथक परिमाण ।

निमुन / **निमुन्न** –सर्वथा मुद्रित ।

निमोछिआ–मोछसँ रहित ।

निम्मन–निमन, उत्तम ।

नियत–सं० निश्चित ।

नियति–वि० स्वभाव ।

निरघिन–निर्घृण, घृणास्पद, अश्रद्ध ।

निरदिस–अकिञ्चन असहाय ।

निरधार–निर्धारण, निश्चय, सन्तोष ।

निरधारब–क्रि० निरधार् + अब–सन्तोषपूर्वक निश्चय करब ।

निरधोख–निःशङ्क ।

निरपराध / **निरपराधी** –अपराधहीन ।

निरमाल–निर्माल्य ।

निरमोही–स्नेहशून्य ।

निरस–नीरस, रसहीन १ । आधासँ न्यून (अश) २ ।

निरसब–क्रि० त्याग ।

निरस्त–आशाहीन ।

निरहट–शासनक उल्लङ्घन कएनिहार ।

निराओ–नीरव, निर्वात (समय) ।

निरादर–सं० अनादर ।

निराल–शुद्ध, केवल, अमिश्रित (जलादि) ।

निराश–सं० हताश ।

निरुद्योग–सं० उद्योगशून्य ।

निरुपाय–सं० जकर उपाय नहि हो ।

निरैठ–अनुच्छिष्ट ।

निरोग–नीरोग, रोगहीन ।

निरोध–सं० रोकब ।

निरोधी–सं० रोकनिहार ।

निर्घिन–घृणास्पद, दर्शनसँ चित्त-विकारोत्पादक ।

निर्दय–सं० दयाशून्य ।

निर्दिस–असहाय, अकिञ्चन ।

निर्दोष–सं० दोषशून्य ।

निर्धोख–धोखासँ शून्य, अशङ्क ।

निर्वाह–सं० भरण-पोषण ।

निर्विकार–सं० विकारहीन, लज्जाहीन ।

निर्बिसी–उच्चटा, ओषधिविशेष ।

निर्व्यग्र–सं० व्यग्रतारहित ।

निःशब्द–सं० शब्दशून्य ।

निशा–राति ।

निशाकाल–मध्यरात्र ।

निश्चय–सं० निर्णय ।

निश्चिन्त–सं० चिन्ताशून्य ।

निसङ्क–निःशङ्क ।

निसबद–निःशब्द ।

निसाँ–मद्यपानजन्य मद ।

निसादर–ओषधिविशेष ।

निसाफ–वि० न्याय ।

निसाफी–वि० न्यायी ।

निस्तार–सं० समाप्ति, १। सम्पन्नता २ ।

निहत्थ / **निहथ** –जकर हस्तगत धन खर्च भए गेल हो से, रिक्तहस्त ।

निहल–हाल (आर्द्रता) सँ शून्य (खेत)।

निहारब–क्रि० निहार्+अब–साकाङ्क्ष भए ताकब ।

निहुछब–क्रि० देवादिक उद्देश्यैँ राखब ।
निहुरब–क्रि० नम्र होएब ।
नीक–उत्तम, भल ।
नीच–सं० अधम १ । नत (भूमि-आदि) २ ।
नीचाँ–अ० नीच देशमे ।
नीपब–क्रि० निप्+अब-लेपन ।
नीपब-पोतब–क्रि० लेपनादि ।
नीपल–उपलिप्त ।
नीपा–उपलेपन ।
नीम–निम्ब ।
नीमन–उत्तम ।
नील–सं० हरिअर ।
नीलकण्ठ–सं० नील कण्ठबाला पक्षिविशेष ।
नीलकमल–सं० इन्दीवर ।
नीलम / **नीलमणि** } –नीलमणि, वैदूर्य ।
नीर–मन्त्रोपहित जल ।
नीरविभूति–मन्त्रोपहित जल विभूत्यादि ।
नुकाएब–क्रि० नुक्+अब-प्रच्छण होएब १। नुकब्+अब-प्रच्छन्न करब २ ।
नुड़िआएब–ना० नूड़ जेकाँ आचरण करब, अर्थात् इतस्ततः पाछाँ लागल चलब १ । वस्त्रादिकेँ संकुचित कए राखब २ ।
नूआ–वस्त्र ।
नूज–न्युब्ज ।
नूड़–उपलेपनक हेतु आकुञ्चित वस्त्रादि ।
ने–अ० निषेध १ । कोमलालाप २ ।
नेआर–क्रिया करबाक इच्छा ।
नेआरभास–नेआरप्रभृति ।
नेआरब–क्रि० नेआर्+अब-क्रिया करबाक इच्छा करब ।
नेओँत–निमन्त्रण ।
नेओँता–अ० निमन्त्रणमे ।
नेड़हा–तार कटहर ओ मकैक लम्बाकार फलाधार ।
नेढ़ लागब–क्रि० पिल्ला-पिल्लीक उनटा जोट लागब ।
नेन–मत्स्यविशेष ।
नेनओन–नेनासन ।
नेनपन / **नेनपना** / **नेनपनी** } –नेनाक क्रिया, शिशुत्व ।
नेनमति–नेनाक सन मति ।
नेनमतिआ–नेनाक सन बुद्धिबाला ।
नेना–अलिङ्ग-शिशु ।
नेनाक रोग–पूतनादिकृत बालग्रह ।
नेनु–नवनीत ।
नेनुआ भोस–कदलीविशेष ।
नेनोन–नेनाक सन ।
नेप चुबब–क्रि० क्रन्दनविशेष ।
नेपाली–नेपालदेशोद्भव ।
नेपुर–नूपुर, चरणक भूषणविशेष ।
नेबार–खाट घोरबाक सूतसँ निर्मित लम्बा पटविशेष ।
नेबारि–स्रग्मालिका, पुष्पविशेष ।
नेबेद–नैवेद्य ।
नेबो–जम्बीर ।
नेम–नियम (व्रतादिक) ।
नेमटेम–व्रतादिक नियमक आडम्बर ।
नेरसराए–नेत्रक आवरणक रोगविशेष ।
नेरू–अलिङ्ग, गायक छोट बाछा-बाछी ।

नेसब–क्रि० दीपप्रज्वालन ।
नेह–स्नेह ।
नेहाइत–वि० अत्यन्त ।
नेहाए / **नेहाय** } –अयोघन, लौहादि पिटबाक लौहनिर्मित स्थूल आधार ।
नेहारु–सोनारक हथिआरविशेष ।
नेहारुन–अल्पसँ अल्प १ । हताश २ ।
नेहाल–वि० अत्यन्त उपकृत, कृतार्थ ।
नेहोरा–दैन्यपूर्वक प्रार्थना ।
नैआ–नौवाहक, नाओ खेबनिहार, नाविक।
नैवेद्य–सं० भगवन्निवेदित (फल पक्वान्नादि) ।
नैवेद्यपत्री–सं० भोजनकालिकनैवेद्या-धारणपात्र ।
नैहर–पितृगृह (स्त्रीक) ।
नोक / **नोकनी** } –तीक्षण अस्त्राग्र ।
नोकर–उ० वि० दास, चाकर । स्त्री० नोकरानी ।
नोकरी–वि० दास्य ।
नोकसान–वि० क्षतिग्रस्त ।
नोकसानी–वि० क्षति ।
नोख–उत्तम, सुन्दर ।
नोखगर–सुन्दर ।
नोचनी–कुड़िऐनी, कण्डूति ।
नोचनी लागब–क्रि० कण्डूतिप्राप्ति ।
नोचब–क्रि० वक्रवस्तुक अग्रभाग सँ घर्षण ।
नोतर–पचेसीमे नवम स्थान ।
नोन–लवण ।
नोनगर–अधिक नोनसँ युक्त १ । नोनसँ युक्त २ ।
नोनचट–सपक्ष मशकाकार अतिछोट कीटाविशेष ।
नोनछराह / **नोनछाह** } –लवणयुक्त सन ।
नोनथरा–लवणनिर्माणस्थल ।
नोनफड़–नोनिआह भूमिविशेष ।
नोनिआ–उ० जातिविशेष । स्त्री० नोनिआनि
नोनिआह–नोनी लागल (भूमि) ।
नोनी–शाकविशेष १ । भित्त्यादिक रोगविशेष २ ।
नोर–अश्रु ।
नोराएब–ना० नोर्+अब-नोरसँ युक्त होएब ।
नोसक्कड़–अधिक नोसि लेनिहार ।
नोसि–नस्य ।
नोसिदानी–नस्यपात्र ।
नौआ–उ० नापित । स्त्री० नौआइनि ।
नौआइनि / **नोआनि** } –स्त्री० नापित स्त्री ।
नौगृही / **नौग्रही** } –भूषणविशेष ।
न्यार–क्रिया करबाक इच्छा ।
न्यारब–क्रि० न्यार्+अब-क्रिया करबाक इच्छा करब ।
न्यो–भित्त्यादिक आधारभित्ति ।
न्योत–निमन्त्रण ।
न्योतब–ना० निमन्त्रित करब ।
न्योतपिहान–निमन्त्रणादि ।
न्योतहारी–निमन्त्रित व्यक्ति ।
न्योताँ–अ० निमन्त्रणमे ।

प

प'
पअ } –पक्व व्रणक छेदन ।

पइती–पवित्र, निर्मित कुशविशेष ।

पए–वि० अङ्कक दोष ।

पएजामा–वि० अधरोरुक ।

पएताबा–वि० पादत्राणवस्त्र ।

पएदार–वि० अङ्कक दोषसँ युक्त ।

पएरधरी–आर्त्तिसँ पादग्रहण ।

पओ–एक घर आगाँ चलबाक हक्क (पचेसीमे) ।

पओने–पादोन (संख्या वा परिमाण) ।

पकठाएब–क्रि० पकठ्+अब-कठोर होएब ।

पकठोस–उ० बजबामे प्रौढ । स्त्री० पकठोसि ।

पकड़ब–क्रि० ग्रहण ।

पकपकाएब–क्रि० पकपक+अब-मनहिमन क्रोधाकुल होएब ।

पकमान–पक्वान्न, मालपूआ प्रभृति ।

पकाओ–घाबक परिपाक ।

पकोहा–शुष्क आम्रबीज ।

पक्का–हि० निश्चित, दृढ़ ।

पक्की–वि० असली, वास्तविक ।

पक्खा–पाखा, कोठा आदिक पार्श्वभाग ।

पक्ष–सं० चान्द्रमासक कृष्ण-शुक्ल भेदसँ पूर्वापर खण्ड १ । मत २ । दल ३ ।

पख–पक्ष, चान्द्रमासक अर्धावयव ।

पखरा खाएर–खदिरनिर्यासक प्रभेद ।

पखाओज–वाद्यविशेष ।

पखारब–क्रि० पखार्+अब-प्रक्षालन ।

पखिआ बीड़ी–लगाओल पानक बीड़ीक प्रभेद ।

पँखिगर–जुटल पाँखिसँ युक्त ।

पखिना–गृहादिक उभयपार्श्वक अङ्ग ।

पखेब–मालकेँ देबाक औषधविशेष ।

पगहा–हलादिक डोरी, बनसीक डोरी ।

पगाड़–कुसिआरक अग्रभाग ।

पघड़िआ–हाँसूक प्रभेद ।

पघाँस–मत्स्यविशेष ।

पघिलब–क्रि० द्रवीभाव ।

पङ्खा–व्यजनविशेष ।

पङ्खी–छोट पङ्खा ।

पङ्गा–सामुद्रलवण ।

पचकटारि–दुब्बर ।

पचकट्टा–धानक रोगविशेष ।

पचकनमाही–पाँच कनमाक नपना ।

पचकब–क्रि० क्वचित् अवयवसँ दबब, आघातसँ कोनो भागमे निम्नता-प्राप्ति।

पचकारब–क्रि० पचकार्+अब-तैलादिक अधिक लिप्पन ।

पचखण्डी–भूषणविशेष ।

पचनिआ–पाच कएनिहार ।

पचनोना–पञ्चलवण ।

पचपच करब–क्रि० किञ्चित् वान्ति-शङ्कायुक्त होएब ।

पचपचाएब–क्रि० पचपच्+अब-बमनक शङ्कासँ युक्त होएब ।

पचपची–वान्तिशङ्का ।

पचपन
पचपन्न } –पञ्चपञ्चाशत् ।

पचपन्नम–पञ्चपञ्चाशत्तम ।

पचपौनिआ–पञ्चकारुकी, पाँचो पसारी ।

पचबनिआ–भूषणविशेष ।

पचमी हिस्सा–पञ्चमांश ।

पचमेर–पाँच प्रकारक मधुर ।

पचरँगा
पचरङा
पचरङ्गा } –पाँच रङ्गसँ रङल (कपड़ा)।

पचहत्तरि–पञ्चसप्तति ।

पचहत्तरिम–पञ्चसप्ततितम ।

पचहर–स्त्रीक पयखाना, कृत्रिम पुरीषालय ।

पचागि–पञ्चाग्नि (व्रत) ।

पचास–पञ्चाशत् ।

पचासम–पञ्चाशत्तम ।

पचासी–पञ्चाशीति ।

पचासीम–पञ्चाशीतितम ।

पचीस–पञ्चविंशति ।

पचीसम–पञ्चविंशतितम ।

पचुसर–किञ्चित् ऊस युक्त (भूमि) ।

पचेसी–क्रीड़ाविशेष ।

पचौन्ह–पञ्चबन्धन ।

पच्चर–बेंट आदि दृढ़ करबाक हेतु देल किल्ली ।

पच्चा-दूआ–अ० पाँचमे दू अंश ।

पच्ची–भूषणमे बालुकादिक अन्तः-प्रवेशन ।

पच्छ–पक्ष ।

पच्छिम–पश्चिम ।

पच्छिम भर–पश्चिम देश ।

पच्छी–पक्षी ।

पछता–पश्चादुभव ।

पछताएब–क्रि० पछतब्+अब-पश्चात्ताप।

पछबा–पश्चिमसँ आगत (वायु) ।

पछबारि–पश्चिम दिगवस्थित (गृहादि)।

पछाड़ी–पश्चाद्भाग ।

पछाति–अ० पश्चात् ।

पछारब–क्रि० पछार्+अब-प्रतिद्वन्द्वीकेँ तर कए उपर आएब ।

पछिमहा–पश्चिम देशभव (ब्राह्मण) ।

पछिमा ब्राह्मण–पश्चिमदेशभव ।

पछिमा कायस्थ–कायस्थविशेष ।

पछिमा ढार–पश्चिमप्लव ।

पछिमाहा–पछिमहा ।

पछिमाहुत–समीपपश्चिमदेशस्थ ।

पछिला–पश्चाद्भव १। पश्चात् स्थित २ ।

पछुअति–घरक पछिला चार ।

पछुआ–भूषणविशेष ।

पछुआएब–ना० पाछू होएब ।

पछुआड़–घरक पश्चिम अवकाश ।

पछुआँड़ी बान्ह–मनुष्यक बन्धनविशेष ।

पछुलगुआ–पाछाँ रहनिहार अनादरणीय १ । शूद्रक स्त्रीक पछिला स्वामी सँ जनमल बच्चा २ ।

पछोर–अनुगमन ।

पजरब–क्रि० प्रज्वलन ।

पँजरबार–पार्श्वक गर ।

पँजरमोड़ (र)–पाँजरक वेदनाविशेष ।

पजारब–क्रि० पजार्+अब-प्रज्वालन ।

पँजिआड़–पञ्जीकार ।

पजिआड़ी–पञ्जीकारक क्रिया ।

पजेबा–इष्टका ।

पँजौड़–पाँजमे गृहीत (धान्यादि) ।

पञ्झाएब–क्रि० पञ्झ्+अब-मिझाएब ।

पञ्च–मानल वादनिर्णेता ।

पञ्चकल्याण–घोड़ाक शुभ लक्षणविशेष, चारू पाएर ओ चानिमे उज्जर ।

पञ्चक्रोशी–सं० पाँच कोसक परिक्रमा (काशीमे) ।
पञ्चगरास / **पञ्चग्रास**–भोजनक पूर्व पाँचबेर समन्त्र अन्नभक्षण ।
पञ्चदीप–सं० पाँच मुहबाला दीप ।
पञ्चपात्र–सं० सूर्यादिपञ्चदेवता पूजनार्थ जलपात्रविशेष ।
पञ्चमी–सं० पाँचम तिथि ।
पञ्चमुखी–पाँच मुहबाला (दीपपात्रादि) १। ओढ़ुल फूलक प्रभेद २ ।
पञ्चान्नब्वे–पञ्चनवति ।
पञ्चान्नब्वेम–पञ्चनवतितम ।
पञ्चैती–पञ्चक क्रिया (न्याय) ।
पञ्ज–पूर्णवयरक घोड़ा १ । वि० अस्वाधीन २ ।
पञ्जीकार–पँजिआड ।
पञ्जीबद्ध–जकर नाम पाँजिमे प्रारम्भसँ अछि ।
पट–आवरण १ । वस्त्र २ ।
पटइ–भार लटकएबाक वंशदण्डविशेष ।
पटकब–क्रि० पातन ।
पटका–पतन ।
पटकापटकी–परस्पर पातन ।
पट दए–अ० झट दए, झटिति, लगले ।
पटदेहरि–चौकठिक उपर देबाक तकथा ।
पटब–क्रि० वृक्षक्षेत्रादिक जलसँ युक्त होएब १ । सौमनस्य रहब, विरोध नहि होएब २ । व्याप्त होएब ३ ।
पटबरिका–पटबारीक क्रिया (रसीद कटबामे नियुक्ति) ।
पटबा–जातिविशेष ।
पटबारी–पोतक रसीद कटबामे नियुक्त ।
पटम्बर–पट्टाम्बर ।
पटरानी–स्त्री० राजाक प्रधान पत्नी ।
पटरी–काष्ठादिक छोट पट्ट ।
पटरी बैसब–क्रि० मिलान होएब (लाक्षणिक शब्द) ।
पटल–सं० प्रक्रिया ।
पटसार–जकर मथनी उचितसँ अधिक नीच हो से (घर) ।
पटाँस–तृणविशेष ।
पटिआ–परतानसँ निर्मित कट ।
पटुआ–जकर सन होइछ से वृक्ष विशेष।
पटुआ साग–शाकविशेष ।
पटेर–तृणविशेष ।
पटोटन–बिना बातीक खढ़सँ चारक आच्छादन १ । धरना २ ।
पटोर–पट्टवस्त्र ।
पटौटी–भोजनार्थ बिछाओल पात ।
पटौनी–उद्धृत जलसँ भूमिक आल्पावन।
पट्ट–देवमन्दिरक कवाट १ । सं० पट्टोर्ण २ ।
पट्टा–हि० भरल पक्की दू मोनक बोरा ।
पट्टी–अंश १ । औषधयुक्त व्रणक आच्छादनपट २ ।
पट्टीदार–वि० स्वत्वांशभागी ।
पट्टीबन्दी–वि० भूमिक अंशविभाजन।
पट्टीबाज–वि० धोखा देनिहार ।
पट्टीबाजी–वि० धोखा देनाइ ।
पट्टू–ऊर्णावस्त्रविशेष ।
पट्ठा–पहलमानक शिष्य ।
पठरू–अलिङ्ग, बकरीक बच्चा ।
पठाएब–क्रि० पठब+अब-प्रेषण ।

पठिआर–अपञ्जीबद्ध ब्राह्मणक ग्रामसमूह।
पड़ब–क्रि० आधार पर एक भागेँ सर्वाङ्गसंयोग १। विषयीभवन, यथा बूझि पड़ल, सूनि पड़ल २। आवश्यक प्राप्ति, यथा जाय पड़ल ३। संबद्ध होयब ४ ।
पड़रू–अलिङ्ग, महिंसिक बच्चा ।
पड़ाएब–क्रि० पड+अब-पलायन ।
पड़ाएन–पलायन, वासत्याग ।
पड़ाँचब–क्रि० आद्योपान्त कथन ।
पँडुकी / **पडुकी**–पक्षिविशेष ।
पड़ोर–पटोल ।
पड़ोरिआ–पटोलफलाकारक (कपाटमुद्रक) ।
पड़ोस–गृहसमीपक आवास ।
पड़ोसी–सं० गृहसमीपवासी व्यक्ति । स्त्री पड़ोसिनि ।
पढ़ओनाइ–अध्यापन ।
पढ़नाइ–अध्ययन ।
पढ़ब–क्रि० अध्ययन ।
पढ़ब-गूनब–क्रि० अध्ययनादि ।
पढाइ–हि० पाठन ।
पढ़ाएब–क्रि० पढ़ब+अब-अध्यापन ।
पढ़िआ–पाढ़िबाला (धोती साढ़ी) ।
पढुआ–छात्र ।
पणाचब–क्रि० पणाच्+अब-आद्योपान्त कथन ।
पणुकी–पँडुकी, पक्षिविशेष ।
पण्डा–तीर्थक ब्राह्मण ।
पण्डित–सं० विद्वान् ।
पण्डिताइ–पाण्डित्य ।
पण्डितामं–पण्डितोचित (पाग आदि) ।
पण्डितारय–पण्डितक व्यवहार, पाण्डित्य ।
पतकट्टा–धानक रोगविशेष ।
पतकाछु–कूर्मक प्रभेद ।
पतकोबी–बिना फूलक कोबी ।
पतगर–अधिक पातबाला ।
पतचट्टा–खएबाक काल पातपर्यन्त चटनिहार (निन्दामे) ।
पतड़ा–पञ्चाङ्ग, तिथिपत्र ।
पतड़ी–खडिका लगाय अनेक पातसँ बनाओल भोजनपात्र ।
पतनुकान–गाछक पातमे नुकाएब, भयादिसँ प्रच्छन्न होएब ।
पतन्नोना–पतलोना, पातपर परसल नोन ।
पतरका–उ० पातर प्रकारक । स्त्री० पतरकी ।
पतरधना–पातर धान, मेही धान ।
पतराएब–ना० पतरब्+अब-पातर करब।
पतसीझ–पसीझ ।
पता–स्थितिस्थानपरिचय, प्राप्तिस्थान ।
पताका–सं० वैजयन्ती ।
पताल–पाताल ।
पता लागब–क्रि० प्राप्तिस्थानक अवगम ।
पतासी–मत्स्यविशेष ।
पति–प्रतिष्ठा १ । सं० स्वामी २ ।
पतिआ–प्रायश्चित्त ।
पतिआएब–क्रि० पति+अब-प्रतीत करब, विश्वास ।
पतिआनी–पाँती, पङ्क्ति ।
पतिआनीजोड़ (र)–पङ्क्तिबद्ध ।
पतिकरनी–प्रतिष्ठारक्षार्थ अत्यल्प क्रिया।

पतित–सं० महापातकी ।
पतिता–अनादरणीय पतित ।
पतिव्रता–स्त्री० सं० साध्वी ।
पतौटी–भोजनार्थ बिछाओल पात ।
पतौड़ी / **पतौरी** } –ताम्बूलादि रखबाक पत्रपुटक ।
पत्तर–लौहपत्र ।
पत्ता–पात १ । पता २ ।
पत्ती–छोट पात ।
पत्र–लौहपत्र १। सं० चीठी २ । पात ३ ।
पथरखड़ी–खटी, कठिनी ।
पथरचूर–क्षुपविशेष ।
पथराएब–ना० पाथरपर पिजाएब ।
पथरी–मूत्राशयस्थित पाथरसन दृढ मांसपिण्ड, रोगविशेष ।
पथरौटी–पाथरक बाटी ।
पथार–वस्तुक समन्तात् पसार ।
पथिआ–बाँस वा बेँतक बनाओल धान्यादिपात्रविशेष ।
पथेरि–पजेबा पथबाक स्थान ।
पदन्धोती–पादपर्यन्त पहिरल धोती ।
पदमकाठ / **पद्मकाठ** } –वृक्षविशेष, सं० पद्मक।
पनखौका–उ० अधिक पान खएनिहार। स्त्री० पनखौकी ।
पनपथिआ–पान रखबाक एकहरा छोट पथिआ ।
पनबट्टा–पुटद्वयात्मक पान रखबाक पैघ पात्र, करङ्क ।
पनबट्टी–छोट करङ्क ।
पनबसना–पान बासबाक ओ रखबाक पात्र ।

पनमा–पर्णाकारचिह्नित रक्तवर्ण तासक फर्द, लाल पान ।
पनरह–पञ्चदश ।
पनरहम–पञ्चदश संख्याक पूरक ।
पनहाएब–क्रि० पनह्+अब–मालक वा ओकर स्तनक दुग्धदानोन्मुख होएब ।
पनहाओन–महिसिक बाहबाक पूर्वरूप।
पनहाओन देब–क्रि० बाहबाक पूर्वरूप-प्राप्ति ।
पनही–जूता ।
पनहैनी–पनहाओन ।
पनारा–ऊपरसँ मुद्रित पनिबह ।
पनि–करीनसँ पटएबाक पनिबट ।
पनिअओरा–फलविशेष, पनिओरा।
पनिआएब–ना० पानि+अब–पानिसँ युक्त होएब ।
पनिआगर–जलसँ रक्षार्थ ठाठक उपर अग्रभागमे देल खढ़क टट्टी ।
पनिआ दराध–सर्पविशेष ।
पनिआरी–अधिक वृष्टि ।
पनिआह–पानिसँ युक्त ।
पनिआहा–पानिसँ युक्त (मेघ) ।
पनिओरा–पनिअओरा, फलविशेष ।
पनिकनरा / **पनिकानर** } –करीनसँ पटएबामे जलक सामीप्य, करीनकेँ जल सान्निध्य ।
पनिकौआ–काकविशेष ।
पनिगर–अधिक जलसँ युक्त १ । अधिक तेजीसँ युक्त २ ।
पनिघट–पानि भरबाक घाट ।
पनिचड़ै–जलपक्षी ।

पनिचहट–जाहिमे पानिक सम्बन्धसँ आर्द्रता बनल रहए से (खेत) ।
पनिछाएब–क्रि० पनिछ्+अब–स्वादिष्ट वस्तु खएबाक हेतु जिह्वा जलसँ युक्त होएब ।
पनिछेक–पानिक छेकब, जलगतिनिरोध
पनिजत्तू–पानिसँ जाँतल, अधिक समय धरि पानिमे डुबल (धान्यादि) ।
पनिझाओ–पोखरिक जलमय प्रदेश ।
पनिझाली–धान ।
पनिडुब्बी–पानिमे डुबल रहनिहार प्रेत ।
पनितोआ / **पनितौआ** } –मिष्टान्नविशेष ।
पनिदुहुर / **पनिदुद्धुर** } –जलोदर व्याधि ।
पनिपत लेब–क्रि० अधिक पानि रहबाक कारणेँ पानिक भरेँ धान्यादिक पत्रक पतन ।
पनिपिआइ–जलखइ, जलपान, जलपानार्थ किच्छु भोजन ।
पनिबट / **पनिबह** } –पानि बहबाक नीच मार्ग ।
पनिभर–उ० पानि भरबामे नियुक्त । स्त्री० पनिभरनी ।
पनिमरू–किञ्चित्शुष्क तृणकाष्ठादि १ । मन्द-मन्द काज कएनिहार २ ।
पनिसह–अधिक पानि सहनिहार ।
पनिसाला–प्रपा, पानीयशाला ।
पनिसोखा–इन्द्रधनुष ।
पनिसोह–जलप्रचुर अल्पमधुर (लताम आदि) ।
पनीर–औषधविशेष ।

पनुगब–क्रि० पनुघब, निष्पत्र भए पुनः शाखाङ्कुर लाभ करब ।
पनुगा / **पनुगी** } –वृक्षक शाखा चलबाक अङ्कुर ।
पन्द्रह–पनरह, पञ्चदश ।
पन्द्रहम–पञ्चदशसंख्याक पूरक ।
पन्ना–स्वर्णक प्रभेद १ । चून ओ मेही सुरखी मिलाओल २ । मरकतमणि ३ ।
पन्नी–चालमे शोभार्थ सटबाक चाकचक्ययुत चित्रपत्र ।
पन्हाएब–क्रि० पन्ह्+अब–पनहाएब ।
पन्हान–महिसिक गर्भधारणक पूर्वरूप विशेष ।
पपड़ा / **पपड़ी** } –पापड़सदृश मृत्तिकादि ।
पपिआह–उ० असद्ध व्यक्ति । स्त्री० पपिआहि ।
पपीहा–पक्षिविशेष ।
पबनाह–पाबनिक वस्तुजात ।
पबनेट (ठ)–पाबनिक बखरा ।
पबन्नी–एक पबक हेतु लाल नहि भेल पचेसीक गोटी ।
पबहारि–पचेसीमे पओ पड़लासँ घरसँ गोटी बहराएब ।
पबही–एक पाओ प्रमाणक नपना ।
पबाइ–जूता खड़ामक जोड़ाक एक टा ।
पबै–पक्षिविशेष ।
पमरिआ–पमारा पढ़ि नचनिहार, जातिविशेष ।
पमारा–पुत्रजन्मादिक उत्सवक गीतविशेष ।

पम्ह–मोछक पूर्वरूप ।
पय–वि० काणत्वादि शारीरक दोष ।
पयखाना–वि० पुरीषोत्सर्गालय ।
पयजामा–वि० अधरोरुक ।
पयताबा–वि० पादत्राणवस्त्र ।
पयदार–वि० काणत्वादिदोषयुक्त ।
पयरधरी–पाएर पकड़ब ।
पयरपोछा–पाएर पोछाबाक (वस्त्र) ।
पयरबजार–बिना कण्टकादिक रास्ता ।
पयरसंकर–चरणक भूषणविशेष ।
पर–पाँखि १ । उपर २ । सं० अन्य ३ ।
परकाल–गोल रेखा लिखबाक यन्त्र ।
परगास–प्रकाश ।
परगोत्री–असगोत्र ।
परचार–प्रचार ।
परचारब–ना० पचार्+अब-प्रचार करब १ । अपराधी व्यक्तिक 'पुनः एना जनु करी' ई कहब २ ।
परजाति–स्वजातिसँ भिन्न ।
परञ्च–सं० अ० परन्तु, पूर्वोक्तसँ विशेष।
परतर–उपमा, सादृश्य ।
परता–बिना जोतल (खेत) १ । व्यापारमे लाभ २ ।
परताँ–अ० परत्व सन्ताँ, परमे रहलासँ ।
परताएब–क्रि० परतब्+अब-नीक अधलाह जचवाक हेतु क्रिया
परतान–पटिया आदि बिनबाक सच्छिद्र यष्टि ।
परतार–समय (एक परतार आम अधिक फड़य) ।
परतारब–क्रि० परतार्+अब-प्रतारणा ।
परती–बिनु जोतल भूमि ।
परतीत–प्रतीति, विश्वास ।
परती-पराँत–परतीप्रभृति ।
परथन–परसन, खएबाक हेतु खाद्य वस्तुक पुनरादान ।
परदा–वि० पर्दा, अन्तर्धा, आवरण ।
परदेश–अन्यदेश, विदेश ।
परदेसिआ, **परदेशी** }–विदेशमे रहनिहार वा होनिहार ।
परधान–प्रधान ।
परनाति–उ० प्रपौत्र वा दौहित्रपुत्र । स्त्री० परनातिनि ।
परनाम–प्रणाम ।
परन्तु–सं० अ० किन्तु ।
परपन्न– प्रपन्न, श्रद्धास्पद ।
पर-परोसी–गृहसमीपी तथा तत्समीपी उभय ।
परब–पर्व्व, ग्रहणदि ।
परबतिआ, **परबती** }–पर्वतमे रहनिहार वा होएनिहार ।
परबरस–वि० भरणपोषण ।
परबल–प्रबल ।
परबा–पारावत, पक्षिविशेष ।
परबापाँखि–धान्यविशेष ।
परबाहि–वि० चिन्ता ।
परबेस–प्रवेश ।
परभूत, **परभूता** }–प्रभुत्व, प्रभुता, सामर्थ्य ।
परमाद–प्रमाद, उँचितो अप्रिय कहबामे संकोच ।
परमानगी–वि० आज्ञा ।
परमाना–वि० आज्ञापत्र ।
परमान्न–खीर, पायस ।

परमेसर–परमेश्वर ।
परसन–प्रसन्न १ । पुनः परिवेषित खाद्य वस्तु २ ।
परसमनि–स्पर्शमणि, जकर स्पर्शसँ धातु सोन भय जाय ।
परसुक, **परसुका** }–परसू भेल (विषय), एकान्तरितदिनभव ।
परसू–अ० परश्वः, एकदिनान्तरित पूर्व वा पर दिनमे ।
परसूत–प्रसूत रोग ।
परसूती–स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
परसौत–प्रसूताक रोग ।
परसौती–स्त्री० प्रसूता स्त्री ।
परहेज–प्रहेज, अपराधसहन १ । पुनः अकरण २ ।
परात–प्रभात १ । अग्रिम दिन २ ।
पराती–प्रभात कालमे गेय गीत ।
परान–प्राण ।
परि–अ० सदृश, [अन्याय कएने रावणक परि होएत]
परिकब–क्रि० लोभेँ पुनः पुनः प्रवृत्ति ।
परिक्रमा–सं० प्रदक्षिणगमन ।
परिचय–सं० नामादिज्ञान ।
परिचित–सं० नाम रूप आदिसँ ज्ञात ।
परिच्छा–परीक्षा ।
परिछनि–स्त्रीकर्तृक एक प्रकारक शुभविधि ।
परिछब–क्रि० वर आदिक परिछनिविधि करब ।
परिपाटी–सं० रीति ।
परिमित–सं० अल्प परिमाणसँ युक्त ।
परि लागब–क्रि० लग्+अब-प्राप्त होएब।
परिहब–क्रि० पहिरब, परिधान ।
परुकाँ–अ० परुत्, अव्यवहित पूर्व वा पर वर्ष ।
परेखब–क्रि० प्रेक्षण ।
परेत–प्रेत, देवयोनिविशेष ।
परेम–प्रेम ।
परेसान–वि० हरान, परिश्रान्त, अतिप्रयत्नयुत ।
परेसानी–वि० हरानी, अत्यायास ।
परोक्ष, **परोछ** }–अप्रत्यक्ष ।
परोपट्टा–प्रान्त, समन्तात् समीप देश ।
परोमिन–असम्बन्धिक ।
परोस–समीपस्थ देश ।
परोसिआ, **परोसी** }–समीपवासी व्यक्ति ।
पर्दा–आवरण १ । आवरक पट २ ।
पर्व–सं० ग्रहणादिक समय ।
पर्वत–सं० पहाड़ ।
पर्वतिआ, **पर्वती** }–पर्वत पर रहनिहार वा होएनिहार ।
पर्बी–पर्वक खर्च ।
पल–सं० कालक मानविशेष १ । आँखिक आवरण २ ।
पलइ–बड़का माछक पेट दिशक खण्ड।
पलखति–अवकाश ।
पलगर–अधिक पल्ला, दूरस्थित ।
पलङ्ग–पल्यङ्क ।
पलटन–परिवर्त्तन १ । वि० सैन्य २ ।
पलटब–क्रि० पूर्वस्थितिक पुनर्लाभ ।
पलथा–पद्मासनादि ।
पलथा मारब–क्रि० मार्+अब-पद्मासनादि लगाएब ।

पलपल–अति कोमल (आम्रादि) ।
पलपलाएब–क्रि० पलपल्+अब-अति कोमल होएब ।
पलबा–मत्स्यविशेष ।
पलरा–तराजूक पृथक् पृथक् उभय अङ्ग ।
पलाएब–क्रि० धान्यादिक अधिक पत्रसँ युक्त होएब ।
पलाओ–मांसादिसँ रचित कृतान्नविशेष ।
पलाँकी–शाकविशेष ।
पलार–उच्चप्रदेशसँ प्रवाह ।
पलार फेंकब–क्रि० वर्षासँ उपरसँ पानिक प्रवाह ।
पलास–पलाश, पुष्पविशेष ।
पलासपीपरि–ओषधिविशेष ।
पलासी–पलासक बीआ ।
पलिआ–धान्यविशेष ।
पलित–अपवित्र ।
पलिताह–उ० घृणास्पद वा अपवित्र काज कएनिहार । स्त्री० पलिताहि ।
पलिताही–स्त्री० घृणाष्पद काज कएनिहारि निन्द्य ।
पलै–बड़का माछक पेट दिशक खण्ड ।
पल्था–आसनबन्ध ।
पल्था मारब–क्रि० मार्+अब-आसनबन्ध लगाएब ।
पल्लव–सं० पत्र ।
पल्ला–दूर १ । केबाड़ तराजू आदि युग्मवस्तुक एक अङ्ग २ ।
पवित्री–पवित्रतासम्पादक औँठी ।
पसओना–जाहिसँ माँड़ पसाओल जाए ।
पसर–रात्रन्तमे महिसिक प्रसरण समय ।
पसरब–क्रि० प्रसरण ।
पसाएब–क्रि० पसब+अब-प्रस्रावण, पात्रकेँ झुकाए माँड़ आदिक खसाएब १। मण्डादि खसाए भात आदिकेँ संस्कृत करब २ [प्रथम अर्थमे माँड़ कर्म, दोसरमे भात] ।
पसार–प्रसार, विस्तार ।
पसारी–नियत रूपेँ परिवारक कार्य कएनिहार व्यवसायी, यथा धोबि, नौआ इत्यादि ।
पसाहनि–स्त्रीक कपारमे शोभार्थ चित्ररचना ।
पसाही–भूमिस्थ तृणमे परम्परा सम्बन्धक कारण अग्निक प्रसरण ।
पसीझ–कण्टकमय शाखायुक्त क्षुपविशेष।
पसेना–घाम, स्वेद ।
पसेरी–पञ्चसेटकी, मनक अष्टमांश मान ।
पस्त–वि० दबल, धसल ।
पहटब–क्रि० काष्ठकेँ समतल करबाक हेतु छीलब ।
पहटा–माछ मारबाक साधनविशेष ।
पहथ–एक लप परिमाण ।
पहपटि–दुराग्रह (शिशुक) ।
पहपटिआ–दुराग्रही (शिशु) ।
पहर–प्रहर, कालक परिमाणविशेष ।
पहररतिआ–रातुक चारिम पहरमे उगनिहार (तारा) ।
पहरा–पहर-पहरमे रक्षकक सतर्कता, रक्षा ।
पहरिआ–पहरूदार ।
पहल–स्तम्भादिमे समन्तात अनेक समतलीकृत भाग ।
पहलमान–मल्ल ।

पहलमानी–मल्लक कार्य ।
पहलेज–लताफलविशेष ।
पहाड़–पर्वत ।
पहाड़ी–पर्वतीय ।
पहाड़ी मेना–मेना प्रभेद ।
पहिआ–रथचक्र ।
पहिआएब–पहि+अब-पाहि लगाएब ।
पहिगर–गतायातयोग्य (स्थान)
पहिने–अ० प्रथमतः ।
पहिरना–परिधानीय ।
पहिरब–क्रि० परिधान ।
पहिल–प्रथम ।
पहिल-साँझ–सन्ध्याक प्रथम भाग ।
पहिलुक–प्राथमिक ।
पहिलुका–प्रथम प्रकारक ।
पहिलोठि–स्त्री० प्रथमप्रसूता (गाए आदि)।
पही–माछ मारबाक साधनविशेष ।
पहु–स्वामी (गीतमे) ।
पहुआ–पक्षिविशेष ।
पहुँच–प्राप्ति ।
पहँचनामा–प्राप्तिपत्र ।
पहँचब–क्रि० प्राप्ति ।
पहुँचा–मणिबन्ध १ । मणिबन्धक भूषणविशेष २ ।
पहुँचाएब–क्रि० पहुँचब्+अब-प्रापण ।
पहुँची–मणिबन्धक भूषणविशेष ।
पहुनघरा–अतिथिगृह ।
पहुना–शूद्रक जामाता ।
पहुनाइ–पाहुन होएब ।
पहुलाठ–डाँड़ओ जाँघक सन्धिस्थल ।
पाइ–पण, कच्चा, आनाक चतुर्थांश, पैसा।
पाइट–हर बहबामे एक बड़दके दोसर बड़दक सङ्ग ।
पाउजि–रोमन्थ ।
पाएब–क्रि० पब्+अब-प्राप्ति १ । अरक्षित वस्तुक ग्रहण २ ।
पाएर–चरण ।
पाओ–सेरक चतुर्थांश परिमाण, पाद ।
पाओज–रोमन्थ, पाउजि ।
पाक–सं० महानस, रान्हब १। भत्ता २ । वि० उद्धत, निर्दोष ३ ।
पाँक–पङ्क, थाल ।
पाकड़ि–पर्कटी, वृक्षविशेष ।
पाकब–क्रि० पक्+अब-शरीरमे अग्निक संयोग होएब १ । पक्व होएब २ ।
पाँकी–जलक सङ्ग आबि बैसल श्लक्ष्ण (माटि) ।
पाखड़ि–धान्यविशेष ।
पाखण्डी–नास्तिक ।
पाखा–पार्श्व ।
पाँखि–पक्ष, पक्षीक उड़बाक साधक अङ्ग ।
पाँखुर–बाँहिक ओ कान्हक जोड़ ।
पाग–उष्णीष, वस्त्ररचित शिरोभूषणविशेष।
पागब–क्रि० पग्+अब-चीनीक सिरकासँ युक्त करब ।
पाच–सूचीक अग्र वारंवार भोँकि औषधकेँ त्वचाक तर पहुँचाएब ।
पाँच–पञ्चसंख्यायुत ।
पाँचम–पञ्चम ।
पाछाँ, **पाछू** }–पृष्ठदेश १ । अ० पश्चात् २ ।
पाँज–वस्तु पकड़बामे वर्त्तुलीकृत बाहु ।

पाँजर–पेटक दुहू भाग ।

पाँजि–पञ्जी, वंशानुक्रमेँ पुरुषक नामावली ।

पाजी–वि० बदमास, दुष्ट ।

पाट–पट्ट १ । धोबीक दारु २ ।

पाटब–क्रि० पट्+अब-पजेबा आदिसँ आच्छादित करब १ । व्याप्त होएब २ ।

पाटल–जलादिसँ व्याप्त १ । पजेबासँ आच्छादित समतल छदिसँ युक्त २ ।

पाटापाटी–मतभेदप्रयुक्त दू दल होएब ।

पाटि लागब–क्रि० लग्+अब-बड़दक शिक्षार्थ प्रारम्भिक हलग्रहण ।

पाटी–शिक्षार्थ काष्ठनिर्मित लेखपट १ । केशविन्यासविशेष २ ।

पाठ–सं० पढ़ब ।

पाठक–सं० उपाधिविशेष १ । पाठ कएनिहार २ ।

पाठा–सं० ओषधिविशेष १ । मल्लक शिष्य, पट्ठा २ ।

पाठी–बिनु बाहलि छागी ।

पाँड़रि–पाटला, वृक्षविशेष ।

पाड़ा–उ० महिसिक बच्चा । स्त्री० पाड़ी ।

पाँड़े–पाण्डेय, ब्राह्मणक उपाधिविशेष ।

पाढ़–डाँड़क भूषणविशेष ।

पाढ़ि–विभिन्न वर्णक वस्त्रक अन्तिम अवयव ।

पात–पत्र ।

पातड़ि–भगवतीक हेतु क्षीरपाकादि १ । खड़िकासँ अनेक पातकेँ जोड़ि बनाओल भोजनक पात २ ।

पातर–कृश, सूक्ष्म ।

पाँतर–कान्तार, प्रान्तर, निर्जन पैघ भूमि।

पाता–निमन्त्रणपत्र ।

पाति–स्त्रीक बाहुक अलङ्करणविशेष ।

पातिल–भात रन्हबाक योग्य पैघ मृत्पात्र।

पाँती–पङ्क्ति ।

पाँतीजोड़ (र)–पङ्क्तिबद्ध ।

पात्र–सं० कण्टहा, श्राद्धमे पुजओनिहार ब्राह्मण १ । योग्य २ । वस्तु रखबाक आधार ३ ।

पाथब–क्रि० पथ्+अब-स्थिर कए राखब [चिपड़ी बनसी वा कान पाथू] ।

पाथर–प्रस्तर ।

पाथेय–सं० बाटमे खाद्य, बटखर्चा ।

पादब–क्रि० पद् + अब - अपान-वायुत्यागशब्द ।

पान–पर्ण, नागवल्ली १ । ताम्बूल २ ।

पानापत्ती–ओषधिविशेष ।

पानापोठी–लताविशेष ।

पानि–पानीय, जल ।

पाप–सं० अधर्म ।

पापड़–कृतान्नविशेष ।

पापी–सं० पापयुक्त ।

पाबनि–पावनी तिथि, व्रतपूजादिक विशिष्ट तिथि ।

पाबनितिहार–पावनिप्रभृति ।

पाय–अङ्कक दोष ।

पायर–पाएर, चरण ।

पाया–धारक अपर तट १ । पर्यायेँ प्रवर्त्तमान क्रियाक हेतु ककरो प्राप्त अवसर २ ।

पार उतरव–क्रि० धारक अपर तट जाएब।

पारना–पारणा, उपवासोत्तर भोजन ।

पारब–क्रि० पार्+अब-कुठारादिक्रिया ।

पारबारी–पारावारक क्रिया, तटान्तरगमन ।

पारा–पारद, धातुविशेष ।

पारी–पर्यायप्राप्ति, पर्यायतः प्राप्त अवसर ।

पाल–नौकाक गुणवृक्षक कपड़ा ।

पालकी–शिविकाविशेष ।

पाल खाएब–क्रि० ख्+अब-घोड़ीक बाहब ।

पालन–प्रतिपाल ।

पालब–क्रि० पाल्+अब-पालन करब ।

पाला–हिम, बर्फ ।

पालिस–वि० श्लक्ष्ण लेप, दृढ़ लेप-विशेषसँ रङब ।

पालिस्तर–वि० सुरखीचून प्रभृतिक दृढ़ लेप ।

पालो–हरक अवयव जे बड़दक कान्हपर रहैछ ।

पास–कोदारि प्रभृतिक छिद्रयुक्त अङ्ग ।

पासँग, **पासङ** }–तुलाक असाम्य, दूनू पल्लाक उठओला पर असमानता ।

पासनि–खुरपी ।

पासबान, **पासमान** }–दुसाधक उपाधि ।

पासा–देवनाक्ष, चौपड़ि आदि क्रीड़ाक उपकरणविशेष ।

पासि–खाट आदिक चारू कातक अङ्ग।

पासी–मद्यव्यापारी जातिविशेष ।

पाहि–हलादिसँ धएल क्षेत्रभाग १ । मूलक पता, भाँजि २ ।

पाहि लागब–क्रि० लग्+अब-हलादिसँ धएल भागक कर्षणादिक समाप्त होएब १ । प्रकरणसमाप्ति २ । चोर आदिक गेल मार्गक चिह्नज्ञान होएब ३ ।

पाही, **पाहीपट्टी** }–ग्रामान्तरक असामी ।

पाहुँच–मणिबन्ध, पहुँचा ।

पाहुन–प्राघुण, अतिथि ।

पाहुन-परक–प्राघुणादि ।

पाहुर–सूगरक बच्चा ।

पाहुर कीचब–क्रि० किच्+अब-ठोरपर दाँत बैसाए क्रोधमुद्रा करब ।

पिअ–प्रिय (गीतादिमे) ।

पिअब–क्रि० पिब्+अब-पान ।

पिआजु–पलाण्डु ।

पिआर–जलादिपुष्ट ।

पिआस–पिपासा ।

पिआसल–पिपासित ।

पिआहुर–जलपुष्ट धान्यादिवृक्ष ।

पिउसा–पुं० पितृष्वसृस्वामी, पिउसिक पति ।

पिउसि–स्त्री० पितृष्वसा, पिताक बहिनि।

पिउसी–स्त्री० पितृष्वसा (सम्बोधनमे) ।

पिक–तमाकू आदिक थूक ।

पिकदान, **पिकदानी** }–थूत्कारपात्र ।

पिक्की–पुक्की, मुखध्वनिविशेष ।

पिचड़ा–दबलासँ चिपिटाकार ।

पिच्चड़ि–धान्यविशेष ।

पिच्छड़(र)–पिच्छिल ।

पिच्छड़(र)ब–क्रि० पिच्छिलताप्रयुक्त पादस्खलन ।

पिछू–अ० प्रत्येक ।

पिजओना–जाहिपर अस्त्र पिजाओल जाए ।
पिजड़ा } –पञ्जर, पालित पक्षीकेँ बद्ध
पिंजड़ा } रखबाक वस्तु ।
पिजाएब–क्रि० पिजब्+अब–अस्त्रक घर्षणसँ तीक्ष्णीकरण ।
पिजुआएब–ना० पिजु+अब–पीजुसँ युक्त होएब ।
पिटना–जाहिसँ वारंवार पीटि भूमि सरि कएल जाए ।
पिटुआ–पीटिकेँ बनाओल (लोहिआ आदि) ।
पिट्ठा–वृक्षविशेष ।
पिठकट–मत्स्यादिक पीठ दिशक खण्ड।
पिठबन–पृष्ठिपर्णी ।
पिठार–पिष्टातक, पानि दए पीसल चाउर।
पिठिआ–अव्यवहित जनमल (नेना) ।
पिठिआ घाओ–पीठक व्रणविशेष ।
पिठिआ ठोक–पाछाँसँ दौड़ब ।
पिड़ही–पीढ़ी, भोजनकाल बैसबाक काष्ठपीठ ।
पिड़ाएब–ना० पिड्+अब–पीड़ासँ युक्त होएब ।
पिड़ार–फलविशेष ।
पिडुकिआ–कृतान्नविशेष ।
पिढ़िआ–छोट पिड़ही ।
पिण्ड–सं० पितृकर्मक हेतु वर्त्तुलीकृत अन्न ।
पिण्डखजूर–खजूरक एक प्रभेद ।
पिण्डस्याम–ईषद्गौर ।
पित–पित्त ।
पितड़ि(रि)आ–पित्तल–रचित ।

पितपापड़–पर्पटी ।
पितमरू–सहनशील, श्रमसह, अक्रोधन।
पितर–मृत पिता आदि ।
पितरपच्छ–पितृपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष।
पितराइनि–स्त्री० मृतमाता आदि ।
पिता–जनक, बाप ।
पिताएब–क्रि० पित्+अब–क्रोधयुक्त होएब।
पिताह–उ० क्रोधस्वभावक । स्त्री० पिताहि ।
पितिआइनि–स्त्री० पत्तीक स्त्री, पितृव्यपत्नी ।
पितिआक–अ० पितृव्यसम्बन्धी (धनादि)।
पितिऔत–उ० पितृव्यक अपत्य । स्त्री० पितिऔति ।
पितौझिआ–पुत्रञ्जीव, वृक्षविशेष ।
पित्त–सं० उदरस्थ प्राण्यङ्गविशेष ।
पित्तड़ि(रि)–पित्तल, पीतलोह ।
पित्ती–पु० पितृव्य, बापक भाए ।
पिनकी–हफीम खएलासँ झुकनी ।
पिपनी–पक्ष्म, आँखिक झपनाक केश ।
पिपर–पिप्पल, वृक्षविशेष ।
पिपरपत्ता–पिप्पलपत्राकार कर्णभूषण ।
पिपरमिण्ट–वि० क्षुपविशेष ।
पिपरा–अन्नविशेष ।
पिपरामूल–पिप्पलीमूल, ओषधिविशेष ।
पिपरि–पिप्पली ।
पिपही–शिशुक वाद्यविशेष १। बीजसंलग्न छोट आमक गाछ २ ।
पिरबटनी–पीरक मध्यमे देबाक काठी ।
पिरी–प्रिय ।

पिरीति–प्रीति ।
पिरोजा–फलविशेष ।
पिरौँछ–किञ्चिन्मात्र पीतवर्णक ।
पिलपिलाह–उ० कृश, अपुष्ट (जीव) । स्त्री० पिलपिलाहि ।
पिलही–प्लीहा, पेटक रोगविशेष ।
पिलिआ–कुकुरक स्त्री ।
पिलुआ–पीलु, पिपीलिका ।
पिल्ला–उ० कुकुर । स्त्री० पिल्ली ।
पिशाच–सं० देवयोनिविशेष ।
पिसब–क्रि० पेषण ।
पिसाओन–पिसबाक वेतन ।
पिसाँच–पिशाच, देवयोनिविशेष ।
पिसिआ–स्त्री० पिउसि, बापक बहिनि, पितृष्वसा (संबोधनमात्रमे) १ । पेषणकर्म २ ।
पिसिआ सासु–स्त्री० पतिक पिउसि ।
पिसिऔत–उ० पिउसिक अपत्य । स्त्री० पिसिऔति ।
पिसीमाल–अत्यन्त पिष्ट ।
पिस्ता–फलविशेष ।
पिहकारी–उच्चतर मुखध्वनि ।
पिहना–कोठीक उपरका झपना ।
पिहानी–प्रहेलिका ।
पिहुआ–पक्षिविशेष ।
पीअब–क्रि० पिब्+अब–पान करब ।
पीअर–पीत वर्ण ।
पीअर ढुइस–अत्यन्त पीतवर्ण ।
पीआ–होलिकाक्रीड़ार्थ पीअर जल ।
पीउब–क्रि० पिब्+अब–पान करब ।
पीक–ताम्बूलादियुक्त त्याज्य मुखजल ।
पीचब–क्रि० पिच्+अब–जोरसँ दाबब ।

पीछू–प्रत्येक, [घर पीछू एकक रुपैआ बाँट] ।
पीजु–पूय, व्रणक विकार ।
पीटब–क्रि० पिट्+अब–ताड़न ।
पीठ–पृष्ठ ।
पीड़ा–सं० कष्ट ।
पीड़ित–सं० कष्टयुक्त ।
पीढ़ी–बैसबाक काष्टपीठिका १ । वंश–परम्परा २ ।
पीताम्बरी–पीत पट्टवस्त्र ।
पीनी–धूम्रपानसाधक तमाकूक पिण्ड ।
पीपर–पिप्पल, वृक्षविशेष ।
पीपरि–पिप्पली, ओषधिविशेष ।
पीर–सूत कटबाक हेतु सुसज्जित भिँड़िआओल तूर ।
पीरा–पीतवर्णप्रकारक ।
पीरा बाँस–वंशविशेष ।
पीरी–किञ्चित् पीतिमा ।
पीलु–पिपीलिका ।
पीसब–क्रि० पिस्+अब–पेषण ।
पीसीमाल–अत्यन्त पिष्ट ।
पुकार–वि० सोर करब, आह्वान ।
पुकारब–वि० क्रि० पुकार्+अब–सोर करब ।
पुक्की–उच्चैः पूत्कार, 'ऊ' इत्यादि उच्चतम ध्वनि ।
पुक्की पारब–क्रि० पार्+अब–जोरसँ 'ऊ' इत्यादि ध्वनि करब ।
पुक्ख–पुष्य (नक्षत्र) ।
पुच्छ–सं० लाङ्गूल ।
पुच्छड़(र)–पाछाँ पुच्छजेकाँ लागल ।
पुछब–क्रि० प्रश्न करब ।

पुछारी–प्रश्नपूर्वक अन्वेषण ।
पुजाएब–क्रि० पुजब्+अब-पूजा कराएब ।
पुजैगिरी–पूजाकर्त्ता ।
पुटपुड़, **पुटपुड़ी**–आँखि ओ कानक मध्यभाग।
पुड़हर–पुर:स्थाप्य घट (विवाहादि माङ्गलिक विधिमे) ।
पुड़िआ–औषधादिक छोट कागजसँ बनाओल पुटक ।
पुतखौकी–स्त्री० पुत्रजग्धी, अपन बेटाकेँ खएनिहारि (गारि) ।
पुतरी–पुत्तलिका, शालभञ्जिका, बाल-क्रीड़ार्थ छोट मनुष्यक मूर्त्ति १ । आँखिक डिम्भा, कनीनिका २ ।
पुतली–कनीनिका, कृष्णतारक ।
पुतहु–स्त्री० पुत्रवधू ।
पुत्ती–मीड़ल मडुआ आदिक तुष ।
पुदीना–शाकविशेष ।
पुन–अ० पुन:, फेर ।
पुनगा, **पुनगी**–वृक्षमे ठारि चलबाक अङ्कुर ।
पुन्याह–प्रजासँ कर ओसूल आरम्भ करबाक पुण्यदिन ।
पुबरिआ–पूबमे स्थित ।
पुबाहुत–समीप पूर्वस्थित ।
पुरओना–पूर्त्तिकारक ।
पुरजी–तात्कालिककार्यवाही पत्रविशेष ।
पुरजी काटब–क्रि० कट्+अब-पुरजी लिखब ।
पुरना–प्राचीन, पुरातनप्रभेदक ।
पुरब–क्रि० पूरण ।
पुरबा–पूर्व देशसँ अबैत (बसात) ।
पुरबासाहि–मुखोत्तर, परोक्त कथाक मुखत: परिबोधन ।
पुरबी–रागिनीविशेष ।
पुरश्चरण–सं० अनुष्ठान ।
पुरश्चरणिआ–पुरश्चरणमे नियुक्त ।
पुरहर–माङ्गलिक पुर:स्थाप्य घट ।
पुरहरी–भूषणविशेष ।
पुराएब–क्रि० पुरब्+अब-पूर्ण करब ।
पुरान–प्राचीन, जीर्ण ।
पुरानए–पुनर्नवा ।
पुरिबा–पूर्वदेशागत (वायु) ।
पुरुखा–पूर्वज पुरुष ।
पुरुखाह–पौरुषशाली ।
पुरैनि–कमलवृक्ष ।
पुरैनिक दह–समूलनाल कमल ।
पुरोहित–सं० देवपित्रादिकर्म करओनिहार।
पुरोहिती–पौरोहित्य, पुरोहितक कार्य ।
पुरोत, **पुरौत**–पूर्ण होएबाक निमित्तेँ देल (अन्नादि) ।
पुर्निमा–पूर्णिमा, पौर्णमासी ।
पुर्री–पुक्की ।
पुसोठ–नेनाक प्रथम पूसमे कर्त्तव्य एक विधि ।
पुस्ति–वि० निचला पुरुष (वंशपरम्परामे)।
पुहबी–धान्यविशेष ।
पू', **पूअ**, **पूआ**–अपूप, पक्वान्नविशेष ।
पूछ–पुच्छ १ । प्रश्न २ ।
पूछब–क्रि० पुछ्+अब-प्रश्न करब ।
पूजा–सं० पूजन ।
पूजाघर–पूजा हेतुक घर ।

पूजापाठ–पूजाप्रभृति नित्यक्रिया ।
पूजी, **पूँजी**–मूलधन ।
पूठ–मालक लाङ्गूलारम्भस्थलक उभय पार्श्व ।
पूड़ा–पत्रादिरचित पुटक ।
पूड़ी–धातुरचित पुटक ।
पूत–पुत्र ।
पूब–पूर्वदेश ।
पूबा–पूर्वदेशभव अनादरणीय व्यक्ति ।
पूबाढाढ़–पूर्वप्लव, क्रमश: पूब-पूब भागेँ नीच ।
पूभर–पूर्वदेश ।
पूर–पूर्ण ।
पूरब–क्रि० पुर्+अब-पूर्ण करब ।
पूरा, **पूर्ण**–पर्याप्त ।
पूर्णकलस–सं० जलपूर्ण घट ।
पूर्णिमा–सं० शुक्लपक्षक अन्तिम तिथि।
पूल–सेतु ।
पूस–पौष (मास) ।
पृथिवी–सं० धरती ।
पेआली–नपबाक चोँगा ।
पेखब–क्रि० प्रेक्षण ।
पेँच–घुमाए-घुमाए पैसएबाक शङ्कु ।
पेँचकस–पेँच कसबाक यन्त्र ।
पेँचिल–प्रपञ्चद्वारा स्वकार्यसाधन पटु ।
पेँची–कन्दविशेष ।
पेँचुल, **पेँचू**–प्रपञ्चद्वारा स्वकार्यसाधनपटु ।
पेट–उदर ।
पेटकान्ह लाधब–क्रि० लध्+अब-आहार त्यागिकेँ पड़ब ।
पेटकुनिआ–पेटक भरेँ अवस्थिति ।
पेटगर–पैघ पेटबाला, अधिक खएनिहार।
पेटपोसा–पेट पोसनिहार, उदर-भरण परायण अनादरणीय ।
पेटपोसू–उदरभरणपरायण ।
पेटफुल्ली–वायुसँ पेटक फुलब ।
पेटबद्धी–भूषणविशेष ।
पेटबाहि–अतिसार ।
पेटार–जलीय तृणविशेष १। मञ्जूषा २ ।
पेटारा–मध्यवर्तिदीपप्रकाशसँ आकाशमे उड़बाक कागजक बनाओल पुरुषादिमूर्त्ति ।
पेटारी–छोट मञ्जूषा ।
पेटाह–अधिक खएनिहार, भोजनलोलुप ।
पेटी–लौहादिरचित मञ्जूषा ।
पेटू–पेटाह, खएबापर अधिक ध्यान रखनिहार ।
पेंड़–गाछ ।
पेड़ा–मिष्टान्नविशेष १ । एकबट्टी २ ।
पेण–गाछ ।
पेणा–पेँड़ा, मिष्टान्नविशेष ।
पेंतालीस–पञ्चचत्वारिंशत् ।
पेन–बासन आदिक तरका भाग ।
पेना–हर जोतबाक ठेङा ।
पेनाठ–यष्ट्यादिक निचला स्थूलभाग ।
पेनिआएब–क्रि० पेनी+अब-पाछाँ-पाछाँ लागब ।
पेँप, **पेँसी**–स्थूल अङ्कुर ।
पेमाल–पिसीमाल, परिश्रान्त ।
पेरब–क्रि० उत्पीड़न ।
पेसतोल–वि० अस्त्रविशेष, अतिह्रस्व भुशुण्डी ।

पेसब–क्रि० पैसाएब ।
पेस्तर–वि० पूर्व, पहिने ।
पैघ–दीर्घ, महान् ।
पैघत्व–महत्त्व ।
पैँच–बिना सूदिक ऋण ।
पैँचब–क्रि० शूर्पक्रियाविशेष ।
पैँचहार–पैँच लेनिहार ।
पैँचाड़–पैंच लेबदेबक व्यवहार ।
पैड़ी–पैरी, स्त्रीचरणक भूषणविशेष ।
पैता–पवित्र, लगाओल कुशविशेष ।
पैत्रिक–पितृवासभूमि ।
पैनि–करीनक पट ।
पैरबी–वि० कार्यसिद्धिमे नाना प्रकारेँ सहायता पहुँचाएब ।
पैली–चोँगा आदि नपना ।
पैसब–क्रि० प्रवेश ।
पैसा–कच्चा, ढेउआ ।
पैसाएब–क्रि० पैसब्+अब-प्रविष्ट करब ।
पोआ–सापक बच्चा ।
पोआर–पलाल ।
पोखराज–मणिविशेष ।
पोखरि–पुष्करिणी ।
पोखरिझाँखरि–पोखरिप्रभृति भयस्थान ।
पोखरिआ–पोखरिमे उपजाओल (बीजवृक्ष)।
पोचारा–ढौर, भित्तिक उपलेपन ।
पोछब–क्रि० प्रोञ्छन, प्रक्षालन ।
पोटरी–पोट्टली ।
पोटा–नासाकफ ।
पोठी–प्रोष्ठी, मत्स्यविशेष ।
पोत–माल, भूमिकर १ । लेप २ ।
पोतब–क्रि० लेपब ।
पोतभरिआ–राजकरक भारबाहक ।
पोथा–बहुत पैघ पुस्तक ।
पोथी–पुस्तक ।
पोथीपतड़ा–पोथीपतड़ाप्रभृति ।
पोन–नितम्ब ।
पोनखस–अल्पनितम्बक ।
पोनचटक–पोनमे मारब ।
पोनचटक देब–क्रि० पोनमे मारब ।
पोँपाँ–वाद्यशब्दक अनुकरण ।
पोर–वँशादिक ओ अङ्गुरीक पर्व ।
पोरगर–दूर-दूर पोरबाला ।
पोरो–शाकविशेष ।
पोल–वि० रहस्य ।
पोलखाह–यत्किञ्चित् भागमे निम्न (लकड़ी आदि) ।
पोला–परिमाणविशेषसँ युक्त सूत, पूल सं० ।
पोलाओ–कृतान्नविशेष ।
पोस–पोषण ।
पोसपूत / **पोसपुत्र** }–कृत्रिमपुत्र ।
पोसब–क्रि० पोषण ।
पोसा–पोसल (कुकुर आदि) ।
पोसाओन–पोसबाक वेतन ।
पोसिआ–पोसबाक हेतु देल (माल) ।
पोसिआ लगाएब–क्रि० लगब्+अब-पोसबाक हेतु देब ।
पोस्ता–क्षुपविशेष ।
पोस्तादाना–पोस्ताक अन्न ।
पौआ–कुड़प, सेर आदिक चतुर्थांश मान १ । खाटक स्तम्भ २ ।
पौआही–एक पौआ परिमाणक नपना ।

पौँछ–केराक छोट गाछ ।
पौती–वंशरचित मञ्जूषाविशेष ।
पौत्र–उ० सं० पुत्रक अपरत्य । स्त्री० पौत्री ।
पौथान–पादस्थान, सुतबामे पाएर जेमहर रहए से स्थान ।
पौर–पौरब ।
पौरब–क्रि० दहीक हेतु पात्रमे दुग्धप्रक्षेप।
प्रकाश–सं० प्रकट, आलोक ।
प्रकार–सं० प्रभेद, रीति ।
प्रकोप–सं० उपद्रव, अधिक क्रोध ।
प्रचण्ड–स० उद्धत, तीव्र ।
प्रण–प्रतिज्ञा ।
प्रणाम–सं० नति ।
प्रणामी–प्रणाममे देल (द्रव्य) ।
प्रति–एकादशाहमे काम्य उत्सृष्ट वस्तु १ । अ० सं० प्रसङ्ग २ ।
प्रतिपाल–सं० भरणपोषण, रक्षा ।
प्रतीत–सं० ज्ञात ।
प्रधान–सं० प्रमुख ।
प्रपञ्च–सं० प्रच्छन्न क्रियाजाल ।
प्रपञ्ची–सं० अच्छन्न अधिक क्रिया कएनिहार ।
प्रभाच्छए–प्रभाक्षय, अप्रतिभत्व ।
प्रमाद–सं० अनवधानता १ । उचितो क्रिया भयसँ नहि करब २ ।
प्रसक्ति–सामर्थ्य ।
प्रसाद–सं० प्रसन्नता १ । नैवेद्य २ ।
प्रहेज–परहेज, निवृत्ति, निरोध ।
प्राचीन–सं० पुरातन ।
प्राण–सं० जीवनवायु ।
प्रात–प्रभात ।
प्रातःकाल–सं० प्रभात समय ।
प्रान–प्राण ।
प्रिय–सं० प्रेमास्पद, मनोऽनुकूल ।
प्रियगर–अधिक प्रेमास्पद ।
प्रीति–सं० प्रेम, अनुराग ।
प्रेत–सं० परेत, भूतयोनिविशेष ।
प्रेम–सं० प्रीति ।
प्रेमी–सं० प्रिय, प्रेमपात्र ।
प्यादा–वि० पदाति १ । सतरञ्जक एक गोटी २ ।
प्याद-प्यादान–वि० सतरञ्जमे दू प्यादाक सहेँ मातु ।
प्यादसह–सतरञ्जमे बादशाहकेँ प्यादाक साम्मुख्य ।
प्याली–पेआला, नपनाक प्रभेद ।
प्यूसा–पुं० पितृष्वसृपति, पिताक बहिनिक पति ।
प्यूसि–स्त्री० पितृष्वसा, पिताक बहिनि ।

फ

फइल–विस्तृत असंकीर्ण (स्थान) ।
फकचोद–असंगत विवाद ।
फकफक करब–देहमे हृदयवायुमात्रक सञ्चालन ।
फकफकी–देहमे हृदयवायुमात्रक चलन ।
फक्का–फाँका ।
फटकदलाली–अनुचित नफा उठएबाक हेतु प्रौढ़ मिथ्याभाषण ।
फटकफन्द–प्रच्छन्न रूपेँ उपस्थापित बाधा ।
फकड़ा–पिहानीतुल्य बालविनोदार्थ प्रचलित अतात्पर्यक वाक्य ।
फकसिआर–जन्तुविशेष ।

फकसिआरी काटब–क्रि० फकसिआर जन्तु जेकाँ दीन शब्द बाजब । देहक अक्षमतामे परिचारकहीन व्यक्ति दीन शब्द बजैत अछि "अओ, केओ पानि दिअ ऐन्हि ।" इत्यादि ।

फकारि–कखनहु-कखनहु मेघक टुकड़ासँ वृष्टि ।

फकिरना–फकीरकेँ देल जागीर ।

फकीर–वि० उ० बैरागी, परलोकसाधक विशेष । स्त्री० फकिरनी ।

फक्कच–उ० व्यवस्थाशून्य अधिक बजनिहार । स्त्री० फक्कचि ।

फक्कर–अकिञ्चन ।

फक्की–फागु, फागुनक अन्तिम समय ।

फगुनहट (टि)–फागुन तथा तत्समीप समय ।

फचफच बाजब–क्रि० असङ्गत अधिक बाजब ।

फचारि–फचफच बजनिहार ।

फजहति–वि० गञ्जन ।

फजूल–वि० व्यर्थ ।

फझति–वि० भर्त्सन ।

फटक–आलयवेष्टनभित्तिक कपाट, फाटक ।

फटकब–क्रि० सूपसँ संशोधन ।

फटकाओन–फटकबसँ त्याजित १ । फटकबाक वेतन २ ।

फटकार–आडम्बर ।

फटकारब–क्रि० फटकार+अब-तुच्छ बुद्ध्या वाचा निराकरण ।

फट दए–अ० शीघ्रतया ।

फटफट करब–क्रि० असमीचीन निर्धोख बहुभाषण ।

फटफटार–वेष-भूषादिसँ सुसज्जित (निन्दामे) ।

फटाक दए–अ० शीघ्रतया ।

फटिक–स्फटिक ।

फटोन–फाटल दुग्धविकार १ । फाटल सन २ ।

फट्ठा–बाँसक फाड़ल अधबाड़, बीचसँ फाड़ल खण्ड ।

फट्ठी–छोट फट्ठा ।

फड़कब–क्रि० प्रस्फुरण १ । लेन-देन मे शेष २ ।

फड़की–कपाटस्थानीय वंशनिर्मित द्वारावरण ।

फड़गोड़–विशेष चलनिहार ।

फड़ब–क्रि० गाछ फलयुक्त होएब १ । कीटक उत्पत्ति २ ।

फड़बन्दी–परिकर, बद्धकक्षता ।

फड़भी–फरभी, भूजल यव, धाना सं० ।

फड़हर–परस्पर असंलग्न (भात) ।

फड़हरी–सिकस्ती, रुपैआक अभाव ।

फड़ुआ–फाड़िकेँ बनाओल (तौनी प्रभृति) ।

फतिङ्गा / **फतिङ्गी** } –शलभ ।

फनकी–छोट फँसरी ।

फनगर–अधिक फानक (सूति, पाति प्रभृति) ।

फनफनाएब–क्रि० फेनयुक्त होएब ।

फनफनी–तैलादिमे फेनोद्‌गम ।

फनिगा / **फनिगी** } –शलभ ।

फनैत–अधिक चलब बाजबबाला (निन्दामे) ।

फन्ना (न्नी)–फनकी ।

फफनाएब–क्रि० फफन्+अब-बाँतर वस्तु खएलासँ घाओक वृद्धि ।

फबब–क्रि० नैपुण्यसँ क्रिया सफल होएब ।

फर–फल (आम्रादि) १ । आरु २ ।

फरक–अन्तर, विभेद ।

फरकझरा / **फरकझार** } –विरल (धान्य वृक्षादि)

फरकब–क्रि० फड़कब, प्रस्फुरण ।

फरकी–फड़की, वंशरचित द्वारावरण ।

फरकोस–प्रौढ़ (चलबा-फिरबामे) ।

फरजी–सतरञ्जमे बादसाहक प्रधान पात्र १ । वि० अनका नामेँ उल्लिखित भूमि २ ।

फरता–फरसार, फरनिहार (आम्रवृक्षादि) ।

फरफराएब–क्रि० फरफर्+अब-फरफर शब्द करब, जालादिबद्ध खगादिक पक्षधूनन शब्द ।

फरफैसी–मिथ्या दोषारोपण ।

फरब–क्रि० फड़ब, उद्‌गतफलयुक्त होएब ।

फरभी–फड़भी, भृष्टयव, धाना सं० ।

फरमा–वि० फार्म १ । साँच, डाँचा २ ।

फरमाइस–वि० मनोऽनुकूल वस्तुनिर्माणक आज्ञा ।

फरमाएब–वि० क्रि० आज्ञा देब ।

फरमान–वि० राजाज्ञा ।

फरस–वि० राजासनक तर विस्तीर्ण सुन्दर आस्तरण ।

फरसा–अस्त्रविशेष ।

फरसार–जे गाछ फड़ैत हो ।

फरहर–फड़हर, असंपृक्त (भात) ।

फराक–पृथक्, पृथग्भूत ।

फराकित–फएल, भूमिक असङ्कीर्णता ।

फराठी–मोट ठेँगा ।

फरि–गाड़ीक भारसह वंशद्वय ।

फरिआएब–क्रि० फरि+अब-विवाद टूटब [फरिआइत अछि] १ । फरिअब+अब-विवाद तोड़ब [फरिअबैत अछि] २ ।

फरिछ–निर्मल, प्रकाश ।

फरिछोट–फरिआएब ।

फरी–पैघ माछ ।

फरीछ–निर्मल, प्रकाश ।

फरुसा–अस्त्रविशेष

फरुहा–आरु आदि लत्तीक फड़ ।

फरुहात–वि० अप्रसाङ्गिक, बाइली ।

फरेब–वि० विवादमे मिथ्या व्यवहार ।

फर्द–वि० प्रत्येक पत्र ।

फर्दबाल–वि० घोड़ाक तीव्रगति ।

फर्रास–वि० तम्बू-कनात लगओनिहार म्लेच्छविशेष ।

फर्रोस–वि० स्फूर्तिशील (चलबफीरबमे) ।

फल–सं० प्रयोजन १ । आम्रादि २ ।

फलकब–क्रि० विकसन ।

फलकर–आम्रादि फलक कर (देय) ।

फलका–बगड़ासन आरण्यक पक्षी ।

फलगू–अङ्गाच्छादक झालरि लागल कनझप्पा टोपी ।

फलना–अमुक ।

फलना-चिलना–अमुकप्रभृति ।

फल-फलहरी–फलकन्दमूलादि ।

फलहारी–फलमात्र खएनिहार १। अन्नभिन्न फलाहारोपयुक्त खाद्यबस्तु २ ।

फलानेन–वस्त्रविशेष ।

फँसब–क्रि० फाँस, पाँक आदिमे बद्ध होएब ।

फसरी–फाँस, पाश, बन्धकसूत्र ।

फसाद–वि० उपद्रव ।

फँसिआरा–फाँसी लटकओनिहार (चाप्डाल) ।

फसील–वि० उपजा ।

फहराएब–क्रि० पताकाक उद्धूनन ।

फाँक–अर्धखण्ड (गूआ प्रभृतिक) ।

फाँकब–क्रि० फँक्+अब-अनार्द्र लाबा प्रभृति मुहमे दए खाएब ।

फाँकी–फक्किका, क्लिष्टार्थक संक्षिप्त लेख १। भोतिअओनाइ, धोखा देब २ ।

फाँका–फक्का, चुरूमे गृहीत फाँकिकेँ खाद्य लाबा प्रभृति ।

फागु–फागुनमे गेय गीत ।

फागुन–फाल्गुन (मास) ।

फाजिल–वि० परिमितसँ अधिक १ । कार्यवाहीसँ भिन्न २ ।

फाट–विदरण ।

फाँट–अंश ।

फाटक–सैरदिबालक कपाटयुत द्वार ।

फाटचीट–विदरणादि ।

फाटब–क्रि० फट्+अब-विदरण ।

फाँटब–क्रि० फँट्+अब-विभक्त करब ।

फाटब-चीटब–क्रि० विदरणादि ।

फाँटि–लक्ष्यता ।

फाँटि चड़ब–क्रि० लक्ष्य होएब ।

फाँड़–पुरुषक पहिरल वस्त्रक ठेहुन लगक प्रान्त (किन्तु स्त्रीक खोँछि) ।

फाड़ब–क्रि० फाड्+अंब-फाँड़ा बाला नेबो आदिक विदारण ।

फाँड़ा } –नेबो आदिक भीतर त्वचासँ
फाणा } युक्त अनेक अवयव ।

फान–उल्लङ्घन १ । बाहुआदिक स्थूलताक मान २ ।

फानब–क्रि० फन्+अब-उल्लङ्घन ।

फानी–पक्षी आदि बझएबाक छोट फाँस।

फाँफ–अधिक असत्य कथा बजनिहार, अव्यवस्थित ।

फाँफड़(र)–फाँड़ ।

फार–फाल, हलाङ्ग

फारक–करक बेमाक रसीद ।

फाँस–पाश ।

फाँसब–क्रि० फँस्+अब-फँसमे बद्ध होएब ।

फाँसी–मनुष्यकेँ मारबाक पाश ।

फाहा–लेखाद्यर्थ अग्रमे तूलादियुत पातर काठी ।

फिचकारी–पित्तलादिधातुकृत जलप्रक्षेप-यन्त्र, फुचुक्का ।

फिटकिरी–स्फटिका, उपरसविशेष ।

फिरता–आपस १ । मार्गक घुमान २ ।

फिरती–अ० आपस अएबाक समयमे ।

फिरब–क्रि० प्रतिनिवृत्ति ।

फिरिस्ति–वि० सूची, वस्तुनामावलीलेख।

फिरोजा–रत्नविशेष ।

फिलङ्ग–सतरञ्जक एक प्रकारक खेड़ि ।

फिलफिलान–संतरञ्जमे दू फिलक सहसँ (मातु) ।

फिसकरन–उत्साह दए हँटि गेनिहार (निन्दामे) ।

फिहरिस्ति–वि० फिरिस्ति, वस्तुनामा-वलीलेख ।

फीता–एक-दू आँगुर चाकर बन्धनाद्यु-पयोगी सूत्रनिर्मित लम्ब वस्तु-विशेष ।

फीरब–क्रि० फिर्+अब-प्रत्यावर्तन ।

फील–वि० हाथी ।

फुकब–क्रि० फूत्करण ।

फुचकुचाह–उ० छोटो विषयपर क्रोध कए बाजि उठनिहार ।

फुचुक्का–वंशनिर्मित फिचकारी ।

फुच्च–क्रोधसँ रूसल ।

फुच्ची–दूध नपबाक बहुत छोट पात्र ।

फुजब–क्रि० बन्धनमुक्त होएब ।

फुटकर–पृथगवस्थित ।

फुटकुटिआ–अल्प पूजीक (दोकान) ।

फुटब–क्रि० भग्न होएब १ । पृथक् होएब २ ।

फुटार–क्वचित् दोसरो रङ्गसँ युक्त (छागर पाठी) ।

फुटाह–किञ्चित् पृथक् स्थित ।

फुटिआ–शाकविशेष ।

फुट्टा–फूटल, भग्न (बरतन आदि) ।

फुदना–अलङ्करणमे लटकल विन्यस्त सूत्रपुञ्ज ।

फुद्दी–अति छोट पक्षिविशेष ।

फुनगी–वृक्षक सर्वोच्च अग्रभाग ।

फुनगुनी–उद्गत अति सूक्ष्म अग्निकण ।

फुनगुनी उठब–क्रि० डाह, हृदय मे अप्रिय लागब ।

फुफकार–सापक फूत्कार ।

फुफकार काटब–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्करण ।

फुफकारब–क्रि० फुफकार्+अब-मुहुः सर्पफूत्कार ।

फुफड़ब–क्रि० दही प्रभृति उपरमे विकारयुक्त होएब ।

फुफड़ो–दही आँदिमे कालक आधिक्य जन्य उपरका विकार ।

फुफड़ी पड़ब–क्रि० फुफड़ीक संप्राप्ति ।

फुफुआर–फुफकार ।

फुफुआर काटब–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्करण ।

फुफुकार–सर्पक फूत्कार ।

फुफुकार काटब–क्रि० वारंवार सर्पक फूत्कार ।

फुफुस–फुप्फुस, उदरस्थ वायु निःसरणयन्त्र ।

फुरब–क्रि० स्फूर्ति, वाक्प्रतिभा ।

फुरसति–वि० अवकाश, छुट्टी ।

फुर्ती–शीघ्रता १ । शीघ्रकारिता २ ।

फुलकी–फूलल (सोहारी) १ । काश-पुष्प २ ।

फुलकोबी–कोबीक प्रभेद ।

फुलगर–अधिक फूलबाला ।

फुलचठैल–नहि फड़निहार चठैल ।

फुलझरी } –कृत्रिम पुष्पवृक्षादि ।
फुलझार }

फुलडाली–फूल रखबाक डाली ।

फुलतोड़ा–फूल तोड़बाक हेतु डाली ।

फुलतोड़ी–पुष्पक तोड़ब ।

फुलफुलाह–उ० फूलल-सन ।

फुलब–क्रि० ऊच्छूनताप्राप्ति ।

फुलबन } –पुष्पोपवन ।
फुलबाड़ी }

फुलबाँस–वंशाकार वृक्षविशेष ।
फुलहत्था–यष्टिविशेष, खराजल तथा रँगल यष्टि ।
फुलहा / **फुलही** } –फूल (उत्तम काँस) सँ निर्मित (थारी बाटी) ।
फुलाएब–क्रि० फुल्+अब-पुष्पित होएब।
फुलेल–सुगन्धित तेल ।
फुलौकी–भारमे उपयुक्त चँगेराक प्रभेद ।
फुल्ला–नेत्ररोगविशेष ।
फुल्ली–कल्ली, कलिका ।
फुसराहटि–परश्रवणागोचर परस्पर संलाप।
फुसिआएब–ना० फुसिअब्+अब-फूसि कहि विश्वस्त करब ।
फुसिआह–उ० मिथ्याभाषण स्वभावक ।
फुसुर-फुसुर–अ० अत्यन्त मन्द-मन्द (बाजब) ।
फुहराम–कार्यदक्ष लघु शरीरक (मनुष्यादि) ।
फुहाड़ा / **फुहारा** } –यन्त्रद्वारा विकीर्यमाण जलकण ।
फूक–फूत्करण ।
फूकब–क्रि० फुक्+अब-फूत्करण ।
फूजब–क्रि० फुज्+अब-बन्धनमुक्त होएब ।
फूरब–क्रि० फुर्+अब-बजबामे शीघ्र युक्तिक स्फूर्ति ।
फूर्ति–शीघ्रकारिता १ । मत-समर्थन मे युक्तिक शीघ्र अनुसन्धान २ ।
फूल–पुष्प ।
फूलब–क्रि० फुल्+अब-उच्छूनताप्राप्ति।
फूला–फुल्ला, नेत्ररोगविशेष ।
फूसि–मिथ्या ।
फूसि-फाँसि–मिथ्या तथा अनुपादेय ।
फूह–फूही, जलकण ।
फूह-फाह–किञ्चिन्मात्र जलवृष्टि ।
फूहर–उ० पूर्वपर ध्यान नहि रखनिहार, स्वेच्छाचारी (निन्दामे) । स्त्री० फूहरि ।
फूही–आकाशपतित जलकण ।
फेकब / **फेँकब** } –क्रि० प्रक्षेप ।
फेँट–मिश्रण ।
फेँटब–क्रि० मिश्रण ।
फेँटा–पाग ।
फेन–सं० ।
फेनब–क्रि० सार्द्र सूक्ष्म वस्तुक घुमाए-घुमाए हाथसँ आमर्दन ।
फेना–मिष्टान्न-विशेष ।
फेनाएब–ना० फेनसँ युक्त होएब ।
फेफस–हड्डीलगक बिना शोणितक मांस।
फेर–अ० पुनः १ । घुमान २ ।
फेरब–क्रि० आपस करब १। उनट-पुनट करब २ घोड़ाक एमहर-ओमहर चलाएब ३ ।
फेरि–अ० फेर, पुनः ।
फेरी–उनटपुनट ।
फेहम–बुझनिहार ।
फैल्–असंकीर्ण, विस्तृत (भूमि) ।
फैलहारी–(भूमिक) असकीर्णता, पर्याप्तता ।
फोँक–अन्तःशून्य (यष्टिप्रभृति) ।
फोकचा–मत्स्यविशेष १। माछक अवयवविशेष २ ।
फोकराइनि / **फोकरानि** } –दूधक दोषसँ उत्पन्न दही-दूधक गन्धविशेष ।

फोका / **फोंका** } –बुदबुद १ । विस्फोटक २ ।
फोटार–टिप्पा ।
फोटो–वि० यन्त्रद्वारा रचित स्फुट चित्र ।
फोड़न–छौंकबाक मसाला ।
फोड़ब–क्रि० स्फोटन, भञ्जन ।
फोंड़ा / **फोणा** } –व्रणविशेष ।
फोंफ काटब / **फोंफिआएब** } –फों फों शब्द करब, सशब्द श्वासप्रश्वास (निद्रामे)
फोफी–व्यजनं आदिक डण्टीमे पैसल घुमएबाक छुच्छी ।
फोलब–क्रि० खोलब, उद्घाटन १ । बन्धनमोचन २ ।
फोंसरी–देहमे उत्पन्न मडुआसन शोणित-विकार ।
फौदार–वि० सिपाहीक सरदार ।
फौदारी–वि० परकृत उपद्रवक नालिस ।

ब

बइआह–खएलापर वायुप्रकोपकारी १ । वातरोगी २ ।
बएर–बदर ।
बएस–वयस ।
बएसगर / **बएसाहु** } –अधिक बएसबाला
बओना–छदिस्थापनाद्यर्थ भित्तियष्टि १ । अनादरणीय वामन २ ।
बक–सं० पक्षिविशेष ।
बकछुछरू–बालक्रीड़ाविशेष ।
बकछुल लागब / **बकछुहुल लागब** } –क्रि० उत्कट लागब ।
बकझोँझोँ–नेनाकेँ पृष्ठपर लेब ।
ककटेट–बूड़ि ।
बकटेँटाह–उ० अण्ट-बण्ट बजनिहार बूड़ि ।
बकतब–क्रि० लागल भूतक व्यक्त वचन।
बकतूति–वृथा बकबाद ।
बकधेआन लगाएब–क्रि० बकवत् ध्यान करब ।
बकब–क्रि० अण्ट-बण्ट बाजब ।
बकबक करब / **बकबक बाजब** } –क्रि० अप्रस्तुत बहुभाषण ।
बकबाद–निःसार विवाद ।
बकरिहारा–पुं० बकरीक व्यवसायी जाति, बकरीक चरबाइ ।
बकरी–अजा १ । तृणविशेष २ ।
बकलेल–बूड़ि, मूढ़ ।
बकस–वि० मञ्जूषाविशेष ।
बकसब–क्रि० अभयदान देब ।
बकसीस–वि० इनाम ।
बकहुल–सं० पुष्पविशेष ।
बकाइनि–ओषधिविशेष ।
बकाची–मत्स्यविशेष ।
बकार–बोल ।
बकार फुटब–क्रि० बोल स्फुट होएब।
बकिअओता / **बकिओता** } –अवशिष्ट आदेय ।
बकुची–ओषधिविशेष १ । मत्स्यविशेष, बकाची २ ।
बकुच्चा / **बकुच्ची** } –पीठ पर बान्हि लादल वस्तु ।
बकुटब–ना० बाकुटसँ पकड़ब ।
बकुल–सं० भालसरी ।

बकेन, **बकेनि**–स्त्री० वष्कयणी, चिरप्रसूता दुग्धदात्री (गाए–महिसिप्रभृति)।

बक्क–बक ।

बक्कर–वर्कर ।

बक्खो–उ० जातिविशेष । स्त्री० बखोनी।

बखड़ोइआ–बल्कल ।

बखरा–प्रत्यंश ।

बखार–पैघ बखारी ।

बखारी–धान्यगृह ।

बखेआ–सीअनिक प्रभेद ।

बखेड़ा–बाधा ।

बखेड़िआ–झमेलिआ, बखेड़ा कएहिनहार।

बखो–उ० बक्खो । स्त्री० बखोनी ।

बखोड़, **बखोड़ैआ**–कदलीस्तम्भक अशुष्क बल्कल ।

बगए–आकार ।

बगए-बानि–आकारप्रभृति ।

बगड़ा–कलविङ्क, गृहमे रहनिहार पक्षिविशेष ।

बगड़ी–बगड़ासन बाधवनमे रहनिहार पक्षिविक्षेष ।

बगदब–क्रि० विरुद्ध होएब ।

बगबग करब, **बगबगाएब**–क्रि० मिश्रितमे स्फुटतया दृश्य होएब।

बगबार–उ० बागक रक्षक । स्त्री० बगबारनी ।

बगबारि–बागक रक्षा १ । बागक रक्षाक वेतन २ ।

बगय–बगाए, आकार ।

बगल–वि० काँख १ । पार्श्व २ ।

बगली–बटुआ ।

बगहा–वातविकार तथा आबल्य जन्य शिराक स्तब्धता १ । बाओगबाला (धान्यादि) २ ।

बगहा लागब–क्रि० वातविकार तथा आबल्यसँ शिराक स्तब्धताप्राप्ति।

बगुला–बक ।

बगेआ–कृतान्नविशेष ।

बगेड़ी–बगड़ी ।

बग्गी–दू घोड़ाक रथ ।

बग्धा–बगहा ।

बघछाल(ला)–व्याघ्रचर्म ।

बधजर–व्याध्रभयजन्य ज्वर ।

बघण्डी–बँघेड़ा ।

बघदुलार–बाघजकाँ दुलार, सोत्पीड़न लालनी ।

बघधरू–बाघक धएल ।

बघनहा, **बघनही**–व्याघ्रनख ।

बघनोच–गिदरनोच, अधलाह (कपड़ा)।

बघम्बर–बघछाला ।

बघा–शिराक स्तब्धता ।

बघारि–मत्स्यविशेष ।

बघुआएब–क्रि० बघु+अब–क्रोधपूर्वक ताकब ।

बघेड़ी–क्षुपविशेष ।

बङठी–बाङक सुखाएल डाँट ।

बङलहा–लाक्षाभूषणविशेष ।

बङला–सम चौचाराक घर १ । बङ्गालक भाषा २ । पानक प्रभेद ३ ।

बङलाही–कण्टकवृक्षविशेष १ । लाक्षाभूषणविशेष २ ।

बङगला–बङ्गाल ।

बङगालिनि–स्त्री० वङ्गदेशीया स्त्री ।

बङाली–पुं० वङ्गदेशोद्भव पुरुष ।

बङौर–बाङक बीआ ।

बङ्कड़ा–बड़ बजनिहार ।

बङ्का–वीर १ । भूषणविशेष २ ।

बङ्कट–उ० बद्द । स्त्री बङ्कटि ।

बङ्गाली–वङ्गदेशज नर ।

बङ्घेड़ी–बँघेड़ी ।

बच–वचा, ओषधिविशेष ।

बचओनाइ–बचाएब १ । किछु उगारिकेँ राखब २ ।

बचता, **बचन्ता**, **बचन्ती**–नफा, लाभ ।

बचब, **बँचब**–क्रि० अबैत उपद्रवसँ वञ्चित होएब १। अवशिष्ट होएब २।

बचबा–वाच, मत्स्यविशेष ।

बचाओ–आक्रमणसँ परिहार ।

बच्चा–अलि० शिशु ।

बच्चा ममरखा–ओषधिविशेष ।

बच्छा–पुं० वत्सतर ।

बछरू–अलि० बाछा ओ बाछी ।

बछेड़ा–उ० घोड़ाक बच्चा । स्त्री० बछेड़ी ।

बजओना–वाद्य, बजएबाक साधन ।

बजक्कड़–अधिक वक्ता (निन्दामे) ।

बजनिआँ, **बेजनिआ**–बाजकार, वाद्य बजओनिहार ।

बजन्ता–अधिक बजनिहार ।

बजबल करब, **बजबजाएब**, **बजबजी**–क्रि० जलसम्बन्धेँ भूमिक लसलसी ।

बजर–वज्रसन १ । व्रज २ । अत्यन्त (यदि विशेषणरूपेँ प्रयोग हो, यथा 'बजर बहिर, बजर भुसकौल) ३ ।

बजरकेराइ–वृक्षविशेष ।

बजरगेँठ–सक्कत ग्रन्थि ।

बजरब–क्रि० आपतित होएब ।

बजरबट्टू–ताड़ीवृक्षक फड़ ।

बजरा–पटका, बजारब १। अन्नविशेष २।

बजरा-बजरी–परस्पर भूमिपातन ।

बजाएब–क्रि० बजब्+अब–आह्वान १ । वादन २ ।

बजाँड़ी–कन्दबाला क्षुपविशेष, ओषधि विशेष ।

बजार–आपण ।

बजारब–क्रि० बजार्+अब–बलात् भूमिपातन ।

बजारू–बजारक (वस्तु) ।

बज्झा कोबी–बिना फूलक कोबी ।

वज्र–सं० कुलिश ।

वज्रकील–सक्कत कील ।

वज्रगेँठ–सक्कत गेँठ ।

वज्रलेप–सं० से लेप जे वज्रवत् दृढ़ भए जाए, पाथर जोड़बाक लेप ।

बझब–क्रि० जालादिमे फँसब ।

वञ्चना–सं० प्रतारणा ।

बटकढ़बा–बाट देखओनिहार ।

बटकर–काँच केराओक झोर ।

बटखर्चा–बाटक खर्चा, पाथेय ।

बटगबनी, **बटगमनी**–बाटमे गेय गीत, अभिसार ।

बटबार–बाटमे अधिकृत ।

बटबारा, **बँटबारा**–विभाजन ।

बटबारि–बाटमे चलैत लोकक उपद्रव ।
बटलोहिआ } –बठुकक आकारक
बटलोही } पितड़ि पाकपात्रकविशेष।
बटाइ–आधा उपजापर लगाओल (खेत) ।
बटाम–वि० बट्टम ।
बटारी–कोणशुद्धि जँचबाक कमारक उपकरणविशेष ।
बटिआरी–नीपल बाट ।
बटिखारा–अन्नादि तौलबाक साधन (सेर प्रभृति) ।
बटुआ–पटपुट, कपड़ाक धोकड़ी-जेकाँ बनाओल अनेक खलक सरोता सुपारी प्रभृति रखबाक पात्रविशेष।
बटुक–मोट ओ गोल दालिक पाकपात्र १ । पञ्चवर्षाधिक बालक २ ।
बटेर–वर्तिका, पक्षिविशेष ।
बटैआ–बटाइ ।
बटोही–पथिक, मोसाफिर ।
बट्टा–पैघ बाटी ।
बट्टी–रुपैआ प्रभृति भजएबामे देय ।
बट्टूक–स्थूल द्विदलपाकपात्रविशेष ।
बड़–अधिक १ । तैलसिद्ध व्यञ्जन विशेष २ । वट, वृक्षविशेष ३ ।
बड़का–उ० पैघ प्रमाणक १ । श्रेष्ठ (पुरुष) २ । स्त्री० बड़की ।
बड़की अड़ाँची–स्थूल एला ।
बड़की माछी–सामान्य माछीसँ पैघ माछी ।
बड़गोआर–उ० गोपजातिविशेष । स्त्री० बड़गोआरि ।
बड़द–वर्द, बैल हि० ।
बड़दबार–वर्दवारक, वृषभचारणमे नियुक्त।
बड़दनोनी–शाकविशेष ।
बड़र–यौवनमे भेनिहार व्रणविशेष ।
बड़री–कमलक बीजकोष ।
बड़रुख } –वटवृक्षक जटा ।
बड़रुखि }
बड़हर–लिकुच, फलविशेष ।
बड़हरी–भूषणविशेष ।
बड़िआ–वटिका ।
बड़िजना–कृषिमे अधीनीकृत भृत्य ।
बड़ी–छोट बड़ १ । जड़ीविशेष २ ।
बड़ी काल–अधिक समय ।
बड़ी खन–अधिक क्षण ।
बड़ी जड़ी } –ओषधिविशेष ।
बड़ीमाइ }
बड़ुका–छोट डाबा ।
बड़ेरी–दू चारक उपरका आधारकाष्ठ।
बड्ड–वड्र, बहुत ।
बड्ढी–अधिक ।
बढ़नुक–वर्द्धिष्णु ।
बढ़न्ती–क्रमिक वृद्धि ।
बढ़ब–क्रि० वर्द्धन ।
बढ़ारन–सम्मार्जनत्याज्य ।
बढ़ारन-सोहारन–सम्मार्जनादित्याज्य ।
बढ़ारब–क्रि० बढ़ार्+अब-सम्मार्जन ।
बढ़ारब-सोहारब–क्रि० सम्मार्जनादि।
बढ़िआँ–उत्तम ।
बढ़िआएब–क्रि० बढ़ि+अब-बड्ढी होएब ।
बतकट–बातकेँ असम्यक् कटनिहार।
बतकुटौबलि } –निरर्थक विवाद ।
बतकुट्टनि }
बतरख–वर्त्तिरक्षक, खोल कएल बाँसक

आधा फाँक जाहिमे टाटक बाती पैसाओल जाए ।
बतसू–बातीक सुइया ।
बतहभण्ड } –विक्षिप्तप्राय ।
बतहलण्ड }
बतहा–उ० अनादरणीय बताह । स्त्री० बतही ।
बतहिआ } –स्त्री० अनादरणीय बताहि।
बतही }
बताना–पाग भरबाक हेतु दोसर छोट पाग ।
बतारी–समवयस्क ।
बतासा–मिष्टान्नविशेष ।
बताह–उ० विक्षिप्त । स्त्री० बताहि ।
बतिआ–उर्द्धत छोट फल (सोहाँसंप्रभृति लताक) १। लताफल विशेष २ ।
बतिआएब–क्रि० बति+अब-बतिआसँ-मुक्त होएब ।
बतीसा–केराक प्रभेद ।
बत्तक–वर्तक, पक्षिविशेष ।
बत्तर–उ० अविचारी । स्त्री० बत्तरि ।
बत्ती–वर्ति, सूतक बनाओल दीपक कर्तिका ।
बत्तीस–३२, द्वात्रिशत् ।
बत्तीसम–द्वात्रिंशत्तम ।
बत्तू–बधिआ नहि कएल अशिशु अज ।
बथान–माल बैसबाक नियत स्थान ।
बथुआ–शाकविशेष, वास्तूक ।
बद–दुष्ट, उत्पाती ।
बदनाम–दुर्यश ।
बदपन–क्रूरता ।
बदब–क्रि० वरण, क्रीड़ाक व्यवस्था ।
बदनामी–दुष्कीर्तिभागी ।
बदमास–क्रूर, दुष्ट ।
बदमासी–क्रूरता, दुष्टटा ।
बदरी–मेघाच्छन्न प्रवृत्तवृष्टिक समय ।
बदल–वि० परिवर्त्तन ।
बदलब–क्रि० परिवर्त्तन, विनिमय ।
बदला–परिवर्त्तन ।
बदला-बदली–पारस्परिक विनिमय ।
बदलेन–परिवर्त्तनमे देल वा लेल ।
बदहा–बिनु खुट्टीक पादुकाविशेष ।
बदान–युद्धक आकरण ।
बदाम–चणक, अन्नविशेष १ । मेवाफल-विशेष, कागजी बदाम २ ।
बदामी–रङ्गक प्रभेद १। भूषणविशेष २ ।
बदामी गोखुला–गौक्षुर, ओषधिविशेष ।
बदि–कृष्णपक्ष ।
बदिअल–बद्द ।
बद्द–बदमास, क्रूरकर्मा, उत्पाती ।
बद्दी–मद्दी, बदब, क्रीड़ामे व्यवस्था ।
बद्धक–दस्त रोकबाक औषध ।
बद्धी–देवोत्सृष्ट गरामे पहिरबाक सूत ।
बधना–मुसलमानक जलपात्रविशेष ।
बधबारि–बाधक रक्षा ।
बधहा–बदहा, बिना खुट्टी खड़ामविशेष।
बधाइ–जन्मोसव ।
बधाबा } –जन्मोत्सवदेय ।
बधैआ }
बन–सं० जङ्गल १ । लाक्षालङ्करणविशेष २ । अङ्गमे बन्हबाक लटकल अवयवविशेष ३ ।
बनउरीद–बनैआ माष, माषपर्णी ।
बनकर–वनक कर ।

बनखेढ़ी–बनैआ मूँग ।
बनगोइठा–वनमे सुखाएल गोबर ।
बनजमानि–बड़का जमानि, अजमोदा ।
बनपोरो–पोरो सागक प्रभेद ।
बनब–क्रि० निर्मित होएब १ । मेल होएब २ ।
बनबिलाड़–पुं० बनैआ मार्जार ।
बनमानुख–बनैआ मनुष्याकार जन्तुविशेष।
बनमुरगी–आरन्यक कुक्कुट ।
बनरनी–बानरजातिक स्त्री ।
बनरफाँस–पाशविशेष ।
बनरबान्ह–ग्रन्थिविशेष ।
बनरमाछी–बानरक माछी ।
बनस–गोहि आदि मारबाक बड़का बनसी।
बन-सपेता–पक्षिविशेष ।
बनसी–बड़िश, माछ मारबाक अस्त्रविशेष।
बनसीम–आरण्यक शिम्बी ।
बनसो / **बनसोह** }–वनक सोहसँ युक्त भूमि ।
बनहरदि–हरिद्राविशेष ।
बनहुलुक–वन्य जन्तुविशेष ।
बनात–वस्त्रविशेष ।
बनिआ–उ० वणिक । स्त्री० बनिआनि ।
बनिओज–वाणिज्य ।
बनिऔटी / **बनिऔती** }–बनिआक कार्य, वाणिज्य ।
बनिजब–क्रि० बनिआक क्रिया ।
बनिजाली–माल बन्हबाक एक प्रकारक डोरी ।
बनिसार–बन्धशाला ।
बनिहार–उ० बोनि लए कार्यकर्त्ता । स्त्री० बनिहारनी ।

बनैआ–आरण्यक (शूकरादि) ।
बनैआ जीर–आरण्यक जीर ।
बनैआ सूगर–आरण्यक शूकर ।
बन्द–वि० अवरुद्ध, मुद्रित ।
बन्दूक–भुशुण्डी, युद्धक अस्त्रविशेष ।
बन्दोबस्त–वि० प्रबन्ध ।
बन्धक–ता ऋण आदाय सूदिक तर देल खेत ।
बन्धकी–ता आदाय विश्वासार्थ देल भूषणादि ।
बन्धा कोबी–पतकोबी ।
बन्हक–बन्धक ।
बन्हन–बन्धन ।
बन्हा–नियत ।
बन्हिसार–बन्धनशाला, कारा ।
बन्हेज–सामाजिक बन्धन ।
बन्होटा–बन्हले रहनिहार (घोड़ा) ।
बपखौकी–स्त्री० बापकेँ खएनिहारि (स्त्रीक उक्तिमे गारि) ।
बपहारि काटब–क्रि० 'बाप रे बाप' इत्यादि बाजब ।
बपौती–बापक धन, मरौसी सम्पत्ति ।
बप्पाबैरी–अन्यकृत बापक शत्रुता ।
बबूर–बर्वर, वृक्षविशेष ।
बब्बर–व्याग्रविशेष ।
बभनगामा–ब्राह्मणक ग्राम ।
बभनगोष्ठी–ब्राह्मणक गोष्ठी ।
बभनटोली–ब्राह्मणक टोल ।
बभनभोजी–ब्राह्मणक भोजन ।
बभनाह–ब्राह्मणसम्पादित (जल-पुष्पादि) ।
बभनी–धानक रोगविशेष ।

बभनोज–ब्राह्मणक हठ, ब्रह्मणवत् लगारि भएकेँ पड़ब ।
बमकब–क्रि० चुप रहैत एकाएक जोरसँ बाजब ।
बमकी–बमकब ।
बमगोला–उत्सवादिसूचक महाशब्दकारी गोला ।
बमछब–क्रि० क्रोधेँ जोरसँ बाजि उठब।
वमन–सं० वान्ति ।
बमरेटुआ / **बमरौटिआ** }–बामा हाथेँ काज कए-निहार १ । अ० बामाहाथेँ २।
बयस–जीवनसमयपरिमाण ।
बयसगर–उ० अधिक बएसक । स्त्री० बयसगरि ।
बयसाहु–अलि० अधिक बयसक ।
बयाद–कन्दविशेष ।
बर–स्वामी १। विवाह कएनिहार २। गुण (यथा 'एक बर' 'दू बर'; यदि संख्यासँ उत्तर प्रयोग हो) ३। मालक ओषध्यर्थ क्षुपविशेष ४ ।
वरइ–बरै, पर्णव्यापारी जातिविशेष ।
बरकब–क्रि० अग्नितापसँ सशब्द पाक।
बर करब–क्रि० दीप मिझाएब ।
बरकस–चौपालाप्रभृतिक बाँसमे कसबाक डोरी ।
बरख–वर्ष ।
बरखा–वृष्टि ।
बरखास्त–वि० पुरुषशून्य १ । मोकूफ, निष्कासित २ ।
बरखी–वार्षिक श्राद्ध, एकोद्दिष्ट ।
बरछा / **बरछी** }–अस्त्रविशेष ।

बरजब–क्रि० वर्जन ।
बरजीत–पराजयसँ पूर्व पराजयोत्तरकालिक परस्पर देयादेयक प्रतिज्ञा ।
बरतन–धातुनिर्मित पात्र ।
बरतोड़–रोइँउपाड़ ।
बरदनोनी–बरदबाह ।
बरदहसा–वर्षा समयमे दक्षिणसँ अबैत बसात ।
बरदाएब–क्रि० बरद् + अब – प्रतिबन्धकवशात् कार्यसँ निवृत्त रहब।
बरदेखी–विवाहार्थ वरक देखनाइ ।
बरदोठ–प्रतिबन्धकवशात् कार्य करबासँ निवृत्ति ।
बरनब–क्रि० वर्णन करब ।
बरनि–हरक कील ।
बरनिआ–पुं० वरण कएल (स्व-स्तिवाचकादि) ।
बरफ–वि० जमल जल, पाला ।
बरब–क्रि० मृत्तिकाक शिवलिङ्ग बनाएब।
बरबंगा–बाङक प्रभेद ।
बरबराएब–क्रि० बरबर्+अब– अनर्थक बात बाजब ।
बरबरी–बरबराएब ।
बरबा–छन्दोविशेष ।
बरमा–छिद्र करबाक यन्त्रविशेष, बेरमा ।
बरहगामा–अनेक गाम ।
बरहदरी–नरवाह्य यानविशेष ।
बरहधना–मिश्रित अनेक प्रकारक धान ।
बरहबट्टू–जाहिसँ सभलोक काज कए लेअए तादृश अरक्षित (वस्तु) ।
बरहबर्दा–जमीनक प्रमाणपत्रविशेष ।

बरहमासा–बारह मासक वर्णनात्मक गीत।
बरहरूपा–बहुरूपा, अनेक रूप देखओनिहार ।
बरहसिंहा–हरिणक सिंह ।
बरहा–मोट रस्सा १ । बारह दिन (श्राद्ध) २ ।
बरहा-बरही–मोट बरहाक झीकातीरी क्रीड़ा ।
बरही–तक्षा, कमार ।
बराइत–वरागत, वरक दिसक लोक ।
बराँट(ठ)–पैघ बरुआ ।
बराबरि–अ० अनवरत १ । तुल्य २ ।
बराहिल–गाममे असामी बजएबाक हेतु नियुक्त (व्यक्ति) ।
बरिआत } –बारात, वरक सङ्ग गेनिहार
बरिआती } लोक, ढोल बजनिआँ प्रभृति ।
बरिआर–बला, ओषधिविशेष ।
बरिसन्धन–एक पाबनि ।
बरिसब–क्रि० वर्षण ।
बरिसाइत–वटसावित्रीव्रत ।
बरिसात–वर्षा समय ।
बरिसाति–वटसावित्रीव्रत ।
बरिसाती–वृष्टिपात बचओनिहार कोठामे नमरल छदि १ । बरिसात मे उपकारक वस्त्र २ ।
बरी–बड़ेरी, चारक मथनीक आधारकाष्ठ ।
बरु–अ० वरम् ।
बरुआ–माणवक ।
बरुका–बड़ुका, डाबासँ छोट तत्सदृश मृतत्पात्रविशेष ।
बरेब–पानक लताक घर ।
बरै–उ० पर्णविक्रेता जातिविशिष । स्त्री० बरैनि ।
बरैनि–हरक कील १। बरै जातिक स्त्री २।
बरोत–घर छारबामे बरी लगक उपरका बाती ।
बरोबर–धान्यविशेष ।
बर्खा–वृष्टि ।
बर्खी–वार्षिक श्राद्ध, एकोद्दिष्ट ।
बर्छा–अस्त्रविशेष, शूल ।
बर्जब–क्रि० वर्जन ।
बर्जाति–बद्द स्त्री ।
वर्ण–सं० गौरपिण्डश्यामादि शरीरक रङ्ग १। ब्राह्मणादि चारि जाति २ ।
बर्तन–धातुक पाकपात्र ।
बर्फ–वि० जमल जल ।
वर्ष–सं० बारह मास ।
वर्षभोज्य–एक वर्ष खएबाक सकल सामान्य (दानार्थ) ।
बर्ह्मी–ब्राह्मी जड़ी ।
बल–सं० शक्ति, बुत्ता ।
बलकुचाह(हि)–बालयुक्त (माटि) ।
बलगर–उ० अधिक बलसँ युक्त ।
बलगोबिना–नपुसंक ।
बलजोरी–अ० बलात्कार ।
बलतोड़–रोँइउपाड़ ।
बलदाउनि–असङ्गत आग्रह ।
बलधकेल–अ० बलात्कारपूर्वक धकेलिकेँ ।
बलधरा } –चारमे बल देबाक हेतु
बलधारा } बनाओल खाम्ही ।
बलबलाएब–क्रि० बलबल्+अब–

द्रवपदार्थक भितरी विकारक ऊर्द्धवमुख होएब ।
बलम–चानीसँ सौँसे मढ़ल थोप-बाला छड़ी ।
बलमन्त–बलवान् ।
बलहिँ–अ० बलात्, व्यर्थ ।
बलही–दू जुन्नाबाला पैघ बोझ ।
बलहुत्थ–निर्हेतु अत्याग्रह ।
बलि–मांसक उपहार ।
बलिकट्टा–देवताक उत्सृष्ट छागबलि कटनिहार ।
बलिदान–सं० छागादि बलि प्रदान ।
बलेल–बूड़ि, मूढ़ ।
बल्ला–गाड़ीक अङ्गविशेष ।
वंशलोचन–ओषधिविशेष, वंशरोचना ।
बस–अ० निरोधद्योतक ।
बँसकट्टा–बाँस कटनिहार ।
बँसकट्टी–बाँस काटब ।
बसगीद–अनेक संनद्ध बस्ती ।
बसाएब–ना० दसात+अब–बसातसँ विरस वा शुष्क होएब ।
बसनी–ठाढ़ कानक घैल ।
बसन्त–पुष्पविशेष १ । सं० चैत-बैसाख मासद्वय २ ।
बसन्ती–रङ्गक प्रभेद ।
बसब–क्रि० निवास ।
बँसबारि–वंशवाटी ।
बँसबिट्टी–बाँसक बीटसमूह ।
बसहा–जटाबाला बड़द १ । नेपालक (कागत) २ ।
बसांड़ि–वंशवाटिका ।
बसाँढ़ी–मत्स्यविशेष ।
बसात–वात, हाबा ।
बसिआएब–ना० बासि+अब–बासि होएब ।
बसिन्दा–बासी ।
बसिला–वास्या ।
वंसी–वंशी ।
बंसीप्रेम–पुष्पविशेष ।
बसुरी–वंशी ।
बसुली–वंशी ।
बसैला–बाँसक (खाम्ही) ।
बस्ता–नूआमे बान्हल बही प्रभृति कागजसब ।
बस्ती–वसति, ग्राम ।
वस्तु–सं० पदार्थ ।
वस्तुजात–सं० वस्तुसमूह ।
बह–सीरसँ जनमल गाछ ।
बहखार–हर बहबामे समर्थ (बड़द) ।
बहकब–क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।
बहटारब–क्रि० बहटार्+अब–मन प्रसन्न करबाक निमित्त कोनो आन क्रियामे लागब ।
बहतर–उ० वार्द्धक्यादिप्रयुक्त जकरा बजबाक ठेकान नहि हो ।
बहतरा–अनादरणीय बहतर ।
बहता–बहैत (जलादि) ।
बहताओन–तेल पेरबाक वेतन ।
बहती–छोट बाहा ।
बहत्तरि–द्विसप्तति, ७२ ।
बहत्तरिम–द्विसप्ततितम ।
बहन्तू–बाहबाक योग्य, सम्भावित ऋतुकालक (गाएआदि) ।
बहपोत–अनुचित विस्तार ।

बहपोर–दूर दूर पोरबाला (ठेङा, लाठी)।

बहब–क्रि० स्रवण १ । वहन [बड़द गाड़ीमे बहैत अछि] २ ।

बहबाँड़ि / **बहबाणि** }–अनुचित बहुवक्ता ।

बहरघरा–चतु:शालसँ बाहरक घर ।

बहरपेन–जकर जड़ि घरसँ बहार-दिस झुकल हो तादृश (खाम्ह) ।

बहराएब–क्रि० बहर्+अब–बहिर्भवन ।

बहरिआ–रजस्वला ।

बहरी–बाह्य देश ।

बहलमान–बड़दक गाड़ी हँकनिहार ।

बहलाएब–क्रि० बहलब्+अब–बहल गप्प करब ।

बहसब–क्रि० कुमार्गप्रवृत्ति ।

बहाँड़ / **बहाण** }–अङ्गुल्यन्तबाहु-प्रमाण ।

बहादुर–वि० वीर ।

बहादुरी–वि० वीरता ।

बहाना–वि० छल ।

बहार–बहिर्देश ।

बहारब–क्रि० बहार्+अब–संमार्जन ।

बहाल–वि० नियुक्त ।

बहाली–वि० नियुक्ति ।

बहिआ–उ० दास । स्त्री० बहिकिरनी ।

बहिआँ–बाहीँ, काँसाक बनाओल लहठीस्थानीय भूषण ।

बहिकिरनी–स्त्री० दासी ।

बहिक्रम–वयस् ।

बहिखत–दासतक पत्र ।

बहिँगा / **बहिङा** }–भार उठएबाक चिपिट दण्ड ।

बहिङसारि–धान्यविशेष ।

बहिनजमाए–पुं० भगिनीकन्यापति ।

बहिनधी–स्त्री० स्त्रीक बहिनिक कन्या ।

बहिनि–स्त्री० भगिनी ।

बहिनो / **बहिनोए** }–भगिनीपति ।

बहिनौत–उ० मौगीक बहिनिक पुत्र ।

बहिन्वे–भगिनीपति ।

बहिर–वधिर ।

बहिरी–पक्षिविशेष ।

बहिला–बन्ध्या (माल) ।

बही–पैघ आकारक आयव्ययादिम्मारक बान्हल पत्रसमूह ।

बहीनि–स्त्री० भगिनी ।

बहु–स्त्री० वधू, जाया ।

बहुआसिनि–बहुवासिनी, पुत्र-पौत्रादिक जाया ।

बहुगुना–अनेककार्योपयोगी पात्र विशेष ।

बहुत–अधिक, अनेक ।

बहुत पक्ष–अ० अधिक सम्भूत ।

बहुत रास–अधिक परिमाणक ।

बहुबात–अनैकमत्य ।

बहुरिआ–स्त्री० वधूटिका, नवीन पुतोहु ।

बहुरूपा–पुं० बरहरूपा, अनेक रूप देखओनिहार ।

बहेड़–बिभीतक ।

वा–सं० अ० अथवा ।

बाइ–वायु ।

बाइनि–वयन ।

बाइभिरिङ्ग–विडङ्ग ।

बाइली–अतिरिक्त, वाह्य ।

बाइस–द्वाविंशति, २२ ।

बाइसम–द्वाविंतितम ।

बाउ–पुं० वटुक, वत्स ।

बाउली–वापी, अल्पजलाशयविशेष ।

बाएब–क्रि० बब्+अब–व्यादान ।

बाओग–बीजवपन ।

बाओन–वामन ।

बाँक–भूषणविशेष ।

बाकरा–अधिक बजनिहार ।

बाकल–वल्कल ।

बाकस–वासा, ओषधिविशेष ।

बाकसरस्सी–हथिआरविशेष ।

बाँकी–अवशिष्ट ।

बाकूट–विरल कए संकुचित कएल हाथक पञ्चाङ्गुलि ।

बाखुबी–वि०अ० सर्वथा ।

बाग–हि० उद्यान ।

बागड़–मिश्रित (अन्न) ।

बागनर–कदलीप्रभेद ।

बागडोरि–रथरश्मि ।

बाघ–उ० व्याघ्र । स्त्री० बाघिनि ।

बाघगोटी–क्रीड़ाविशेष ।

बाघिनी–स्त्री० व्याघ्रजाति स्त्री ।

बाघी–वेदनायुक्त काछक गिलटी ।

बाङ–कार्पास ।

बाचब–क्रि० बच्+अब–आपत्तिसँ स्पृष्ट नहि होएब ।

बाँचब–क्रि० बँच्+अब–चोठी पुराणादिक पठन १ । अवशिष्ट होएब २ ।

बाछब–क्रि० बछ+अब–मिश्रितसँ हटाइएब ।

बाछा–उ० वत्सतर । स्त्री० बाछी ।

बाछी–स्त्री० वत्सतरी ।

बाज–श्येन, दोसर पक्षीकेँ झपटि पकड़निहार पक्षिविशेष १। वाद्य २ ।

बाजकार–वेतनपर बाजा बजओनिहार, बजनिआँ ।

बाजन–वाद्य ।

बाजब–क्रि० बज्+अब–भाषण, शब्द करब ।

बाजब-भूकब–क्रि० भाषण हासादि क्रिया।

बाजा–वाद्य ।

बाजाभूकी–बाजब प्रभृति व्यवहार ।

बाजी–क्रीड़ाकाण्ड ।

बाजी लगाएब–क्रि० क्रीड़ाकाण्डसंनाह १। एक क्रीड़ाकाण्ड समाप्त करब २ ।

बाजू–बाहुभूषणविशेष ।

बाजूबन्द–भूषणविशेष ।

बाँझ–बन्ध्य (वृक्षादि) ।

बाझब–क्रि० बझ्+अब–जालादिमे बद्ध होएब

बाँझि–स्त्री० बन्ध्या ।

बाँझी–वन्दाक १ । वृक्षरोग विशेष २ ।

बाट–मार्ग ।

बाँट–व्यक्तिक उद्देशेँ विभाजन ।

बाट ताकब–क्रि० आगमनक प्रतीक्षा करब ।

बाँटब–क्रि० बँट्+अब–व्यक्तिक उद्देशेँ विभाजन १ । सन आदिकेँ गुणसँ युक्त करब २ ।

बाँट-बखरा–विभाजनादि ।

बाटा–बहुत पैघ बाटी ।

बाटाबाटी ताकब–क्रि० आतुरतापूर्वक आगमनक प्रतीक्षा करब ।

बाटी–तीमनक पात्र ।
बाड़ी–वाटी, उद्यान ।
बाड़ी-झाड़ी–उद्यानादि ।
बाढ़नि–सम्मार्जनी ।
बाढ़ब–क्रि० बाढ़्+अब–संम्भार्जन ।
बाढ़ि–आगत जलक आप्लावन १ । वृद्धि २ ।
बात गढ़ब–क्रि० बनाओल बात बाजब ।
बातचीत–वि० वार्तालाप ।
बातबारुन–ओषधिविशेष ।
बाँतर–जे खएलासँ घासो बढ़ए (यथा उरीद) ।
बाती–वर्त्ति, तूरक वा नूआक टेमी १ । बाँसक चीरल अनेक खण्ड २ ।
बाद–उत्तरकाल १ । विवाद २ ।
बादरि–मेघ, बदरी ।
बादसाह–वि० अधीश्वर (मुसलमान) ।
बादसाही–वि० बादसाहक क्रिया १ । बादसाहसम्बन्धी (गद्दी आदि) २ ।
बादुर–उलूक, रात्रिचर पक्षिविशेष ।
बाध–धानक विस्तृत क्षेत्रसमूह १ । बाधा २ ।
बाधकार–बाधा कएनिहार ।
बाधबन–बाध ओ वन ।
बाधा–प्रतिबन्ध ।
बान–वयन ।
वानर–सं० सर्कट ।
बाना–वयन ।
बाना बान्हब–क्रि० कोनो हेतु हठपूर्वक नाना प्रयत्नमे लागब ।
बानि–वयन ।
वान्ति–सं० वमन ।
बान्हब–क्रि० बन्ह्+अब–बन्धन ।
बाप–पिता ।
बापूत–पितापुत्र ।
बाफदा–वि० वस्त्रविशेष ।
बाबन्न–द्वापञ्चाशत् ५२ ।
बाबन्नम–द्वापञ्चशत्तम ।
बाबा–पितामह मातामहादि । स्त्री० बाबी ।
बाबाजी–पुं० वैरागी ।
बाभन–उ० ब्राह्मण । स्त्री० बाभनि ।
वाम–सं० सव्य, दक्षिणभिन्न (बाहुप्रभृति तथा भाग) १। सं० प्रतिकूल २ ।
बामी–मत्स्यविशेष ।
बाय–अ० अथवा ।
वायु–सं० बसात तथा पेटक वायु ।
बारब–क्रि० बार्+अब–त्यागब ।
वारंवार–द्वादश, १२ ।
बारहम–बारहक पूर्त्ति कएनिहार ।
बारहो बिरही–बहुत प्रकारक वस्तुजात ।
बारि–घोड़ाक लगाम ।
बारी–माछ मारबाक स्थानविशेष १ । शूद्रजातिविशेष २ ।
बारीक–भोजमे परसनिहार ।
बारी लगाएब–क्रि० माछ मारबाक यन्त्र लगाएब ।
बारुद–बन्दूक, रबाइस प्रभृतिमे उपकारक एक विस्फोटक पदार्थ ।
वार्त्ता–समाचार, वृत्तान्त ।
बाल–सिकता १ । सं० शिशु २ ।
बालक–उ०स० शिशु १। पुत्र २। स्त्री० बालिका ।
बालग्रह–पूतनादिग्रहदोष ।

बालबच्चा–बालप्रभृति ।
बालविधवा–स्त्री० बाल्यावस्थामे मृतभर्तृका ।
बाला–वलय, भूषणविशेष ।
बालि–गाछमे फड़ल अन्न तथा मकैक पत्राच्छादित अन्नकोष ।
बाली–भूषणविशेष ।
बालुम–वल्लभ, स्वामी ।
बालुम खीरा–एक प्रकारक खीरा ।
बालूसाही–मिष्टान्नविशेष ।
बालेसरी–ढरुआ लौहकण्टकविशेष ।
वास–सं० निवास ।
बाँस–वेणु, वंश ।
बासट्ठि–द्विषष्टि ६२ ।
बासट्ठिम–द्विषष्टिम ।
बासन–अन्नादि रखबाक पात्र ।
बाँसफूल–धान्यविशेष ।
बाँस बरेड़ी–धान्यविशेष ।
बासमती–धान्यविशेष ।
बासब–क्रि० बस्+अब–वासित करब ।
बासरा–गुलाबक प्रभेद ।
बासि–पर्युषित ।
वासी–सं० निवासी ।
बाँसी–आगि फुकबाक बाँसक चाँगा ।
बासी मुहेँ–अ० अभुक्त, बिना किछु खएने ।
बासुरी / **बाँसुरी**–बसुली, वंशी ।
बाह–अ० प्रशसाद्योतक १ । बाहब २ ।
बाहब–क्रि० बाह्+अब–मालक गर्भाधन ।
बाहर–वाह्य ।
बाँहि–बाहु ।
बाँहीँ–लहठीक स्थानमे पहिरबाक काँसाक अलङ्करण ।
बान्हू–रङ्गीन वस्त्रविशेष ।
बिअरि–विल ।
बिअहिआएब–क्रि० बिअहिअब्+अब–बीहनि देब ।
बिअहुआ / **बिअहुती**–विवाहसम्बन्धी ।
बिआएब–क्रि० बि+अब–गर्भमोचन ।
बिआन–बिआएब, प्रसव १ । धान्यादिक पनुघा चलब २ ।
बिआह–विवाह ।
बिआहब–क्रि० विवाह करब ।
बिआहलि–विवाहिता ।
बिऔरी–कुम्हड़ प्रभृतिक बीआक वटी ।
बिकजी–जलपानार्थ नाना फल ।
विकट–सं० भयावह ।
बिकड़ार–अधिक फुलाएल १ । भयावह २ ।
विकराल–सं० विशाल, भयङ्कर ।
विकल–सं० दरिद्र, विषादयुक्त ।
बिकाएब–क्रि० बिक्+अब–विक्रीत होएब ।
बिकाल–वर्षाप्रयुक्त अधलाह समय ।
बिकौआ–रुपैया लए जे अपना सँ छोटमे विवाह कएने छथि से (व्यक्ति) ।
बिक्री–विक्रय, बिकाएब ।
विक्रू–विक्रय्य, विक्रयार्थ (वस्तु) ।
बिखाह–उ० विषयुक्त । स्त्री० बिखाहि, अन्त : प्रकोपस्वभावक (लाक्षणिक प्रयोग) ।
विखिन्न–सं० दीन, दुखी, निकृष्ट ।

विख्यात–सं० प्रख्यातनामा ।
बिगड़ब–क्रि० विघटन ।
बिगड़ाबिगड़ी–परस्पर विरोध ।
बिगहा–बीस कट्ठा (भूमि) ।
बिगाड़ब–क्रि० बिगाड़्+अब–विघटन करब ।
बिगाड़ि–विरोध ।
बिगुल–वि० वाद्यविशेष ।
विघटन–सं० संघटन मे वाधा ।
विचलन–सं० स्खलन ।
बिचला–मध्यवर्त्ती ।
विचार–सं० युक्तिपूर्वक पर्यालोचन ।
बिचारब–क्रि० पर्यालोचन करब ।
बिच्छू–वृश्चिक ।
बिछओना–आस्तरण ।
बिछाएब–क्रि० बिछब्+अब–आस्तरण करब ।
बिछाओन–आस्तरण ।
बिछिआ–भूषणविशेष ।
बिछुआ–बीछल ।
बिछुरब–क्रि० वियुक्त होएब ।
बिछोह–वियोग ।
विजयघंट–बड़का घड़ी-घंटा ।
बिजली–बिजुली, विद्युत् ।
बिजलोका–विद्युल्लता ।
बिजाती–बिजातीय, विलक्षण ।
बिजुकब–क्रि० मूहक सङ्कोचन ।
बिजुली–विद्युत् ।
बिजो–भूताद्यावेशचेष्टा ।
बिजोठ–भूषणविशेष ।
बिजोड़–जोड़ा नहि लागल (रत्नादि) ।
बिजोड़ा–नेबोक प्रभेद ।

बिझो–भोजनार्थ कथन ।
बिटगहरा–एगारहसँ लए गुणापाठ ।
बिटण्डाबाद–वितप्डावाद, स्वपक्षशून्य खण्डन ।
बिटण्डी–वैतण्डिक ।
बिट्ठू, **बिठुआ** }–अँगुठा ओ तर्जनीक अग्रसँ उत्पीडन ।
बिड़रो–वात्या ।
बिड़हरा–पीर टकुरी आदि रखबाक वंशपात्रविशेष ।
बिड़ार–बीजवपनक्षेत्र ।
बिड़ारू–बिड़ारमे उपजल (बीआ) ।
बितब–क्रि० व्यतीत होएब ।
बितराएब–क्रि० बितर्+अब–विरल होएब ।
वितान–सं० शय्याक सोझेँ उपरमे टाङल वस्त्र ।
बिथरब–क्रि० पाएर आदिक सरलीभाव ।
बिथारब–क्रि० बिथार् + अब–पाएर आदिक सरलीकरण ।
बिथुति–कार्यप्रतिबन्ध ।
बिदति–बिद्दति, क्षेत्रादिक उपद्रव ।
बिदरब–क्रि० विदीर्ण होएब ।
बिदल–बिगोल, अन्यपक्षक लोकसमूह ।
बिदा–प्रस्थित ।
बिदाइ–बिदाय, जएबाक काल देल ।
बिदागिरी–प्रस्थान ।
बिदारब–क्रि० बिदार्+अब–विदीर्ण करब ।
विदेश–सं० देशान्तर, हिन्दुस्तानसँ आन देश ।
विदेशी–सं० विदेशभव ।

बिदेसिआ–विदेशमे रहनिहार ।
बिद्दति–क्षेत्रादिक उपद्रव ।
विद्युल्लता–सं० बिजली ।
बिधिकरी–स्त्री० विवाहमे लौकिक विधि करओनिहारि स्त्री ।
विधवा–सं० बेबा ।
विधाता–सं० ब्रह्मा ।
बिधार–ओषधिविशेष, त्रिवृत् ।
बिधुआएब–क्रि० बिधु+अब–मुखक उदास होएब ।
बिधुनब–क्रि० गड्डबड्ड कए वस्तु ताकब।
बिनती–सविनय निवेदन ।
बिनब–क्रि० वयन ।
बिनबिन करब–क्रि० जलादिमे अधिक पीलु आदिक संचरण ।
बिनबिनाएब–क्रि० बिनबिन्+अब–बिनबिन करब ।
विनय–सं० अनुनय, अनौद्धत्य ।
विना–सं०अ० बिनु, वेत्रेक ।
विनाश–स० ध्वंस ।
बिनु–अ० बिना ।
बिनोट–बीनब, वयन ।
विनोद–सं० आनन्दप्रद क्रिया ।
विनोदी–सं० आनन्दप्रद क्रियाकारी ।
विन्यास–सं० विशेष रूपेँ आयोजन ।
विन्यासी–सं० विन्यासशील ।
बिन्हकी–बिन्हनिहार बिखाह (चुट्टी) ।
बिपटा–छकोड़बाजी नाचमे हास्यरसी नर्त्तक ।
बिपटार–विपत्तिग्रास ।
बिपता, **बिपति** }–विपत्ति ।

बिपतिमरू–विपत्तिसँ मृत प्राय ।
विपत्ति–सं० आपत् ।
बिपन–असम्पन्न, विपत्तिग्रस्त ।
विपन्न–सं० विपत्तिग्रस्त ।
विपाक–सं० पेटमे अन्नक अपच ।
विफल–सं० व्यर्थ ।
विवाद–सं० विरुद्ध वाद ।
विवादी–सं० विरुद्धवादकारी ।
विवाह–सं० सविधि पाणिग्रहण ।
बिवाही–स्त्री० पाणिगृहीती (भार्या) १। विवाहसम्बन्धी २ ।
बिभरस, **विभ्रम** }–भ्रम ।
विमन–अप्रसन्नमनस्क ।
विमल–सं० मलहीन, निर्मल ।
विमुख–सं० असम्मुख, अप्रसन्न ।
बिरखी–मालक जिह्वाक रोगविशेष ।
बिरञ्चि–कृतान्नविशेष ।
बिरनफूल–धान्यविशेष ।
बिरनिआ छत–अनेक मुहबाला व्रणविशेष ।
बिरनी–बामा हाथमे रखबाक कुश, वेणी १। मधुमाछीसन छाता लगओनिहार बिन्हनिहार पतङ्गविशेष, वरट २ । गूहल माथक खोपा, वेणी ३ ।
बिरब–क्रि० बीछब ।
विरल–सं० अघन, अल्प ।
बिरलेल–अ० कदाचित् कोनहुठाम ।
विरस–सं० विकृतरसबाला ।
बिरहरा–पीर टकुरी आदि रखबाक पात्रविशेष ।
बिरान्नब्बे–द्विनवति, ९२ ।

बिरान्नब्बेम–द्विनवतितम ।
बिरासी–द्व्यशीति, ८२ ।
बिरासीम–द्व्यशीतितम ।
बिराह–लागल जजातिमे हर चलाएब ।
बिराहब–क्रि० बिराह्+अब लागल जजातिबाला खेतमे हलकर्षण ।
बिरुझब–क्रि० विरुद्ध होएब ।
बिरोजा–ओषधिविशेष ।
बिलमब–क्रि० बिलम्ब करब ।
विलम्ब–सं० दीर्घकाल ।
बिलहब–क्रि० वितरण ।
बिलहा / **बिलहाबाँट** } –क्रि० वितरण ।
बिलाएब–क्रि० बिल्+अब–विलीन होएब ।
बिलाड़(र)–उ० मार्जार/जारी स्त्री० बिलाड़ि ।
बिलैआ–केबाड़ लगएबाक छिटकी ।
बिलैआकन्द–ओषधिकन्दविशेष ।
बिलोँ–अ० अओ, सम्बोधन ।
बिलोबन्द–प्रबन्ध ।
बिलौकी–वर ओ बरुआक भिक्षा ।
बिलौकी माँगब–क्रि० वर ओ बरुआक भिक्षा माँगब ।
विश्राम–सं० क्रियाविरति ।
विष–सं० माहुर ।
विषबड़िआ–विषवटी, सर्पादि विषक गोला ।
बिषाह–विषबाला (जन्तु) ।
विष्टी–कौपीन ।
विष्ठा–सं० अन्नमल ।
बिष्ठी–कौपीन ।

बिसखब–क्रि० गवादिक दुग्धदानक परित्याग करब ।
बिसखोपरा–जन्तुविशेष ।
बिसनाएब–क्रि० बिसन्+अब–निन्द्रामे बाजब ।
बिसनारि–जलभव ओषधिविशेष ।
बिसपिपरी–विषपिपीलिका, विखाह कीटविशेष ।
बिसबिस करब–क्रि० वेदना विशेष ।
बिसबिसाएब–क्रि० बिसबिस्+अब–वेदनाविशेष ।
बिसबिसी–बिसबिसाएब ।
बिसरब–क्रि० विस्मरण ।
बिसरभोर / **बिसराभोर** } –विस्मरणशील ।
बिसराम–विश्राम ।
बिसराह–उ० विस्मरणशील । स्त्री० बिसराहि ।
बिसहरा–पूज्य सर्पिणीविशेष ।
बिसाएब–ना० विष+अब–भुक्तविषवत् पाछाँ अधलाह करब ।
बिसाँढ़–विस, कमलकन्द ।
बिसानि / **बिसाइन** } –दौर्गन्ध्यविशेष, विस्रगन्ध ।
बिसारब–क्रि० बिसार्+अब–विस्मृत कराएब ।
विस्तार–सं० विस्तीर्णता ।
विस्फोट–सं० व्रणविशेष ।
विस्मय–सं० आश्चर्य ।
बिहखारब–क्रि० बिहखार्+अब–तकबाक हेतु टाट फाड़ब ।
बिहँगड़ा–मालक रोगविशेष ।

बिहरि–बिल ।
बिहरिआ हाल–ग्रीष्ममे बिहारिक सङ्ग भेल वृष्टिसँ क्षेत्रक सार्द्र होएब ।
बिहरोन–बिहारि हो तादृश लक्षणयुक्त समय ।
बिहारि–तीव्र बात ।
बिहि–विधि, ब्रह्मा ।
बिहुँसब–क्रि० ईषद्धास ।
बिहुँसी–ईषद्धास ।
बिहून–विहीन ।
बीअनि–व्यजन ।
बीआ–बीज १ । बीजवपनसँ जनमल रोपणीय धान्यादिवृक्ष २ ।
बीच–मध्य १ । तारतम्य, अन्तर २ ।
बीची–तमाकूक छोट रोपणीय गाछ ।
बीछ–वृश्चिक ।
बीछब–क्रि० बिछ्+अब–मिश्रितसँ पृथक् करब, चयन करब ।
बीजी–नकुल ।
बीजी पुरुष–वंशक मूलपुरुष ।
बीजू–बीजोद्भव ओ कलमसँ अन्य (आम्रवृक्ष) ।
बीट–एकठाम एक टा रोपला उत्तर ताहिसँ जनमल अनेक वृक्ष (यथा बाँसक, बीट, धानक बीट) १ । विड्, लवणविशेष २ ।
बीझ–लौहादिधातुमे बहुत दिनेँ बैसल मलविशेष ।
बीड़ / **बीँड़** } –ताटङ्क, भूषणविशेष ।
बीड़ा–ताम्बूलक प्रभेद १।, तृण निर्मित वर्तुल घटादिक आधार २। बैसबाक हेतु मध्यमे बान्हल तृणपुञ्ज ३ ।

बीड़ी–पर्णवीटी १ । धूमपानवीटी २ ।
बीडुक–भात पसओना तृणपुञ्ज ।
वीणा–सं० वाद्यविशेष ।
बीत–वितस्ति ।
बीतब–क्रि० बित्+अब–व्यतीत होएब ।
बीन–वीणा, वाद्यविशेष ।
बीनब–क्रि० बिन्+अब–वयन ।
बीभत्स–सं० घृणाव्यञ्जक ।
वीर–सं० शूर १ । केराक अविकसित पत्र २ ।
बीरनफुल–धान्यविशेष ।
बीस–विंशति २० ।
बीसम–विंशतितम ।
बीहन–बीआक अन्न ।
बीहनि–धान्यवृक्षादिक पंक्तिक पृथक् करब ।
बीहनि देब / **बीहब** } –क्रि० धान्यवृक्षादिक पंक्तिकेँ पृथक करब ।
बीहरि–बिल ।
बुकनी–चूर्ण ।
बुकब–क्रि० चूर्ण करब ।
बुकौर लागब–क्रि० रोदनादिसँ कण्ठक रुद्धताप्राप्ति ।
बुचकट–कनकट्टा (घैलप्रभृति) ।
बुच्च–घोकचल अल्पावकाशक (कान)।
बुझब–जानब ।
बुझनुक–विशेष बोद्धा ।
बुझारति–वादीप्रतिवादीसँ विषयक अवगम ।
बुट्टी–बूट, काटल वृक्षक सीर लागल खण्ड १ । मांसक खण्ड २ ।
बुड़ब–क्रि० जलमे मग्न होएब १ । नष्ट होएब २ ।

बुड़ित्व–मूर्खता, बुड़िबकी ।
बुड़िधनहा–उ० निन्द्य अनादरणीय बूड़ि।
बुड़िपन–ज्ञानशून्यता १। बूड़िक क्रिया २।
बुड़िबक–ज्ञानशून्य ।
बुड़िबकहा–उ० अनाद्रियमाण बूड़ि । स्त्री० बुड़िबकही ।
बुड़िबकी–ज्ञानशून्यता १ । बूड़िक क्रिया २ ।
बुड़िभतन, **बुड़िसुण्ठी** }–ज्ञानशून्य ।
बुढ़पन, **बुढ़ारी** }–वार्द्धक्य ।
बुढ़िन–स्त्री० अनादरणीय वृद्धा ।
बुढ़िआ पाखरि–धान्यविशेष ।
बुढ़ोन–वृद्धसदृश ।
बुतेँ–अ० बलेँ, यत्नेँ ।
बुत्त–मदमत्त ।
बुत्ता–बल ।
बुद्धि–सं० ज्ञान ।
बुद्धिमान्–सं० बुद्धिशाली ।
बुध–सं० दिनविशेष, रविस चारिम दिन ।
बुधिआर–उ० बुद्धिमान् । स्त्री० बुधिआरि ।
बुधिआरी–बुद्धिमत्ता ।
बुधिबधिआ–छलसँ अनका द्वारा अपना हेतु बाछाक अण्डच्छेद कराएब ।
बुनका, **बुनकी** }–बिन्दु ।
बुनछेक–वर्षाबिन्दुक विच्छेद ।
बुनब–क्रि० बीजवपन ।
बुनबुना–बुद्बुद् ।
बुनबुनाएब–क्रि० बुनबुन्+अब–बुद्बुद-युक्त होएब ।
बुनिआ–लड्डू मुँगबा प्रभृतिक हेतु बुन्दक सन गोल गोल घृतपक्व खाद्य ।
बुनिआएब–ना० बुन्नी छोड़ब, मन्द-मन्द वृष्टि होएब ।
बुन्द, **बुन्दा** }–बिन्दु ।
बुन्न, **बुन्नी** }–जलबिन्दु ।
बुलब–क्रि० पर्यटन ।
बुलाकी–नासाभूषणविशेष ।
बूकब–क्रि० बुक्+अब–चूर्ण करब ।
बूझ–बोध ।
बूझब–क्रि० बुझ्+अब–जानब ।
बूझब-सूझब–क्रि० जानब सूनब-प्रभृति।
बूझि–बुद्धि ।
बूट–बुट्टी, काटल वृक्षक सीरबाला खण्ड १। हि० बदाम, अन्नविशेष २ ।
बूटी–औषधरूप डारिक खण्ड ।
बूड़ब–क्रि० बुड्+अब–नष्ट होएब ।
बूड़ि–ज्ञानशून्य ।
बूढ़–उ० वृद्ध । स्त्री० बूढ़ि ।
बूनब–क्रि० बुन्+अब–बीआ छीटब ।
बूलब–क्रि० बुल्+अब–टहलब ।
वृत्तान्त–सं० वार्त्ता ।
वृत्ति–सं० व्यवहार १ । जीविका २ ।
वृद्ध–सं० जराप्राप्त ।
वृद्धप्रपतिमाह–पुं० प्रपितामहक पिता ।
वृद्धप्रपितामही–स्त्री० प्रपितामहक स्त्री ।
वृद्धप्रपौत्र–उ० प्रपौत्रक अपत्य । स्त्री० वृद्धप्रपौत्री ।
वृद्धप्रमातामह–पुं० प्रमातामहक पिता ।
वृद्धप्रमातामही–स्त्री० प्रमातामहक माता ।

वृहत्–सं० पैघ ।
वृहस्पति–सं० गुरुवार ।
बेआलिस–द्वाचत्वारिंशत् ।
बेआलिसम–द्वाचत्वारिशत्तम ।
बेइमान–वि० स्वार्थवश मिथ्या-व्यवहर्ता ।
बेओरा–उपाय ।
बेकछाएब–क्रि० बेकछब्+अब–व्यक्त करब ।
बेकति–व्यक्ति ।
बेकार–निष्क्रिय, अकार्यक ।
बेकाली–दूर जाए अँगने-अँगने क्रय-विक्रयकर्त्ता ।
बेख–नाना वृक्ष ।
वेग–सं० तीव्र गति ।
बेगरता–व्यग्रता ।
बेगरताशान्ति–व्यग्रताक उपशम ।
बेगरतित, **बेगरतू** }–व्यग्रतायुक्त ।
बेगार–भारवाहक ।
बेगारी–भारवहन, बेगारक कर्म ।
बेङ–भेक, मण्डूक ।
बेङची–बेङक बच्चा ।
बेच–लवणादिक्रयणमे मूल्यस्थानापन्न अन्न ।
बेचब–क्रि० विक्रय ।
बेचब-बिकिनब, **बेच-बिकिन** }–क्रयविक्रय ।
बेचारा–दीन, अप्रतिम (परोक्ष चर्चा मे)
बेजाए–अ० अधलाह, असम्यक् ।
बेजान–अ०वि० प्राणपातानपेक्ष ।
बेञ्च–वि० बैसबाक लम्बा कुरसी ।
बेँट–अस्त्रमे पकड़बाक हेतु लगाओल डण्टा (खुरपी कोदारि कुड़हरि आदिमे) ।
बेटा–पुं० पुत्र ।
बेटी–स्त्री० पुत्री ।
बेठ–बेगार ।
बेड़ी–शृङ्खला ।
बेडोल–बेढब, कुत्सिताकारक ।
बेढ़–वेष्टन ।
बेढ़ब–क्रि० वेष्टन ।
बेढ़ी–वेष्टन ।
बेँत–वेत्र, लताविशेष ।
बेतहा, **बेतही** }–वेत्रनिमित (तराजूक पल्ला प्रभृति) ।
बेताक–कुताक ।
बेतासा–व्याकुल ।
बेँती नमब–क्रि० पीठ भूमि दिस कए हाथ-पाएर भूमिमे रोपि धनुषाकार नमब ।
बेतुकार–अपमानशब्द कथन, रेकारसँ बाजब ।
बेत्रेक–अ० बिना ।
बेथा–व्यथा ।
बेधुनि–असंज्ञ ।
बेन–पठाओल पाबनिक बखरा ।
बेनमा–दुःखी ।
बेना–ब्योना, कृयविकृयमे स्थिरताक हेतु प्रथमतः थोड़ेक देल मूल्य ।
बेनामक, **बेनामा** }–बिना नामक (पत्रादि) ।
बेपर्द–वि० आवरणशून्य ।
बेपारी–व्यापारकारी (बनिआँ आदि) ।
बेबसाए–व्यवसाय, परिश्रम ।

बेबसायी–व्यवसायी ।
बेबा–स्त्री० विधवा ।
बेबाइल } –वृथाव्यय ।
बेबालि
बेबूझ–बुद्धिहीन ।
बेमार–वि० अस्वस्थ, रोगी ।
बेर–आवृत्ति (यथा 'दू बेर, तीन बेर') १ । अवसर (यथा 'बेरमे अएलहुँ') २ । दिनक चतुर्थ पहर (यथा 'बेरखन आएब') ३ ।
बेर उठब–क्रि० दिन उटब, सूर्यकें उदयस्थानसँ दूर आएब ।
बेरबाद–वृथा खर्च, नष्ट ।
बेरमा–छिद्र करबाक यन्त्रविशेष ।
बेरहट–बेरुक पहरक खाद्य ।
बेराएब–क्रि० बेरब्+अब–पृथक् करब ।
बेराओल–पृथक् कृत ।
बेरागन–शूद्रादिक पूजापाठ करबाक नियत दिन ।
बेराबेरी–अ० पर्य्यायेण ।
बेरुक–दिनक चारि मपहरमे होएनिहार (कार्यादि) ।
बेरुका पहर–दिनक चारिम पहर ।
बेरेक–अ० कदाचित् ।
बेल–बिल्व ।
बेलओना–मत्स्यविशेष ।
बेलकठ–बेलक गाछक काठ ।
बेलगान–करशून्य (भूमि) ।
बेलचा–खुरपीक आकारक दीर्घ हथिआर।
बेलतोड़ी–बेलक तोड़नाइ ।
बेलदार–उ० माटि कटनिहार जातिविशेष। स्त्री० बेलदारनी ।
बेलना–रोटी बेलबाक साधनविशेष ।
बेलनोती–बित्वाभिमन्त्रण, दुर्गा शारद-पूजाक एक कर्म्म ।
बेलपात–बिल्वपत्र ।
बेलब–क्रि० बेलनाक व्यापार, आधार पर आँटाक गुलिआ पसारब ।
बेलसि–नि:सत्व ।
बेलसूँठि–काँच बेलक सुखौती ।
बेला–बेलीफूलक प्रभेद १। वाद्यविशेष २ ।
बेली–मल्लिका, पुष्पविशेष ।
बेलौना–मत्स्यविशेष ।
बेस–अ० स्वीकार १। साधु (क्रिया-विशेषणमे) २ ।
बेसकिमती–हि० बहुमूल्य ।
बेसन–तीमन मिष्टान्न आदिमे देबाक तण्डुलादिचूर्ण ।
बेसबाहा–उत्तम प्रकारक ।
बेसरि–नासाभूषणविशेष ।
बेसरोकार–वि० असम्बन्धी ।
बेसाती–देशान्तरसँ आबि वस्तु विक्रेता ।
बेसाह–भोजनार्थ अन्नक्रयण ।
बेसाहब–क्रि० बेसाह्+अब–भोजनार्थ अन्न कीनब ।
बेसूधि–असंज्ञ, अनवधान ।
बेश–सं० भेस, स्वरूप ।
बेहरी–चन्दा ।
बेहला–अलि० बरिआतीक मङ्गलार्थ घटधारीक समूह ।
बेहलबाँट–बेहलाकें द्रव्यक बाँट ।
बेहाया–वि० निर्लज्ज, दुर्निवार ।
बेहाल–वि० व्यग्र ।
बेहोस–वि० चैतन्यहीन ।

बेहोसी–चैतन्यहीनता ।
बैगन–वि० भाटा, वार्त्ताकी ।
बैगनी–रङ्गक प्रभेद ।
बैठक–बैसक, बैसबाक पीठ ।
बैठा–धोबिक उपाधि ।
बैठाड़–बैसबाक नियत स्थान ।
बैद–वैद्य ।
बैदगिरी–वैद्यक काज ।
वैदिक–सं० अधीतवेदक ।
बैमान–वि० स्वार्थवश धर्मत्यागी ।
बैमानी–वि० स्वार्थवश धर्म्मत्याग, अधर्म्म ।
वैर–सं० शत्रुता ।
बैरागी–विरक्त, बाबाजी ।
बैरि–बदर, फलविशेष ।
बैरी–सं० शत्रु ।
बैलाएब–क्रि० बैलब्+अब–निष्काशन ।
वैशाख–सं० मासविशेष ।
वैश्य–सं० तृतीय वर्ण ।
बैस–वैश्य, जातिविशेष ।
बैसक्खा–वैशाखसम्बन्धी (अन्न) ।
बैसक–बैठक, बैसबाक पीठ ।
बैसब–क्रि० उपवेशन ।
बैसबनिआँ–जातिविशेष ।
बैसाड़–नित्य बैसबाक स्थान ।
बैसाड़ी–निष्क्रियता ।
बोअब–क्रि० बो+अब–बीजवपन ।
बोआर–पैघ बोआरी ।
बोआरी–पाठीन, मत्स्यविशेष ।
बोकरब–क्रि० वमन ।
बोकार–वमन १। वमनमे बहराएल विकार २ ।
बोकिएब–क्रि० बोकि+अब–बो बो शब्द करब ।
बोकैआ–धान्यविशेष ।
बोको–पृष्ठवाह्य यान ।
बोकड़ा–अधिक बएसक छागर ।
बोच–जलीय जन्तुविशेष ।
बोझ–जुन्नासँ बान्हल तृणादिपुञ्ज ।
बोझा–उघबाक भार ।
बोट–वि० यन्त्रयुत नौका ।
बोड़ा–अन्नविशेष ।
बोड़ी } –कटनिहार विषयुक्त
बोँड़ी } जन्तुविशेष ।
बोतू–विना बधिआ कएल अशिशु छाग ।
बोदरि–धान्यविशेष ।
बोन–वन ।
बोनाएब–क्रि० बोन्+अब–आम्रफलक परिपाकक पूर्वरूप प्राप्त करब ।
बोनि–दैनिक वेतन ।
बोनि-चूकब–बोझसँ कटबाक बोनि देब ।
बोंबिआएब–ना०बोंब+अब–हाथीक बोँ बोँ शब्द करब ।
बाभिआएब–ना० बोबि+अब– बाँबिआएब।
बोर–माछ मारबाक हेतु बनसीमे देल खाद्य १ । अमट बनएबामे देबाक आमक रस २ ।
बोरब–क्रि० घोरल रङ्गमे डुबाएब ।
बोरसि–माटिक अगिनपात्र ।
बोरा–गोणी ।
बोल–वाणी, शब्द ।
बोल फूटब–क्रि० वाणी स्फुट होएब ।
बोली–पक्षी आदिक बाजब १ । मनुष्यभाषा २ ।

बोली देब–क्रि० टिटकारी देब, अनुचित प्रोत्साहन करब ।
बोह–अधिक जलप्रवाह ।
बोहनि–प्रात:कालक प्रथमविक्रयसँ लाभ ।
बोहाएब–क्रि० बोह्+अब–जल-प्रवाहमे भसिओएब, नष्ट करब ।
बौआ–बालक (कोमलालापमे) ।
बौआएब–क्रि० बौ+अब–भोतिआएब ।
बौआसिनि–स्त्री० बहुवासिनी, पुत्रवधू-प्रभृति ।
बौक–मूक ।
बौड़ी–पलचतुर्थीश ।
बौसब / **बौँसब** –क्रि० रुष्टतापनोदन करब ।
व्यक्ति–लोक ।
व्यक्तिताराए–व्यक्तित्व, सत्यत्वादित्वगुणयुक्तता ।
व्यक्तित्व–व्यक्तिताराए ।
व्यग्र–सं० आकुल ।
व्यग्रता–सं० बेगरता, आकुलीभाव ।
व्यतीत–सं० बीतल ।
व्यथा–सं० पीड़ा, वेदना ।
व्यवस्था–सं० निर्णय ।
व्यवहार–सं० लौकिकक्रिया ।
व्यर्थ–सं० वृथा ।
व्याकुल–सं० दु:स्थित ।
व्याधि–सं० रोग ।
ब्योँत–प्रबन्ध ।
ब्योँतब–क्रि० प्रबन्ध करब ।
ब्योना–क्रयणमे स्थिरताक हेतु क्रयणसँ पूर्व देल थोडेक मूल्य ।
ब्योरा–उपाय ।
ब्रह्मपत्र–पुराणादिक अबद्ध पत्र ।
ब्रह्मा–विधि ।
ब्राह्मण–सं० विप्र ।

भ

भओक–बसातक घूमिकेँ गतायात ।
भओगर–अधिक भाओसँ आदेय ।
भओना करब–क्रि० क्रन्दनविशेष ।
भक–किञ्चित् अँखिझप्पी ।
भकइजोत–अत्यल्प दीपादिक प्रकाश ।
भक खाएब–क्रि० किञ्चित् भ्रममे पड़ब।
भकचक–विस्मय ।
भकचब–क्रि० अनुपयोगी लेखसँ दूरि करब ।
भकड़ब–क्रि० तण्डुलादिक नि:सार होएब ।
भकड़ा–धानकेँ सड़ाए बनाओल (चाउर) ।
भकड़ार–समन्तात् प्रफुल्लित ।
भकजोगनी–खद्योत, ज्योतिरिङ्गण ।
भकभक करब–क्रि० कटु वेदनाविशेष ।
भकभकाएब–भकभक्+अब–कटुवेदना-विशेष ।
भक लागब–क्रि० जाग्रदवस्थामे किञ्चित् निद्रागमवशात् वा मद्यवशात् अज्ञानताप्राप्ति ।
भकसी झोँकब–क्रि० सर्वथा उच्छिन्न कँरब ।
भकुआ–धानक अधिक भिजबाक कारण गन्धयुक्त (उसिना चाउर) ।
भकुआएब–क्रि० भकु+अब–निद्राभङ्गा-दिवशात् अप्रसन्नता ।
भकुरमुह–उ० भाकुर माछसन चाकर मुहबाला ।

भकोभण्ड–अरक्षित, यत्रकुत्र अयथोचित स्थित ।
भखब–क्रि० भाषण ।
भखिऔटी–भाषाक प्रयोग ।
भँगतराह–विक्षिप्तप्राय, बाधायुक्त, असूद्धर ।
भगता–जकरा देहमे देवता आबथि ।
भगन्दर / **भगन्नर** –भगन्दर, रोगविशेष ।
भगबा–कौपीन ।
भगवान्–ईश्वर ।
भँगरिआ–भृङ्गराज, ओषधिविशेष ।
भगिनजमाए–भगिनीक जमाए ।
भगिनपुतोहु–बहिनिक पुत्रस्त्री ।
भगिनमान–भागिनेयत्वेन मानार्ह ।
भगिनी–स्त्री० भागिनेयी, बहिनिक कन्या ।
भङघोटा–भाङ घोटबाक पात्र ।
भङठाह–बाधायुक्त, जाहिमे भाङठ हो ।
भङठी–मरम्मति ।
भङपीबा–अधिक भाङ पिनिहार ।
भङतराह–असूद्धर, बाधायुक्त, विक्षिप्तप्राय।
भङरिआ–भृङ्गराज, ओषधिविशेष ।
भङेड़ी / **भङेरी** –अधिक भाङ पिनिहार ।
भङ्ग–रहस्य, निर्माणप्रकार ।
भजन–सं० भगवन्नामकीर्तन, भगवद्गीतगान १ । भगवत्सेवा २ ।
भजनिआ–भगवद्गीतगायक
भजब–क्रि० भज्+अब–स्वसमानमूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ परिवर्तित होएब ।
भजाएब–क्रि० भजब्+अब–स्वसमान-मूल्यक अनेक लघुमुद्रासँ परिवर्तित करब ।
भजार–अनुरूपताक जाँच ।
भजारब–क्रि० भजार्+अब–अनुरूपताक जाँच करब ।
भँजिआएब–ना० भाँजि+अब–भाँजि ताकब ।
भञ्जीत–भजाओल छोट मुद्रासभ ।
भट–भट्ट, पेटक गरेँ भूस्थित (कपर्दकादि) ।
भटकब–क्रि० किञ्चिन्मात्र प्रत्यभिज्ञा करब ।
भटका–बजारब, बजरा ।
भटपुरैनि–पुरैनिक पातसन पातबाला ओषधिविशेष ।
भटबड़(र)–तरल भाटाक चक्का ।
भटभेर–पाकमे अशुद्धिसम्बन्ध ।
भटमाह–उ० जकर जेठ मरि गेल छैक से (व्यक्ति) । स्त्री० भटमाहि ।
भटरङ्ग–जाहिमे रङ्ग क्वचित् कम हो से (वस्त्रादि) ।
भटाक दए–अ० 'भट' शब्द पूर्वक ।
भटौड़ी–भाण्टाकीवटी (व्यञ्जनमे देय)।
भट्टा–भण्टाका ।
भट्ठा–भाठा, कुम्हरौट माटिक लेखनी १ । पाकार्थ पुञ्जीकृत इष्टकासमुदाय २ । अप्रधान स्थान ३ ।
भट्ठी–मद्यालय ।
भठिआर / **भठिआरी** –भाठि दिस, जेमहर नदीक प्रवाह जाय १ । अप्रधान स्थान २ ।

भठोत्तर–भाटकेँ देल (भूमि)।
भड़कब–क्रि० मालक भयसँ पड़ाएब।
भड़कताली–मिथ्याभयप्रदर्शन।
भड़की देब–क्रि० भयप्रदर्शन करब।
भँड़(भण)कुस्सा, **भँड़(भण)कूस**–चूरचूर भेल, बहुत फूटल।
भँड़(भण)छूह, **भँड़(भण)छूहा**–जिह्वालोलुपताप्रयुक्त खएबामे विचार नहि कएनिहार।
भड़हर–धसना खसलासँ निम्न भूमि।
भँड़ (भण) हर–मृद्भाण्ड फेकबाक भूमि।
भँड़ा(भणा)र–भाण्डागार।
भँड़ा(भणा)रकोन, **भड़ा(भणा)रकोनी**–वायव्यकोण।
भँड़ा(भणा)री–भाण्डागारमे नियुक्त (व्यक्ति)।
भँड़ु (भणु)आ–देश्याक दलाल, कुत्सितकार्यकर्त्ता।
भँड़े(भणे)र–अधिक मृद्भाण्डक स्थान।
भण्डा–रहस्य।
भण्डाफोड़–रहस्योद्घाटन।
भण्डार–वस्तुस्थापनागृह।
भण्डारा–बाबाजीक मोज।
भण्डारी–भाण्डागारमे नियुक्त (पुरुष)।
भण्डारी कोन–वायव्यकोण।
भतखइ, **भतखै**–भात खएबाक व्यवहार।
भतबरी–असौजन्य, परस्पर भात खएबाक व्यवहारक निवृत्ति।
भतभुल्लुक–अरत्यन्तभक्तप्रिय (निन्दामे)।
भतरासि–एक पाबनि।

भतरोइँ, **भतरोइआँ**–अत्यन्त छोट रोम।
भतलोह–मृदु लोह।
भतार–भर्त्ता, स्वामी।
भतिजी–स्त्री० भ्रातृजा।
भतोल–बूड़ि, मूढ़।
भत्ता, **भत्ती**–डोरीक गुण।
भथिहान–वस्तिस्थान।
भदइ–भदै, मादबमे होनिहार।
भदबा–श्रवणादि रेवत्यन्त।
भदबारि, **भदबारी**–भाद्र ओ तत्प्रान्त समय।
भदरसोख–भादबक सुखाएल खेत।
भदेस–अधलाह देश।
भदै–भाद्रभव (अन्न)।
भनकब–क्रि० कर्णपरम्परया किञ्चित् प्रकाशित होएब।
भनकी–कर्णपरम्परया किञ्चित् प्रकाश।
भनब–क्रि० वर्णन।
भनभनाएब–क्रि० भनभन्+अब–मन्द मन्द अस्पष्ट शब्द बाजब।
भनभनी–मन्दमन्द अस्पष्ट शब्द।
भनसाघर–महानसगृह।
भनसार–महानसागार।
भनसिआ–पाककर्त्ता।
भनिता–गीतमे कविनामोल्लेख।
भने–अ० उत्तम रीतिसँ।
भफाएब–ना० भफ्+अब–वाष्पोद्गमन।
भबब–क्रि० मन:पूत होएब।
भभक–दौर्गन्ध्य।
भभकब–क्रि० दौर्गन्ध्यप्रकाशन।

भभठपन–आग्रह, दुराग्रह।
भभठिआ–दुराग्रही।
भभरब–क्रि० विदीण भए खसब।
भभाएकेँ खसब–क्रि० सशब्द खसब।
भभाएकेँ हँसब–क्रि० सशब्द हँसब।
भभाएब–क्रि० पतनजन्य शब्दधारा।
भमरा–भ्रमर १। पानि बहबाक हेतु बनाओल वर्तुल पूलक अवयव २।
भय–स० डर, भीति।
भयोन–भयावह।
भर–अवलम्ब।
भरकछ–बद्धकच्छता।
भरकुस्सा–आघातसँ पूर्ण चूरल गेल।
भरखरि–पर्याप्त (फलक पाकब)।
भरगर–सावलम्ब।
भरती–नियुक्त १। भरल २।
भरदुतिआ–भ्रातृद्वितीया।
भरथा–पक्षिविशेष।
भरदूआ–भारद्वाज, पक्षिविशेष।
भरन–निम्न स्थलमे बाढ़िसँ माटिक पूर्णता।
भरना–ऋणक आदाए पर्यन्त सूदिमे देल (भूमि)।
भरनि–निम्नमे बाढ़िसँ मृत्पूर्णता।
भरनी–वस्त्र बिनबामे तिर्यक् सूत्र।
भरब–क्रि० पूर्ण करब।
भरम–भ्रम।
भरमब–क्रि० किञ्चिन्मात्र निद्रायुक्त होएब।
भरसह–भारवहनमे सहायता देब।
भरसाहा–भार सहनिहार स्तम्भविशेष।
भराइ–भरब, पूर्ण करब।
भराएब–क्रि० भरब्+अब–पूर्ण कराएब।
भराठ–माटि दए समतल कएल (भूमि)।

भरि–अ० परिमाण (यथा 'एक भरि, मन भरि') १। यावत्, पर्यन्त (यथा 'भरि दिन, दिन भरि' २। पूर्णता (यथा 'भरि घैल भरि पेट') ३।
भरिआ–भारबाह।
भरिआएब–ना० भारी+अब–गुरुभूत होएब।
भरिगर–अधिक भारसँ युक्त, ओजनमे गुरुतर।
भरि पाएर–अ० पादानुरूप (गमन)।
भरि पोख–अ० शक्त्यनुसार।
भरिसक–अ० यावच्छक्ति १। प्राय: २।
भरुआ–भीजल धानकेँ भूजिकेँ बनाओल (चाउर)।
भरेठ–माटि दए भरल।
भरोस–भरवश, आशा।
भल–उत्तम, नीक (हुनका भल होइन्हि)।
भलमनसात–उत्तम मनुष्यक क्रिया।
भलमन्दा–ने नीक ने अधलाह, मध्यम।
भलमानुस–उत्तम व्यक्ति, नीक लोक।
भसब–क्रि० भसिआएब, प्रवाहवश भाठि दिसि गमन।
भसम–भस्म।
भसाठ, **भसाठी**–जलमे भसिकेँ आएल माटि।
भस्म–सं० छाउर।
भहुँ–भ्रू।
भाइ–भाए, भ्राता।
भाउजि–स्त्री० ज्येष्ठभ्रातृवधू।
भाउली–ओ जमीन जाहिमे आधा मालिकक ओ आधा रैअतिक अंश हो।
भाए–भ्राता।

भाओ–विक्रयमूल्यव्यवस्था ।
भाकुर–मत्स्यविशेष ।
भाखब–क्रि० भख्+अब–भाषण ।
भाग–अँश १ । विभाजन २ ।
भाँग(भाङ)–विजया ।
भाँग(भाङ)ठ–बाधा, विलम्ब ।
भाँग(भाङ)ब–क्रि० भँग्(भङ)+अब–खण्ड करब ।
भागमन्त–उ० उत्कृष्टभाग्यशाली । स्त्री० भागमन्ति ।
भागिन–उ० मागिनेय । स्त्री० भगिनी ।
भागी–सं० सम्बन्धी ।
भाग्य–स० नीक अदृष्ट ।
भाँज–भाँजब ।
भाँजब–क्रि० भँज्+अब–हाथसँ उठाए घुमाएब १। कौड़ीसभकेँ हाथमे लए माटिमे खसाएब २ ।
भाँजि–गमनागमनचिह्न ।
भाट–भाठ, मागध, कबित्तपाठक जातिविशेष ।
भाँटा–वार्त्ताकी ।
भाँटि–क्षुपविशेष ।
भाठ–से दिशा जेमहर नदीक प्रवाह जाए १। अप्रधान स्थान २। मागध ३ ।
भाठा–भूमिमे लिखबाक कुम्हरौट माटिक शलाका १। पाकार्थ इष्टकासमूह २।
भाठि–नदीमे प्रवाह जाहि दिसि जाए से (भूमि) ।
भाँड़–जाहिमे पाक कएल जाए से मृद्भाण्ड ।
भाँड़ बहराएब–क्रि० मालक गर्भाशय बहराएब ।
भात–भक्त, सिद्ध तण्डुल ।
भातमसाला–तृणविशेष ।
भातिज–उ० भ्रातृज । स्त्री० भतिजी ।
भाथि / **भाथी** } –मस्त्रा ।
भादब–भाद्रपद (मास) ।
भानस–महानस, भोजनार्थ पाक ।
भाफ–वाष्प ।
भाफब–क्रि० भफ्+अब–वाष्प युक्त करब ।
भाव–स० अभिप्राय ।
भावना–सं० मानसविचार ।
भाबहु–स्त्री० भावी, भविष्यमे होएनिहार ।
भाभट / **भाभठ** } –दुराग्रह ।
भाभरी–पौरुषवचनसँ भयप्रदर्शन ।
भाभंस–अभ्युदय ।
भाय–भाए, भ्राता ।
भार–सं० दाब, भारी वस्तुक आक्रान्ति १। वहनीय वस्तुसँ भरल दू सीकसँ युक्त स्कन्धवाह्य वंशदण्ड २ ।
भारतवर्ष–स० हिन्दुस्तान ।
भारदोर–भार-बेन-प्रभृति ।
भारब–क्रि० भार्+अब–भीजल धानकेँ भूजब ।
भारा–वरण १ । यानादिक वेतन २ ।
भारी–गुरुभूत ।
भालरि–सम्पूर्ण केराक पात ।
भालसरी–बकुल ।
भाला–भल्ल, भोकबाक अस्त्रविशेष ।
भास–स्वर ।
भासब–क्रि० भास+अब–प्रवाह वश गमन १ । गृहादिक झुकब २ ।

भिखमँग(मङ)नी–स्त्री० भिक्षा मँगनिहारि ।
भिखमङ्ग / **भिखारि** } –पुं० भिक्षा मँगनिहार ।
भिजब–क्रि० आर्द्र होएब ।
भिड़गर–लोकसङ्कुल १। श्रमसाध्य २ ।
भिड़न्त–मुठभिराओ, साम्मुख्य ।
भिँड़िआएब / **भिणिआएब** } –ना०भीड़ीँ+अब–भीँड़ी बनाएब, मोड़ि मोड़ि एकत्रित करब जाहिसँ ओझराए नहि।
भितघर–माटिक भित्तिबाला घर ।
भितर–अभ्यन्तर ।
भितरपेन–जकर जड़ि गृहादिक भीतर झुकल हो से (खाम्ही) ।
भितरिआ–आभ्यन्तरिक ।
भितरी–आभ्यन्तर ।
भिनकब–क्रि० भात आदिमे माछीक सम्बन्ध होएब ।
भिनभिनाएब–क्रि० भिनभिन्+अब–मन अश्रद्धायुक्त होएब ।
भिनसर–प्रातः काल ।
भिनसरबा(बी)राति–उषःकाल ।
भिनसरुक / **भिनसरुका** } –प्रातःकालिक ।
भिनाओज–विभक्तता ।
भिरगर–भिड़गर, संकुल १। श्रमसाध्य २ ।
भिरब–क्रि० संयुक्त होएब ।
भिलबा–उ० अनादरणीय भिल्ल । स्त्री० भिलबी ।
भिल्ल–सं० उ० वन्य लोक । स्त्री० भिलनी ।
भिसिण्ड–अतिविशाल (निन्दामे) ।
भिहगर–लम्बा-चओड़ा देहबाला ।
भीख–भिक्षा ।
भीखन–भीषण, भयावह ।
भीजब–क्रि० भिज्+अब–आर्द्र होएब ।
भीठ–धनहरसँ आन (खेत) ।
भीड़–लोकसमुदाय ।
भीँड़(भीण)–पोखरिक उच्च मोहार ।
भीँड़ी(भीणी)–भिँड़िआओल (डोरी)।
भीत–कुड्य, भित्ति १। सं० भययुक्त २।
भीतर–अभ्यन्तर ।
भीर–भार, परिश्रम ।
भीरब–क्रि० भिर्+अब–संयुक्त होएब ।
भील–भिल्लजाति ।
भुअङ्गर–फटफटार, स्पष्ट देखार (चानन आदि) ।
भुइआँ–भूमि
भुइँहार–उ० भूमिहार ब्राह्मण ।
भुकनी लागब–क्रि० वारंवार एके बात कहब ।
भुकब–क्रि० कुकुर-गिदड़क बाजब ।
भुकरी–तृणविशेष ।
भुखल–बुभुक्षित ।
भुच्च–ज्ञानहीन ।
भुजब–क्रि० भर्जन ।
भुजबन्द–भूषणविशेष ।
भुजबी–काँच आम्रादिक बिनु चिबओनहु खएबाक योग्य मेही-मेही खण्ड ।
भुजाली–दबिला, कटबाक उपकरण-विशेष।
भुटकब–क्रि० रोमाञ्चयुक्त होएब ।
भुटका–मोट ओ कम लम्बा (मेरिचाइ आदि) ।

भुटाड़ि, भुटाढ़ि }–अधिक भुट्ट, वामन ।
भुट्ट–उ० वामन । स्त्री० भुट्टि ।
भुड़रब–क्रि० साक्षात् आगिमे लवङ्गादिक ईषत् पाक ।
भुड़भुरी–कीटोत्खात् छोट-छोट मृत्खण्ड-पुञ्ज ।
भुड़रा–साक्षात् अग्निमे अतिपक्क ।
भुड़कबा–रात्रिशेषमे उगनिहार पैघ ताराविशेष ।
भुण्डी–कतोक गहनामे लटकल गोल अवयव १ । अङ्गाक मून्हीमे पैसएबाक गोल नूआ २ ।
भुतखापड़ि–अलच्छ ।
भुतसप्पा–सर्पस्वरूप भूत ।
भुताहि–भूतयुक्त (गाछी) ।
भुनचट्टी–भुन्नी, मत्स्यविशेष ।
भुन्ना–मत्स्यविशेष ।
भुन्नी–मत्स्यविशेष ।
भुमफोड़–भूमि फाड़ि बहराएल ।
भुमहुर–सूक्ष्म-सूक्ष्म बह्निकणयुक्त तप्त छाउर ।
भुरकुस्सा–अनेक खण्ड भए फुटल ।
भुरचुङ्गा–छोट सुकाठक स्तम्भमे पैसाओल बाँस ।
भुरभुरी–भुरभुड़ी, गोमयादिमे कीटकृत मृत्कणपुञ्ज ।
भुररी–चूर्ण, भुड़री ।
भुरसी–भूयसी दक्षिणा ।
भुल्ल–उ० लालिमायुक्त उजरीधबल (केश) १। तद्युक्त (महिसाप्रभृति) २ । स्त्री० भुल्लि ।
भुल्ला–मत्स्यविशेष ।
भुसकाँड़–भुस्सी रखबाक घर ।
भुसकौल–अध्ययन कएनहु मूर्ख, असंस्कारी ।
भुसखार–भुस्सा रखबाक घर ।
भुसबा–मिष्टान्न विशेष ।
भुसभुसाह–दबला उत्तर फूटि गेनिहार ।
भुसहन–साधारण भूसाबाला खाद्यान्न ।
भुसहा, भुसाह }–भुस्सासँ युक्त ।
भुस्सा, भुस्सी }–बुस, अन्नक तुष ।
भूकब–क्रि० भुक्+अब–कुकुरगिदरक बाजब ।
भूकमल–स्थलकमल ।
भूकम्प–सं० भूमिक डोलब ।
भूकुम्हड़ा–भूकूष्माण्ड, ओषधिविशेष ।
भूख–बुभुक्षा ।
भूखल–बुभुक्षित ।
भूचाप–पुष्पविशेष ।
भूजब–क्रि० भुज्+अब–भर्जन ।
भूजा–भृष्ट, भूजल (खाद्य) ।
भूत–सं० देवयोनिविशेष, प्रेत ।
भूताक्षर–भूतलिखित आखर, पढ़बाक अयोग्य अक्षर ।
भूतांसए–भूतावेश ।
भूमि–सं० धरित्री ।
भूमिहार–सं० भुइँहार, ब्राह्मण विशेष ।
भूर–बिल ।
भूरभार–विलादि ।
भूरा–चीनीक प्रभेद १। रङ्गक प्रभेद २ ।
भृङ्ग–सं० कीटविशेष १। शाकविशेष २।

भृङ्गी–पक्षिविशेष १ । वाद्यविशेष २ ।
भेख–वेष ।
भेज–प्रातिनिध्य ।
भेज पूरब–क्रि० प्रातिनिध्य पूरब ।
भेट, भेँट }–वियुक्तक साक्षात्कार १ । कल्हार २ ।
भेँट घाँट–साक्षात्कारादि ।
भेँटी–सलामी, भेँट करबाक कालक उपहार ।
भेँड़(भेण)बा–अक्षरक अन्यथात्वसूचक चिह्न ।
भेँड़ा(भेणा)–उ० मेष । स्त्री० भेँड़ी, भेणी ।
भेँड़ (भेणा)–उ० मेष । स्त्री० भेँही, भेणी ।
भेँड़ा(भेणा)री–बकरी भेँड़ी प्रभृतिक विष्ठा ।
भेँड़ि(भेणि)आ धसान–भेँड़ी-जेकाँ अन्धानुकरण ।
भेँड़ि(भेणि)हर–उ० भेँड़ीक उपजीवी जातिविशेष । स्त्री० भेड़िहरनी ।
भेँड़ी(भेणी)–स्त्री० मेषी ।
भेद–सँ० विशेष १ । तारतम्य, बुद्धिभेद २ । रहस्य ३ ।
भेदभाव–भेदबुद्धि ।
भेम, भेम्ह }–पक्षिकीटविशेष ।
भेर–निद्रादिवशात् असंज्ञ ।
भेर करब, भेर लागब, भेरी करब }–क्रि० अनेक मीलि एकदिन एक गोटक कार्य करब दोसरा दिन दोसराक जाहिसँ बोनि देय नहि हो ।
भेला–गुड़क प्रभेद १। भल्लातक २ ।
भेस–भेख, वेष ।
भैँसब–क्रि० भोँकब ।
भैआ–भायक सम्बोधन ।
भैआबाँट, भैबट्टी }–विषम विभाजन ।
भैसुर, भैँसूर }–स्त्रीकेँ स्वामीक जेठ भाए।
भोआर–भोगार, लुलुहार, वृद्धिमुख पुष्ट (वृक्ष) ।
भोकन्नर–भगन्दर ।
भोकन्नर फुटब–क्रि० भगन्दरक स्फुटता।
भोकारि पारब–क्रिण बहुत जोर सँ कानब ।
भोग–सं० उपभोग ।
भोगार–भोआर, लुलुहार, उन्नतिमुख ।
भोगी–सं० उपभोगशील ।
भोग्य–भोगयोग्य ।
भोज–अनेक निमन्त्रितक भोजन ।
भोजघरा–अनेक निमन्त्रितक भोजनालय।
भोजन–सं० तृप्तिक हेतु भक्षण ।
भोजनी–भोजनसामग्री ।
भोजपत, भोजपत्र }–भूर्जपत्र ।
भोजैत–उ० भोज कएनिहार । स्त्री० भोजैतिनी ।
भोँट–पेटक बड़का भोँटी ।
भोँट चहकाएब–क्रि० अस्त्रसँ भोँट फारब ।
भोँटिआ–पर्वतीय (घोटकविशेष) ।
भोँटी–अन्त्र ।
भोँड़(मोण)ही–माछक प्रभेद ।

भोँड़ा(मोणा)–मत्स्य विशेष ।
भोतिआएब–क्रि० भोति+अब–भ्रमवशात् कुमार्गगमन ।
भोथ–कुण्ठित (अस्त्र) ।
भोथरब–क्रि० भोथ होएब ।
भोम्हरब–क्रि० समन्तात् दंशादिक्रिया ।
भोम्हा शङ्ख–वाद्यशङ्ख ।
भोर–प्रात:काल १ । व्याकुल, विह्वल २ ।
भोरगर–उष:काल ।
भोरुक–प्रात:कालिक ।
भोरुक पहर–प्रात:कालिक प्रहर, दिनक प्रथम प्रहर ।
भोरुका–प्रात:कालिक ।
भोरुका पहर–प्रा:कालिक प्रहर ।
भोस–केराक प्रभेद ।
भौकी–आवर्त ।
भौजाइ–ज्येष्ठभ्रातृजाया (सम्बोधनसँ भिन्नमे) ।
भौजी–ज्येष्ठभ्राताक जाया ।
भौरिआ–आवर्तवत् घुमल (केश) ।
भौरी–विक्रयावर्ष परिभ्रमण १। फलविशेष जे घुरमा रोगबाला पहिरैत अछि २।
भौरी करब } –क्रि० घूमि घूमि
भौरी देब } वस्तु बेचब ।
भौँह–भहुँ, भ्रू ।
भ्रम–सं० विपरीत ज्ञान ।
भ्रमाह–भ्रमजनक अस्पष्ट (अक्षरादि) ।
भ्रातृद्वितीया–सं० एक पाबनि जे कार्तिकशुक्ल द्वितीयाकेँ होइत अछि।

म

मइमुह–माएक मुहसन मुहबाला ।
मउसी–स्त्री० मातृष्वसा, माएक बहिनि।
मएदान–चत्वर ।
मएना–पक्षिविशेष, सारिका ।
मओसा–पु० माएक बहिनिक पति ।
मकइ–मकै, अन्नविशेष ।
मकमकाएब–क्रि० मकमक+अब–कार्यक शिथिलीभाव ।
मकब–क्रि० मालक लीलया धावन ।
मकरगोड़–मकराक आकारक टेढ़ टाङबाला (बड़द) ।
मकरा–कीटविशेष जकरा गाँड़िगे सूत लागल रहैत अछि ।
मकरी ऐँठब–क्रि० दुष्टतासँ कार्यमे ओझरोठ लगाएब ।
मकुआ–मकोआ, छड़ी प्रभृतिक अङ्कुशाकार अर्द्धभाग ।
मकुआएब–ना० मकु+अब–मकुआजेकाँ लबब ।
मकुट–मुकुट ।
मकुना–बिनु देखार दाँतक हाथी ।
मकोना–मकुना ।
मकोर–वंशविशेष १ । फलविशेष २ ।
मक्खन–नवनीत ।
मखबूल } –वि० ऋण पर देल से क्षेत्र
मखमूल } जे नियमित अवधि धरि ऋण सशोधन नहि कएलापर महाजनक भए जाए ।
मखान–माषान्न ।
मखोलिआ–हास्यरसी ।
मगजी–वि० दोहरि आदिक वस्त्रक अन्तमे स्यूत शोभार्थ वस्त्रान्तर ।

मगहा } –मगधदेशोद्भव ।
मगहिआ }
मगही–मगधदेशोद्भव (खेसारी ओ पानक प्रभेद) ।
मग्घ–मघा (नक्षत्र) ।
मघा–सं० आश्लेषोत्तर नक्षत्र ।
मघारि–माघक समय ।
मङ(मँग)नचन–अधिक काल मँगनिहार ।
मङ(मँग)नी–अ० बिना मूल्य १ । बिना मूल्य देबाक हेतु याचना २ ।
मङ(मँग)नी-चङ(चँग)नी–माँगब आदि क्रिया ।
मङ(मँग)रा–सभसँ उपर देबाक खपरा।
मङ(मँग)रैल–कृष्णवर्ण अन्नविशेष, कालजीरक ।
मङग(मँगा)एब–क्रि० मङ(मँग) ब्+अब–आनयन ।
मङु(मँगु)री–दगुर (माछ) ।
मङ्गल–स० कल्याण १ । सोमक अगिला दिन २ ।
मङ्गल पठान–क्रीड़ाविशेष ।
मचकी–मछकी, झुलबाक साधन, दोला।
मचब–क्रि० अधिक होएब ।
मचमचाएब–क्रि० मचमच्+अब–मचमच शब्द करब ।
मचान–मञ्च ।
मचिआ–कुर्सी ।
मचोड़(र)–घुमाएकेँ ऐँटब ।
मचोड़(र)ब–क्रि० घुमाएकेँ ऐँटब ।
मच्छर–हि० मशक, मोस ।
मछकी–हिड़ोला ।
मछखौका–अधिक काल माछ खएनिहार।
मछगर–अधिक माछबाला (पोखरि प्रभृति) ।
मछगिद्धी–सर्पाकार मत्स्यविशेष ।
मछतरा–माछ तरबाक लोहिआ ।
मछबार–माछ मारनिहार ।
मछबारि–माछक मारब ।
मछरिआ–भूषणविशेष ।
मछहट्टा–माछक हाट ।
मछहर–गाँज, टापि आदिसँ माछ मारब ।
मछाइनि–माछक गन्धयुक्त ।
मछाडाली–धान्यविशेष ।
मछारब–क्रि० मछार+अब–कम ऊँच आरि बान्हब ।
मजर–पज्जर, मञ्जरी ।
मजरब–ना० मञ्जरीयुक्त होएब ।
मजगूत–वि० दृढ़, बलिष्ठ ।
मजगूती–वि० दृढ़ता ।
मजहुल–वि० दब, हीनबल ।
मजीठ–मञ्जिष्ठा, ओषधिविशेष ।
मजीरा–तानवाद्यविशेष ।
मजील–वि० बहुत दूर मार्ग ।
मजुरली–वि० टहल कएनिहारि ।
मजूर–मयूर ।
मजूरा–हि० अजूरा पर काज कए देनिहार, मजदूर ।
मजूरी–पारिश्रमिक, वेतन ।
मज्झा–माल बन्हबाक ढोरीक अवयव जकरा मिलाए कड़ाम प्रभृति बनैत अछि १ । गुड्डीक डोराकेँ कड़ा करबाक लस्सा २ ।

मझधार–धारक मध्य ।
मझफारी–औकारक मात्रा ।
मझिआएब–ना० मझि+अब–माझमे लेब।
मझिआम–गामक मध्य भाग ।
मझिला–मध्यभव, मध्यम (पुत्रादि) ।
मझिली–स्त्री० मध्यम (पुत्री आदि) ।
मञ्जूर–वि० स्वीकृत ।
मञ्जूरी–वि० स्वीकार ।
मटका-मटकी–कज्जलतिलक ।
मटकी–नेत्राच्छादक चर्म ।
मटकी मारब–क्रि० नेत्रावरण चालन ।
मटकुड़ी(री)–दहीक मृत्पात्रविशेष ।
मटकूड़(र)–पैध दहीक पात्रविशेष ।
मटर–पैघ उज्जर केराओ ।
मटसुन–मतिशून्य, अनवधान-स्वभावक ।
मटिआ–किरासन (तेल) १। रङ्गक प्रभेद २। हाथसँ बनाओल वस्त्रविशेष ३।
मटिआएब–ना० माटि दए धोएब १ । माटिसँ युक्त करब २ ।
मटिआमेट–नेस्तनामूद, सर्वथा लुप्त ।
मटिआर–बालसँ अमिश्रित माटि बाला (खेत) ।
मटिआरी–बालसँ अमिश्रित सक्कत माटि।
मटिआह–माटिसँ मिश्रित (जलादि) ।
मटिकम–माटिक काज (माटि काटब, भरब आदि) ।
मटिकोड़ / **मटिकोड़ा** }–माटि कोड़बाक स्थान ।
मटिगर–अधिक माटिसँ युक्त ।
मटिसुन–मतिशून्य, अनवधानस्वभावक ।
मटुक–मुकुट ।
मटुकी–मृत्पात्रविशेष ।
मट्टर–मटर, उजर पैघ केराओ ।
मट्ठा–माठा, बलय १। मन्थनीउर्वरित नवनीतविकार २ ।
मठ–मन्दिर, देवालय ।
मठठ–घरक उपरका दुहू चारक सन्धि -स्थल ।
मठब–क्रि० कोड़ो प्रभृतिक बाँसक गीरहकेँ छीलब ।
मठबा–शाकविशेष ।
मड़कब–क्रि० किञ्चित् धिपन्न होएब ।
मँड़(मण)गील–माँड़ रहि गेलासँ गील (भात) ।
मँड़(मण)फेका–माँड़ फेकबाक बासन।
मँड़(मण)बा–माड़ब, मण्डप ।
मड़मड़एब–क्रि० मड़मड़्+अब–मड़मड़ शब्द करब ।
मड़र / **मँड़र** }–शूद्रादि कतोक जातिक उपाधि १। चौठिचन्द्रक सन्ध्याकालक सिद्धान्न नैवेद्य २ ।
मड़रा–चङेरा टापि प्रभृतिक मण्डलीकृत हिड़रा ।
मड़राएब–क्रि० मड़र्+अब–मण्डलाकारेँ घूमब ।
मड़ुआ–अन्नविशेष ।
मड़ुक–छोट गोलाकार बखारी ।
मड़ेआ–ठोकबाक उपकरणविशेष ।
मढ़नि–मढ़ब ।
मढ़ब–क्रि० दृढ़ताक हेतु अन्तमे वस्त्र धातु इत्यादिसँ आवृत करब १ । जुट्ठी बनाएब २ ।
मढ़ाइ–मढ़ब ।
मणि–सं० रत्न ।

मण्डा–मिष्टान्नविशेष ।
मण्डिल–मन्दिर, देवालय ।
मत–सं० पक्ष, सम्मतिविषय ।
मतब–क्रि० हाथीक मत्तताप्राप्ति ।
मतल–मत्त ।
मतामह–मातामह ।
मतामही–मातामही ।
मति–सं० बुद्धि ।
मती–सर्पादिविषकेँ मन्त्रसँ हँटओनिहार।
मतोना–कोदोक प्रभेद ।
मथदुक्खी–माथक व्यथा ।
मथनिआ–मन्थनपात्र ।
मथनी–चार आदिक सभसँ उपरका भाग।
मथब–क्रि० मन्थन ।
मथबाहि–शिरोवेदना ।
मथाक मोल–बुद्धिक इयत्ता (निन्दामे)।
मथानी–मन्धनदण्ड, रही ।
मथासोहार–वर्णक माथपर अनुस्वारसूचक बिन्दु ।
मद–सं० यौवनादिजन्य गर्व १ । धनागमस्थानक विभाग २ ।
मदब–क्रि० बदब, वरण ।
मद्दति–ि० साहाय्य ।
मद्दी–क्रीडानियमप्रकारव्यवस्था ।
मद्य–सं० सुरा ।
मधु–सं० माक्षिक ।
मधुआएब–ना० मधुसँ युक्त होएब ।
मधुकुप्पी–पक्षिविशेष ।
मधुमाछी–मधुमक्षिका ।
मधुमाल–धान्यविशेष ।
मधुर–निष्ठ, मिष्टान्न ।
मधुरबा–मधुर प्रकारक ।
मधुराइ–माधुर्य ।
मधुराँठ / **मधुराह** }–किञ्चिन्मात्र मिष्ट ।
मधुरी–बन्धूक, पुष्पविशेष ।
मधुश्रावणी–सं० श्रावणशुक्लतृतीया ।
मधेसिआ–मध्यदेशीय ।
मन–अन्तःकरण १ । खारी, परिमाण विशेष २ ।
मनःकथा–चिन्ता ।
मनक्का–द्राक्षाक प्रभेद ।
मनखप–से खेत जकर कर नियतरूपेँ अन्ने लेल जाए ।
मनगर–प्रसन्न मनसँ युक्त ।
मनघुटाह–उ० विमनस्क । स्त्री० मनघुटाहि ।
मनजाएज–वि० अन्नक तौल ।
मनपै–मनमे पाओ भारि ग्राह्य ।
मन पारब–क्रि० स्मरण करब ।
मनमोट / **मनमोटाओ** }–वैमनस्य ।
मनरञ्जन–मनोरञ्जक १। मिष्टान्नविशेष २।
मनरोगा–मानसिक रोग ।
मनसठ–ऊपरसँ अनुकूल किन्तु मनसँ शठ ।
मनसरा–धान्यविशेष ।
मनसरी–धान्यविशेष ।
मनसा–मनुष्य (स्त्रीक उक्तिमे) १ । वि० इच्छा २ ।
मनसी–मनस्वी ।
मनसुबा–उत्साह, पौरुष ।
मनसुबाएब–ना० मनुसुब्+अब–उत्साह करब। ।

मनसोठ–मनसठ ।
मनहकार–निषेध, मना करब ।
मनहुस–हतोत्साह ।
मना–अ० निषेध ।
मना करब
मना देब } –क्रि० निषेध करब ।
मना मानब–क्रि० निषेधक स्वीकार ।
मनि–मणि ।
मनिआर–मणिबाला (सर्प) ।
मनुक्ख
मनुख } –मनुष्य ।
मनुखाह–उ० मनुष्यमे रीतल (कुकुर आदि) ।
मनुष्य–सं० मानुष ।
मनुस–मनुष्य ।।
मनुसा–अनादरणीय मनुष्य ।
मने–अ० प्रायः १ । सम्भावना २ ।
मनेजर–वि० प्रधान अधिकृत व्यक्ति ।
मनोरथ–सं० इच्छा ।
मनोहर–सं० स्मरणीय ।
मनोरी–कपड़ामे लगएबाक भूषणविशेष।
मन्त्र–सं० फलप्रद जप्य ।
मन्त्राएब–ना० मन्त्रब्+अब–मन्त्रोपहित करब ।
मन्त्री–सं० सचिव ।
मन्द–सं० शिथिल ।
मन्दिर–देवालय ।
ममरखा–शिशुक रोगविशेष १ । ममरखाक ओषधिविशेष (छड़ी ममरखा इतयादि) २ ।
ममरी–टेमीक अन्तमे उत्पन्न कज्जल जाहिसँ दीपक ज्योति कम भए जाइछ ।

ममहर–मातृक, मामाक घर ।
ममा–मामा, मातुल ।
ममिआ सासु–स्त्री० पतिक मामि ।
ममिऔत–उ० मामक बेटा । स्त्री० ममिऔति ।
ममोर–वेदनाविशेष ।
ममोरब–क्रि० देहक वेदनाविशेष ।
मयूर–सं० शिखी ।
मयूरपङ्खी–मयूरक पाँखिक पङ्खा ।
मर–मरण १। मृतक २। अ० विस्मय-द्योतक ३।
मरक–पेटक विपाकापन्न अन्नक भाग ।
मरकछ–कृत्रिम मृतवत् चेष्टाशून्यता ।
मरकछ लाधब–क्रि० मृतवत् कृत्रिम चेष्टाशून्यता देखाएब ।
मरकन–अर्जीण अन्नक कण ।
मरकाठी–मुरदा डाहबाक शेष काष्ठ।
मरखाह–उ० मारनिहार (माल) । स्त्री० मरखाहि ।
मरघट–मुरदा डाहबाक घाट ।
मरचर–जाहिठाम अधिक मुर्दा डाहल जाए ।
मरछाउर–चिताभस्म ।
मरछिआहि–स्त्री० जकर सन्तान मरि-मरि जाइक ।
मरतढ़िआ–मारिमे प्रौढ़ ।
मरदुआर–मृतसम (वृक्षादि), जे लुलुहार नहि हो ।
मरनइ–मृतनदी, पूर्वक नदी जे सम्प्रति भरनिसँ प्रवाहहीन भए गेल हो ।
मरब–क्रि० मरण ।
मरम–मर्म्म ।

मरमूठि–मुइलाक मूठिजेकाँ दृढ़ मुष्टि ।
मरम्मति–विघटित अवयवक पुनर्योजन ।
मरहन्ना–मुइल अन्न, जलक अभावसँ अन्नहीन (उपजा) ।
मराठी–मृतप्राय (वृक्षादि) ।
मरिचाइ–कटुवीरा, तीक्ष्णा ।
मरिच
मरीच } –मरिच ।
मरुअनि–बाँसक उपरका त्वचा ।
मरुआएब–क्रि० मरु+अब–पल्लवादिक मूर्च्छित होएब ।
मरुऐनी–मरुआएब ।
मरेड़–तृणविशेष ।
मरोछि
मरोछिआहि } –स्त्री० भूरिमृतवत्सा ।
मरौसी–पैतृक (सम्पत्ति) ।
मर्म–सं० नरम, रहस्य, तात्पर्य ।
मर्यादा–सं० अलोलुपतादि गुण ।
मलकोका–कुमुदिनीप्रभेदक रक्त पुष्पविशेष ।
मलब–क्रि० मर्दन ।
मलमल–वस्त्रविशेष ।
मलहम–व्रण छुटबाक लेप ।
मलाइ–बरकाओल दूधक सार ।
मलान–म्लान ।
मलार–मलार, रागविशेष ।
मलाह–उ० मत्स्यजीवी जाति विशेष । स्त्री० मलाहिनि ।
मलाही–चारकेँ नीचाँ खसबासँ रोकबाक यन्त्रविशेष ।
मलिकाइनि
मलिकानि } –स्त्री० स्वामिनी ।

मलिछ
मलिछन } –मलिन ।
मलिछाह–किञ्चित् मलिन ।
मलिन–सं० मलयुक्त (वस्त्रादि) ।
मलीदा–ओढ़बाक ऊनी वस्त्रविशेष ।
मल्लिक–कतोक जातिक उपाधि ।
मस–मशक, मोस ।
मसक–पानिभरबाक चमड़ाक पात्र १ । वस्त्रादिक अवयवक किञ्चित् विलचन २ ।
मसकब–क्रि० वस्त्रादिक अवयबक किञ्चित् विचलन ।
मसकिल–वि० विपत्ति, कठिन, मोसकिल।
मसकूर–चौमे संलग्न मांस ।
मसदिना–मास दिन होएनिहार (अशौचादि)
मसनही–मासपूर्त्त्युत्तर स्त्रीकर्तृक स्नान ।
मसलन्द–ओँगठबाक पैघ गेड़ुआ ।
मसहरी–मशकवारक स्यूत पट ।
मसहारा–वि० मासिक वेतन ।
मसान–श्मशान ।
मसान्त–मासान्त, सौर मासक अन्तिम दिन ।
मसाल–कृत्रिम उल्का ।
मसालची–कृत्रिम उत्कासम्पादनादि प्रकाश करबाक कार्य कएनिहार ।
मसाला–हीँगु हरदि तेजपात प्रभृति व्यञ्जन उपकरण १। पानक उपकरण (लवङ्ग अड़ाँची आदि) २ ।
मसि–सं० मसी, मोसि, लेखार्थद्रव ।
मसिआनी–मसीधानी, मसीपात्र ।

मसिआ सासु–स्त्री० पतिक मातृष्वसा ।
मसिऔत–उ० माउसिक अपत्य । स्त्री० मसिऔति ।
मसिदानी–मसीधानी, मसीपात्र
मसुआएब–ना० मासु+अब–भाँटा आदिक कुपाकवश मासुसन सक्कत होएब।
मसुरी–मसूर, द्विदलान्नविशेष ।
मसुवृद्धि–देहमे पिण्डाद्याकार मांसवृद्धि।
मसुरामनी–मधुश्रावणी ।
मसोड़–विरल वस्त्रक घर्षणजन्य विचलन।
मसोड़ब–क्रि० मसोड़ व्यापार ।
मस्खरी–हँसी-ठट्ठा ।
कस्तकतोड़–गृहदोष विशेष ।
महक–गन्ध ।
महकब–क्रि० गन्धक प्रकाशन ।
महखर–परिवारक सर्वजनसम्बन्धी वस्तु।
महखरिआ–महखरक कार्य कएनिहार ।
महग–महार्घ ।
महगी–महार्घता ।
महगोरिआ–महग बेचनिहार ।
महजीद–मुसलमानक देवघर ।
महतम–महत्तम, खामिन्द ।
महतोँ–महत्तम, प्रभु १ कतोक जातिक उपाधि २ ।
महथा–वि० अधिकारविशेषनियुक्त ।
महन्थ–देवालयाधिकारी, मठाधीश ।
महन्थी–देवालयप्रभुता, मठाधीशत्व ।
महप्फा–नरवाह्य यानविशेष ।
महब–क्रि० मन्थन ।
महमह करब–क्रि० सुगन्धिक प्रसारण ।
महरा–चमारक उपाधि ।
महराज–भाटक उपाधि ।

महराद–ओषधिविशेष ।
महल–प्रासादभूमि ।
महलिआएब–क्रि० महाल–महाल फुटाएब ।
महाइ–मन्थन ।
महाउथ–हस्तिपक ।
महाजन–वणिक् १ । उत्तमर्ण २ ।
महाजनी–वणिग्वृत्ति १ । उत्तमर्णता २ ।
महाजाल–अति विशाल माछ मारबाक जाल ।
महाफा–शिविकाविशेष ।
महावरी–सं० ओषधिविशेष ।
महामहोपाध्याय–विद्वानक उपाधिविशेष।
महामुड़–मूङक प्रभेद ।
महाराज–सं० महान् राजा ।
महाराजी–महाराजक कार्य ।
महाल–वि० मद, विभाग ।
महाशय–सं० उदारान्तःकरण पुरुष ।
महाश्वेता–पुष्पविशेष ।
महि–सम्बन्ध, लेश ।
महिआएब–क्रि० उपकरिकेँ आएब ।
महिसा–पुं० महिष, पशुविशेष ।
महिसा लोट–वान्यविशेष ।
महिसि–स्त्री० महिषी, पशुविशेष ।
महिसिबार–महिषीवारक, महिसिक चरबाह ।
महिसिबारि–महिसिबारक क्रिया १ । ओकर वेतन २ ।
महिसिमोढ़–अत्यन्त मोट बुद्धि बाला ।
महीसि–महिषी, पशुविशेष ।
महु–मधुक, वृक्षविशेष ।
महुआ–महल (दूध, तकर दही) ।

महुआएब–क्रि० महु+अब–रससँ युक्त होएब ।
महुथबार–हस्तिपक ।
महुथबारि–हस्तिपकक क्रिया ।
महुली सोँफ–शीतहा; छत्रक ।
महुबक–वृक्षविशेष ।
महेसबानी–महादेवक तिरहुति गीत ।
महोपाध्याय–विद्वानक एक उपाधि ।
महोर–अत्यन्त पक्व ।
माइ-धी–स्त्री० माता तथा पुत्री ।
माउगि–जनी, स्त्रीलोक ।
माउगि-मेहर–स्त्री० स्त्रीवर्ग ।
माउसि–स्त्री० मातृष्वसा
माए–स्त्री० माता, माय ।
माख–आभ्यन्तर क्रोध ।
माखब–क्रि० माख्+अब–विष्ठादि अस्पृश्य वस्तुक अज्ञानतः स्पर्श ।
माँग(माङ)ब–क्रि०मँग् (मङ्)+अब–याचना ।
माँगु(माङु)र–मद्गुर, मत्स्यविशेष ।
माघ–पौषक अगिला मास ।
माघी–माघक (पूर्णिमा) ।
माछ–मत्स्य ।
माछी–मक्षिका ।
माजब–क्रि० मज्+अब–मार्जन, मर्दनसँ स्वच्छ करब ।
माजूफल–फलविशेष ।
माझ–मध्य ।
माझफारी–औकारक मात्रा, ौ ।
माझिल–उ० मध्यम । स्त्री० मझिली ।
माट–माटिक पैघ पात्र ।
माटि–मृत्तिका ।

माटिमङ्गल, **माटिमाँगर** –उपनयनक पूर्व मङ्गल दिनक लौकिक विधि विशेष ।
माठ–मिष्टान्नविशेष १ । पैघ तण्डुलादि रखबाक मृत्पात्रविशेष २ ।
माठा–वलय ।
माँड़, **माण** –मण्ड ।
माँड़ब–मण्डप ।
माड़बारी–माड़बार देशभव ।
माँड़रि–सूर्य ओ चन्द्रमाक समन्तात् मण्डल, परिवेष ।
माँड़ी–कृत्रिम मण्ड ।
माढ़–भूजल चीन ।
माणिक्य–सं० मणि ।
मातदिल–वि० अल्प उष्ण (घृतादि) ।
मातबर–वि० धनिक ।
मातबरी–वि० धनिकत्व ।
मातल–मत्त ।
माता–प्रसू, जननी १ । शीतला २ ।
मातामह–सं० पुं० माताक पिता ।
मातामही–सं० स्त्री० माताक माता ।
मातु–सतरञ्जक हारि ।
मातृकापूजा–विवाहादिक अङ्गतया आभ्युदयिकसँ पूर्व गौरी प्रभृति सोलह देवीक पूजा ।
मात्रा–सं० औषध खएबाक परिमाण १ । व्यञ्जनोत्तर इकारादि स्वरक चिह्न २ ।
मात्रिक–माताक पितृगृह ।
मात्सर्य्य–स्नेह (संस्कृतमे द्वेष) ।
माथ–मस्तक ।

माथ भुकाएब–क्रि० बहुत वृथा बजाएब।

मादए
मादेँ } –अ० प्रसङ्गेँ ।

माधबसिंही–माधवसिंहक चलाओल जलपानपात्रविशेष ।

माधवी–पुष्पविशेष ।

मान–क्षुपविशेष १ । नहक आच्छादक त्वचा २ । सं. आदर ३। रुष्टता ४।

मानटीका–मस्तकक भूषणविशेष ।

मानब–क्रि० मान्+अब–स्वीकार करब १ । आदर करब २ ।

मानमिसाने–ओकारक मात्रा ।

मानर–मर्दल, वाद्यविशेष ।

मानसिंही–मिष्टान्नविशेष ।

मानि–मान्यता ।

मानिक–माणिक्य १ । औषधविशेष, मानिकरस २ ।

मानिकचन्दी–सुपारीक प्रभेद ।

मानिकथम्ह–धरनिक उपरका स्तम्भ ।

मानिकरस–औषधविशेष ।

मानिजन–मान्यजन, शूद्रक सामाजिक व्यवस्थाक एक नेता ।

मानुख
मानुस } –मनुष्य ।

माफ–वि० सहन, क्षमा ।

माम–पुं० मातुल (असम्बोधनमे; सम्बोधनमे मामा) ।

मामा–पुं० मातुल ।

मामि–स्त्री० मातुली (असम्बोधनमे, सम्बोधनमे मामी) ।

मामी–स्त्री० मातुली

माय–स्त्री० माए, माता ।

मार–मारब, ताड़न ।

मारपीट–ताड़नादि ।

मारब–क्रि० मान्+अब–मारण १ । ताड़न २ ।

मारि–ताड़न १ । अ० बहुत २ ।

मारि खाएब–क्रि० ताड़नप्राप्ति ।

मारि-पीट–ताड़नादि ।

मारुक–घातक (स्थान) ।

माल–गोमहिष शूकरादिपशु १ । चरखामे टाकुकेँ घुमओनिहार डोरी २ । कृषिकर ३ ।

मालक–उबेर ।

मालकोस–रागविशेष ।

मालगुजारी–करग्रहण ।

मालजाल–गोमहिषीप्रभृति ।

मालती–सं० पुष्पविशेष ।

मालदह–आम्रविशेष ।

मालपूआ–उत्तम अपूप, पक्वान्नविशेष ।

मालभोग–केरा ओ धानक प्रभेद ।

माला–सं० स्त्रक् ।

मालि–उ० मालाकार जातिविशेष । स्त्री० मालिनि ।

मालिक–वि० उ० प्रभु । स्त्री० मलिकाइनि ।

मालिकाना–मालिकक मओजे ।

मालिस
मालिस्त } –वि० अभ्यङ्ग ।

माली–तैलादिक छोट पात्रविशेष ।

मास–सं० त्रिंशद्दिनात्मक समय ।

माँस–से भूमि जकर माल स्वाधीन राजा पाबथि ।

मांस–सं० देहक धातुविशेष, मासु।

मांसमसाला–तृणविशेष जे मांसक मसाला होइत अछि ।

मासा–माषप्रमाण ।

मासादि–सं० सौर मासक प्रथम दिन ।

मासान्त–सं० सौर मासक अन्तिम दिन।

मासिक–सं० मासभव (वेतनादि) ।

मासी–मासिक, अ० प्रतिमास ।

मासु–मांस ।

मासुल–वि० यानक वेतन ।

माह–वि० मास ।

माहबारी–वि० अ० प्रत्येक मास मे ।

माही–मालिकक पत्रस्थ स्वचिह्नविशेष ।

माहीमोहर–माहीसहित मोहर

माहुर–वि० अजङ्गम विष (यथा डकहा प्रभृति) ।

मिझर–मिश्रित ।

मिझराएब–क्रि० मिझर्+अब–मिश्रित होएब ।

मिताराए–मित्रालय १ । मित्रता २ ।

मिथिला–सं० तीरभुक्ति ।

मिनट–वि० अढ़ाए पल, होराक साठिम भाग ।

मिनती–सविनय निवेदन ।

मिनहा–मोजर ।

मिरखी–अन्नकण ।

मिरगी–अपस्मार ।

मिरजइ
मिरजै } –हि० अङ्गाक प्रभेद ।

मिरमिराएब–क्रि० मिरमिर्+अब–मन्द-मन्द अस्पष्ट बाजब ।

मिरहन्नी
मिरहिन्नी } –अपुष्ट अन्न ।

मिलब–क्रि० मिलान होएब १ । सदृश होएब २ ।

मिलान–अविरोध, मेल, सादृश्य ।

मिलुआ–सं० मिश्रित ।

मिश्र–स० श्रेष्ठ, ब्राह्मणक उपाधि ।

मिश्रित–सं० मीलल, मिझर ।

मिसर–मिश्र ।

मिसरी–खण्ड, संशोधित सिताखण्ड ।

मिसिआ–स्त्रीक दन्तशोभामञ्जन, मीसी १ । अन्नविशेष २ ।

मिस्री–मिसरी ।

मीआँ–मुसलमानक उपाधि ।

मीड़ब–क्रि० मिड्+अब–मर्दन ।

मीत–मित्र ।

मीमा–तृणविशेष ।

मीलब–क्रि० मिल्+अब–मिलब, मिलान होएब १ । सदृश होएब २ ।

मीलब-जूलब–क्रि० मिलान-प्रभृति ।

मीस–वि० मेला ।

मीस पड़ब–वि० क्रि० मेला लागब ।

मीसी–दन्तशोभार्थ मञ्जनविशेष ।

मुइल–मृत ।

मुकिआएब–ना० मुकि+अब–मुक्कासँ मारब ।

मुकुट–सं० शिरोभूषणविशेष ।

मुक्का–मुष्टि, मूका ।

मुक्कामुक्की–परस्पर मुक्कासँ मारब ।

मुक्की सूगा–सूगाक प्रभेद ।

मुख–सं० मुह ।

मुखपात–वस्त्रप्रान्तशोभाधायक वस्त्र ।

मुखड़ा–मुहमे लगएबाक कृत्रिम मुख ।

मुखिआ–मुख्य, संघश्रेष्ठ ।

मुगदर
मुँग(मुङ)रदन } –मुद्गल ।
मुँग(मुङ)रा
मुँग(मुङ)री } –ढेप फोड़ब आदिक साधनविशेष ।
मुँग(मुङ)बदाम–मेबाविशेष, चिनिआ बदाम ।
मुँग(मुङ)बा–पैघ बुनिआसँ बनाओल मिष्टान्नविशेष ।
मुँगे(मुङे)रिआ–मुङ्गेरनगरभव ।
मुजैली–लताविशेष १ । मुञ्जनिर्मित छोट पथिआ २ ।
मुटमुर–तृणविशेष ।
मुट्ठी–मूठि, मुष्टि ।
मुठबार–कागतक मूठि ।
मुठबाँसी–मुष्टिमेय पातर बाँस ।
मुठभिराओ–अतिनिकट युद्ध ।
मुठमुर–तृणविशेष ।
मुठरा–मुट्ठीसँ बद्ध पिण्ड ।
मुठिआ–मुष्टिमेय (बड़दक सिंह) १ । मुष्टिमित अन्न २ ।
मुठिआ सिंह–बड़दक ओ सिंह जे मुष्टिमेय हो ।
मुड़न–मुण्डन, प्रथम कचकर्तन ।
मुड़ब–क्रि० मुण्डित करब (लक्षणया, ठकि लेब) ।
मुड़री–बिना केशक माथ ।
मुड़हा–अतिनिन्द्य, मूढ़, अधम ।
मुड़ी–मुण्ड ।
मुड़ी हानब–क्रि० इतस्ततः मुखचालन ।
मुण्ड–मुड़ी ।
मुण्डी–तृणविशेष।
मुतना–अधिक मूत्रत्यागी ।
मुतब–क्रि० मूत्रत्याग करब ।
मुनना–मुनबाक साधन ।
मुनब–क्रि० मुद्रण, बन्द करब ।
मुनहारि साँझ–अप्रकाश सन्ध्यासमय ।
मुनही–भुण्डी पैसएबाक गोलाकार वस्त्र।
मुनिगा–सौभाञ्जनप्रभेदक वृक्षविशेष ।
मुहिआएब–क्रि० मुहि+अब–उन्मुख होएब ।
मुन्ही–ओ फनकी जाहिमे भुण्डी पैसाओल जाए ।
मुरगा–उ० कुक्कुट । स्त्री० मुरगी ।
मुरछब–क्रि० अस्त्राग्रक कुण्ठन ।
मुरदघट्टी–जलतटस्थ शवदाह स्थान ।
मुरदा–वि० शव ।
मुरदारी–शवदाहावशिष्ट (इन्धनादि) ।
मुरदाशङ्ख–औषधविशेष, उपधातुविशेष ।
मुरझब–क्रि० मूर्च्छित (कुण्ठित) होएब ।
मुरबड़–मूरक बड़ ।
मुरमुर–दाँतसँ सशब्द भङ्गयोग्य ।
मुरहन–पुष्ट प्रथमगृहीत अन्न ।
मुरही–तण्डुलस्फोट, चाउरक लाबा ।
मुरेठा–शिरोवेष्टन ।
मुरौड़ी–मूरक वटी ।
मुर्दघट्टी–शवदाहक घाट ।
मुर्दा–शव ।
मुलकी–सार्वत्रिक ।
मुलह–सजातीय पक्षीकेँ बझएबामे उपकारक मूलभूत बुलबुल प्रभृति।
मुलहक्की
मुलहट्टी } –मूलभूत गुप्ततत्व ।
मुलहन–मूलधन, पूजी ।
मुल्लह–मुलह ।

मुसकाँड़ी
मुसकाणी } –मूस बझएबाक कल ।
मुसर–मुसल ।
मुसरा–मुसलाकार प्रधान सीर आदि ।
मुसरी–छोटका मूस ।
मुसलमान–म्लेच्छ ।
मुसलमानी–म्लेच्छसम्बन्धी ।
मुसली
मुसलीकन्द } –कन्दविशेष ।
मुसहर(ड़)–उ० जातिविशेष । स्त्री० मुसहर ड़)नी ।
मुसहरी–मुसहरक टोल ।
मुसुकाएब
मुसुकिआएब } –क्रि० मुसुक्(कि) +अब–मन्द हास ।
मुसुकी–मन्द हास ।
मुह–मुख ।
मुहखर–उ० मुहक तीव्र, बजबामे अप्रतिबद्ध (निन्दामे) । स्त्री० मुहखरि ।
मुहगर–उ० बजबामे प्रौढ़ । स्त्री० मुहगरि ।
मुहचुरन
मुहचूर
मुहचोर } –बजबामे अप्रौढ़ ।
मुहछुट्टा–निःसंङ्कोच बजनिहार अनादरणीय व्यक्ति (निन्दामे) । स्त्री० मुहछुट्टी ।
मुहछुट्टू–निःसंकोच बजनिहार आदरणीय (निन्दामे) ।
मुहजोर–उ० बजबामे प्रौढ़ । स्त्री० मुहजोरि ।
मुहठान–अन्य मुखाकृति ।
मुहठाह–अप्रतिम (कार्यक असि-द्विप्रयुक्त)।
मुहठी–आम आदिक मुखस्थान ।
मुहड़ा–स्थानक अग्रभाग ।
मुहतक्की–पराभिप्रायज्ञानार्थ मुखवीक्षण ।
मुहतोड़–उत्तरानर्ह कथन ।
मुहथरि–पोखरि आदिक बाहाक मुखस्थान ।
मुहददुब(ब्ब)र–उ० दीन, बजबामे अप्रौढत्र । स्त्री० मुहदुब(ब्ब)रि ।
मुहदुस्सी–पक्षिविशेष ।
मुहदेखना
मुहदेखाओन } –मुह देखबाक परितोषिक ।
मुहनि–कोल्हुक एक अङ्ग ।
मुहपुरुष–वक्ता प्रधान पुरुष ।
मुहपोछना–मुह पोछबाक वस्त्र ।
मुहफट(ट्ट)–बिना धाख बजनिहार ।
मुहबउ–अधिक काल व्यादितमुखक ।
मुहबजाओन–संलाप करबाक पारितोषिक ।
मुहबौआ–बिदीर्णमुखक ।
मुहबौक–अप्रौढ़ ।
मुहलग
मुहलगुआ } –मुह लागल गप कएनिहार ।
मुहसच्छ(छ)–उ० स्तब्ध, अप्रौढ़ । स्त्री० मुहसच्छि (छि) ।
मुहाबज्जी–परस्परभाषाणव्यवहार ।
मुहाँमुहीँ–मुखोत्तर, सांमुख्य ।
मुहिआएब–क्रि० मुहि+अब–पूर्वरूप-प्राप्ति।
मुहूर्त–सं० दण्डद्वयात्मक काल ।
मूका–मुष्टि ।
मूकामूकी–मुष्टीमुष्टि, परस्पर मूकाक प्रहार।
मूँग(मूङ)–मुद्ग ।

मूँगा(मूङा)–प्रवाल ।
मूठि–मुष्टि ।
मूठि भाँजब–क्रि० क्रीडामे कौड़ी हाथमे लए नीचाँ खसाएब ।
मूठि लेब–क्रि० देवपित्रर्थ प्रथम धान्यच्छेदन
मूड़–मुण्ड ।
मूड़न–मुण्डन ।
मूड़ब–क्रि० मुड्+अब–माथक केश काटब, (लक्षणया, ठकि लेब) ।
मूड़ा–झाँकसँ रहित (कोठा) ।
मूड़ी–मुण्ड ।
मूत–मूत्र ।
मूतब–क्रि० मुत्+अब–मूत्रत्याग ।
मूनब–क्रि० मुन्+अब–मुद्रण, बन्द करब।
मूनल–मुद्रित, बन्द ।
मूर–मूलक १ । मूलधन २ ।
मूर्ख–स० अज्ञ ।
मूर्च्छा–सं० अकस्मात् चैतन्यशून्यता ।
मूस–मूषिक ।
मूसनि–मूसक माटि ।
मूसब–क्रि० मुस्+अब–मोषण, चोराएब।
मूसर–मुशल ।
मूसाकानी–आखुपर्णी, ओषधिविशेष ।
मूह–मुख ।
मूह दुसब–क्रि० अपमानजनक मुखचेष्टा।
मूह बनाएब–क्रि० नानाविध मुखचेष्टा ।
मूह बिजुकाएब–क्रि० बिजुकब्+अब–मुखसंकोचन ।
मृग–सं० हरिणविशेष ।
मृगछाला–हरिणचर्म ।
मृदङ्ग–सं० वाद्यविशेष ।
मृदङ्गिआ / **मृदङ्गी** }–मार्दङ्गिक, मृदङ्ग बजाओनिहार ।
मेआन–म्यान, खड्गकोष ।
मेकचओँ–बाधा, असुद्धरता ।
मेघउनार–वृष्टगत मेघक समय ।
मेघओन–किञ्चिन्मेघयुत समय ।
मेघडम्बर–वंशनिर्मित छाता ।
मेघदिनाए–मेघक समयमे उत्पन्न होएनिहार दद्रु ।
मेघाओन–मेघओन ।
मेच–झाँक, तिर्यक् कर्षण ।
मेचब–क्रि० जोरसँ घुमाएब ।
मेजन–एक खाद्यमे मिलएबाक दोसर खाद्य ।
मेट–नर्तकगणक प्रधान पुरुष ।
मेटाएब–क्रि० मेट्+अब–लुप्त होएब १ । मेटब्+ अब–लुप्त करब २ ।
मेटिआ–मेट, दलपति ।
मेठनि–वारंवार एक बातक बाजब वा एक क्रियाक करब ।
मेथी–सं० मेथिका ।
मेद–वृक्षविशेष ।
मेदा–जैक परम सूक्ष्म चूर्ण ।
मेधा–सं० स्मरणशक्ति १ । सलाह, ऐकमत्य २ ।
मेधा पँटुआ–पटुआसागक प्रभेद ।
मेन–क्षुपविशेष १। आटामे देय घृत २ ।
मेनदार–आटामे वृत मिलाए बनाओल (सोहारी) ।
मेनसिल–मन:शिला ।
मेनहर–कण्टकी क्षुपविशेष ।
मेबा–दाख किसमिस प्रभृति शुष्क फल।

मेमिआएब–ना० मेमि+अब–मे मे शब्द करब, अजभाषण ।
मेर–नटुआ आदिक मण्डली ।
मेराएब–क्रि० मेरब्+अब–मिलाएब, दोहराओल डोरीमे तेसर प्रभृति डोरी पैसाएब ।
मेरिआ–एक मण्डलीक व्यक्ति ।
मेरिचाइ–तीक्ष्णा ।
मेल–मिलान, ऐकमत्य, सादृश्य ।
मेल खाएब–क्रि० मेल समुचित होएब ।
मेल पाँच–मिलानपूर्वक समावेश ।
मेला–बहुलोकसंकुलीभाव, जनसम्मर्द ।
मेह–मेधि, धान दाउनक खुट्टा ।
मेहतर–हि० हेला ।
मेहनति–वि० परिश्रम ।
मेहनतिआ–वि० परिश्रमी ।
मेहदी–वृक्षविशेष ।
मेहब–क्रि० मन्थन ।
मेहमान–वि० पाहुन ।
मेहिआँ–मेहीँ प्रकारक (तण्डुलादि) ।
मेहिआएब–ना० मेहीँ करब ।
मेहीँ–सूक्ष्म ।
मेहौती(थी)–मेहक डोरी जाहिमे कड़ाम बान्हल जाइछ ।
मैआँ / **मैआ** }–मातासँ श्रेष्ठ स्त्री ।
मैथिल–सं० उ० मिथिलाभव (ब्राह्मणादि)। स्त्री० मैथिलानी ।
मैल–मल १ । मलिन २ ।
मैलछन–किञ्चिन्मलिन ।
मैलमूह–मलिन मूहबाला ।
मैलाह–मैलसँ युक्त, मलिन ।
मोआर–पैघ विवर ।
मोआर फुटब–क्रि० पैघ विल स्फुटित होएब ।
मोकड़(र)–विवर ।
मोकड़(र) फुटब–क्रि० विवर स्फुटित होएब ।
मोकनि–ओषधिविशेष ।
मोकब–क्रि० गरदनि आदिकेँ नीचाँ दिस दबाएब ।
मोकर्री–वि० निश्चितकरक भूमि ।
मोकूफ–वि० दासतासँ निष्कासित ।
मोकूफी–वि० नोकरीसँ हटाएब, पदच्युति।
मोख–टाटक प्रान्तभाग ।
मोख मारब–क्रि० मोखमे खड़ही दए बान्हब ।
मोगल–वि० मुसलमान जातिविशेष ।
मोगलान–वि० मोगलक स्थान ।
मोगली–सतरञ्जक एक प्रकारक खेड़ि ।
मोचण्ड–तीव्रस्वभावक बूड़ि ।
मोचण्डपना / **मोचण्डी** }–मोचण्डक क्रिया ।
मोचना(नी)–बहुत छोट सूक्ष्माग्र चूटा ।
मोचरब–क्रि० घुमाएब, ऐँठब ।
मोचरस–औषधविशेष ।
मोछ–श्मश्रु, नाकक निचला केश १ । कटहरक ओ बन्ध्य फल जाहिमे को नहि होइछ २ ।
मोछाएब–क्रि० मोछ (बन्ध्यफल) सँ युक्त होएब ।
मोजर–मिनहा ।
मोजूद–वि० वर्तमान, स्थित ।
मोट–उ० स्थूल । स्त्री० मोटि ।

मोटका–उ० स्थूलप्रभेदक । स्त्री मोटकी।
मोटगर–उ० अधिक मोट । स्त्री० मोटगरि ।
मोटधना–मोट धान ।
मोटबन्हना–मोटा बन्हबाक वस्त्र ।
मोटरा–पैघ मोटा ।
मोटरी–छोट मोटा ।
मोटा–वस्त्रबद्ध (अनेक वस्त्रादि) ।
मोटाइ–स्थूलता ।
मोटाएब–ना० मोट्+अब–स्थूल होएब ।
मोटामोटी–अ० स्थूल हिसाबेँ ।
मोटिआ–मोट प्रभेदक (धान्यादि) ।
मोटैत–मोटा उघनिहार ।
मोड़–वक्रता १ वक्रभावेँ शिरामे आघात २ ।
मोड़ब–क्रि० वक्रीकरण ।
मोड़ा–मोटक ।
मोढ़–पैघ मोढ़ी १ । मूढ़तम २ ।
मोढ़ा–काष्ठखण्ड ।
मोढ़ी–स्थूल इन्धन ।
मोताद–भोजनार्थ नियत देय ।
मोति–मुक्ता ।
मोतिआ बिन्दु–नेत्ररोगविशेष ।
मोतिआ बेली–मल्लिकापुष्पक एक प्रभेद ।
मोतीचूरक लड्डू–मिष्टान्नविशेष ।
मोतीझाबा–पुष्पविशेष ।
मोथा–मुस्तक ।
मोथी–दीर्घमुस्तक जकर पटिआ बनाओल जाइछ ।
मोन–खारी, परिमाणविशेष १। चित्त २ ।
मोनक्कह–वि० स्थिरीकरण ।
मोन पड़ब–क्रि० स्मरण होएब ।
मोन पाड़ब–क्रि० स्मरण करब, ध्यान ।
मोनही–मोन परिमाणक बटिखारा १। एक मोन अँटबाक योग्य (बोरा ढाकी प्रभृति) २ ।
मोनासिब–वि० उचित ।
मोनि–नदीक अतिगम्भीर प्रदेश ।
मोफत } –वि० बिना मूल्य लब्ध ।
मोफ्त }
मोम–बरकाओल मधुमक्षिकागृह ।
मोमछाता–मोमसँ निश्छिद्रीकृत वस्त्रक छत्र ।
मोमजामा–मोमसँ निश्छिद्रीकृत वस्त्रविशेष ।
मोमबत्ती–मोमक वर्त्तिका ।
मोर–मयूर ।
मोरब–क्रि० मोड़ब, वक्रीकरण ।
मोराबा–पागल धात्रीप्रभृति फल ।
मोरि–धान रखबाक तत्कालनिर्मित तृणपात्र ।
मोरी–बद्ध जलनिर्गममार्ग ।
मोल–क्रयण ।
मोलमोलाइ–क्रयमूल्यविवाद ।
मोलाएब–ना० मोलब्+अब–मूल्यनिर्णय करब ।
मोलामी–उपरसँ चढ़ाओल सोनाक पानि प्रभृति ।
मोस–मशक ।
मोसकिल–वि० उपद्रवसंपात, कठिन ।
मोसब्बर–औषधविशेष ।
मोसम्मात–स्त्री० बिनु स्वामीक स्वतन्त्र स्त्री ।

मोसाफिर–वि० पान्थ ।
मोसाहेब–वि० राजाक सहचर ।
मोसिआनी–मसीधानी, मसिपात्र ।
मोस्ताएद–वि० तत्पर ।
मोह–सं० मूढ़ता ।
मोहनभोग–मिष्टान्नविशेष ।
मोहनमाला–मध्य-मध्यमे मूँगा देल सोनाक माला ।
मोहर–मुद्रा, नामादिमुद्रणयन्त्र ।
मोहस्सिल–वि० आदेयग्रहणार्थ प्रेषित जन ।
मोहार–भीड़, उच्च जलतट ।
मौगिआह–स्त्रैण ।
मौगिआही–केवल स्त्रीक उपभोगयोग्य (वस्तु) ।
मौगी–स्त्री० स्त्री ।
मौनाह–उ० अल्पभाषी । स्त्री० मौनाहि।
मौनी–छोट पात्रविशेष ।
मौर–कोढ़िलाक अलङ्कारविशेष ।
मौसा–मातृष्वसृपति ।
मौसी–स्त्री० मातृष्वसा ।
म्याद–वि० कारावास १ अवधि २ ।
म्यान–मेआन, खड्गकोष ।

य

यथा–धन १ । सं० अ० जेता २ ।
यथेष्ट–सं० इच्छानुरूप, पर्याप्त ।
यथोचित–सं० उचितानुरूप ।
यदि–सं० अ० जँ ।
यद्यपि–सं० अ० प्रक्रान्तविरोधद्योतक ।
यन्त्र–भूषणविशेष १ । सं० तान्त्रिक प्रयोगविशेष २ । कल ३ ।
यम } –सं० यमुनाक भाए, वैवस्वत ।
यमराज }
यमुना–सं० नदीविशेष ।
यव–सं० जओ ।
यश–सं० कीर्ति ।
याग–सं० यज्ञ ।
याचक–सं० मँगनिहार, भिक्षुक ।
यात्रा–सं० प्रस्थान ।
यात्री–सं० पथिक ।
यावत्–सं० अ० यावत्कालपर्यन्त ।
युग–सं० कलियुगादि ।
युक्त–सं० उचित, सङ्गत ।
युक्ति–सं० हेतु, साधन ।
यूप–सं० यागीय काष्ठविशेष ।
योग–सं० संबन्ध १। चित्तक निरोध २ ।
योगाभ्यास–सं० योगक्रियाक अभ्यास ।
योगाभ्यासी–सं० योगाभ्यासकर्ता ।
योगी–सं० योगाभ्यासी, विरक्त ।
योग्य–सं० समर्थ, योग्यताशील ।
योग्यता–सं० उत्कृष्टगुणवत्ता १ । सम्भवविषयता २ ।

र

रइता– रैँची ओ दही दए बनाओल तीमन ।
रइनि–राति ।
रए–अ० नीच पुरुषक सम्बोधन ।
रओ–अ० नीच पुरुषक सम्बोधन ।
रकतकोँए–रक्तोत्पल, कोकनद ।
रकतचानन–लाल चन्दन ।
रकता साग–ललका साग ।
रकबा–वि० भूमिक परिमाण ।
रकम–अन्न ।

रकसा–तृणविशेष ।
रक्षक–सं० रक्षाकारक ।
रक्षा–सं० पालन, उपद्रवसँ बँचाओ ।
रखना–रखबाक पात्र ।
रखबार–उ० रक्षक । स्त्री० रखबारनी ।
रखबारि–रक्षकत्व ।
रखाओँत–स्वार्थ रक्षित् तृणभूमि ।
रखौली–धरुबी, रत्यर्थ नियुक्त परस्त्री ।
रगड़–घर्षण ।
रगड़ब–क्रि० घर्षण ।
रँग(रङ)–रञ्जक द्रव्य १। क्रम, स्थिति २।
रँग(रङ)ब–क्रि० रञ्जन ।
रँग(रङ)रेज–रञ्जक जातिविशेष ।
रँग(रङ)साज–भीतमे चित्रलेखक ।
रँगे(रङे)रङ्ग–सर्वत्र रक्त ।
रघबा बोआर–मत्स्यविशेष ।
रङ्ग–सं० रञ्जकद्रव्य १। क्रम, स्थिति २।
रङ्गबिरङ्ग–अनेक रङ्गक ।
रचना–सं० निर्माण १। ओषधिविशेष २ ।
रचब–क्रि० निर्माण ।
रच्छक–रक्षक ।
रच्छा–रक्षा ।
रजगिद्ध–गृध्रविशेष ।
रजन्ती–शाकविशेष ।
रजपूत–उ० क्षत्रिय जातिविशेष । स्त्री० रजपुतनी ।
रजभाट–मुसलमानक भाट ।
रजला–धान्यविशेष ।
रजाइ–दोलाइ, दोहरि ।
रटनी–तृणविशेष ।
रटब–क्रि० वारंवार पढ़ब ।
रँड़(रण)खेप खेपब–क्रि० राँड़ (विधवा) जेकाँ काल बिताएब, कष्टपूर्वक कालक्षपण ।
रड़धूमस–राड़जेकाँ धूमस करब ।
रड़पोख–राड़(शूद्र)केँ पोसनिहार, रड़ाह।
रड़हा–राड़क योग्य ।
रड़ाह–राड़क सन क्रिया कएनिहार ।
रतिगर–अधिक राति, पहरसँ अधिक रात्रिक भाग ।
रतिचर–रात्रिञ्चर, रातिमे चरनिहार पक्षी ।
रतुका–रात्रिभव ।
रतौन्ही–रात्र्यन्धता ।
रत्ती–रिक्तका ।
रथ–सं० बग्गी ।
रथयात्रा–सं० रथपर भगवानक यात्रा ।
रद्दा–रादा, भीतपर द्वितीयादि बेर चढ़ाओल माटि ।
रद्दी–वि० बेकार, कार्यानर्ह (वस्तु) ।
रनरनाएब–क्रि० रन-रन शब्द करब ।
रनिबास–रानीक वासस्थल, अन्तःपुर ।
रन्ना–तकथा आदि छीलिके सम करबाक यन्त्रविशेष ।
रन्हुआ–रान्हिकेँ बनाओल (चाउरक रोटी प्रभृति) ।
रपट–अधिक दौड़ ।
रपटब–क्रि० अधिक दौड़ब ।
रप्तौ–वि० अभ्यास ।
रबड़–वृक्षविशेषक लस्सा ।
रबाइस–अग्निचित्र ।
रबाएब–क्रि० ठेँगाप्रभृतिक स्वतः विदलन ।
रबाना–वि० प्रस्थित ।
रबानी–शिबिकावाही जातिविशेष ।

रवि–सं० सूर्य १। शनिक अगिला दिन २।
रबिआती–रब्बी (अगहनीक अगिला) अन्न ।
रमण्डर–क्रीड़ाविशेष ।
रमचकरा–कृतान्नविशेष ।
रमना–चत्वर ।
रमानी–रबानी ।
रस–सं० इच्छा १। खेतक गुणविशेष २। पत्रादिक जलीय अंश ३ ।
रसओँ–दूरसँ किञ्चित् आगिक ताप ।
रसगुल्ला–मिष्टान्नविशेष ।
रसनचौकी–वाद्यविशेष ।
रसपीपरि–पिप्पलीक प्रभेद ।
रसाएब–ना० रस्+अब–खेतक रससँ युक्त होएब ।
रसायन–सं० रस, स्वर्णभस्मादि ।
रसिआ–सरस व्यक्ति ।
रसिक–सं० सरस व्यक्ति ।
रसीद–वि० द्रव्यप्राप्तिप्रमाणपत्र ।
रसौती–हालक रससँ बाओग ।
रस्सा–डोरी ।
रस्सी–डोरी ।
रहटि(ठि)–अरघट्ट, पानि भरबाक धिरनीबाला यन्त्र ।
रहब–क्रि० स्थिति, गतिनिवृत्ति ।
रही–मन्थनदण्ड ।
रहु–रोहित, मत्स्यविशेष ।
रहुआ बोआर–सामुद्रिक पैघ मत्स्यविशेष।
राइ–राजिका, रैँची ।
राउटी–एकहारा पटगृहविशेष ।
राए–वि० राय, संमति ।
राकस–उल्कामुख प्रेत ।
राखी–खेतक रक्षाक वेतन १ । रक्षिका, मङ्गलसूत्र २ ।
राँग–रङ्ग सं०, धातुविशेष ।
राँगी–धान्यविशेष ।
राज–इष्टका जोड़निहार कारीगर १ । राजा २ । राज्य ३ ।
राज-काज–राजकीय कार्य ।
राजकीय–सं० राजसम्बन्धी ।
राज-दरबार–वि० राजसभा ।
राजपाट–राज्यादि ।
राजपूत–क्षत्रिय जातिविशेष ।
राजमहल–राजाक प्रासाद ।
राजस–बलात् उपद्रव ।
राजसिंहासन–सं० राजगद्दी ।
राजसी–नृपोचित
राजा–सं० नृपाल ।
राजा-दैव–राजदैवप्रयुक्त बाधा ।
राजासाही–लोटाक प्रभेद ।
राजी–वि० सहमत, प्रसन्न, अविरुद्ध ।
राजीनामा–परस्पर मेलक स्वीकारपत्र ।
राटन–वि० तौलबाक यन्त्रविशेष ।
राड़–उ० शूद्र । स्त्री० राड़िनि ।
राँड़(राण)–स्त्री० रण्डा, विधवा ।
राताराती–अ० दिनक अस्पर्शपूर्वक रातिमे ।
रातिबिराति–राति तथा वर्षादि उपद्रवसँ युक्त राति ।
रातिम–उपनयनसँ चारिम रातिक कृत्यविशेष ।
रातुक–रात्रिसम्बन्धी ।
रादा–रद्दा, भीतपर एक दिनमे चढ़ाओल माटि ।

रानी–राज्ञी ।
रान्ह–पाक ।
रान्हब–क्रि० रन्ह+अब–रन्धन, पाक-क्रिया।
राब–चोनीक साधक इक्षुविकार ।
राबड़ी–छाल्ही मिसरीसहित दूध ।
राबा–धातुक छोट-छोट बिन्दु ।
रामकेरा–फलविशेष ।
रामचकरा–कृतान्नविशेष ।
रामझिँगु(झिङु)नी–व्यञ्जनविशेष ।
रामदतमनि–कण्टकलताविशेष ।
रामदाना–अन्नविशेष ।
रामदुलारी–धान्यविशेष ।
रामनी–धान्यविशेष ।
रामरूचि–व्यञ्जनविशेष ।
राय–वि० राए, विचार, संमति ।
राल–धूमनसँ बनाओल लस्सा ।
रास–नृत्यविशेष १ । पुञ्ज, रात्रि २ ।
रासधारी–रास कएनिह ।
रासि–रश्मि, घोड़ाप्रभृतिक डोरी ।
रास्ता–वि० मार्ग ।
राहठ–राहड़िक सुखाएल वृक्ष ।
राहड़ि–आढ़की, द्विदल अन्नविशेष ।
रिआइत-खिआइत–अ० खर्च होइत-होइत ।
रिकबी–वि० छोट भोजनपात्र ।
रिकाब–वि० घोड़सबारक पाएरक अवलम्बन ।
रिट्ठी–हैँठीक फलत्वक् ।
रितब–क्रि० रीतब ।
रित्ती-छित्ती–छितिर-बितिर, अश्रेणीबद्ध, यत्र-कुत्र विकीर्ण ।
रिनिआ–अधमर्ण, ऋण लेनिहार ।
रिन्हुका–नित्य प्रातःकालक सिद्धान्नभोज्य।
रिबरिब–मुखमे वेदनाविशेषजनक (ओल आदि) ।
रिबरिबी–ओल आदिक भक्षणजन्य मुखक वेदनाविशेष।
रिसाल–मालिकक ओतए पठाओल नगद वा अन्न ।
रीढ़–पीठक बिचला हाड़ ।
रीतब–क्रि० रित्+अब–नेनाक अनुरक्त होएब ।
रीन–ऋण ।
रील–तागक प्रभेद ।
रीस–ईर्ष्या
रुक्ख(ख)–शुष्क (माटि आदि) ।
रुखान–कमारक हथिआरविशेष ।
रुखानी–छोट रुखान ।
रुखिगर–रूखि (अगिला प्रकाश) बोला।
रुचब–क्रि० देखबामे नीक लागब ।
रुचि–सं० इच्छा, भोजनेच्छा
रुचिगर–भोजनमे परमप्रिय ।
रुपैगर–अधिक रूपैआबाला ।
रुपैया–रूप्यक, राजतमुद्रा ।
रुसना–उ० अधिक रुसनिहार । स्त्री० रुसनी ।
रुसाफुली(ल्ली)–रुष्टता तत्कृत मुखमालिन्यादि
रूआ–पाइक चतुर्थांश ।
रूखि–आगाँमे प्रकाश ।
रूप–सं० आकार, स्वरूप १। रजत २।
रूपकरन–वृक्षविशेष ।
रूपमञ्जरी–पुष्पविशेष

रूसब–क्रि० रुस्+अब–रुष्ट होएब ।
रूसा-फूली–रुष्टता तत्कृत मुख-मालिन्यादि।
रेकब–क्रि० शिशुक धावन ।
रेका-तोकी–'रे' तोँ' शब्दोच्चारणपूर्वक कहल ।
रेकार–'रे' शब्देँ सम्बोधन ।
रेकार-तुकार–रेका-तोकी ।
रेखा–सं० डाँड़ि, सरल चिह्न ।
रेँगनी–कण्टकारी ।
रेँगब–क्रि० एक पाएरेँ कुदैत चलब ।
रेघा–रेखा, चिह्न ।
रेजरेजा / **रेजरेजीस** }–महाश्रम ।
रेजा–उ० राजक सङ्ग काज कए निहार। स्त्री० रेजी ।
रेठान–वारंवार गमन ।
रेड़–अनेक लोकक धक्का ।
रेड़ब–क्रि० चलैत धक्का मारब ।
रेड़म-बहेड़म–अनेक लोकक संकुलता-प्रयुक्त धक्का ओ घोल ।
रेत–स्रोतस्, प्रवाह ।
रेतब–क्रि० रेतीसँ छीलब ।
रेती–घर्षणसँ लोह आदिक तक्षणयन्त्र ।
रेबा–मत्स्यविशेष ।
रेबाज–वि० सदासँ भए आएल चालि, सम्प्रदाय ।
रेबाड़–पाछाँसँ खेहाड़ब ।
रेबाड़ब–क्रि० पाछासँ खेहाड़ब ।
रेल–वि० धूमयानमार्ग १। रेलगाड़ी २ ।
रेल-गाड़ी–धूमयान ।
रेस–वि० तीव्रगति, वेग ।
रेसब–क्रि० भग्न धातुपात्रक सन्धान ।
रेसम–पाट ।
रेसमी–पट्टरचित (वस्त्र) ।
रेह–रेखा ।
रेहल–जिल्द बान्हल पुस्तक रखबाक आधारपट्ट ।
रैअति–वि० प्रजा ।
रैँची–राजिन ।
रैता–रैँची ओ दहीक व्यञ्जनविशेष ।
रैनि–रजनी, राति ।
रोआब–वि० रोब, अलङ्घनीय आज्ञा ।
रोआबी–वि० रोबदार, अलङ्घनीय आज्ञाबाला ।
रोइआँ–रोम ।
रोइँउपाड़–रोमोत्पाटनव्रण ।
रोक–अवरोध ।
रोक-टोक–अवरोधादि ।
रोकब–क्रि० अवरोधन ।
रोकाबट–हि० अवरोध ।
रोग–सं० व्याधि ।
रोगहा–उ० अनादरणीय रोगाह । स्त्री० रोगही ।
रोगाएब–ना० रोग+अब–रोगसंयुक्त होएब ।
रोगाह–उ० रोगयुक्त । स्त्री० रोगाहि ।
रोगी–सं० अलि० रोगयुक्त ।
रोच–धाख, भाषणादिमे भय ।
रोज–हि० दिन
रोज उतारब–क्रि० दण्डन ।
रोजगार(री)–वाणिज्य ।
रोजनामचा–प्रतिदिनक खर्चोटा ।
रोजहा–दैनिक वेतनपर कार्यार्थ नियुक्त अनादरणीय ।

रोट–पैघ मोट रोटी ।
रोटी–मोट सोहारी, शष्कुली ।
रोड़–अधिक उलाओल (दालि) ।
रोड़ा–पजेबाक छोट-छोट टुकड़ा ।
रोड़ी–छोट रोड़ा ।
रोदात–वि० मुखोत्तर न्यायप्रवर्तन ।
रोप–गाछक रोपण ।
रोपब–क्रि० रोपण ।
रोब–वि० रोआब ।
रोबकारी–रोदात, मुखोत्तर न्यायप्रवर्तन ।
रोल–वि० गोल शलाका ।
रोस–क्रोध, क्रोधजन्य आवेग ।
रोसनी–वि० दीपादिप्रकाश ।
रोसाह–उ० क्रोधी । स्त्री० रोसाहि ।
रोहनि–रोहिणी नक्षत्र ।
रोहनिआ–रोहिणीमे होएनिहार ।
रोहिनी / **रोहीनि** } –रोहिणी नक्षत्र ।
रौद–आतप ।
रौदमुहाँ–अ० आतपाभिमुख ।
रौदाएब–ना० रौद+अब–रौदसँ तप्त होएब।
रौदिआह–आतपप्रधानक (वर्षासमय) ।
रौदी–अनावृष्टि ।
रौला-रौली–नृत्यविशेष ।

ल

लइ–पिष्ट तण्डुलादिक लस्सा ।
लए–अ० निमित्तेँ १ । ग्रहण कए २ ।
लओठा–पैघ (हर) ।
लकड़ी–हि० काष्ठ ।
लकबा–वातरोगविशेष ।
लकलक पातर–उ० अत्यन्त कृश । स्त्री पातरि ।
लखौरी–खपराक प्रभेद ।
लग–समीप ।
लँग–लवङ्ग ।
लँगटा–उ० अनादरणीय लङ्गट । स्त्री० लँगटी ।
लँगटाह–उ० किञ्चित् लङ्गट । स्त्री० लँगटाहि ।
लँगड़ा–उ० अनादरणीय नाँगड़ ।
लगता(ति)–कोनो कार्यमे समस्त खर्च।
लगन–लग्न, शुद्ध समय ।
लगनी–गीतविशेष ।
लगभग–अ० किछु कम वा अधिक ।
लगले–अ० तुरन्त ।
लगले-लागल–अ० अव्यवधानेन पुनःपुनः।
लगहर–मङ्गलार्थ पूर्णकलश ।
लगहरि–दूध देनिहारि (गाय आदि) ।
लगही–लघुशङ्का, मूत्रत्याग ।
लगान–पत्रारूढ़ कर ।
लगातार–निरन्तर ।
लगानी–सूदिप द्रव्यादिप्रदान ।
लगाम–घोड़ाक रश्मि, प्रग्रह ।
लगामी–गलफड़क घाओ ।
लगार–लागि कएनिहार, मादक ।
लगारि–लागिकेँ पड़निहार, दृढ़संकल्प १। अधिक उपजनिहार (धान) २ ।
लगिचाएब–ना० लगीच+अब–समीप होएब ।
लगीच–लग, समीप ।
लगुआ–दासभिन्न आश्रित व्यक्ति ।
लगोँटा(टी) / **लगौँटा(टी)** } –कौपीन ।
लगौरी–जोड़ल (चार आदि) ।

लगौरी असगन्ध–ओषधिविशेष ।
लग्गा(ग्गी)–पातर लम्बा वंशदण्ड ।
लग्न–सं० मेषवृषादि ।
लङ–लँग, लवङ्ग ।
लङटा–उ० अनादरणीय लङ्गट । स्त्री० लङटी ।
लङटाह–उ० किञ्चित् लङ्गट । स्त्री लङटाहि ।
लङड़ा–अनादरणीय पङ्गु ।
लङोटा(टी) / **लङौटा(टी)** } –कौपीन ।
लङ्क लेब–क्रि० पड़ाएकेँ नुकाएब ।
लङ्गट–उ० बदमास, बद्द, उत्पाती । स्त्री० लङ्गटि ।
लङ्गूर–पैघ लाङ्गूलबाला बानर ।
लचकब–क्रि० पटै प्रभृतिक भारवश आन्दोलन ।
लचका–वंशनिर्मित सेतु ।
लचलच करब–क्रि० चलकब ।
लचलचाएब–क्रि० लचलच्+अब–लचकब ।
लचलची–लचकब ।
लच्छन–लक्षण ।
लछमी–लक्ष्मी ।
लछुमन भोग–धान्यविशेष ।
लछुमना–जड़ीक प्रभेद ।
लजकोटर–उ० अत्यन्त लज्जाशील (निन्दामे) । स्त्री० लजकोटरि ।
लजबिज्जी / **लजबीजी** } –लज्जावती, क्षुपविशेष।
लजाएब–ना० लाज+ अब–लाजसँ युक्त होएब ।
लज्जति–तत्त्व, सारांश ।
लट–केशक अग्रभाग १ । संलग्नता, संगति २ ।
लटकन–मालक भूषणविशेष ।
लटकब–क्रि० उपर सँबद्ध भए भूमिदिस नम्र होएब ।
लटकेना–नाना वस्तुक छोट (दोकान) ।
लटपट–शुष्क झोरबाला (तीमन) १ । अस्तव्यस्त, पर्याकुल (वस्त्रादि) २ ।
लटपटाएब–क्रि० लटपट्+अब–स्खलन।
लटपटाह–उ० स्खलनशील । स्त्री० लटपटाहि ।
लटपटिआ–लेन-देनमे झमेलिआ ।
लटपटी–लेन-देनमे झमेल ।
लटब–क्रि० दुर्बल ओ पातर होएब ।
लटबा–गुड्डीक ताग लपटएबाक साधन ।
लटबेल–चारू कातमे बान्हू ।
लटबौरा–अनर्गल कएनिहार, दुलारू, आग्रही ।
लट लागब–क्रि० पूर्वापरक संगति ।
लटाइ–लटबा ।
लटाढम / **लटारहम** } –प्रणयजन्य शिशुक आग्रह ।
लटुआएब–क्रि० लटु+अब–रोगादिकृत आबल्यसँ अक्षम होएब ।
लट्टा–चूड़ामे सटल चूड़ा १ । मत्स्यविशेष २ । चलबाक काल पाएरमे पाएर सटब ३ । जटा ४ ।
लट्टोपट्टो–नेनाक एक खेलओना ।
लठिआएब–ना० लाठी+अब–लाठीसँ मारब।

लठिधर–युद्धार्थ यष्टिधारी ।
लड़क्का–युद्धदक्ष ।
लड़ब–क्रि० युद्ध करब ।
लड़ाइ–युद्ध ।
लड़ाक–योद्धा ।
लडुबी–मिष्टान्नविशेष ।
लडुब्बा–गोल पैघ (आम) ।
लडुब्बी–गोल छोट (आम) ।
लड्डू–लड्डुक, मिष्टान्नविशेष ।
लण्ठ–मूर्ख अविचारी ।
लत–निम्न (तुलाभाग), तराजूक एक पल्लासँ नम्र भेल (दोसर पल्ला) ।
लतखुर्दन–लतमर्दन, लतसँ धाँगब ।
तलखोरा–लात पोछबाक साधन ।
लतमर्दन–लतखुर्दन ।
लतमारा–लतखोरा ।
लतरब–क्रि० लताक प्रसरण ।
लता–सं० लत्ती ।
लताम–फलविशेष, अमरूद हि ।
लति–स्वभाव ।
लतिआएब–ना० लात+अब–लात मारब।
लतिआहा–लताबाला ।
लत्तहिँ-पत्तहिँ–अ० अतिशीघ्र ।
लत्ता–कर्पट, जीर्ण छोट वस्त्रखण्ड ।
लत्ती–लता ।
लथराह–उ० लथार मारनिहार (पशु) । स्त्री० लथराहि ।
लथार–मालक पादप्रहार ।
लदना–पीठपर लादिकेँ वस्तु उधनिहार (घोड़ाप्रभृति) ।
लदफदाएब–क्रि० लदफद्+अब–धोती आदिक स्खलन ।
लदबद–स्त्री० पूर्णगर्भभाराक्रान्त ।
लदबदाएब–क्रि० लदबद्+अब–पूर्णगर्भसँ युक्त होएब ।
लद(ध)हा }
लधा } –हर लधबाक डोरी ।
लप–एक प्रसृतहस्तपरिमाणक ।
लपकब–क्रि० अतित्वरया ग्रहण ।
लपटन–मल्लयुद्धविशेष ।
लण्टब–क्रि० शिक्षार्थ मल्लयुद्ध ।
लपसी–लप्सिका, अतिप्रशंसा ।
लपौड़ी–मिथ्या अतिप्रशंसा ।
लफन्दर–बहुमिथ्याभाषी ।
लवङ्ग–सं० लँग ।
लवङ्गलता–सं० पुष्पलताविशेष ।
लवङ्गी–मेरिचाइक प्रभेद ।
लबनी–तारी चुबएबाक पात्र ।
लबब–क्रि० झुकब, नमब ।
लबर–उ० मिथ्या बहुभाषी । स्त्री० लबरी।
लबर-लबर बाजब–क्रि० झट-झट बहुभाषण (निन्दामे) ।
लबरा–उ० अनादरणीय लबर । स्त्री० लबरी ।
लबलबाएब–क्रि० लबलब्+अब–अनवसरक भाषण (निन्दामे) ।
लबलबी–काकलक, कण्ठविवरस्थ मांसपिण्डविशेष ।
लबाठी–लाबामे बिनु फूटल अन्न ।
लबान–नम्रीभाव ।
लबै–तितीरक प्रभेद ।
लमका–लाम प्रभेदक ।
लय–सं० गीतक स्वर १। लए, हेतु २ ।
लयगर–नीक स्वरबाला ।

लरकब–क्रि० शिथिल भए नीचाँ दिसि नमब ।
लरगुज–अत्यन्त कोमल ओ शिथिल ।
लरताङर–शक्तिहीनतासँ अकर्मण्य ।
लरब–क्रि० शिशुक प्राथमिक गमन ।
लरबर–शिथिलावयवक ।
लरबराएब–क्रि० लरबर्+अब–शिथिलावयवक होएब ।
लरोना–क्रि० नेनाक चलब सिखबाक (गाढ़ी) ।
लल–लल्ल, अन्नवस्त्रादिक विकल ।
ललकब–क्रि० क्रोधेँ जोरसँ बाजब ।
ललका–लाल प्रभेदक ।
ललकारब–क्रि० क्रोधवश उच्च स्वरेँ कथन ।
ललका-ललकी–क्रोधवश परस्पर जोरसँ भाषण ।
ललचाएब–क्रि० ललच्+अब–गृध्नु होएब, लोभाएब ।
ललबौआ–पुं० दुलारू ।
ललित–सं० सुन्दर ।
ललितगर–उ० अति सुन्दर । स्त्री० ललितगरि ।
ललोन–किञ्चित् लाल ।
लल्ल–लल, अन्नवस्त्रादिविकल ।
लसकर–वि० सैन्य ।
लसलस–लस्साजेकाँ सटनिहार ।
लसलसाएब–क्रि० लसलस्+अब–लसलस होएब ।
लसलसी–सचनशीलता ।
लसि–सम्पर्क ।
लसिगर–परस्पर सटबाक योग्य (भातप्रभृति) ।
लसून–लशुन ।
लस्सा–निर्यास ।
लहक–धधराक अग्रभाग ।
लहकब–क्रि० अग्नि संयोगाधिक्यसँ अल्प जरब ।
लहका–बिनु तड़ेराक माछ मारबाक छीप ।
लहटगर–रमणीय ।
लहटन–पल्लीसदृश जन्तुविशेष ।
लहटोरा–पक्षिविशेष ।
लहठी–लाक्षालङ्करण ।
लहना–सूदि पर लागल रुपैआ ।
लहब–क्रि० सफल होएब ।
लहरब–क्रि० प्रज्वलित होएब ।
लहरि–ज्वाला १ । जोह, तरङ्ग २ ।
लहसन–क्वचित् शरीरस्थ पैघ कारी चिह्न।
लहसुन–लशुन ।
लहसुनिआ–भूषणविशेष ।
लहुक–छोट, हल्लुक, लघु ।
लहेरि–उ० लाक्षालङ्करणकार जातिविशेष । स्त्री० लहेरिनी ।
लहेरिआ बाजू–बाहुक भूषणविशेष ।
लहेरिआ बान्हू–बान्हूक प्रभेद ।
लाएब–क्रि० लब्+अब–आनयन ।
लाएल–आनीत ।
लाख–लक्ष ।
लाखपति–लक्षेश ।
लाखराज–सम्प्राटसँ निवर्तित करबाला (भूमि) ।
लागन–लाङ्गल, हरक ओ अवयव जे जोतबाक काल हाथसँ पकड़ल जाइछ ।

लागब–क्रि० लग्+ अब–संबद्ध होएब १ । पन्हाएब २ । (परि, हाथ इत्यादिक सङ्ग एकर अनेक अर्थ)।
लागल–लग्न, सम्बद्ध ।
लागल-लागल–अ० शनैःशनैः ।
लागि–शीतज्वर १ । निसाँ, मद २ । सम्बन्ध ३ ।
लाँघ–लङ्घन, बाहबाक काल मालपर मालक चढ़ब ।
लाँघब–क्रि० लैघ्+अब–लङ्घल ।
लाङड़–उ० नाङड़, खञ्ज । स्त्री० लाङड़ि।
लाङड़ि–नाङड़ि, लाङ्गूल ।
लाज–लज्जा ।
लाट–अवसर ।
लाठालाठी–परस्पर लाठीक प्रहार ।
लाठी–यष्टि, पैघ ठेँगा ।
लाठी-लठौबलि–लाठालाठी ।
लाढ़–सानुनय हठ ।
लाढ़ि–पानिपर होएनिहार तृणविशेष ।
लाथ–छल, अपलाप ।
लाद–गाड़ी आदिपर वस्तुक आरोपण ।
लादब–क्रि० लद्+अब–गाड़ी-प्रभृतिपर वस्तुस्थापन ।
लाधब–लध्+अब–चिरकालेँ सम्पाद्य क्रियाक आरम्भ ।
लाफु–शाकविशेष ।
लाबन–माटिक दीपाधारविशेष ।
लाबा–लाज सं०, भृष्टधान्यस्फोट ।
लाबा-दूआ–शाकादिक्रयणमे स्वीकृतसँ किछु अधिक वस्तुक दान ।
लाभ–सं० प्राप्ति ।
लाम–उ० लम्ब । स्त्री० लामि ।
लायक–वि० योग्य, बुधिआर ।
लार–संचालन, लारब ।
लार-चार–संचालनादि, प्रचार ।
लारना–संचालनक साधन दर्वीप्रभृति ।
लारनि–लारना ।
लारब–क्रि० लार्+अब–संचालन ।
लारूबातू–अत्यन्त शिथिल ।
लाल–रक्तवर्ण ।
लालकी–शिबिकाविशेष ।
लालच–हि० गृध्नुताँ, उत्कट लोभ ।
लालची–गृध्नु, अत्यन्त लोभी ।
लालटेम–वि० दीपपात्रविशेष ।
लालटेस, **लालबुन्द**, **लालभुजुङ्ग** } –अत्यन्त रक्त ।
लालसर–जलचर पक्षिविशेष ।
लाल-सिमरिफ–सिमरिफसन लाल ।
लालिमा, **लाली** } –रक्तता ।
लास–वि० मुर्दा, शरीर ।
लाह–लाक्षाविकार ।
लाहट(ठ)–मोहर उखड़बाक लाह ।
लाहब–क्रि० फूटल लहठीकेँ धिपाए संलग्न करब ।
लाही–लाक्षा ।
लिखब–क्रि० लेखन ।
लिखा–लिखित कुशलादिपत्र ।
लिखा-पढ़ी–लिखब-पढ़बप्रभृति ।
लिखिआ–छोटका (बनसी) ।
लिखुआ, **लिखोट** } –हस्तलिखित ।

लिच्छोपलिच्छ–अत्यन्त शुद्ध ।
लिट्टी–साक्षात् अग्निपक्व स्थूल रोटी ।
लिढ़िआह–लीढसँ युक्त (पोखरि) ।
लिद्दी–हाथी घोड़ाप्रभृतिक विष्ठा ।
लिधुरिआ–छोट नेना ।
लिधुर–रुधिर, रक्त ।
लिलकण्ठ–नीलकण्ठ ।
लिलोह–निराश ।
लीक–गाड़ीक पहिआक चिह्न ।
लीख–लिक्षा, केशक कीटविशेष ।
लीखब–क्रि० लिख्+अब–लेखन ।
लीखा–लिखा, कुशलादिपत्र ।
लीखा-पढ़ी–लिखब पढ़बप्रभृति ।
लीची–फलविशेष ।
लीढ़–पृष्ठवंश, पीठक बिचला हाड़ १। जलक उपरमे मोट भए जनमल तृणविशेष २ ।
लील–नीली, क्षुपविशेष १ । ओहिसँ बनाओल रङ्ग २ ।
लीलपङ्खी–चारू कात नील ओ मध्यमे लाल (साड़ी) ।
लुकझुक–मिझएबापर उद्यत (दीपादि), अस्तप्राय (सूर्यादि) ।
लुकझुकाएब–क्रि० लुकझुक्+अब–लुकझुक करब ।
लुकठी–अग्निमुख काठी ।
लुक्कड़–असदूवृत्तिक (व्यक्ति) ।
लुक्कुस–फलविशेष ।
लुक्खी–गाछपर चढ़निहार चतुष्पद जन्तुविशेष ।
लुगता–नीचता, जघन्यता ।
लुचक्कड़–लुचलुच कएनिहार ।
लुचलुच करब–क्रि० सञ्च नहि रहब, वृथा हस्तादिव्यापार करब (निन्दामे)।
लुचिआ–स्त्री० लुच्ची (गारिमे) ।
लुच्चा–पुं० अनादरणीय लुचक्कड़ ।
लुच्ची–स्त्री० अस्थिर अनादरणीय स्त्री०।
लुझब–क्रि० लूझब ।
लुटब–क्रि० लुण्ठन ।
लुढ़कब–क्रि० गड़कब ।
लुतुक–लति, अभ्यास, प्रकृति ।
लुत्ती–चिनगी १ । मशकाकार कीटविशेष २ ।
लुदुर-लुदुर–अ० शिशुक मन्द-मन्द (चलब) ।
लुधकब, **लुबुधब** } –क्रि० एकमे अनेकक योग ।
लुरिगर–उ० लूरिबाला, क्रियादक्ष । स्त्री० लुरिगरि ।
लुलुआएब–क्रि० लुलु+अब–खिसिआएब।
लुलुहाएब–क्रि० लुलुहब्+अब–नीरोग पत्रपुष्पादिसँ युक्त होएब ।
लुलुहार–सम्पन्न शाखापत्रादिसँ युक्त ।
लुल्ह–उ० एक हाथसँ शून्य । स्त्री० लुल्हि ।
लुल्हुआ–मणिबन्ध ।
लू–वि० सूर्यक घातक तीव्र किरण ।
लूझब–क्रि० लुझ्+अब–कौआक हठात् लोलसँ लेब ।
लूटब–क्रि० लुट्+अब–लुण्ठन ।
लूटि–लुण्ठन ।
लूरि–अवगति, दक्षता ।

लूलूथूथू–अत्यन्त तिरस्कारपूर्वक परास्त ।
लेआएब–क्रि० लेअब्+अब–बजाए लाएब, सादर निमन्त्रण ।
लेआओन–सादर ता कार्य रहबाक निमन्त्रण ।
लेखा–गणना, हिसाब ।
लेखेँ–अ० गणनासँ, विचारेँ, बुद्धिक अनुसार ।
लेटाएब–क्रि० लेट्+अब–भूमिमे समन्तात् संघर्षण ।
लेढ़ब, लेढ़ाएब, लेढ़िआएब–क्रि० लेढ्+अब, लेढ्+अब लेढि+अब–कर्दमादिमे समन्तात् संघर्षण ।
लेध–कर्दमसहिते उपड़निहार (धान आदिक बीआ) ।
लेधुरिआ–स्वयं स्वकार्याक्षम नेना ।
लेन–आदेय ।
लेप–सं० लिम्पन ।
लेपटाएब–क्रि० लेपट्+अब–चारू कातसँ वस्त्रकर्दमप्रभृतिक सम्बद्ध होएब ।
लेपब–क्रि० लिम्पन ।
लेब–लेबाइ १ । क्रि० ल्+अब–ग्रहण ।
लेबब–क्रि० जलमिलित मृत्तिकासँ टाट भीत प्रभृतिक मोट लेप ।
लेबा–भित्यादिमे मोट लिप्त माटि ।
लेबाइ–लेबब ।
लेबाल–ग्राहक ।
लेभड़ब–क्रि० समन्तात् लिप्त होएब ।
लेर–लाला, मुखद्रव ।
लेराह–उ० लेर खसबाक स्वभाव बाला। स्त्री० लेराहि ।
लेरू–गाएक बच्चा ।
लेसब–क्रि० दीपप्रज्वालन ।
लेहू–शोणित ।
लै–गोधूमादि चूर्णक लस्सा ।
लोइआ–पिण्ड ।
लोक–सं० जन ।
लोकगर–अधिक लोकसँ युक्त ।
लोकवेद–लोकादि ।
लोकलीन–स्त्री० कन्याक सङ्ग गेनिहारि स्त्री ।
लोकाएए–अधिक लोकक स्थिति ।
लोखड़–हजामप्रभृतिक स्वस्वकार्यक उपकरण ।
लोखड़ैआ–गाछक विदलित त्वचा ।
लोटकी–बहुत छोट लोटा ।
लोटन–परबाक प्रभेद ।
लोटपोट–परास्त ।
लोटा–जलपानपात्रविशेष ।
लोटाएब–क्रि० भूमिपतित भए उनटब-पुनटब ।
लोड़हब–क्रि० धानक कटलापर छूटल धानक सीस बीछब ।
लोड़हा–शिलवृत्ति, लोड़हब ।
लोड़ही–शिलापुत्रक, सिलौटपर पिसबाक साधन छोट पाथर ।
लोढ़नि–लोड़हा ।
लोढ़ब–क्रि० लोड़हब ।
लोढ़ा–लोड़हा ।
लोढ़ी–लोड़ही ।
लोथ–सञ्चारायोग्य ।
लोथराह–अधिक भारी (लोटाप्रभृति) ।
लोध–वृक्षविशेष ।
लोन–नोन, लवण ।

लोभ–सं० लाभेच्छा ।
लोभाएब–ना० लोभ+अब–लोभयुक्त होएब ।
लोमान–धूपविशेष ।
लोरि, लोरिक–गीतविशेष ।
लोल–चञ्चु ।
लोला–नमरल निरर्थक अवयव ।
लोली–हाउ, बालबिभीषिका ।
लोह–सं० लौहधातु ।
लोहकट–सिकस्त कोटल जाहिमे अवशिष्ट कटबाक हेतु कुड़हरि नहि जाए सकए ।
लोहकम–लोहक उपकरण ।
लोहखड़–लोखड़ ।
लोहङ्गड़–लोहक पैघ छड़ ।
लोहछब–क्रि० पिपासादिवश सक्रोध भाषण ।
लोहझाम–लौहकिट्ट, अति पुरातन लौह।
लोहराइनि, लोहरानि–दुर्गन्धविशेष ।
लोहागढ़–धान्यविशेष ।
लोहार–उ० लौहकार, कर्मकार । स्त्री० लोहारिनि ।
लोहारि–बिखाह ललका चूटी ।
लोहारी–लोहारक वृत्ति ।
लोहिआ–लौहकटाह ।
लौका–सजमनिक प्रभेद जकर तुम्बा बनैत अछि ।
लौल–लौल्य ।

श

शक्ति–सं० सामर्थ्य ।
शक्य–सं० साध्य ।
शङ्का–सं० समाधेय प्रश्न ।
शङ्ख–सं० कम्बु ।
शङ्खद्राव–सं० नेबोक प्रभेद ।
शनि–सं० रविक पूर्व दिन ।
शत्रु–सं० वैरी ।
शत्रुता–सं० वैर ।
शर–सं० बाण ।
शशिलता–सं० लतापुष्पविशेष ।
शाखा–सं० डारि ।
शान्त–सं० शमयुक्त, निचेन १ । उपरत, मृत २ ।
शान्ति–सं० उपशम ।
शासन–सं० प्रजाक निग्रहानुग्रह ।
शिखा–सं० टीक ।
शिवरात्रि–सं० फाल्गुनशुक्ल चतुर्दशीक पर्वविशेष ।
शिवालय–सं० शिवक मठ
शिवोत्तर–सं० महादेवक प्रीत्यर्थ उत्सृष्ट भूमि ।
शीघ्र–अ० द्रुत, अविलम्ब ।
शीघ्रता–सं० त्वरा ।
शीत–सं० ठण्ढा १ । हिम, ओस २ ।
शीतल–सं० ठण्ढा ।
शीतला–सं० भगवतीविशेष ।
शील–सं० स्वभाव ।
शुक्र–सं० बृहस्पतिक अगिला दिन ।
शुद्ध–सं० निर्दोष, पवित्र ।
शुभ–सं० मङ्गल, कल्याण ।
शुभाशिष्–सं० शुभकामना ।

शूद्र–सं० चतुर्थ जाति । स्त्री० शूद्री ।
शूर–सं० वीर ।
शोक–सं० खेद ।
शोणित–सं० रक्त ।
शोथ–सं० फूलब, रोगविशेष ।
शोभा–सं० सौन्दर्य ।
शौच–सं० शुद्धि, पुरीषोत्सर्गोत्तर संशोधन।
श्याम–सं० कारी ।
श्रद्धा–सं० आदरबुद्धि ।
श्रद्धेय–सं० श्रद्धा करबा योग्य ।
श्रम–सं० मेहनति ।
श्राद्ध–सं० पितरक उद्देशेँ श्रद्धापूर्वक दान।
श्री–सं० शोभा ।
श्रेष्ठ–सं० उत्तम ।
श्रोत्रिय–सं० कतोक ब्राह्मणक उपाधि।
श्लोक–सं० पद्य ।

ष

षट्रस–छबो रससँ युक्त (भोजन) ।
षट्राग–नियम-निष्ठा (निन्दामे) ।
षष्ठी–सं० छठम तिथि १ । जन्मोत्तर छठम दिनमे पूज्य देवी, षष्ठिका २ ।

स

सइ–अप्रकाश अभिप्राय ।
सईस–सहीस, घोड़ाक पालक ।
सए–शतसंख्यक ।
सएरदिबाल–प्राचीर, समन्तात् आवासवेष्टनभित्ति ।
सओदा–विक्रय्य वस्तु ।
सओदागर–विक्रेता, व्यापारी ।
सक–शक्ति १ । वि० सन्देह २ ।
सकचूर(र)–सर्वथा चूर्णित ।
सकत–दृढ़, कठोर ।
सकदम–वि० भयसँ स्तब्ध ।
सकनाचूर–सर्वथा चूर्णित ।
सकब–क्रि० शक्त होएब ।
सकबेध–दृढ़ वेष्टन ।
सकबेधब–क्रि० दृढ़वेष्टन करब ।
सकरकन–अल्हुआ (बाबाजीक भाषामे)।
सकरब–क्रि० कृतकार्य होएब ।
सँकराँति–संक्रान्ति ।
सकरौड़ी–बुनिआ दए बनाओल दूध ।
सकल–वि० स्वरूप १ । समस्त २ ।
सकलारिष्ट–निखिलदोषशान्त्यथ दान ।
सकलुच्ची–अलि० खुरलुच्ची, स्थिर नहि रहि उकठ कएनिहार(नेना) ।
सकसकाएब–क्रि० सकसक्+अब–सन्देह वा आलस्यसँ तारतम्य करब ।
सकसब–क्रि० अनवकाश होएब ।
सकाँढ़–सिकस्त स्थान ।
सकार–स्वीकार ।
सकारब–क्रि० सकार्+अब–स्वीकार करब ।
सकाल–सबेर, से समय जखन सूर्य उगिकेँ थोड़ दूर आएल होथि ।
सकुचैब–क्रि० संकुचित होएब ।
सकुल्य–सं० दसम पुरुषसँ अगिला पुरुषक अपत्य ।
सकेल–संकीर्णस्थान ।
सक्क–सक, शक्ति १ । वि० सन्देह २।
सक्कत–सकत, दृढ़, कठोर ।
सक्की–वि० सन्देही ।

सख–वि० इच्छा, मनोरथ ।
सखारी–वस्तुजात रखबाक पैघ समतल पौती ।
सखी–सं० वयस्या, सहेली हि० ।
सखुआ–साँखु, शाल, वृक्षविशेष ।
सँगतुरिआ–अलि० सङ्गी, जकरासँ समवयस्कताक व्यवहार हँसी-ठट्ठा हो ।
सगतोड़नी–स्त्री० साग तोड़निहारि ।
सगबग करब–क्रि० किञ्चित् इतस्ततः संचलन ।
सगबगाएब–क्रि० सगबग्+अब–सगबग करब ।
सगबगी–सगबगाएब ।
सगर–सम्पूर्ण, साग्र ।
सगही–स्त्री० सगाइबाली (स्त्री) ।
सगाइ–सम्बन्ध, पतिभिन्नकेँ पतिरूपेँ वरण ।
सँगिता–सङ्गिता, समवयस्कताक व्यवहार हास्यादि ।
सगुन–शकुन १ । ज्योतिर्विट् वैद्य आदिकेँ मङ्गलार्थ देय द्रव्य २ ।
सगुनबान्ह–बरीपर ठाठ चढ़बाक बाद देबाक प्रथम बन्धनविशेष ।
सगुनिआ–मङ्गलप्रद ।
सगून–सगुन ।
सँगोर–सङोर, वस्तु वा लोकक संग्रह ।
सङतुरिआ–सँगतुरिआ ।
सङिता–सँगिता ।
सङोर–सँगोर ।
सङ्कोच–लज्जा ।
सङ्खा–परतानक छिद्रक अन्तराल ।
सङ्खिआ–विषविशेष ।
सङ्ग–सं० साहित्य, मेल, सामीप्य ।
सङ्गम–सं० मेल ।
सङ्गमर्मर–श्वेत पाषाणविशेष ।
सङ्गमूसा–कृष्ण पाषाणविशेष ।
सङ्गी–सङ्ग रहनिहार ।
सङ्गीत–सं० वाद्यादिसँ युक्त गीत ।
सङ्ग्रह–सं० सञ्चय ।
सङ्ग्रही–सं० सञ्चयी ।
सङ्घटन–सं० ओरिआओन ।
सचढ़–चरफर, शीघ्र कार्यकर्ता ।
सचार–दोनामे, साँठल व्यञ्जन ।
सचेत–सावधान ।
सजनी–सखी ।
सजब–क्रि० सुसज्जित करब ।
सजबी–शुद्ध अनुद्धृतसार दूधक (दही)।
सजमनि–अलाबू, कद्दू हि० ।
सजाए–वि० दण्ड ।
सजाबट–हि० सज्जीकरण ।
सजाय–वि० कारावासादि दण्ड ।
सजौड़ी–सजमनिक भुजबी दए बनाओल वटी ।
सज्जित–सं० सज्ज, दुरुस्त ।
सज्जीखार–सर्वक्षार, साजीखार ।
सँझाएब–ना० सन्ध्यासमयसम्प्राप्ति ।
सझिआ–साझी, अविभक्त, अनेक-स्वामिक।
सझिला–उ० चारिमे तेसर (भाए, पुत्र इत्यादि) स्त्री० सझिली।
सँझौत–सन्ध्याकालक दीप ।
सञ्च, **सञ्च-मञ्च** –स्थिर ।

सञ्चर–स्तोत्रादिपाठमे अन्यत्र पठनीयक भ्रमवश अन्यत्र पाठ ।

सञ्झाफ–वस्त्रप्रान्तमे शोभार्थ योजनीय वस्तुविशेष ।

सटकन–पातर दण्ड ।

सटकब–क्रि० सङ्कुचित होएब १ । भयसँ नुकाएब २ ।

सटका–पातर दण्ड ।

सटब–सक्त होएब १ । स्पृष्ट होएब २ ।

सटसट करब–क्रि० रोच नहि राखि प्रौढ़तापूर्वक बाजब (निन्दामे) ।

सटिआ–मिलुआ, एक दलक ।

सट्टा–घरसँ बाहरक से खुट्टा जकर शिखरपर भार नहि रहए ।

सट्ठा–साठि हाथक (पाग) १ । साठि वर्षक (पुरुष) २ ।

सठब–क्रि० निघटब, निःशेष होएब ।

सड़क–राजमार्ग ।

सड़ब–क्रि० निःसार होएब १ । फलादिक दौर्गन्ध्यादिविकारसँ युक्त होएब २।

सँड़बाहि–वृषोतसर्गश्रा (नीचक उक्तिमे)।

सड़र–सरल सं०, वृक्षविशेष ।

सड़ल–निःसार, विकृत ।

सड़लाइनि, **सड़लानि** –सड़ल वस्तुक गन्धसदृश गन्धबाला ।

सड़सी–सरसी, तप्त बट्टुक आदि पकड़बाक साधन विशेष ।

सड़ाइनि, **सड़ानि** –सड़बाक गन्ध ।

सड़ारि–पक्षिविशेष ।

सण्ठी–शणयष्टि ।

सत–सत्य ।

सतगजा–सात गज परिमाणक (धोतीप्रभृति) ।

सतघरा–क्रीड़ाविशेष ।

सतधी–स्त्री० सपत्नीपुत्री ।

सतजुग–सत्ययुग ।

सतपुतहु–स्त्री० सपत्नीपुत्रवधू ।

सतपुतिआ–भाँटाक प्रभेद ।

सतमसिआ, **सतमस्सू** –अलि० सात मासक जनलम (नेना) ।

सतमाए(य)–स्त्री० माताक सपत्नी ।

सतरकी–शीघ्रता ।

सतरह–सप्तदश ।

सतरहम–सतरहक पूर्तिकर्ता ।

सतरा–धान्यविशेष ।

सतरिआ–धान्यविशेष ।

सतनरिआ–पक्षी मारनिहार व्याध ।

सतसङ्ग–सत्सङ्ग ।

सतसट्ठि–सप्तषष्टि ।

सतसट्ठिम–सप्तषष्टितम ।

सतसासु–स्त्री० सासुक सपत्नी ।

सतहत्तरि–सप्तसप्तति ।

सतहत्तरिम–सप्तसप्ततितम ।

सताएब–क्रि० सतब्+अब–शातन, दुःख देब ।

सताबन(न्न)म–सप्तपञ्चाशत्तम ।

सताबरी–शतावरी ।

सतारब–क्रि० सतार+अब–शीघ्रतासँ कार्य सम्पन्न करब ।

सतारि–सप्ताहव्यापक वृष्टि ।

सतारि लाधब–क्रि० सप्ताहव्यापक वृष्टिक आरम्भ ।

सतालुक–फलविशेष ।

सतासी–सप्ताशीति ।

सतासीम–सप्ताशीतितम ।

सती–स्त्री० स्वामीक सङ्ग दग्धा १। सं० पतिव्रता २। अ० प्रतिनिधि ३ ।

सतीत–प्रमाणित ।

सतुआ–सातु ।

सतुआइनि–सातु खएबाक पाबनि, मेष संक्रान्ति ।

सत्त–सत, सत्य ।

सत्तरि–सप्तति ।

सत्तरिम–सप्ततितम ।

सत्ता–सामर्थ्य १। तासक सातम फर्द २।

सत्ताइस–सप्तविंशति ।

सत्ती–सती, अ० प्रतिनिधि ।

सत्य–सं० तथ्य, यथार्थ ।

सत्यवादी–सं० सत्य बजनिहार ।

सत्यानास–सर्वथा विनाश ।

सदत–सतत ।

सदबद–अल्प जल मिलाए रान्हल (तीमन)।

सदा–सं० अ० सर्वदा ।

सदाए–उ० मुसहर जातिक उपाधि । स्त्री० सदाइनि ।

सदाबर्त–सदाव्रत, प्रतिदिन सब अभ्यागतकेँ खोआएबाक व्रत ।

सदाबर्ती–सदाबर्त कएनिहार ।

सदाय–मुसहरक उपाधि ।

सदिआम–लताम ।

सदिखन–अ० सर्वदा ।

सदुल–पक्षिविशेष ।

सद्द–सद, सहनशील, अनुपद्रवी ।

सद्दो-बद्दो–सवस्त्र खूब तीतल ।

सद्दम-सद्द–लेन-देनक सम्पन्न संशोधन।

सधब–क्रि० सठब, निःशेष होएब ।

सधवा–सं० जीवद्भर्तृका ।

सधम-सध–लेन-देनक सम्पन्न संशोधन।

सधाएब–क्रि० सधब्+अब–निःशेष करब ।

सधान–निःशेषीभाव ।

सधोरि–गुर्विणीक हेतु भार ।

सन–शण, वृक्षविशेष जकर छालसँ डोरी आदि बनैछ १ । आम्रबीजादिमे लागल सूक्ष्म तन्तुसमुदाय २ ।

सनक–विक्षेप १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २।

सनकब–क्रि० विक्षिप्त होएब १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २ ।

सनकाह–उ० विक्षिप्तप्राय । स्त्री० सनकाहि ।

सनकिरबा–कीटविशेष ।

सनकी–विक्षेप १। सक्रोध हठात् प्रवृत्ति २।

सनखेसरा–कीटविशेष ।

सनगोहि–गोधाकार स्थलचर जन्तुविशेष।

सनगिद(द्द)–सद्दो-बद्दो, समस्त अत्यन्त तीतल ।

सनठी–सण्ठी, शणयष्टि ।

सन दए–सन-सन शब्दपूर्वक ।

सनपत–श्योनाक, वृक्षविशेष ।

सनपटुआ–शणवृक्षविशेष ।

सन-सन करब–क्रि० सन-सन शब्द करब १ । सक्रोध सामर्थ्य प्रकाशन २ ।

सनसनाएब–क्रि० सनसन्+अब–सनसन करब ।

सनसनी–सन-सन शब्द १ । जोरसँ सामर्थ्यप्रकाशन २ ।

सनहकी–यवनक भोजन-पाटि ।
सनहुल–सोनहुल, पुष्पविशेष ।
सनाए–सनाय, रेचक ओषधिविशेष ।
सनातन–सं० अनादिकालप्रवृत्त ।
सनाय–सनाए ।
सनाह–सनसँ युक्त (आम्रादि) ।
सनीप–समीप ।
सनेस–स्नेहीक प्रति उपहार ।
सनै–सनइ, शण, क्षुपविशेष ।
सनैचरी–प्रत्येक शनिमे शिष्य सभसँ आदेय द्रव्य ।
सनोह–सनोहब ।
सनोहब–क्रि० दूहिकेँ दूधक परिमाण जानब ।
सन्तति–सं० सन्तान ।
सन्तनत–वि० विधान, प्रबन्ध ।
सन्ताँ–अ० सत्तामे १ । तत्काल (यथा, देखैत सन्ताँ) २ ।
सन्तान–सं० अपत्य ।
सन्तान्नबे–सप्तनवति ।
सन्तान्नबेम–सप्तनवतितम ।
सन्तोला–मिष्ट जम्बीरविशेष ।
सन्तोष–सं० यथालाभप्रसन्नता ।
सन्तोषी–सं० यथालाभ प्रसन्न ।
सन्देश–सनेस, उपहार ।
सन्देह–सं० संशय ।
सन्न–भयसँ स्तब्ध।
सन्न दए–अ० तीव्रतापूर्वक ।
संन्यास–सं० चारिम आश्रम ।
संन्यासी–सं० यती ।
सन्हिआएब–क्रि० सन्हि+अब–अभ्यन्तर मे पैसब ।

सपटा–शणनिर्मित अतिस्थूल पट ।
सपठब–क्रि० मिलब, मेल होएब ।
सपठैती–आन बड़दक सङ्ग आनक बड़दक नित्य बहबामे मेल ।
सपत–शपथ ।
सपत खाएब–क्रि० शपथग्रहण ।
सपत देब–क्रि० शपथ कराएब ।
सपत-सपतान–परस्पर शपथ ।
सपता-बिपता–पूज्यदेवताविशेष ।
सपथ–शपथ ।
सपधरू–अलि० सर्पदष्ट ।
सपन(ना)–स्वप्नदर्शन, निद्रामे मानसज्ञान ।
सपनाएब–ना० स्वप्नदर्शन ।
सपना देखब–क्रि० सपनाएब ।
सपनौती–स्वप्नमे लब्ध (मन्त्रादि) ।
सपनौर–नकुल ।
सपरतिभ–सप्रतिभ (निन्दामे) ।
सपहरब–क्रि० सर्पविषयुक्त होएब ।
सपहरिआ–सर्पहर्ता जातिविशेष ।
सपहा–सर्पविषहत ।
सपाटू–फलविशेष ।
सपिण्ड–सं० सप्तपुरुषान्तर्गत ।
सपूत–हि० सत्पुत्र ।
सपेत–वि० श्वेत ।
सपेता–आम्रविशेष ।
सप्तमी–सं० सप्तम तिथि ।
सप्ताह–सात दिनक समूह ।
सफगोल–इसफगोल, अन्नविशेष ।
सफर–वि० विदेशभ्रमण ।
सफरिआ–सपहरिआ १। सफरमे उपकारक २ ।

सफरी कटहर–फलविशेष ।
सफल–सार्थक ।
सफा–वि० साफ, स्वच्छ ।
सफाइ–वि० नैर्मल्य १ । फरिछोट २ ।
सफाचट–वि० लोमनाशक ।
सब–सर्व, सकल ।
सबजना–सभजना, परिवारक सर्वजन सम्बन्धी (निमन्त्रण) ।
सबजी–वि० दूर्वाच्छादित भूमि ।
सबतरि–अ० सर्वत्र ।
सबदिना–प्रतिदिन भेनिहार ।
सबरङ्ग / **सबरङ्ग** }–अनेक रङ्गबाला ।
सबरब(बी)–भूषणविशेष ।
सबा–सपाद (संख्या वा परिमाण) ।
सबाइ–पादाधिक प्रत्यर्पणक व्यवस्थापर गृहीत वा दत्त अन्नक ऋण ।
सबार–वि० यानारूढ़ आरोही ।
सबारिस–नीक समय, सुभिक्ष ।
सबारी–यान ।
सविष–सर्वाङ्ग सर्पविषव्याप्त ।
सबूत–वि० प्रमाण ।
सँभरम–सम्भ्रम ।
सबेर–सकाल ।
सबैआ–पादाधिक ।
सबैएँ–अ० चतुर्थांश बढ़ने ।
सभ–सब, सर्व, निखिल ।
सभजना–सबजना ।
सभागाछी–वैवाहिक सभाक गाछी ।
सभैती–सभामे कर्तव्य ।
सम–शम, न्यूनता १ । सं० तुल्य २ ।
समइआ–सामयिक ।

समगरए–ठाठक समुचित उच्चता ।
समङगर–उ० अधिक समाङसँ युक्त । स्त्री० समङगरि ।
समचा–सामग्री ।
समच्छ–सांमुख्य, सामक्ष्य ।
समझोता–हि० मिलान, सन्धि ।
समटब–क्रि० प्रसृतक एकत्रीकरण ।
समतूल–तुलासँ समीकृत, बराबरि ।
समथरि–समतलस्थली ।
समदाउनि–कन्याक सासुर जएबाक कालक उपदेशक गीत ।
समदिआ–अलि० संवाद कहनिहार ।
समधान–सावधान ।
समधि–उ० कन्यापुत्रप्रभृतिक श्वशुरादि । स्त्री० समधिनि ।
समधिआउर–समधिक आलय ।
समधिआरए–समधिक व्यवहार ।
समधौत–पुं० समधिक अपत्य ।
समय–सं० काल ।
समयसतरा–समयपर अपन कार्य सम्पन्न कए लेनिहार ।
समरथ–उ० युवा । स्त्री० समरथि ।
समरथ-सकरथ–उ० समर्थ ओ क्रियादक्ष । स्त्री० समरथि-सकरथि ।
समर्थ–उ० तरुण । स्त्री० समर्थि १ । सं० दक्ष, शक्त २ ।
समर्थाइ–तारुण्य ।
समशाखा–सं० एके वेदशाखाक ।
समसब–क्रि० किञ्चित् आर्द्र होएब ।
समसम–किञ्चित् आर्द्र ।
समसरही–अल्प करबाला (खेत) ।

समसान–श्मशान ।

समाइत–वि० सङ्गत ।

समाएब–क्रि० सम्+अब–अँटब ।

समाँग / **समाङ(ङ्ग)** }–पुं० समीपी एक परिवारक बन्धु ।

समाचार–सं० वार्ता ।

समाज–सं० समीपवासी जनसमूह ।

समाठ–मुशल ।

समाद–संवाद, मौखिक वार्ता ।

समान–सं० तुल्य १ । आनक वेष बनओने २ ।

समाप्त–सं० सम्पूर्ण १ । नष्ट २ ।

समार–एक दिसेँ जोतलकेँ दोसर दिसेँ जोतब ।

समारोह–सं० सम्भारपूर्वक अनेक मोलि पैघ कार्यक आरम्भ ।

समाहब–क्रि० समाह्+अब–जोतिकेँ बड़दक परीक्षा करब ।

समुच्चा–सम्पूर्ण, अखण्ड ।

समुद्र–सं० पारावार ।

समुद्रफेन–सं० समुद्रक शुष्क फेन ।

समूचा–समुच्चा, समस्त ।

समेटब–क्रि० प्रसृतकेँ एकत्र करब ।

समेटि-बटोरि–अ० समेटब प्रभृतिक्रिया कए, सर्वसंकलनपूर्वक ।

समेना–सामिआना, पटगृहविशेष ।

समै–दुग्धप्रधानक भक्ष्यविशेष ।

समैआ–समयभव ।

समैल–पालोक मझिला खुट्टी ।

समोधब–क्रि० सम्यक् बोधन, बुझाए अनुकूल करब ।

सम्पत्ति–सं० धन ।

सम्पन्न–सं० सिद्ध १ । समृद्ध २ ।

सम्पर्क–सं० सम्बन्ध ।

सम्पनी–यानविशेष ।

सम्प्रति–सं० अ० एखन, इदानीम् १ । आइ-काल्हि २ ।

सम्बन्ध–सं० संसर्ग १ । यौन सम्बन्ध, पितृत्वादि २ ।

सम्बन्धिक–अलि० यौनसम्बन्धबाला ।

सम्भव–सं० शक्यता, आशा ।

सम्भ्रम–सं० हड़बड़ी, कार्यव्याकुलता ।

सम्मत–सं० अनुमत, स्वीकृत ।

सम्मति–सं० अनुमति ।

सम्मुख–सं० अभिमुख, प्रत्यक्ष ।

सम्हरब–क्रि० शक्तिसँ सम्पादित होएब ।

सम्हार–कार्यक भारवहनपूर्वक सम्पादन ।

सम्हारब–क्रि० सम्हार्+अब–शक्तिसँ सिद्ध करब ।

सय–सए, शत ।

सयम–सएम, शततम ।

संयत–सद्द, अनुपद्रवी, स्थिर ।

संयम–सं० पथ्य, दोषकारकक त्याग ।

संयमी–सं० संयमशील ।

संयोग–सं० मिलान १ । दैवी घटना २ ।

सर–शर ।

सरकट–सरकण्डा, तृणविशेष ।

सरँकब–क्रि० जलादिक पीबामे कण्ठस्खलनजन्य अन्यथावद्गति ।

सरकस–वि० शरीरादिक कौतुक जनक क्रिया ।

सरका–बड़दक गरदनिक सिराक सङ्कोच ।

सरकार–वि० प्रधान, राजा ।

सरकारी–मालिकी, राजकीय ।

सरकी–वंशकृत आवरणविशेष ।

सर-कुटुम्ब–कुटुम्ब तथा अपेक्षित ।

सर-कुटुमैती–कुटुम्ब तथा अपेक्षितक व्यवहार ।

सरङ–स्वर्ग आकाश ।

सरङ-पताली–एक ऊर्ध्वमुख ओ दोसर अधोमुख सिंह, मालक दोष ।

सरड़–सरलवृक्ष ।

सरदर–वि० समग्र ।

सरदार–वि० मुख्य।

सरदिआह–सरदीसँ युक्त ।

सरदी–शैत्यजन्य रोग ।

सरधा–श्रद्धा ।

सरन–शरण ।

सरनरिआ–सरनरसँ पक्षी बझओनिहार व्याधविशेष ।

सरपत–तीक्ष्णपत्रक, खड़हीसन तृणविशेष।

सरफोँका–शरपुङ्ख, ओषधिविशेष ।

सरबत–वि० प्रपाणक पेयमिष्टद्रव ।

सरबती–नेबोक प्रभेद ।

सरबन–पागक प्रभेद ।

सरबब–क्रि० अल्प छिद्रादिद्वारा जलादिक मन्द-मन्द स्रवण ।

सरबस–सर्वस्व ।

सरबसोख–बड़दक जिह्वामे श्यामताचिह्न, बड़दक दोषविशेष।

सरबस्ता–आगत अनागत सभक बिदाइबाला न्योत ।

सरबा–शराब माटिक पात्रविशेष ।

सरबेटा–पुं० श्यालपुत्र ।

सरभोज–श्यालभोज्य, सार सभक भोज।

सरम–वि० लज्जा ।

सरस–सं० रसिक १ । आधासँ अधिक अंश २ । रसयुक्त ३ ।

सरसरी–हि० अतिशीघ्रता ।

सरसी–धीपल बटुक आदि पकड़बाक लौहयन्त्र ।

सरस्वती–सं० वाग्देवता ।

सरह–देबाक सम्प्रदाय ।

सरहँच–सारस पक्षी ।

सरहँची(च्ची)–शाकविशेष ।

सरही–बिना मेनक (सोहारी) १। सामान्य (दही) २। बीजभव (आम) ३।

सरहोजि–स्त्री० श्यालपत्नी ।

सराड़ि–पक्षिविशेष ।

सराध–श्राद्ध ।

सराप–शाप ।

सरापब–ना० सराप+अब–शाप देब ।

सरासरी–वि०अ० अतिशीघ्रतापूर्वक ।

सराहब–क्रि० सराह्+अब–प्रशसा करब ।

सरि–समतल, अनुच्चावच ।

सरिआएब–ना० सरि+अब–सरि (समतल) करब १। सुस्थित करब २ ।

सरिआती–कन्यागत, विवाहादिमे कन्याक पक्षक लोक ।

सरिआम–समतल स्थान ।

सरिबन–शालिपर्णी ।

सरिसओ(ब)–सर्षप ।

सरी–लोहाक छर ।

सरीफा–फलविशेष ।

सरुआरी–तृणविशेष ।

सरुकी–छोट सारुक, जलीय कन्दविशेष।

सरैआ–एक प्रकारक छोट थारी ।

सरैला–माछ मारबाक बाँसक पात्रविशेष।
सरोकार–वि० सम्बन्ध, अधिकार ।
सरोकारी–वि० सम्बन्धिक ।
सरोज–वाद्यविशेष ।
सरोत–तृणसँ छारलक उपर देल बाती ।
सेसेता–शङ्कुला, सुपारी कटबाक अस्त्र ।
सरौनी–मेनाक प्रभेद ।
सर्त–वि० व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।
सर्वजया–सं० पुष्पविशेष ।
सर्वनेजा–नैवेद्यार्थ एकत्रित कएल खाद्यसामग्री ।
सर्वैकत्वेँ–अ० सभ मिलाए ।
सल–सारभाग, शक्ति ।
सलका मारब–भूमिक अभ्यन्तरसँ सार्द्रता प्राप्ति ।
सलग–संलग्न ।
सलगा–दोहरि, शीतवारक दोहराओल वस्त्र ।
सलमसाही–लोटाक प्रभेद ।
सलसलाएब–क्रि० सलसल्+अब–अभ्यनतरसँ सार्द्र होएब ।
सलसलाह–अभ्यन्तरसँ सार्द्र भूमि ।
सलहाल–भूमिक पूर्ण सार्द्रता ।
सलाइ–हि० शलाका, दीआसलाइ ।
सलाम–वि० प्रणाम, दूरसँ नतिविशेष ।
सलामी–वि० प्रणाली, प्रणाममे देबाक द्रव्य ।
सलार(रि)–उच्चावच क्षेत्रादिमे जलक समता ।
सलाह } **सलुक** –वि० अविरोध, मिलान
सलौनी–श्रावणी (पूर्णिमा) ।

सल्लाह–सलाह ।
ससरफानी–बन्धनविशेष ।
ससरब–क्रि० सरण, संसर्पण ।
ससारब–क्रि० ससार+अब–पेटक वायु वा स्थानच्युत सिरा आदिकेँ बैसएबाक हेतु अङ्गपर हाथक घर्षणपूर्वक सञ्चालन ।
ससि–शस्य ।
ससुर–पुं० श्वशुर ।
ससुराड़ि–श्वशुरकुलगृह ।
ससुहथ–सासुक हेतु भार ।
संस्कार–विद्याग्रहणशक्ति १। विवाहादि-कर्म २ ।
सस्त–स्वल्पमूल्यलब्ध, समघ ।
सह–सङ्ग, अबरजात १ । सतरञ्जमे बादशाहकेँ विपक्ष पात्रक साम्मुख्य २ ।
सहज–साहाय्यद्रव्य १ । अनैमित्तिक, सवभावसिद्ध २ ।
सहजोर–पूर्ण सम्पन्न (धान्यादि) ।
सहटब–क्रि० सुस्तेँ हँटब ।
सहठुल–सद्द, नीक प्रकृतिक, मिलनसार ।
सहड़ी–छागर आदिक मासुक झोरक हाड़।
सहथ–अस्त्रविशेष ।
सहन–वि० समभूमि १। सं० मर्षण २।
सहनाइ–वाद्यविशेष १ । मर्षण २ ।
सहब–क्रि० सहन, क्षमा करब ।
सहमर्दा–धान्यविशेष ।
सहमिलू–अधिक सङ्ग होएबाक कारण मिलनसार ।
सहर–वि० पैघ बजार ।
सहरगञ्ञा–साधारण ।

सहरजमीन–वि० विवादभूमि ।
सहरफोँका–शरपुङ्ख, क्षुपविशेष ।
सहरू–सहरक निवासी ।
सहलोल–बूड़ि, निवासी ।
सह-सह करब–क्रि० पीलुसर्पादिक सञ्चलन ।
सहसहाएब–मा० सह-सह करब ।
सहसा–सहस्र मत (आम्रदि) १ । सं० अ० हठात् २ ।
सहसौल–सहस्रदक कपल ।
सहाज–सह्य ।
सहाजिक–स्वभाविक ।
महाय–सं० सङ्गदेनिहार, सहायक ।
सहिआ–सखी ।
साहिआरब–क्रि० सहिआर्+अब–सम्हारब।
सही–वि० हस्ताक्षर १। गृहादिक शोधन २।
सहीस–सईस, अश्वपालक ।
साँइ(ए)–श्रावणमास ।
साकट(ठ)–शाक्त ।
साँकर–संकीर्ण (स्थल), छोट (पात्रादि)।
साँख–शङ्कऔँठी ।
साँखर–सर्पविशेष ।
साँखु–शालवृक्ष ।
साग–शाक, शाखापत्रसहित खाद्य गेन्हारी प्रभृति ।
सागमान–वृक्षविशेष ।
साग-मसाला–क्षुपविशेष ।
साँगह–गृहादिनिर्माणसामग्री ।
साँगि–संग्रह, सञ्चय ।
साँगि–शक्ति, अस्त्रविशेष ।
साँगी–केश कटबाक तरेँ नापितकेँ देल भूमि ।

साङह–गृहादिनिर्माण सामग्री ।
साङरह–संग्रह, सञ्चय ।
साङि–शक्ति, अस्त्रविशेष ।
साङी–साँगी ।
साँच–चित्रविशेष वा आकृतिविशेषसँ युक्त से आधार जाहि पर दबने वा गलल धातु आदि ढारने निर्मित वस्तुमे आधारा नुरूप चित्र वा आकृति बनि जाइछ ।
साँची–पानक प्रभेद १ । पहिरल धोतीक आगाँमे खोँसल अंश २ ।
साज–भाँड़ रखबाक माटिक पैघ आधार-पात्र ।
साजब–क्रि० सज्+अब–सज्जित करब ।
साजी–फुलतोड़ा, वंशपात्रविशेष ।
साजीखार–स्वर्जिका सं० ।
साँझ–सन्ध्या ।
साँझ खन–अ० सन्ध्याकालमे ।
साँझ पड़ब–क्रि० सन्ध्याक सम्प्राप्ति ।
साझिल–उ० चारिमे तृतीय (पुत्रादि) । स्त्री० साझिलि ।
साझी–अविभक्त, अनेकस्वामिक ।
साँझुक–सन्ध्याकालिक ।
साट–मेल, सङ्ग ।
साटब–क्रि० लस्सा आदिसँ कागत आदि संसक्त करब ।
साटि–गुप्त सङ्ग ।
सा(साँ)ठब–क्रि० स(सँ)ठ्+अब–पात्रादिमे वस्तुक स्थापन ।
साठा–साठि हाथक पाग १ । साठिवर्षक (मनुष्य) २ ।
साठि–षष्टिसंख्यक ।

साठिम–षष्टितम ।
साड़ब–सड्+अब–विकृत वा निःसार करब ।
साढ़ू–साढ़ू, पत्नीक बहिनिक पति ।
साड़ी–शाटी, स्त्रीक परिधानवस्त्र ।
साँढ़–श्राद्धमे उत्सृष्ट वृषभ ।
साँढ़नी–स्त्री० ऊँटक स्त्री ।
साढ़ू–पत्नीक बहिनिक पति ।
साढ़े–सार्ध ।
सात–सप्त ।
सातम–सप्तम ।
सातु–सक्तु ।
सातोकरमा–धान्यविशेष ।
साधब–क्रि० साध्+अब–दबाएब, शासन करब ।
साधु–सं० बैरागी, योगी, बाबाजी ।
साधुबान्ह–बन्धन-विशेष ।
सान–शाण १ । सीटब २ ।
सानदार–सीटल, सुसज्जित, उत्तम ।
सानदारी–सिटनाइ, केवल उत्तम वस्तुमात्रसँ व्यवहार, उत्तमता ।
साना–श्राणा, चोखा ।
सानी–पानिमे सानल गूड़ाप्रभृति मालक खाद्य ।
साप–उ० सर्प । स्त्री० सापिनि ।
साफ–वि० स्वच्छ, स्पष्ट ।
साफल–सफल ।
साबए(य)–वल्वज, जौर बँटबाक तृणविशेष ।
सावधान–सं० सतर्क, दत्तचित्त ।
साबा–सपाद (संख्या वा परिमाण) ।
साबिक–वि० पूर्वकालिक ।
साबुजदाना–साबूदाना, अन्न वा फलक प्रभेद ।
साबुन–तैलादिमे पिण्डाकार बनाओल साफ करबाक क्षारवस्तु ।
साबूदाना–साबुजदाना
साम–श्यामाक, अन्नविशेष ।
सामग्री–सं० सकल साधक वस्तुक समुदाय ।
सामरथ–सामर्थ्य ।
सामरि नोन–लवणविशेष ।
सामा–शास्त्रोदित पक्षिणीविशेष जनिक पूजा कार्तिकपूर्णिमामे होइछ ।
सामान्योत्सर्ग–एकादशाह श्राद्ध दिनक काम्यदान ।
सामिल / **सामिलात** }–वि० अविभक्त, साझी ।
सामी–तृणविशेष १ । मूसर आदिक मुहमे देबाक लौहवलय २ ।
साम्याना–वि० पटगृहविशेष ।
साम्हर–मृगविशेष ।
साम्हरि–लवणक प्रभेद ।
साँय–साँए, स्वामी, पति ।
सार–पुं० श्यालं, स्त्रीभ्राता ।
सारङ्गी–वाद्यविशेष ।
सारदा–फलविशेष ।
सारभाजा–मिष्टान्नविशेष ।
सारा–मृत्तिकाबद्ध मृतकदाहस्थान ।
सारि–पत्नीक छोटि बहिनि ।
सारिल–काष्ठक सारभाग ।
सारुक–जलीय खाद्य कन्दविशेष ।
साल–माटिमे गाड़ल जीर्ण स्तम्भादिक भाग १ । वि० वर्ष २ ।

साँस–श्वास ।
सासु–स्त्री० श्वश्रू ।
सासुर–श्वशुरालय ।
साहखर्ची–अधिक व्यय कएनिहार ।
साहब–वि० श्रेष्ठ ।
साहबुलबुल–बुलबुलक प्रभेद ।
साहरोँच–सारस पक्षी ।
साहस–सं० सहसा (हठात्) प्रवृत्ति, अति कठिन यत्न ।
साहसी–साहसस्वभावक ।
साहित्य–साहाय्य, सहायता ।
सहिबा–वि० स्त्री० श्रेष्ठा ।
साहि लागब–क्रि० एक क्रियामे वारंवार प्रवृति ।
साही–शल्लकी, कण्टकमय जन्तुविशेष ।
साहु–बनिआक उपाधि ।
साहेब–वि० श्रेष्ठ ।
साहोड़–शाखोटवृक्ष ।
सिअनि–सीअब, स्यूत ताग ।
सिअ(आ)–सीता ।
सिआइ–सूचीक्रिया १। तकर वेतन २ ।
सिआर–श्रृगाल, गीदड़ ।
सिअब–क्रि० सिब्+अब–सिआइ, सूचीकर्म ।
सिकठि–क्षुपविशेष ।
सिकड़ी–भूषणविशेष १ । नेनाक सरीक विचलन रोग २ ।
सिकड़ी लागब–क्रि० सिकड़ी रोग सम्प्राप्त होएब ।
सिकमी–वि० से खेत जाहिमे आधा मालिकक ओ आधा कर्षकक अंश हो ।
सिकस्त–वि० संकीर्ण (स्थल) १ । वि० दरिद्र २ । कृपण ३ ।
सिकस्ती–संकीर्णता १ । दारिद्र्य २ । कार्पण्य ३ ।
सिकहर–अधिक सीकबाला घर ।
सिकार–वि० मृगया ।
सिकारी–वि० मृगयापटु ।
सिक्का–राजमुद्रा ।
सिखब–क्रि० शिक्षण ।
सिखाबुद्धी–गुप्त शिक्षित मन्त्रणा ।
सिँगरबात–श्रृङ्गाकार बाती, टाट ओ ठाठक उपर भागक तिर्यक् बाती ।
सिँगरहार–श्रृङ्गारहार, पुष्पविशेष ।
सिँगार–श्रृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
सिँगारी–शोभार्थरचनाक साधन ।
सिँगिआ–विषविशेष ।
सिँघटुट्टा–उ० भग्नश्रृङ्गक । स्त्री० सिँघटुट्टी ।
सिँघबास–मालक सिंहमे बान्हल डोरी ।
सिँघौटी–मालक सिंहक आकार ।
सिङरबात–सिँगरबात ।
सिङरहार–श्रृङ्गारहार
सिङार–श्रृङ्गार, शोभार्थ रचना ।
सिङारी–शोमार्थ रचनाक साधन ।
सिङिआ–विषविशेष ।
सिङ्ग–वाद्यविशेष ।
सिङ्गाट–मत्स्यविशेष ।
सिङ्गार–श्रृङ्गार ।
सिङ्गारहार–श्रृङ्गारहारपुष्प ।
सिङ्गी–श्रृङ्गी, मत्स्यविशेष ।
सिच्चा–छिच्चा, सेक ।
सिढ़ही–सीढ़ी, सोपान ।

सिढ़ी–सीढ़ी, सोपान ।
सितलचीनी–पानक एक मसाला ।
सितलपाटी–पटिआक प्रभेद ।
सिताएब–ना० सीत+अब–सीतसँ युक्त होएब ।
सितार–तन्त्री, वाद्यविशेष ।
सितारा–वाद्यविशेष ।
सिताहल–सीतसँ भीजल ।
सितुआ–शुक्ति ।
सिद्ध–स० सीझल, पक्व १। सम्पन्न २।
सिद्धान्त–पञ्जीकारक द्वारा विवाहक निश्चय १। सं० निर्णय, निष्कर्ष २ ।
सिधा–दैनिक भोजनार्थ परिमित अपक्व अन्न ।
सिधाइ–सिद्धिरस्तुपूर्वक स्वरवर्णमाला ।
सिनुआरि–सिन्दुवार वृक्ष ।
सिनुरिआ–पकलापर रक्त वर्ण (आम)।
सिनूर–सिन्दूर ।
सिन्दूर–सं० कपारक अलङ्करणसाधक रङ्ग ।
सिन्धुक–पैघ काष्ठमञ्जूषा ।
सिन्धुकचा–छोट सिन्धुक ।
सिन्ह–सन्धि, चोरकृत घर पैसबाक सोन्हि ।
सिपहिगिरी–वि० सिपाहीक क्रिया ।
सिपाही–वि० पदाति ।
सिप्फी–ददरी, दग्ध शुक्त्यादि ।
सिबराति–शिवरात्रि ।
सिमकाछु–काछुक प्रभेद ।
सिमरिफ–हिङ्गुल, धातुविशेष ।
सिमसिम–किञ्चित् आर्द्र ।
सिमसिमाह–अत्यल्प आर्द्र ।
सिमिरताइ–सौन्दर्य ।
सिर–मुण्ड ।
सिरउपाड़–सीर-सहित उपाड़ल ।
सिरक–तुराइ ।
सिरका–बरकाओल चीनी वा मिसरी ।
सिरचढ़–ऊर्ध्वमुख प्रवृत्त ।
सिरजब–क्रि० सृष्टि करब, उत्पादन ।
सिरमा–गरदनिक तरका स्थान ।
सिरमानी–अङ्गाक प्रभेद ।
सिरसंकोच–शिर:संचालनमे व्यथाजनक सिराक रोग ।
सिरहना(नी)–गेरुआ, उपधान ।
सिरहर–मङ्गलार्थ शिर:स्थापित सजलघट।
सिरा–धमनी, नस हि० ।
सिराएब–क्रि० सिर्+अब–दाँतसँ शोणित खसबाक रोग होएब ।
सिराउर / **सिरारु** } –हर चललासँ उत्पन्न नलाकार खाधि ।
सिराह–शोणितस्रावजनक सिरासँ युक्त (दाँत) ।
सिरिस्ता–वि० मुहकमा ।
सिरीस–शिरीष, पुष्पवृक्षविशेष ।
सिरोदय–जन्मकालमे नेनाक माथक प्रथम उद्गमन ।
सिलपट(ट्ट)–निरक्षर मूर्ख ।
सिलबर–वि० रजतसदृश धातुविशेष ।
सिलसिला–वि० क्रम ।
सिलसिलेबार–वि० क्रमबद्ध ।
सिलहटिआ–हाथीक प्रभेद ।
सिला–शिला, प्रस्तर ।
सिलाजित–शिलाजतु ।
सिलेब–करोँछ शुक्लवर्णक (गाए बड़द)।

सिलोन–मत्स्यविशेष ।
सिलौट–पिसबाक आधार शिलापट्ट ।
सिल्ली–जलचर पक्षिविशेष १। ओसाओल धानक श्रेणी २ ।
सिसकन्दली–क्षुपविशेष ।
सिसपिञ्ज–वि० निगृहीत, सावधि वेतनक प्रतिबन्ध ।
सिसबनी–सीसोक वन ।
सिसबाड़ि–सीसोक वन ।
सिसिआएब–क्रि० सिसि+अब–सीत्कार।
सिसोहब–क्रि० अङ्गुलाग्र वा दन्तादिसँ रसादिक आकर्षण ।
सिहकब–क्रि० अङ्गक किञ्चित् शैत्ययुक्त होएब १। वातक अतिमन्द गमन २।
सिहन्ता–इच्छा, मनोरथ ।
सिहरब–क्रि० देहक किञ्चित् जाड्य युक्त होएब ।
सिंह–उ० मालक शृङ्ग १ । सं० मृगेन्द्र २ । स्त्री० सिंहिनि ।
सिंहराशि–विजयी ।
सिंहाचोर–सन्धिच्छेदक घरपैसा चोर ।
सिंहासन–सं० राजाक उच्चासन ।
सिहुलिआ–मध्यमे रक्तवर्णक(लताम) ।
सिहुली–देहपर उजर-उजर बिन्दु, चर्मरोगविशेष ।
सीअनि–सीअब, स्यूत ताग ।
सीअब–क्रि० सिब्+अब–सूचीक्रिया ।
सीउब–क्रि० सिब्+अब–सूचीक्रिया ।
सीक–शिक्य ।
सीकी–इषीका, तृणविशेष ।
सीखब–क्रि० सिख्+अब–शिक्षण ।
सीङ–मालक शृङ्ग ।
सीचब–क्रि० सिच्+अब–सेचन ।
सीचा–छिच्चा, सेचन ।
सीझब–क्रि० सिझ्+अब–भात आदि पक्व होएब, सर्वथा विल्किति ।
सीटब–क्रि० सिट्+अब–सौन्दर्यार्थ यथावद् विन्यास ।
सीढ़ी–सोपान ।
सीतलगढ़–छाता मोरम्मति कएनिहार ।
सीताभोग–भेँड़बा मालदह राजाम्रविशेष।
सीना–वि० वक्ष:स्थल ।
सीप–हि० शुक्ति ।
सीम–लताशिम्बी, तरकारीक फलविशेष।
सीमर–शाल्मली वृक्ष ।
सीमा–सं० क्षेत्रादिक अवधिचिह्न ।
सीर–मस्तक १। गोसाउनिक उच्च स्थान २। गाछक मूल ३। भोजनादिक प्रधान स्थान ४। नदीक से स्थान जेमहरसँ जल आएब ५ ।
सीरक–दोहरि, तूरबाला मोट ओढ़ना ।
सीरपञ्चमी–वसन्तपञ्चमी ।
सीस–कणिश, धान्यादिक गुच्छ ।
सीसा–सीसक धातु १ । काच २ ।
सीसी–सीसाक छोट पात्र ।
सीसो–शिंशपावृक्ष ।
सुअन्न–सदन्न ।
सुआसिनि–स्त्री० यामि, सुवासिनी, पितृगृहस्थ विवाहिता कन्या ।
सुइ / **सुइआ** } –सूची, सीबाक साधन ।
सुइकतार–क्रीड़ाविशेष ।
सुकठी–सुखाएकेँ चोकटल ।
सुकरब–क्रि० नाकसँ कफक नि:सारण ।

सुकरम–नीक कर्म ।

सुकराती(ति)–सुखरात्रि, कार्तिकक अमावास्या ।

सुकुमार–सं० कोमलाङ्ग ।

सुकुमालकी–अक्लेशेँ सम्पादन ।

सुकुर–सुकर, अनायाससाध्य ।

सुक्खी–बिना घृतेँ पकाओल (सोहारी)।

सुख–सं० आनन्द ।

सुखठी–सुकठी ।

सुखराति–सुखरात्रि ।

सुखाएब–क्रि० सुख्+अब–शुष्क होएब ।

सुखाओन–सुखएलासँ तौलमे कमी ।

सुखित–सं० सुखसँ युक्त ।

सुखी–सं० सुखसँ युक्त ।

सुखोँत–सुखाओल शाकादि ।

सुखौँती–आतपशुष्क ।

सुगन्धबाला–बालक, ओषधिविशेष ।

सुगन्धि–सं० सौरभयुत १ । सौरभ २ ।

सुगन्धि-खेसारी–खेसारीक प्रभेद ।

सुगन्धित–सुरभीकृत (तैलादि) ।

सुगबा–सापक ओ बेँगक प्रभेद ।

सुगरकोन(ना, नी)–नैर्ऋत कोण ।

सुगरजङ्घ–सुगरक जाँघक बराबरि (धान्यादि) ।

सुँघब–क्रि० आघ्राण ।

सुँघनी–सुँघब ।

सुङ्ग–शूक, सूङ ।

सुच्चा–शुद्ध अमिश्रित (तैलादि) ।

सुजनी–दुहू दिससँ लग-लग स्यूत (तुरदार अङ्गप्रभृति) ।

सुजाक(ख)–वि० उपदंश रोग ।

सुझब–दृष्टिगोचर होएब ।

सुज्झाएब–क्रि० सुज्झब्+अब–लेल वस्तुक प्रत्यर्पण ।

सुटकब–क्रि० सङ्कुचिताङ्गक होएब ।

सुटपु(सु)ट करब–क्रि० लोभभयादिवश इतस्ततः करब ।

सुटिआएब–क्रि० सुटि+अब–सुट सुट करब ।

सुठाम–नीक स्थान ।

सुठिआएब–ना० सूठिसन शुष्क होएब।

सुठौड़ा–प्रसूताक शुण्ठीप्रधानक औषध ।

सुड़रब–क्रि० तोनी (अङ्गुष्ठाग्र)सँ आकर्षण ।

सुड़रा–लगातार ।

सुँड़ाह–सूँड़ासँ युक्त ।

सुड्डाह–सर्वथा दग्ध ।

सुँढ़िआएब–क्रि० सुँढ़ि+अब–सिद्धयुन्मुख होएब ।

सुतना–अधिक शयनशील ।

सुतब–क्रि० सूतब, शयन ।

सुतरब–क्रि० सफलीभवन ।

सुतरी–शणरज्जु ।

सुतार–आयाससाफल्य ।

सुतारब–क्रि० सुतार्+अब–सफल करब।

सुतारी–जूता सीबाक टाकु ।

सुतिआएब–ना० कोडोकेँ सूतिसँ युक्त करब १। सूतसन पातर होएब २।

सुतुरमुर्ग–पक्षिविशेष ।

सुथनी–खाद्यकन्दविशेष ।

सुदि–शुक्लपक्ष ।

सुदिन–सं० शुभाधायक दिन ।

सुदिनि–स्त्री० क्रीतदासी ।

सुधरब–क्रि० दोषत्यागपूर्वक नीक दिस प्रवृत्ति होएब ।

सुधारब–क्रि० सुधार्+अब–दोषत्यागपूर्वक नीक दिस प्रवृत्ति कराबए ।

सुधि–स्मरण ।

सुधि-बुधि–स्मरण ओ विवेक ।

सुनगब–क्रि० आगिक मन्द-मन्द पजरब।

सुनझाएब–क्रि० सुनझब्+अब–प्रत्यर्पण।

सुनता–श्रुत ।

सुनब–क्रि० श्रवण ।

सुनबाहि–श्रुत वचनपर आस्था ।

सुनहट(टि,ट्टी)–जनशून्यता ।

सुनहेर–तृणविशेष ।

सुन्दर–सं० रमणीय ।

सुन्न–शून्य ।

सून्ना–अक्षरक समीप बिन्दु ।

सुपती–बाँसक शूर्पाकार बल्कल ।

सुपहा–सूपसँ पाथल (चिपड़ी) ।

सुपारी–पूगीफल, गूआ ।

सुफल–नीक फल १। गयादिक कर्मान्तिमे पण्डाक आशीर्वाद २ ।

सुफाँटि–पचेसी खेड़िमे निर्भयस्थानमे प्राप्त (गोटी) ।

सुबरना–द्विमुख पानपात्रविशेष ।

सुबरनी–छोट सुबरना ।

सुबानि–ठाठ आदिक अदुष्ट बन्धन वा वयन ।

सुविधा–सं० सौकर्य ।

सुबुक–कोमल ।

सुभा–वि० सन्देह ।

सभीता–सुविधा, सौकर्य ।

सुमरन–स्मरण ।

समिरता–स्मरण ।

सुर–स्वर ।

सुरकब–क्रि० नासादिवायुद्वारा द्रववस्तुक अन्तःप्रवेशन ।

सुरखी–पक्वेष्टकाचूर्ण ।

सुरङ(ङ्ग)–तरहरा ।

सुरड़ब–क्रि० अङ्गुष्ठतर्जनीक अग्रसँ आकर्षण ।

सुरतरङ्ग–वाद्यविशेष ।

सुरता–स्मरण ।

सुरति–समाचार, वृत्तान्त ।

सुरफुर–चरफर, सचढ़, कार्यदक्ष ।

सुरफुराएब–क्रि० सुरफुर्+अब–लोभवश अनुचितरूपेँ प्राप्त्यर्थ उन्मुख होएब ।

सुरमा–सौवीराञ्जन ।

सुरसा–जिञ्जीर लगएबाक सच्छिद्र लौहशङ्कु ।

सुरसुर–द्रव वस्तु खएबाक मुखध्वनि ।

सुरसुरी–छिक्का ओ उकासीक उत्पादक तीव्र गन्धविशेष ।

सुराक–वि० परकीय वस्तुक स्थिति-स्थानादिक ककरहु द्वारा गुप्त रूपेँ ज्ञान ।

सुराह–एकस्वरक, जाहि विषयमे लगलहुँ ताहीमे अति तत्पर ।

सुराही–वि० माटिक जलपात्रविशेष ।

सुरुकब–क्रि० सुरकब ।

सुरुङ्ग–सोझ ऊर्ध्वमुख (वृक्षादि)।

सुरेब–सुन्दर आकारक ।

सुलक्षण–सं० शुभ लक्षण ।

सुलच्छन–सुलक्षण ।

सुलफा–तीक्ष्णाग्र वंशशङ्कु ।

सुलबाहि–अमांसए, शूलपूर्वक वारंवार मलत्याग ।

सुसिद्ध–सं० नीकजेकाँ सीझल (भात आदि)।
सुसुआएब–क्रि० सुसु+अब–सूसू शब्द करब, मुहुःसूत्करण।
सुसुक–सरल, अकठिन।
सुसुम–ईषदुष्ण।
सुस्त–सुस्थ, धनपूर्णतया सुखित १। स्वस्थ २। मन्द ३।
सुस्ताएब–क्रि० सुस्त्+अब–श्रमापनोदनार्थ क्रियाविराम।
सुस्तेँ–अ० शनैःशनैः।
सुहबा–स्त्री० सधवा।
सुहिआ–संकुचितमुख ओ चओड़ा।
सूआ–पैघ सुइआ जाहिसँ बोरा आदि सिअल जाइछ।
सूआगरए–ठाठक उचितसँ अधिक उच्चता, अतिप्लवता।
सूगर–शूकर।
सूगा–उ० शुक। स्त्री० सूगी।
सूगाठोर–चारूकात लाल सूगापङ्खी (साड़ी)।
सूगापङ्खी–कातमे आन रङ्गक (साड़ी)।
सूँध–शूक।
सूँघब–क्रि० सुँघ+अब–आघ्राण।
सूङ–शूक।
सूझब–क्रि० सुझ्+अब–दृष्टिगोचर होएब।
सूझि–विचार-शक्ति।
सूझि पड़ब–क्रि० विचारस्थ होएब।
सूँठि–शुण्ठी।
सूँड़ि–शौण्डिक, जातिविशेष।
सूँढ़–शुण्डा।
सूढ़ि–एकक्रियामे साग्रह पुनःपुनः प्रवृत्ति।
सूत–सूत्र, ताग, तन्तु।
सूत काटब–क्रि० तन्तुनिर्माण।
सूति–स्वस्तिक, ग्रीवाक भूषणविशेष।
सूती–कार्पाससूत्रनिर्मित (वस्त्र)।
सूदि–ऋणवृद्धि १। शुक्लपक्ष २।
सूधि–ज्ञान, संज्ञा, होस।
सून–शून्य।
सूनमसान–श्मशानसदृश जनशून्य (स्थान)।
सूप–शूर्प।
सूर–शूर, वीर १। स्वर, लय २
सूरी–दण्डशूल, मृत्युदण्डविशेष।
सूर्य–सं० दिनकर।
सूर्यमुखी–पुष्पविशेष।
सूर्यास्त–सूर्यक अस्तगमन।
सूर्योदय–सं० दिनकरक उदय।
सूहा–मत्स्यविशेष।
सूही–छोट सूहा।
सृष्टि–सं० निर्माण।
से–सः, सा, तत् सं०।
सेआख–नेमटेम, नियम-निष्ठा (निन्दा मे)।
सेआखी–सेआखबाला।
सेआह–हि० स्याह, कारी।
सेउती–शतपत्री, गुलाबक प्रभेद।
सेओ–स्यो, फलविशेष।
सेखी–वि० जात्यभिमान।
सेज–शय्या।
सेजपाट–पटिआ गेडुआ प्रभृति सर्वाङ्गपूर्ण शय्या।
सेजबन्द–शय्या बन्हबाक डोरी।
सेठ–उ० धनाढ्य शौण्डिक, सूँडिक उपाधि। स्त्री० सेठिनि।

सेड़र–किण, घर्षणजन्य दृढ़ मांस।
सेँतालिस–सप्तचत्वारिंशत्।
सेँतालिसम–सप्तचत्वारिंशत्तम।
सेद–सेदब।
सेदब–क्रि० अग्निक समीप राखि तप्त करब।
सेब–टेढ़ कएल (कोदारि)।
सेबब–क्रि० सेवन
सेबा–सं० सेवन, दास्य, परिचर्या।
सेमार–शैवाल।
सेर–सेटक, परिमाणविशेष।
सेरपहुँ–अ० सत्य, सरिपहुँ।
सेरही–एक सेर परिमाणक (तामा प्रभृति)।
सेराएब–क्रि० सेर्+अब–उष्णतासँ हीन होएब।
सेरी–प्रति मनमे आदेय एक सेर।
सेहन्ता–सिहन्ता, मनोरथ।
सेहबाना–धान्यविशेष।
सेहला–सेआहा, स्मारक लेख।
सै–सइ, स्वरस, आन्तरिक अभिप्राय।
सैँतब–ओरिआए कें राखब।
सैन–शमीवृक्ष १। व्रणविशेष २।
सैन्धव–सं० लवणविशेष।
सैला–सएला, व्याघ्रविशेष।
सो–सोह, पृथ्वीक अभ्यन्तरसँ जलागम।
सोअदगर–अधिक स्वादु।
सोआ–शाकविशेष।
सोआइत–आल्पमूल्यलभ्य, सस्त १। अ० अकारण नहि २।
सोआद–स्वाद, स्वादुत्व, रस।
सोएम–दोएमसँ अपकृष्ट, तृतीय कक्षाक (दही प्रभृति)।
सोख–शुष्कता १। ढीठ २।
सोग–शोक।
सोँगर / **सोङर** }–कान्हबाला वंशखण्ड।
सोच–शोक।
सोचब–क्रि० शोक करब १। विचार करब २।
सोचरि नोन–लवणविशेष।
सोझ–सरल।
सोझका–सरलप्रभेदक।
सोझबारा–सरल प्रकारक।
सोझराएब–क्रि० सोझर्+अब–जटिलता वा ग्रन्थिसँहीन होएब, लटपटीक त्याग।
सोझाँ–अ० सम्मुख।
सोझाँ-सोझी–अ० परस्पर साम्मुख्यमे।
सोट–अति स्थूल बिना मकोआक यष्टि।
सोटब– चिक्कणताजनक घर्षण।
सोटा–स्थूल छोट यष्टि।
सोटा चन्द–अतिमूर्ख।
सोड़ह–षोड़श, सोलह।
सोड़हम–सोलह संख्याक पूरक।
सोड़हा–सोलह सोड़हि।
सोड़हि–षोड़शसंख्यापरिमित (बोझ इत्यादि)।
सोतपन–सद्द, सौम्य (माल)।
सोति–उ० श्रोत्रिय, ब्राह्मणविशेष। स्त्री० सोतिआइनि।
सोतिआइ–श्रोत्रियक व्यवहार।
सोतिआएब–ना० सोति+अब–श्रोत्रियत्वप्रदर्शन।
सोतिपुरा–श्रोत्रियगणक बासस्थान।
सोधब–क्रि० संशोधन।

सोन–स्वर्ण ।
सोनपत–त्योनाक वृक्ष ।
सोनही–कन्दविशेष ।
सोनहुल–पुष्पविशेष ।
सोनहुला–रङ्कक प्रभेद ।
सोनाडुब्बी–जलक्रीड़ाविशेष ।
सोनामाखी–स्वर्णमाक्षिक ।
सोनामूँग(मूङ)–मुद्गविशेष ।
सोनार–उ० स्वर्णकार जातिविशेष । स्त्री० सोनारनी ।
सोनारी–सोनारक कर्म १। ओकर वेतन २।
सोनित–शोणित, रुधिर ।
सोनी–तृणविशेष ।
सोन्ह–सुगन्धविशेषसँ युक्त १ । अड़ाँची-लवङ्गादि मसाला २ ।
सोन्हाइ–गन्धविशेष ।
सोन्हान–मालक औषध ।
सोन्हि–भूविवर ।
सो(सोँ)पब–क्रि० भार देब १। समर्पण करब २। रविव्रतादिक निस्तार ३ ।
सोपाएब–क्रि० सोप्+अब–भाँटाप्रभृतिक पाकवैगुण्यप्रयुक्त कठोरता ।
सोँफ–शतपुष्पा ।
सोबर्ना–जलपानपात्रविशेष ।
सोबर्नी–छोट सोबर्ना ।
सोम–वि० कृपण १। सं० चन्द्रदिवस २ ।
सोमबारी–सोमवती अमावास्याक व्रत ।
सोर–आह्वान ।
सरठ(ठा)–छन्दविशेष ।
सोर पारब–क्रि० आह्वान ।
सोर-पोर–अ० समस्त सीर सहित (उखड़ब) ।
सोर-सरबा–आह्वानादि ।
सोरा–सौवर्चल, लवणविशेष ।
सोरि–प्रसवगृह ।
सोलकन्ह–सोढ़स्कन्ध, शूद्र ।
सोलह–षोड़श १। वि० सन्धि, मैत्री २।
सोलहनामा–वि० सन्धिपत्र ।
सोलहम–षोड़शसंख्याक पूरक ।
सोल्ह–शोधित, मोजर कएल (ऋणादि)।
सोँस–नक्र ।
सोसनी–रङ्गविशेष ।
सोँसिआएब–ना० सोँसि+अब–सोँ सोँ शब्द करब ।
सोह–पृथ्वीक अभ्यन्तर देने जलक आगमन ।
सोहगैली–काठक सिन्दूरपात्रविशेष ।
सोहदा–वि० दुराचारी, बूड़ि ।
सोहन–शोभमान ।
सोहनि–धान आदि कमाएब ।
सोहब–क्रि० फलादिकेँ त्वचासँ मुक्त करब ।
सोहर–जन्मसम्बन्धी गीतविशेष ।
सोहरब–क्रि० बहुत कीटादिक समन्तात् सम्प्राप्ति ।
सोहाएब–क्रि० सोह्+अब–नीक लागब।
सोहाओन–शोभमान, सुन्दर ।
सोहाग–सौभाग्य ।
सोहागा–टङ्कण ।
सोहागिनि–स्त्री० सौभाग्यवती, सधवा।
सोहागी–चारू कात अन्य रङ्गमे रँगल (साड़ी) १ । सौभाग्याशीर्वादीमे देय२ ।
सोहागीबङ्का–भूषणविशेष ।

सोहारी–शष्कुली ।
सोहाँस–त्रपुस, खँरा ।
सौख–सौख्य ।
सौजन–सौजन्य, परस्पर भात खएबाक व्यवहार ।
सौजनिआ–परस्पर भात खएनिहार ।
सौतिनि–स्त्री० सपत्नी ।
सौतिनिआ डाह–सपत्नीक अन्योन्य असूया ।
सौँथि–सीमन्तप्रदेश ।
सौर–दू ओढ़नाक समग्र संयोजन ।
सौरबचबा–सौरा माछक बच्चा ।
सौरा–मत्स्यविशेष ।
सौराठी–छोट सौरा ।
सौँस–समग्र, अखण्ड ।
स्तुम्बुल–गुलाबक प्रभेद ।
स्थिति–सं० रहब १। परिस्थिति, थिति २ । विशेष धन ३ ।
स्थान–सं० जगह ।
स्याख–सेआख ।
स्याह–वि० कारी ।
स्यो–सेओ फलविशेष ।
स्योँती–शतपत्र, गुलाबक प्रभेद ।
स्वदेश–सं० अपन देश ।
स्वदेशी–स्वदेशभव ।
स्वभाव–सं० अपन संस्कार ।
स्वरस–अभिप्राय ।
स्वरूप–सं० आकार ।
स्वाद–सोआद, रस ।
स्वादब–क्रि० स्वाद्+अब–स्वाद बुझब, चीखब ।
स्वादिष्ट–सं० अति स्वादु ।
स्वामी–सं० पति ।

ह

हँ–अ० स्वीकार ।
ह–अ० खेद ।
हइ–अ० वारण ।
हउआ–बाल-बिभीषिका ।
हए–अ० स्त्रीकर्तृक अनतिनीच सम्बोधन १ । पुरुषकर्तृक अनतिनीच स्त्रीसम्बोधन २ ।
हओ–अ० पुरुषकर्तक अनतिनीच पुरुष-सम्बोधन ।
हक–वि० अंश, अधिकार ।
हकन्न कानब–क्रि० जोरसँ कानब ।
हकबाहिलागब–क्रि० एके बाक्य बजबा मे वारंवार प्रवृत्ति होएब ।
हक लागब–अत्यन्त प्रत्याशा जागब ।
हँकरब–क्रि० अतिक्रन्दन, रोग प्रभृतिसँ कनबाक असामर्थ्योंतर क्लेशसूचक शब्द करब ।
हँकरा पथिया–भारक पनपथिआ ।
हक-हक करब–क्रि० श्रमसँ अधिक हकमब ।
हकहकाएब–क्रि० हकहक्+अब–हकमलजेकाँ होएब।
हकहकी–किञ्चिन्मात्र श्वासप्रश्वास ।
हकार–पूजादि देखबाक आकरण ।
हकारब–क्रि० हकार देब ।
हकासल पिआसल–अत्यन्त श्रम ओ पिपासासँ युक्त ।
हकुलाह–उ० असन्तोषी । स्त्री० हकुलाहि ।
हक्क–वि० हक, अंश ।
हगब–क्रि० पुरीषोत्सर्ग ।

हगामा–सकल-साधारण, अनेक गामक लोक ।

हजरा–दुसाधक उपाधि ।

हजाम–नापित, नौआ ।

हजार–सहस्र ।

हजारीगेना–सबसँ बड़का गेनाक फूल ।

हटब–क्रि० पृथक् होएब, स्थानत्याग ।

हँटब–क्रि० भर्त्सन, वारण ।

हट्‌ठा–हर बहबाक स्थान ।

हठ–सं० आग्रह ।

हड़कम्प–हाड़क कपनी ।

हड़कम्प कापब–क्रि० हाड़पर्यन्त मे कम्पयुक्त होएब ।

हड़काछु–काछुक प्रभेद ।

हड़कौड़ी–कौड़ीक प्रभेद ।

हड़गर–उ० मोट हाड़बाला । स्त्री० हड़गरि ।

हड़गोरब–क्रि० मालकेँ पाएर लगाए गरदनिमे बान्हब ।

हड़जोड़बा–तृणविशेष, अस्थिसंहारी ।

हड़जोड़ा–हड़जोड़बा ।

हड़बड़–कार्यमे शीघ्रता ।

हड़बड़ाएब–क्रि० हड़बड़+अब–हड़बड़ करब ।

हड़बड़ी–कार्यमे शीघ्रता ।

हड़मुड़हा–उ० अलच्छ । स्त्री० हड़मुड़ही ।

हड़मुड़ाह–उ० अलच्छ । स्त्री० हड़मुड़ाहि ।

हड़रो-बिड़रो लागब–क्रि० नाना उपद्रव संप्राप्त होएब ।

हड़रोगा–हाड़क रोगवत् अनिवार्य स्वभाव।

हड़ा दरिद्र–नितान्त दरिद्र ।

हड़ासङ्ख–अलच्छ ।

हँड़िआ–हण्डी, पाकपात्रविशेष ।

हड़िरा–पहिरल धोतीक डाँड़मे भिँड़िआओल प्रान्त ।

हड़ुबी–तरक भूमि ।

हड़ोखरि–हाड़ फेकबाक स्थान ।

हड़ोरब–क्रि० दुहू बाँहिसँ एकत्रित करब।

हड्‌डी–हि० हाड़, अस्थि ।

हतब–क्रि० हत्या करब ।

हताश–सं० आशाहीन ।

हत्था–केराक हस्ताकार गुच्छ ।

हत्थाबाँही–परस्पर हाथ-बाहिँ पकड़ि मारि ।

हत्था-हत्थी–परस्पर हाथ पकड़ब ।

हथकट–थोड़ देनिहार, कृपण ।

हथकड़ी–हाथमे बद्ध शृङ्खला ।

हथगर–उ० अधिक परसनिहार, अधिक देनिहार, उदार ।

हथछुट्‌टू–अल्पापराधहुमे हाथसँ मारि देबाक स्वभावबाला ।

हथजौर–हाथसँ बाँटल रज्जु ।

हथधरी–विवाहस्वीकारार्थ परस्पर हस्तग्रहण।

हथना–नेनाक हाथक भूषणविशेष ।

हथनो(न्यो)त–साक्षात् निमन्त्रण, हाथ पसारि नोत देब ।

हथपैँच–बिना लेखक ओ बिना सूदिक ऋण ।

हथफेर(री)–एकसँ लए दोसराक ऋणशोधन ।

हथरस–पसएबामे उपकारक पात ।

हथरा–जाँत चकरीक उपरका हस्ताकार काष्ठ ।

हथलगू–अधिक काल हाथमे व्यवहार्य (छड़ीआदि) ।

हथलपक–हाथसँ लपकि लेबाक स्वभाव बाला ।

हथसङ्कड़–हाथक भूषणविशेष ।

हथहड़–भृङ्गार, द्विमुख जलपात्र-विशेष ।

हथहड़ी(री)–छोट हथहड़ ।

हथिआ–हस्तनक्षत्र ।

हथिआएब–ना० खानगी रुपैया आदि जमा करब, हस्तगत करब ।

हथिआर–अस्त्र, उपकरण ।

हथिगन–क्षुपविशेष ।

हथिनी–स्त्री० हस्तिनी ।

हथोरब–क्रि० हाथसँ समटब १ । हाथक स्पर्शसँ अन्वेषण करब २ ।

हथोरा(ड़ा)–मड़ेआ ।

हथोरिआ–अन्हार वा जलमे हस्तचालन।

हथोरिआ देब–क्रि० अन्हार वा जलमे हस्तचालन ।

हथौटी–हाथसँ कार्याभ्यास ।

हथौड़ी(री)–चोट देबाक लौह यन्त्रविशेष, मड़ेआ ।

हद–वि० अन्त, अवधि, सीमा ।

हदमदाएब–क्रि० हदमद्+अब–वमनोपस्थितिशङ्कासँ युक्त होएब ।

हदमदी–वमनोपस्थितिशङ्का ।

हदिआएब–ना० 'हाधिक' बाजब, दैन्ययुक्त होएब ।

हद्द–हद ।

हनब–क्रि० मारब १ । डोलाएब २ ।

हनहन-पटपट करब–क्रि० मालक मारबाक चेष्टा करब ।

हनहनाएब–ना० हनहन शब्द करब ।

ह(हँ)पसब–क्रि० घास-भुस्सा आदि अधिक-अधिक लएकेँ खाएब।

हफब–क्रि० बड़दक मारबाक चेष्टा मात्र करब ।

हफाह–उ० मारबाक चेष्टा मात्र कएनिहार (बड़द आदि)। स्त्री० हफाहि ।

हफिआएब–ना० जृम्भण, हाफी करब ।

हफिमची–नित्य हफीम खएनिहार ।

हफीम–अहिफेन, मादक वस्तु विशेष ।

हबक–दाँतसँ काटब ।

हबकब–क्रि० दाँतसँ दबाएब ।

हबकाह–दँतकट्‌टा, दाँतसँ कटबाक स्वभावबाला (कुकुरप्रभृति) ।

हबर-हबर–अ० झट-झट ।

हबेली–अन्दर, अन्तःपुर ।

हबोडकार–अ० अश्रुधाराप्रवाहपूर्वक ।

हम–अहम् सं० ।

हमाम–वि० स्नानक जलपात्र विशेष ।

हर–हल १ । शिव २ ।

हरकठ–हरक ओ काठ जाहिमे फार ठोकल जाइछ ।

हरकब–क्रि० मालक संघ-बद्ध भए हँटब ।

हरकारब–क्रि० हरकार्+अब–मालक समूहकेँ एक दिस हटाएब ।

हरकारा–मार्गमे आगाँ-आगाँ लोककेँ हटओनिहार भृत्य ।

हरक्कति–वि० हर्ज, क्षति ।

हरखरा–वृषभरहित हर ।

हरजाइ–स्त्री० निर्लज्जा स्त्री ।
हरदम–वि० अ० सतत ।
हरदा–पक्षिविशेष ।
हरदाहरदी–क्रीड़ाविशेष ।
हरदि–हरिद्रा ।
हरदिआह–हरिद्राभागयुक्त ।
हरफा–लवली फल ।
हरफोड़–अ० हलकर्षणपूर्वक ।
हरब–क्रि० हरण ।
हरबाह–हलवाहक ।
हरबाहि–हरबाहक क्रिया, कर्षण १ । ओकर वेतन २ ।
हरमजदगी–वि० बदमासी, दुष्टता ।
हरमजादा–वि० बदमास ।
हरमाद–वि० बाधा, अपकार ।
हरमोट(ठ)–स्थूलकाय मूर्ख ।
हरलधा–हर लधबाक डोरी ।
हरहरा–सर्पविशेष १। कटिभूषणविशेष २।
हरही-सुरही–अगण्य, तुच्छ, (लोक)।
हरान–वि० परिश्रान्त ।
हरानी–वि० श्रम ।
हरारति–वि० थाकनि ।
हराह–उ० अधिक काल पलायनशील (बड़द प्रभृति) । स्त्री० हराहि ।
हराहरी–अ० औसतन हि० ।
हरिअर–हरित ।
हरिअर-कचोर–अत्यन्त हरित ।
हरिअरका–उ० हरितप्रभेदक । स्त्री० हरिअरकी ।
हरिअरी–हरितता ।
हरिताल–सं० धातुविशेष ।
हरिताली–सं० व्रतविशेष ।

हरिन–हरिण ।
हरिनकेलि–धान्यविशेष ।
हरिना–हरिणक नर ।
हरिना-खुरी–हरिणक खुरक समानाकार बन्धनविशेष १ । मालक तादृश खुर २ ।
हरिना निन्द–हरिणवत् निद्रा, आधा आँखि मूनि सूतब ।
हरिफ़–वि० बद्द ।
हरिबेचनी–स्त्री० हारी बेचनिहारि ।
हरिस–हरक ओ अङ्ग जाहिमे पालो बान्हल जाइछ, हलीषा ।
हरिसेँ–ह्रस्व मात्रा ।
हरिसो–एक पाबनि ।
हरी–बेड़ी, निगड़ ।
हरीक हर–वर्षमे बिना मूल्य मालिककेँ दातव्य हर ।
हरीड़–हरीतकी ।
हरीस–हरिस, हलीषा ।
हरुबी–पृथ्वीक अधिक तरक भूमि ।
हरुसा–फलविशेष ।
हरोत–बाँसक प्रभेद ।
हर्ज(र्जा)–वि० क्षति ।
हर्जाइ–स्त्री० निर्लज्जि, बद्द ।
हर्ष–सं० आनन्द ।
हलकारब–क्रि० हलकार्+अब–पशुक संघकेँ प्रेरित करब ।
हलगर–पूर्ण हालसँ युक्त (भूमि) ।
हलचल–कार्यार्थ चलप्रचल ।
हलचली–चलप्रचलता, सम्भ्रम ।
हलतलबी–शीघ्रकर्तव्यता ।
हलदिली–वि० उन्माद ।

हलबलिआ–अलि० हड़बड़ाएल कार्यकर्ता ।
हलबली–चाञ्चल्यपूर्वक कार्यकरण ।
हलसब–क्रि० हर्षयुक्त होएब ।
हलार(ल)खोर–उ० पएखाना साफ कएनिहार जातिविशेष । स्त्री० हलार(ल)खोरनी ।
हलुआ–मोहनभोग, कृतान्नविशेष ।
हलुआइ–उ० मिष्टान्नादि बनओनिहार जातिविशेष । स्त्री० हलुआइनि ।
हलुक–हल्लुक, लघु, जे भारी नहि हो ।
हलुकधना–शीघ्र पकनिहार धान (राँगी प्रभृति) ।
हलुमानी–मधुरक अगाँओ ।
हल्ला–हि० घोल ।
हल्लुक–लघु, भारीसँ भिन्न ।
हंस–सं० पक्षिविशेष ।
हसनमुह–उ० प्रसन्नमुखाकृतिबाला । स्त्री० हसनमुहि ।
ह(हँ)सब–क्रि० हसन ।
हँसमुह–उ० हसनमुह । स्त्री० हँसमुहि ।
हँसारति–जनतोपहास, लोकनिन्दा ।
हँसी–हास्य ।
हँसी-ठट्ठा–हास्यादि विनोद ।
हँसुली–भूषणविशेष ।
हँसेरिआ–हँसेरीक लोक ।
हँसेरी–लोक-संघ ।
हँसोथब–क्रि० हाथसँ समटब ।
हस्तगत्ता–सम्बद्ध मोड़ल पुस्तक रखबाक गत्ता ।
हस्ताक्षर–सं० हस्तलेख, दस्तखत ।
हहरब–क्रि० ह्रास हेएब ।
हा–अ० शोक ।

हाँ–अ० वारण ।
हाँ-हाँ–अ० सम्भ्रमपूर्वक वारण ।
हाँइ-हाँइ–अ० शीघ्रतापूर्वक ।
हाए–अ० हा, शोक ।
हाए-हाए करब–धन बढ़बाक अधिक चेष्टा करब ।
हाक–उच्चैः सम्बोधन ।
हाँकब–क्रि० हँक्+अब–पशुक प्रेरण, गाड़ीक चालन ।
हाकिम–वि० न्यायाधिकृत ।
हाँज–पक्षीक संघ ।
हाजिर–वि० उपस्थित ।
हाजिरी–वि० उपस्थिति ।
हाट–हट्ट, अस्थायी आपणविशेष ।
हाड़–अस्थि ।
हाँड़ी–हण्डी, पात्रविशेष ।
हाता–खेतक सीमापर लम्बाकार उच्च कएल माटि ।
हाथ–हस्त, कर ।
हाथर–जाँतक उपरबका हस्ताकार काष्ठ।
हाथा–हत्था, हस्ताकार कदलीफलगुच्छ।
हाथा-बाँही–झगड़ामे परस्पर हाथ बाँहि पकड़ब ।
हाथाहाथी–परस्पर जोरसँ हाथ पकड़ब ।
हाथी–उ० हस्ती, गज । स्त्री० हथिनी ।
हानब–क्रि० हन्+अब–दृढ़ करब ।
हानि–सं० क्षति ।
हापुस–तृणविशेष ।
हाफी–मुखजृम्भा ।
हाबर–मशकाकार कीटविशेष ।
हाबा–वि० बसात, वायु ।
हाबादार–वि० जाहिठाम बसात आबए ।

हाबुस–तृणविशेष ।
हार–हारि १ । मण्यादिमाला २ ।
हारब–क्रि० हार्+अब–पराजित होएब ।
हारा–हारा ममरखा, तृणविशेष ।
हाराहरी–अ० औसतन हि०, मध्यम मानक अनुसारेँ, अवयवगत विषम मान सभसँ समुदायक मान बहार कए पुनः प्रति अवयवपर ओहि मानकेँ समान रूपेँ बँटलापर ।
हारि–पराजय ।
हारी–हार बनएबाक काचक छिद्रयुक्त गुलिका ।
हाल–खेतक अभ्यन्तरसँ आर्द्रताक सम्बन्ध १ । वि० स्थिति २ ।
हाँस–पक्षिविशेष ।
हास–सं० हँसी ।
हासा–शुद्ध, एकवर्ण ।
हाँसिनी–स्त्री० सुन्दरी ।
हासिल–वि० अर्जित ।
हासिल-कर्दगी–वि० स्वोपार्जित भूमि ।
हाँसू–काता ।
हास्य–सं० हँसी ।
हाह-फूह–मेघक जलबिन्दु ।
हा-हा–अ० खेद ।
हाहाकार–सं० हाहा शब्दक उच्चारण ।
हाहाकार मचब–क्रि० समन्तात् 'हा' 'हा' शब्द होएब ।
हाहि बहब–क्रि० बसातक जोरसँ बहब।
हाहूति(ती)–असन्तोष, गृन्ध्रता ।
हाहेबेरबा–आपदू, उपद्रव ।
हिआएब–क्रि० खूब अवधानसँ देखब।
हिआ हारब–क्रि० नाभरोस होएब ।
हिकमति–वि० भेद, कौशल, भङ ।
हिकमती–वि० हिकमतिक वेत्ता ।
हिकाहु–अक्लेश जएबा योग्य स्थान ।
हिक्का–सं० अन्तिम समयक हिचकी ।
हिँगु(हिङ्)राएब–क्रि० हिँगुरब्+अब–चपरासँ रङ्ग करब ।
हिङ्ग–सं० हीँगु ।
हिचकब–क्रि० हिचकिचाएब ।
हिचकिचाएब–क्रि० हिचकिच्+अब–असामर्थ्यादिवश अप्रवृत्तिक अभिप्राय प्रकट करब ।
हिचकी–उदरस्थ वायुक साघात निर्गम, हिक्का सं० ।
हिँछब–क्रि० हिचकब ।
हिडु(ड़ो)ला–दोला, मछकी, पालना ।
हित–सं० गुणद १ । मित्र २ ।
हितकर–वि० उपकारक ।
हिफाजति–वि० सुरक्षा ।
हिरामन–सूगाक प्रभेद ।
हिलकोर–तरङ्ग ।
हिलकोरब–क्रि० तरङ्गित करब ।
हिलब–क्रि० डोलब, कम्पन ।
हिलस–मनोरथ, आबेस ।
हिलस लागब–क्रि० मनोरथ होएब।
हिलसा–मत्स्यविशेष ।
हिलि-मिलि–अ० परस्पर मेल कए।
हिलोर–तरङ्ग ।
हिलोरब–क्रि० अन्नादिकेँ सूपमे लए चक्राकार तरङ्गित करब ।
हिसख–अभ्यास ।
हिसाब–वि० गणना, लेखा ।
हिसाबी–वि० लेखापटु १। मितव्ययी २।
हिस्सा–अंश ।
हिहिँआएब–ना० घोड़ाक 'ह्रीँ ह्रीँ' शब्द करब ।
हीँगु–हिङ्गु ।

हीँछब–हिँछ+अब–हिचकब ।
हीड़–प्रधानतम ।
हीत–हित ।
हीर–हीड़, प्रधानतम ।
हीरा–हीरक ।
हीराकाट–अलङ्करणक आकार-..... विशेष।
हीलब–क्रि० हिल्+अब–डोलब ।
हुकब–क्रि० हुसब, लक्ष्यच्युति ।
हुकबुक–हुकहुक, अन्तकालक मन्द-मन्द श्वास ।
हुकरब–क्रि० अतिक्लेश जन्य ध्वनि-विशेष ।
हुकहुक–हुकबुक ।
हुकहुकाएब–क्रि० हृदयमात्रमे वायुक सञ्चार करब ।
हुकहुकी–हृदयमात्रमे वायुक सञ्चार ।
हुकारी–श्रमजन्य हु हु शब्द ।
हुकुम–वि० आज्ञा
हुकुम्मति–वि० आज्ञा ।
हुक्क–वातरोगविशेष, चोरा ।
हुक्का–धूमपानयन्त्रविशेष ।
हुच्ची–टहल, लगक सुकर अनेककार्य।
हुट्ठा–साढ़े तीन गुणाक पाठ ।
हुड़काह–सनकाह ।
हुड़ार–वृक, हिंस्रपशुविशेष ।
हुड्ड–कर्तत्याकर्तव्यविचारशून्य । उच्छृङ्खल ।
हुण्ड–हुड्ड ।
हुज्जति–वि० झमेल, विवाद (निन्दामे)।
हुदुक्का मारब–क्रि० ऊर्ध्वमुख आघात ।
हुमड़ब–क्रि० गम्भीर घोष ।
हुमाहुमी–मारिक उपक्रमसम्भार ।
हुड़दुङ्ग–उद्धत क्रीड़ा ।
हुड़दुङ्गी–उद्धत क्रीड़ा कएनिहार ।
हुरपेटब–क्रि० बजारिकेँ सिंहसँ मारब ।
हुरमारि–स्त्री० हूरा लेनिहारि (गाए-महिंसि) ।
हुरहुर–क्षुपविशेष ।
हुरहुरी–आतङ्क ।
हुराठ–यष्टिक मोट अग्रभाग ।
हुराठी–घूर लारबाक काठी ।
हुराड़–वृक, वन्य जन्तुविशेष ।
हुलकब–क्रि० कुकुरक आक्रमणार्थ दौड़ब ।
हुलकी–प्रच्छन्न रहि मुह नमराए देखब ।
हुलकी देब–क्रि० पूर्वोक्त क्रिया करब ।
हुलहुल करब–क्रि० वृथा इतस्ततः करब ।
हुलहुलाएब–क्रि० हुलहुल+अब–हुलहुल करब ।
हुलसब–क्रि० आनन्दित होएब ।
हुलास–आनन्द, उल्लास ।
हुल्लड़(र)–हूलि, अनेक व्यक्तिक संकुल क्रिया ।
हुल्लुक–पक्षिविशेष ।
हुहुआएब–ना० बसातक हू हू शब्द करब।
हूँ–अ० स्वीकार १ । (ध्वनिविशेष) निषेध २ ।
हूथब–क्रि० हुथ्+अब–भर्त्सना ।
हूबहू–वि० अनुरूप ।
हूर–लाठी आदिक अन्त भाग ।
हूरब–क्रि० मुसलाग्रादिक आघातसँ माटि बैसाएब ।
हूरा / **हूराहूरी** }–गोक्रीड़ा, एक पाबनि जाहिमे सूगरक सङ्ग गाए-महिसि खेलाइत अछि ।
हूलब–क्रि० हुल्+अब–बलात् प्रवेश ।

हूलि–बलात् प्रवेश १ । अनेक क्रियाक युगपत् सम्पात २ ।
हूसब–क्रि० हुस्+अब–लक्ष्यच्युति ।
हे–सं० अ० सम्बोधन ।
हे अए–अ० स्त्रीक प्रति सम्बोधन ।
हे अओ–अ० पुरुषक प्रति सम्बोधन ।
हेँक–अधिक किचार ।
हेँकब–क्रि० गर्दभक भाषण ।
हेकल–भूषणविशेष ।
हेँगा–चौकी, हलि ।
हेँगा देब–क्रि० चौकीसँ समीकरण ।
हेजा–महामारी, ओबा, विसूचिका ।
हेठ–उतरल, अवतीर्ण ।
हेड़–झुण्ड, मण्डली ।
हेड़गर–उपयुक्त जनसमुदायसँ युक्त ।
हेतु–सं० कारण ।
हेबनि–अ० किछु वर्ष पूर्व ।
हेबेली–हबेली, अङ्गण ।
हेमती–कार्पासक प्रभेद ।
हेमनजिस्ता–औषधादि चुरबाक धातुक पात्रविशेष ।
हेमाल–सरि १ । अत्यन्त ठण्ढा २ ।
हेयबुद्धि–सं० तुच्छ बुझब ।
हेर-फेर–हेरी-फेरी, बदलाबदली, व्यत्यास।
हेरब–क्रि० प्रेक्षण ।
हेराएब–क्रि० हेर्+अब–अधः पतन १। अदृश्य होएब, भेटबाक अयोग्य होएब २ ।
हेलब–क्रि० तरण ।
हेल-मेल–ऐकमत्य ।
हेला–उ० हलारखोर, पएखाना साफ कएनिहार जातिवशेष ।
हेली–हेलिनि १ । हेलाओ २ । हेलिकेँ जएबाक योग्यता,
हेलाओ–जल प्लावन ।
हेहर–उ० कतिधा बुझओलहु उत्तर दुर्वृत्ति नहि छोड़निहार । स्त्री० हेहरी ।
हेहरू–पुं० आदरणीय हेहर ।
है–अ० निषेध ।
हैँठा–वृक्षविशेष १ । ओकर पैघ फल २ ।
हैँठी–हैँठा गाछक छोट फल ।
होएनिहार–सम्भावित ।
होँकब–क्रि० उद्वीजन ।
होनिहार–होएनिहार, संभावित ।
होनी–भवितव्यता ।
होम–सं० हवन ।
होरी–होलिकोत्सवक समय १ । ओहि समयमे गएबाक गीत २ ।
होस–वि० चैतन्य ।
होसगर–वि० चैतन्ययुक्त, सचेत ।
होसिआर–उ० वि० निपुण १ । सावधान २ । स्त्री० होसिआरि ।
होसिआरी–नैपुण्य १ । सतर्कता २ ।
होहकार–हो हो शब्द ।
होहकारब–क्रि० होहो शब्द करब ।
होहकारा–हो हो शब्द ।
हौआएब–क्रि० हौ+अब–कण्डूति, कुड़िआएब ।
हौँकब–क्रि० उद्वीजन ।
हौँड़ब–क्रि० आलोड़न ।
हौदा–हाथीक पीठपर बैसबाक हेतु निर्मित पात्राकार आसनविशेष ।
हौहटि(ठि)–पामा ।





प्रकाशक : शेखर प्रकाशन, पटना-24

रु. 500/-